क्या आप सच्चे भक्त हैं?

यूयं स्वधर्मानुष्ठाने जनावलोकनार्थाय माऽकार्ष्ट

(तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने धर्म के काम न करो। मत्ती 6:1)

आज यीशु भक्ति या आराधना के नाम पर मनोरंजन दिखाई दे रहा है। गीतों की धुन पर, संगीत पर और गायक की आवाज़ को महत्व दिया जा रहा है मीटिंगों में गाने के लिये नामी गायकों को बुलाया जाता है। व्यापार की दुनिया मसीही जगत में आ गई है। भक्ति, बिकाऊ वस्तु बन गई है। और मनुष्य अपनी महिमा बटोर रहा है।

सच्चे भक्त को इस चक्रव्यूह से निकलना होगा, यूहन्ना 4:23 में लिखा है, "पिता अपने लिये भजन करने वालों को ढूँढ़ता है।"

भक्तों के हृदय देखे जाते हैं। क्या उनमें सत्य है, या कहीं वे दिखावटी या नकली उपासना तो नहीं कर रहे, दिखावटी जीवन फरीसी धर्मगुरुओं का था, जो भक्ति तो करते थे, परन्तु उनके हृदय और मन सारे अधर्म से भरे हुए थे। और आत्मा से उपासना करने का अर्थ है, हमें अपने जीवन के हर पहलू से परमेश्वर की महिमा करना है। चाहे हम स्कूल में, नौकरी में, बाज़ार में, कलीसिया में या अपने घर ही में क्यों न हों, हमें प्रभु यीशु में अपना नया जीवन दिखाना है। हमारे जीवन से परमेश्वर की महिमा होनी है। भक्ति के पहले जीवन चाहिये। प्रभु यीशु ने कहा, "वेदी में भक्ति लाने से पहले, अपने जीवन को सुधारो।" (मत्ती 5:24)

दिन और रात, हर समय परमेश्वर की महिमा करिये। प्रभु यीशु हमारी संपूर्ण उपासना के योग्य हैं। यदि हम भक्ति नहीं करेंगे, तो निर्जीव पत्थर, जीवित हो, जयजयकार करेंगे। (लूका 19:40)

परमेश्वर ने बालकों और दूध पीते बच्चों के मुँह से सिद्ध आराधना कराई है, मत्ती 21:16, और इसका परिणाम, भजन. 8:2 में लिखा है, "इस भक्ति के द्वारा शत्रुओं और बदला लेने वालों का सामना होता है।

आज सवाल है–
क्या आप सच्चे भक्त हैं?

शिष्य थॉमसन

''मेरी कहानी'' - अभियान

(मेरी कहानी - आपकी अपनी कहानी है।)

ये आज के हालात में एक प्रचार और गवाही का तरीका है, माध्यम है, और भारत-नेपाल, के मसीही विश्वासियों के लिए एक 'गवाह' बनने का आह्वान है।

"My Story" – movement

''प्रभु यीशु ने कहा, अपने घर जाकर अपने लोगों को बता, कि तुझ पर दया करके प्रभु ने तेरे लिये कैसे बड़े काम किए हैं।'' मरकुस 5:19

कभी मुझे भी अर्ध-मन से सड़क पर खड़ा होना पड़ता था। किसी स्टेडियम से निकलती भीड़, बाजार में दुकानों में बस में ट्रेन में सुसमाचार का वितरण।

मेरे अंदर डर भी था, और शर्म भी।

पर आज

दिल में दर्द भी है, और आंसू भी।

कारण ये की मैं इस बात से वाकिफ हूँ,

कि, मनुष्य अंधकार में, कंगाल, कुचला, अंधा, नंगा और बंधुआ पड़ा है।

और मैं चुपचाप खड़ा होकर देख रहा हूँ, जानते हुए भी की प्रभु यीशु इन्हें ही बचाने आये हैं।

प्रभु यीशु का

धर्म प्रचार नहीं है, परमेश्वर के राज्य की स्थापना है शुभ समाचार है हर मनुष्य की मुक्ति का उपाय है।

प्रभु यीशु ने धर्म में लोगों को नहीं बुलाया, पर थके और बोझ से दबे लोगों को अपने पास बुलाया है,

धर्म परिवर्तन की बातें शैतान का झूठ है और उसका ऐसा हथियार है जिससे मुक्ति की बातें आम लोगों तक न पहुंच सकें। (भेड़ को भेड़िये के रूप में दिखाना)

आज

हर जगह हालात एक विश्वासी के लिए मुश्किल हो गये हैं। सड़कों पर, मैदान में, चर्च के बाहर सुसमाचार सुनाना मुश्किल है,

और बहुतों के लिए एक सुसमाचार न सुनाने का बहाना मिल गया है।

बड़ी भीड़ वाली मीटिंग में सबको अच्छा लगता है, गीत, वीडियो, चंगाई सभा, चमत्कारी सभा, सब को अच्छी लगती हैं,

प्रभु यीशु

रास्तों के किनारे, पेड़ के नीचे, पहाड़ पर, नाव पर, बीमारों के घर में, मंदिर के दालान में, परमेश्वर के राज्य की बातें सुनाते थे।

प्रभु यीशु ने

सच ही तो कहा था उन्होंने मुझे सताया तुम्हें भी सतायेंगे। यूहन्ना 15:20

साथ ही साथ प्रभु यीशु ने ये भी कहा था

''जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।'' प्रेरितों 1:8

आज प्रभु यीशु की खुशखबरी चर्च की चार दिवारी के अंदर बंद हो गई है।

क्या हुआ?

प्रभु यीशु के 'महान आदेश' का, मेरे नाम से जाओ, मेरे अधिकार से जाओ, जगत के अंत तक मैं तुम्हारे साथ हूँ, इत्यादि का

अंधे भिखारी का प्रचार (मेरी कहानी)- बस ये जानता हूँ, कि पहले मैं अंधा था अब देखता हूँ

सामरी स्त्री का प्रचार (मेरी कहानी) - उसने सब कुछ जो मैंने किया बता दिया, कहीं यही तो मसीह नहीं है?

यदि सुसमाचार प्रचार का विरोध है तो ''अपनी कहानी'' अपना अनुभव, अपनी गवाही सुनाइये।

मेरी कहानी

- आपकी छोटी छोटी गवाहियां हैं जो आप बांटते हैं।

न किताब, पर्चे या बाइबिल की हाथ में आवश्यकता है

कहां और किस के साथ

किसी के भी साथ, घर में, दुकान में, गाड़ी में, पड़ोस में, खेत में, रिश्तेदारी में, चर्च में, किचन में, रास्ते में, जानकारों के साथ, अजनबी के साथ अपनी कहानी बांटें।

प्रभु यीशु ने प्रेम किया, आप भी प्रेम करें।

कोई झगड़े, हिंसा की बात का सवाल नहीं है,

कोई सुनना न चाहे तो चुप हो जाइए।

हर दिन की छोटी छोटी आशीषों का बयान करिए, रोटी, चंगाई, कपड़ा, मकान, दुर्घटना से बचाव, यात्रा का अनुग्रह, बच्चों की पढ़ाई, शांति का माहौल, सरकार, देश, हर बात के लिए परमेश्वर द्वारा दिया गया अनुभव बताइये।

बताइये किस तरह प्रभु यीशु ने वादा किया है यदि मेरे नाम से कुछ मांगोगे तो मैं तुम्हें दूंगा।

दूसरों के दुख दर्द को पूछिये ओर उन्हें बताइये यीशु नाम से वे भी मांग सकते हैं। उनके लिए प्रार्थना करिये।

(घटना– विदेश दौरे के दौरान में रास्ते में कॉफी के लिए रुका, दुकान में लंबी लाइन थी, इतने में एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति मेरे पास आकर धीरे से बोला, क्या आप को कोई दर्द या बीमारी तो नहीं? क्योंकि मैं आप के लिए प्रभु यीशु से प्रार्थना कर सकता हूँ, मैं चकित रह गया)

यदि मैं सुसमाचार सुनाऊं, तो मेरा कुछ घमण्ड नहीं; क्योंकि यह तो मेरे लिये अवश्य है; और यदि मैं सुसमाचार न सुनाऊं, तो मुझ पर हाय। 1 कुरिन्थियों 9:16

आज सवाल है–

क्या अपनी कहानी दूसरों को बताएंगे?

पाप और मोक्ष

मैं अक्सर गांवों में या शहरों में लोगों के बीच जाता हूँ और एक बात जो देखने में आती है वो यह कि आत्मिक बातें सरल नहीं लगतीं और परमेश्वर की पवित्र आत्मा का कार्य कठिन बातों को आसान बनाना है।

सरलता से आत्मिक बातों को समझें

- पाप
- शारीरिक स्वेच्छा
- कर्मों से मोक्ष नहीं
- मोक्ष का अर्थ
- पाप कहाँ से आया
- परमेश्वर के स्वरूप का अर्थ
- स्वतंत्रता जिसमें पाप का चुनाव भी संभव है
- अच्छे और बुरे के ज्ञान का पेड़ और फल
- प्रभु यीशु का कार्य
- विश्वास क्या है
- विश्वास में जीने के सहायक
- मोक्ष प्रार्थना
- आइए कुछ बातों को सरल करें

1. **पाप है क्या परिभाषा :** पाप मनुष्य की उस स्वेच्छा को कहते हैं जो परमेश्वर की इच्छा ओर उद्देश्यों के विपरीत है या मेल नहीं खाती।
2. **पापमय स्वेच्छा का अस्तित्व :** कर्मों में, विचारों में, मन में, हृदय में और उद्देश्यों में रहता है। मनुष्य पाप करने से पापी नहीं बनता पर पापी स्वभाव होने के कारण पाप करता है और पापी कहलाता है क्योंकि मनुष्य का स्वभाव पापी है वह सत्य, पवित्रता और परमेश्वर से अलग होकर भटका हुआ है। इसलिए एक या अनेक पापों से मतलब नहीं है। पाप और पवित्रता का मिश्रण नहीं होता है।
3. **अच्छे कर्म काफी नहीं हैं :** उदाहरण के लिए- यदि परीक्षा में पास होने के लिए 100 में 100 लाना है, तो जिसे 0 मिले और जिसे 99 मिले दोनों फेल हैं। इसी कारण अच्छे कर्मों की मात्रा बढ़ने से हमारी पवित्रता का पलड़ा भारी नहीं होता है। तो पहला निष्कर्ष ये कि अच्छे कर्म जुटाने से मोक्ष नहीं मिलेगा लेकिन इसके विपरीत

मोक्ष मिलने के द्वारा अच्छे कर्मों का जन्म होता है।

4. **मोक्ष का अर्थ :** परमेश्वर से विलय नहीं है पर मिलन है, संगत है। हमारी आत्मा का ईश्वर धाम में पहुँचना है। इस संसार से मुक्त होकर पवित्र और आनंदमय युग मे प्रवेश करना है।

5. **पाप आया कहाँ से :** बाइबल की पहली किताब उत्पत्ति में बड़े साफ शब्दों में इसका वर्णन है। परमेश्वर ने आदि में आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की और सारे जानवर, पक्षी, और ब्रह्मांड को बनाया। इसके बाद उसने मनुष्य को अपने स्वरूप में बनाया।

6. **परमेश्वर के स्वरूप का अर्थ :** परमेश्वर के गुण स्वभाव और इच्छा के अनुरूप जो स्वरूप है यही उसने मनुष्य को दिया। परमेश्वर के स्वभाव में स्वतंत्रता है और ये मनुष्य को भी दी गयी। इसका मतलब ये नहीं की मनुष्य दुष्कर्म का चुनाव करे।

7. **पाप के चुनाव की स्वतंत्रता :** यदि हमें बोलने की आजादी है इसका अर्थ ये नहीं की हम झूठ बोलें, या गाली दे सकते हैं। यदि हम ऐसा करते हैं तो अपने स्वतंत्र चुनाव करने के अधिकार का दुरुपयोग करते हैं। बाइबल का वो निर्णायक दिन जब मनुष्य पाप में गिरा और उसका संबंध परमेश्वर से टूट गया।

8. **अच्छे और बुरे के ज्ञान का पेड़ :** अदन का बाग परमेश्वर की सृष्टि थी। परमेश्वर ने हर भली बात बताई ओर हर खतरे से आगाह किया। हर वृक्ष का फल खा सकते हैं पर एक पेड़ जो बाग के बीच में था उसका फल खाने की मनाही थी। उसका नाम था अच्छे और बुरे के ज्ञान का पेड़ जिसके फल खाने से अच्छे और बुरे की सीमित जानकारी हो जाती है। ऐसा ज्ञान जो परमेश्वर के सत्य के विपरीत है।

नाम तो अच्छा है तो बुरा क्या था?

वो ये कि इसे खाकर मनुष्य पाप करने के लिए स्वतंत्र हुआ अपने निर्णय स्वयं करेगा, अच्छा बुरा क्या है वो अपनी समझ से स्थापित करेगा, परमेश्वर के नियम मिटाकर अपने कानून बनाएगा, अपना सत्य स्थापित करेगा और अच्छा और बुरा दोनों करने में सक्षम हो जाएगा।

अंजाम यही हुआ पहले मनुष्य आदम और हवा ने यही किया।

मनुष्य फल खाता है, आत्मिक रूप से मर जाता है और परमेश्वर और मनुष्य का संबंध टूट जाता।

9. **प्रभु यीशु ने क्या किया :** इस संसार में आकर परमेश्वर की इच्छा और जीवन और नियमों को प्रगट किया। परमेश्वर के प्रेम को प्रगट किया और हमें बताया कि परमेश्वर हमारा पिता है जो हमें मुक्ति देता है।

10. **विश्वास क्या है :** विश्वास एक अटूट निश्चय है जिसके होते हुए हम अपनी पापमय स्वेच्छा और उसके स्रोत शरीर के जीवन को अस्वीकार करते हैं। हम अपने पापी विवेक को अस्वीकार करते हैं ओर परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु के मुक्ति उपाय और वचनों पर भरोसा करते हैं।

मुक्ति विश्वास द्वारा ही मिल सकती है

परमेश्वर की आत्मा हमारे अंदर प्रवेश करे, और ये विश्वास द्वारा संभव होता है। और सही मायने मे ये एक नया जन्म का अनुभव है क्योंकि हमारे शरीर में परमेश्वर का अंग निवास करने लगता है।

हमारे कर्म कांड, दान पुण्य, सोना, चाँदी, धन दौलत, रीति रिवाज या धार्मिक कार्य पवित्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर से मिलन के लिए काफी नहीं हैं। उसकी कीमत कहीं अधिक है जिसे हम नहीं पूरा कर सकते हैं।

लेकिन खुशखबरी ये है कि वो कीमत प्रभु यीशु ने आकर अदा की है। पाप का मृत्युदंड उठाया है। बस अब उसकी दोहाई देना है, और दोहाई देने के पहले उस पर और उसके कार्य पर विश्वास करना।

11. **विश्वास के जीवन का मार्गदर्शन कैसे होता है :** पवित्र आत्मा परमेश्वर की इच्छा व सत्य को दिखाता है और उस पर चलने का आग्रह करता है। ये हमारे मन, हृदय और सोच विचार में सत्य की प्रेरणा देता है। परमेश्वर का वचन जो जीवित है, सत्य है और आत्मा है हमें समझ, बुद्धि और मुक्ति प्रदान करता है। भजन 119

12. **मोक्ष प्रार्थना :** प्रभु यीशु मेरा पूर्ण विश्वास है कि आपने मेरे पापों के बदले पवित्र खून बहाया है, मुझे माफी, नया जीवन और अपनी आत्मा का दान देकर मुक्ति प्रदान करो।

आमीन!

शिष्य थॉमसन

तीन सूत्रीय यीशु जीवन

(हमारा जीवन कैसा हो?)

आज हम मसीही कहलाते हैं
पर सवाल हैं
क्या हमने प्रभु यीशु का जीवन पाया है?
शायद

- ज्ञान है पर जीवन नहीं है
- क्रिया-कर्म हैं पर आज्ञापालन नहीं है
- विश्वास है पर अनुभव नहीं है
- शिक्षाएं हैं पर प्रेम नहीं है
- सत्य है पर अनुग्रह नहीं है
- धर्म है पर मुक्ति नहीं है

ऐसा क्यों?

इसलिए कि हमने प्रभु यीशु की बुलाहट को सही तरह से नहीं सुना है।
उसने कहा है
यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे तो अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले लूका 9:23
तीन सूत्र का जीवन है और इसी क्रम में इसे अपनाना होगा
सूत्र 1. स्वेच्छा का इन्कार करना होगा
सूत्र 2. हमें अपना स्वयं का क्रूस उठाना होगा
सूत्र 3. परमेश्वर की इच्छा जानकर हर दिन उस पर चलना होगा

1. अपने आप से इनकार करे

हमें ''मैं'' या ''अहं'' केंद्रित जीवन त्यागना होगा संसार, शैतान और शरीर की इच्छा को त्यागना है, अपने अधिकारों के लिए नहीं लड़ना है। संसार के उस आनंद को छोड़ना है जो हमे परमेश्वर से दूर ले जाता है। शरीर की लालसा, आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमंड धन संपत्ति और वैभव पर भरोसा, छोड़ना है 1 यूहन्ना 2:16 रोमियों 6:11

2. अपना क्रूस प्रतिदिन उठाए

दुख उठाने को तैयार रहे। पवित्र जीवन जीने की राह में दुख, क्लेश, नुकसान, हिंसा और जान तक खोने को तैयार रहे।

कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नँगाई, या जोखिम, या तलवार? रोमियों 8:35

3. मेरे पीछे चला आए

परमेश्वर की इच्छा हर समय जानकर उस पर अमल करना है।

प्रभु यीशु ने कहा मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं पर हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुँह से निकलता है जीवित रहेगा। मत्ती 4:4

परमेश्वर का वचन देहधारी होकर हमारे बीच रहा लेकिन आज प्रभु यीशु शरीर में हमारे बीच नहीं हैं पर उनके वचन हमारे साथ हैं। प्रभु यीशु में जीवन था और वो जीवन मनुष्य का मार्गदर्शन या ज्योति था यूहन्ना 1:4

प्रभु यीशु ने स्वयं इन तीनों सूत्रों पर अमल किया

1. प्रभु यीशु ने परमेश्वर के तुल्य होकर भी मनुष्य रूप धारण कर हमारे बीच डेरा किया। वह सेवक बनकर आया, वह कंगाल बनकर आया, और शून्य बन गया। फिलि. 2:6-7 यूहन्ना 1:14
2. प्रभु यीशु ने क्रूस उठाया और हमें मुक्ति देने के लिए मृत्युदंड स्वीकार किया। यूहन्ना 19:17-18
3. प्रभु यीशु ने कहा ''मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु मेरे भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से उतरा हूँ'' यूहन्ना 2:6-7, इब्रानियों 10:7

आज सवाल है-

क्या आपका मसीही जीवन इन तीन सूत्रों पर आधारित है?

यीशु भक्ति आराधना
भजन व मनन

I.	गीत व भजन	11
II.	100 विषयों का सरल अर्थ	115
III.	आज सवाल है – लेख	155
IV.	संदेश सूची/सुसमाचार	335
V.	क्रूस यात्री कविता संग्रह	343

गीत सूची

क्रम	गीत	गीत नं.
1.	अच्छा चरवाहा यीशु	1
2.	अपना बोझ प्रभु पर डाल	263
3.	अपनी शाँति, तुम्हें देता हूँ	10
4.	अपनों को तो इस दुनिया में	264
5.	आओ जग के लोग सब ही	2
6.	आओ हम यहोवा का, धन्यवाद करें	11
7.	आओ हम यहोवा के लिये	15
8.	आखरी नरसिंगा फूंका जाने वाला है	291
9.	आराधना में है छुटकारा	3
10.	आराधना हो आराधना	8
11.	आराधना हो आत्मा से	21
12.	आके देखो सारे लोगों	4
13.	आज का दिन यहोवा ने बनाया है,	5
14.	आदि और अन्त तू ही है, अल्फा	6
15.	आवाज़ उठायेंगे, हम साज़ बजायेंगे	7
16.	आशीष तुम से चाहते हैं	9
17.	आशीषों की बारिशों में हम चलें प्रभु	313
18.	आने वाला यीशु के जल्द हमारा	12
19.	आनन्द है महा आनन्द है	13
20.	आनन्द आनन्द आनन्द है	14
21.	आनन्द मनायें आओ आनन्द मनायें	19
22.	आनन्द से भर कर जायेंगे हम सब	20
23.	आया मसीह दुनिया में तू	16
24.	आया है यीशु आया है	17
25.	आसमानों में है	18
26.	आंसू कब मिटेंगे	22
27.	इंजील की दुनिया में	23

क्रम	गीत	गीत नं.
28.	उपहार में भेंटें अपनी	24
29.	उस मसीह का हम नमन	26
30.	उसका एक वादा है	25
31.	उसकी महिमा करो बंधन टूट जाएंगे	282
32.	एक आग हर दिल में हम को	29
33.	ऐ गमजदा परेशान, होता है क्यों	258
34.	ऐ मेरे दिल, क्यों डर रहा	27
35.	ऐ मसीह तुझसे अरमान करूँ	28
36.	ऐ राही तू, उठाकर क्रूस बढ़ता	301
37.	ओ हो मसीह आया जमीन पर	30
38.	कौन बचायेगा, मुझको छुड़ाएगा	31
39.	कौन हमको जुदा उससे कर	32
40.	कमज़ोर दिल की, ताकत है यीशु	278
41.	क्रूस उठाकर, खून बहाकर	33
42.	क्रूस हमें दे दो, काँधे पर हम	34
43.	क्रूस को धारण कर, सर्वनिछावर	35
44.	क्रूस पर, क्रूस पर, है ये कौन	36
45.	करते हैं तेरी हम स्तुति	37
46.	कलवरी के पास खड़ा हो	38
47.	कलवरी का वायदा निभाते हम	269
48.	कलवरी पर यीशु मुआ	314
49.	करुणा से बुलाया है और	39
50.	कठिन प्रभु तुझसे कुछ नहीं है	40
51.	कितना हसीन वायदा ये किया	41
52.	क्या दे सकता हूँ, क्या ला सकता	285
53.	क्या दिन खुशी का आया	42
54.	खुदा से माँगो मिलेगा	47

क्रम	गीत	गीत नं.
55.	खून अपना बहाके-कीमत मेरी	43
56.	खूबसूरत है मसीह तू	280
57.	खुल जायेंगी किताबें, जब भी हिसाब	45
58.	खुशी खुशी मनाओ	44
59.	खुशियों की बहार लिए	46
60.	गाओ-गाओ जय के गीत गाओ	268
61.	गाओ गाओ रे अम्बर धरती	277
62.	गाते बजाते जायेंगे हम	48
63.	गिन गिन के स्तुति करूँ	49
64.	गिन गिन के स्तुति करूँ मैं	50
65.	गुण गाए उस प्रभु के	287
66.	घर-घर आये यीशु नाम	51
67.	चखकर मैंने जाना है	279
68.	चरणों में हम तेरे आते हैं	276
69.	चलें हम खुशियाँ लेकर यीशु की	52
70.	चले हो तुम खुदा के साथ	53
71.	चले जाना है, दूर से दूर तलक	54
72.	चार दिन की जिन्दगी है	55
73.	चाहे तुमको दिल से, गायें ये गीत	56
74.	छू मुझे जैसा भी हूं, अपनी हजुरी से	296
75.	छू मुझे छू खुदा रूह मुझे छू	297
76.	जब तू जुम्बिस करे हम पर छाया रहे	67
77.	जब से प्यारा यीशु आया, मेरा जीवन...	62
78.	जय देनेवाले प्रभु यीशु को	284
79.	जय बोलो जय बोलो	293
80.	जय यीशु, जय जय यीशु	57
81.	जय जय नाम येशु नाम	253
82.	जय जय प्रभु यीशु की	63
83.	जय-जय यीशु, जय-जय यीशु	64
84.	जायेंगे यीशु के पीछे हम, जायेंगे	58
85.	जायेंगे हम यीशु के पास	312
86.	जी उठा तारणहारा मसीह	59
87.	जीवन का जल हमें दे दे प्रभु	60
88.	जीवन से भी उत्तम, तेरी करुणा	70
89.	जागो सोने वालों वक्त जाने लगा	68
90.	जंगली दरख्तों के दर्मियान	61
91.	जैसा मैं हूँ बगैर एक बात	65
92.	जगत के ज्योत प्रभु यीशु	299
93.	जगत में आया है तारणहार	66
94.	जिन्दा है प्रभु हमारा, जिन्दा है प्रभु	267
95.	जिन्दगी मेरी बदल गई	69
96.	जो क्रूस पर कुर्बान है, वो मेरा	71
97.	झूमो नाचो खुशी से आज	283
98.	डरेंगे नहीं, मौत से कभी	72
99.	तुम जगत की ज्योति हो	73
100.	तेरे चरणों पर शीष नवाते	307
101.	तेरे बिना कहाँ जाऊँ मैं	308
102.	तेरे मार खाने से यीशु मैंने	74
103.	तेरे सन्मुख शीष नवाते, हे जग	75
104.	तेरे ज़ख्मों को हम	76
105.	तेरे दिल में मुझको जगह मिली	77
106.	तेरे पास आता हूँ	78
107.	तेरे लहू से पाप धोता हूँ	79
108.	तेरे लहू से, मुझे धो ले तू प्रभु	80
109.	तेरा प्यार है महान, तेरा प्यार है	81
110.	तेरा हो अभिषेक	82
111.	तेरा लहू तेरा लहू, तेरा लहू पाक	275
112.	तेरी आराधना करूँ.....2	83

क्रम	गीत	गीत नं.
113.	तेरी इच्छा पूरी हो जाए	85
114.	तेरी है ज़मीं, तेरा आसमां	257
115.	तेरी महिमा हम गायें मेरे यीशु	84
116.	तेरी भक्ति करने आए हम यीशु	286
117.	तन मन और धन उसे दो	86
118.	थोड़ा समय है बाकी	87
119.	देखो देखो कोई आ रहा है	88
120.	देखो मैं दुनिया के अंत तक	89
121.	दिल मेरा ले ले प्यारे यीशु	90
122.	दिल से गाते बजाते रहो	91
123.	दिन में बादल का छाया बना	92
124.	दुनिया में सबसे प्यारी पुस्तक	93
125.	दुनिया का डेरा छोड़कर, एक दिन	94
126.	दुनिया के कोने-कोने में	95
127.	दीपक हम तेरे हैं प्रभु	96
128.	दीप जले प्रभु नाम रहे	97
129.	धन्य तुम्हीं प्रभु, यीशु मसीह मेरे	98
130.	धन्य नाम प्रभु यीशु सुनकर	99
131.	धन्यवाद के साथ स्तुति	306
132.	न कभी वो भूलेगा, न कभी वो	100
133.	न तो बल से न शक्ति से	101
134.	नया जीवन होगा, कैसा सुहाना	102
135.	नन्हे मुन्ने बच्चों आओ चलें	103
136.	नया हम गीत गायेंगे	104
137.	नीले आसमान के पार जाएंगे	105
138.	नाम लियो रे नाम लियो रे	106
139.	नारे लगाओ और गाओ रे	290
140.	नज़र उठा कर ज़रा तुम देखो	309
141.	निर्बल पापी, हारे हुए हम	107
142.	पग पग बढ़ते जाना है	108
143.	पाक रूह हम यीशु के प्यासे हैं	109
144.	पाप का बन्धन तोड़ा गया,	110
145.	पावन, प्रभु तुम, शरण तुम्हारे	111
146.	प्रभु का आनन्द है मेरी ताकत	112
147.	प्रभु का धन्यवाद करूँगा	113
148.	प्रभु का दर्शन, यीशु का दर्शन	114
149.	प्रभु ख्रीस्त मेरे स्वामी मन के	259
150.	प्रभु मेरा चरवाहा, प्रभु मेरा	115
151.	प्रभु तोरे मन्दिरों में पूजन करूँ	116
152.	प्रभु महान् विचारूँ कार्य तेरे	117
153.	प्रभु तेरा प्यार सागर से भी है गहरा	118
154.	प्रभु परमेश्वर तू कितना भला है	119
155.	प्रभु मुझको बना, तू अपना पवित्र	120
156.	प्रभु यीशु आये, जगत में आए	302
157.	प्रभु यीशु बचा लो हमारे प्राण...	310
158.	परम पिता की हम स्तुति गायें	121
159.	परमेश्वर पिता परमेश्वर	126
160.	पवित्र, अति पवित्र स्थान में ले चल	122
161.	पवित्र आत्मा आ, पवित्र आत्मा	123
162.	पावन है वह प्रभु हमारा	124
163.	पीछे पीछे यीशु तेरे हम चले	125
164.	प्रार्थना में जो कुछ माँगा	127
165.	फिर से वो आग बरसा दे	128
166.	पल्ला तेरा फड़या ते, पार लग	274
167.	प्यारो हिम्मत बांधो आगे बढ़ो क्रूस	129
168.	फिर से वो आग बरसा दे, फिर से	254
169.	बोलो जय मिलकर जय,	131
170.	बरकत और इज़्ज़त और जय तेरी	132

क्रम	गीत	गीत नं.
171.	बादलों पे यीशु जब आओगे तुम	133
172.	बोल येशु मसीहा जय...जय...	273
173.	बिजलियाँ चमकेंगी, तुरहियाँ	130
174.	बिन यीशु हो नहीं निस्तारा	289
175.	बिनती सुनले यीशु प्यारे	134
176.	बड़ी भोर को तेरे दर्शन को मैं	135
177.	भेज अबर रूह का, भेज अबर रूह	272
178.	भजने आए हैं पिताजी	136
179.	भजो नाम जपो नाम	256
180.	भजो मीठा नाम, प्रभु यीशु	137
181.	भजन करूँ, मैं भजन करूँ	138
182.	भजता क्यों नहीं रे मन मूरख	139
183.	मैं तो प्यार की नौका में	140
184.	मुझको यीशु मसीह मिल गये हैं	141
185.	महफिल मसीहा की	142
186.	मुक्तिदाता यीशु नाम	143
187.	मेरा एक ही मित्र यीशु	161
188.	मेरा मन धो देना प्रभु	162
189.	मेरा प्रभु जन्मा, प्यारा यीशु जन्मा	163
190.	मेरा यीशु है कितना महान्	164
191.	मेरी आँखें खोलो यीशु मसीह	144
192.	मेरी हो गई मसीह से मुलाकात	292
193.	मेरो मन लागो	145
194.	मेरे गीतों का विषय, तू मेरी	154
195.	मेरे हाथों को यीशु थामो	155
196.	मेरे प्रभु, जग करतार मोहे अपने...	156
197.	मेरे जीवन का मकसद तू है	146
198.	मेरे जीवन में यीशु तेरा नाम	295
199.	मेरे गुनाह की ली तूने सजा	281

क्रम	गीत	गीत नं.
200.	मेरे प्यारे यीशु, आ भी जाओ	311
201.	मेरे दिल में नया गाना	166
202.	मेरे महबूब प्यारे मसीहा	165
203.	मेरे मन कर ले तारीफ	167
204.	माँगो तो मिल जायेगा	147
205.	मुक्ति दिलाये यीशु नाम	148
206.	महिमा से तू जो भरा हुआ	149
207.	मन का दीप जला जीवन दीप	150
208.	मन तो प्रभु का मन्दिर है	151
209.	मन मन्दिर में बसने वाला	152
210.	मसीह तू हमको बचा ले	157
211.	मसीही जिन्दगी, आनन्द की जिन्दगी	158
212.	मिलकर हम सन्ना तेरी गाते	159
213.	मिलती है जय हमको तुझसे	160
214.	मैं आता हूँ तेरे पास, प्रभु यीशु मेरे	168
215.	मैं यीशु के साथ नूर में चलूंगा	153
216.	मारा गया गाड़ा गया	294
217.	ये जीवन है क्या, तेरे बिना मसीहा	265
218.	ये दुनिया बाज़ार है	169
219.	यीशु आये गाँव समरिया में	170
220.	यीशु के नाम से थर-थर काँपें	171
221.	यीशु के पीछे मैं चलने लगा	172
222.	यीशु के संग संग चलें	185
223.	यीशु का नाम है सारी ज़मीन पर	173
224.	यीशु का दरबार रे, मोहे	174
225.	यीशु का नाम सुखदाई	181
226.	यीशु का नाम है, सारी जमीन पर,	182
227.	यीशु का प्रेम है, जीवन का आधार	183
228.	यीशु का हाथ-हाथों में लेके	184

क्रम	गीत	गीत नं.
229.	यीशु को मैं सब कुछ देता	186
230.	यीशु ने अपना खून बहाके	196
231.	यीशु ने कलवरी दु:ख क्यों सह	175
232.	यीशु ने हमें छुड़ाया है	187
233.	यीशु तू महान है, यीशु तू अच्छा है	262
234.	यीशु तू सबसे प्यारा	288
235.	यीशु तेरा नाम, है कितना सुन्दर	176
236.	येशु तेरा नाम सबसे ऊँचा है	177
237.	यीशु तेरी प्रेम कहानी	178
238.	यीशु है मेरी पनाह, वही है मेरी	180
239.	यीशु मेरा हाथ न छोड़ेगा	188
240.	यीशु है सच्चा गड़रिया	179
241.	यीशु रखना हमें, साये में अपना	189
242.	यीशु राजा मुक्तिदाता	190
243.	यीशु बुला रहा है	191
244.	यीशु लियो तेरो नाम	192
245.	यीशु नाम मिला	315
246.	यीशु नाम में उद्धार हमको	193
247.	यीशु मसीह तोरे प्रेम की खातिर	303
248.	यीशु मसीह पैदा हो गए	195
249.	यीशु मसीह दिलावर है	198
250.	यीशु मसीह, तेरे जैसा है कोई नहीं	199
251.	यीशु बुलाता तुम्हें	197
252.	यीशु सलीब पर मुआ	194
253.	यहोवा चरवाहा मेरा	200
254.	यहोवा जिन्दा खुदा, वह हमारा	201
255.	यादें जब सताए, यीशु को याद	202
256.	यात्री हूँ मैं जग में प्रभु जी	203
257.	रक्तम जयम-रक्तम जयम	204
258.	राजाधिराज महिमा के साथ	205
259.	राजाओं का राजा यीशु राजा	206
260.	राजा यीशु आये हैं सब मिलके	207
261.	रब्ब की होवे सन्ना हमेशा	208
262.	रब्ब खुदावन्द बादशाह है	209
263.	रहनुमाई जिस तरह प्रभु ने की	210
264.	रूहे पाक खुदावंद आ तू आ	211
265.	ले चल मुझे, ले चल मुझे	255
266.	लाखों हज़ार जुबानो के साथ,	212
267.	लहू के बगैर न शिफ़ा न नजात	271
268.	लहू बहाने वाले यीशु, तेरी	213
269.	वन्दे प्रभु, वन्दे मसीह	214
270.	वन्दना करते हैं हम	215
271.	वो प्रभु है, वो प्रभु है	216
272.	शान्ति का राजकुमार, आया है	304
273.	शांति का राजा आ रहा है	230
274.	शून्य से लेके तूने मुझे	220
275.	सर नवाते हैं हम, ख्रिस्त आते हैं	217
276.	सबसे ऊँचा...	218
277.	संकट के दिन गाऊंगा	219
278.	सब मिलकर गायेंगे महिमा यीशु...	221
279.	सब मिलकर जयजयकार करो	298
280.	सम्भाल प्रभु जी, जीवन के हर पल	260
281.	साष्टांग प्रणाम हम करते हैं	222
282.	सिय्योन देश हमारा है देश	223
283.	सिय्योन के सफर में	224
284.	स्तुति आराधना ऊपर जाती है	226
285.	स्तुति करो प्रशंसा करो	227
286.	स्तुति हो यीशु तेरी	225

क्रम	गीत	गीत नं.
287.	स्वर्गीय आशीष दे	228
288.	स्वर्गीय पिता हम आते हैं	229
289.	सारी सृष्टि के मालिक तुम्हीं हो	231
290.	सहारा मुझको चाहिये	232
291.	सुन लो मेरे भाईयों मसीहा मेरा	233
292.	सुना, चरवाहों ने दूतों का पैगाम	261
293.	सम्भालने वाला प्रभु मैं हूँ	234
294.	सुबह सुबह स्तुति बलि	235
295.	सेनाओं का यहोवा प्रभु महान	266
296.	सेनाओं का यहोवा हमारे संग-संग	236
297.	सदा मैं स्तुति करूँगा	237
298.	हृदय भेंट चढ़ाएं प्रभु को	238
299.	हो जय जयकार, जय जयकार	239
300.	होके कुर्बान हर गुनाह से	240
301.	होवेगी बरकत की बारिश	241

क्रम	गीत	गीत नं.
302.	हे पवित्र आत्मा शक्ति हमें देना	252
303.	हे बोझ से दबे और थके लोगो	305
304.	हे यहोवा, बल मेरे मैं	242
305.	हे यीशु तेरा, प्रेम कैसा महान है	270
306.	हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह	245
307.	हम होशन्ना गाते हुए जाएंगे सब	300
308.	हम से बरनी न जाये, मसीह...	243
309.	हम जायेंगे, हम जायेंगे	244
310.	हम हालेल्लुय्याह, हालेल्लुय्याह	247
311.	हम यीशु मसीह के चेले हैं	248
312.	हम तो जलते दीप हैं	249
313.	हमको यहाँ से ले जाने...	246
314.	हाल्लेलुय्याह स्तुति गाएं हम	250
315.	हा-हा हाल्लेलुय्याह मिलकर गाएं	251

1.

1. अच्छा चरवाहा यीशु 2
कोई घटी ना होगी मुझको,
यीशु मेरे साथ है
हरी चराइयों में ले जाता,
जो झरनों के पास है

अच्छा चरवाहा यीशु, अच्छा चरवाहा
प्राण देने वाला वो ही मेरा रखवाला
अच्छा चरवाहा मेरा, अच्छा चरवाहा
अच्छा चरवाहा यीशु, अच्छा चरवाहा

2. अंधियारी हो वादी फिर भी,
निर्भय होकर जाऊं मैं
मौत के साए में आऊं जब,
फिर भी ना घबराऊं मैं
3. शब्द सुनूं तेरा मैं हरदम,
पीछे पीछे आऊं मैं
काँधे पर ले लेता मुझको,
थक जाऊं जब राहों मैं
4. खून बहाए जान बचाए,
यीशु ही उद्धार है
जीवनदाता जग का त्राता
यीशु ख्रीस्त महान है।
5. महिमा भक्ति और प्रशंसा के गुण युग गाएँगे
खून बहाने वाले मसीह के चरणों पे सिर को नवाएं

◆◆◆◆

2.

आओ जग के लोग सब ही
यीशु राजा बुलाता है

1. जग में जिसका स्थान नहीं है,
जग में जिसका मान नहीं है
राज तुम्हें देने के लिए,
यीशु राजा बुलाता है।
2. जग में तुम हो भूखे मरते,
जग में तुम हो प्यासे मरते
भोजन जल अब मुफ्त में देने,
यीशु राजा बुलाता है।
3. सिर पर कांटों का ताज निशानी,
छाप है उसकी बहती पसली
छिदे हाथ पसारे हुए,
यीशु राजा बुलाता है।
4. आओ भाइयो आओ बहनों,
आओ उसको परखो देखो
सारा भार उठाने के लिए,
यीशु राजा बुलाता है।

◆◆◆◆

3.

1. आराधना में है छुटकारा,
आराधना में है चंगाई
शरीर देह, आत्मा में
शांति आनंद देता है
जान से भी प्यार प्रभु-2
प्रार्थना करो आराधना करो,
वो अच्छा है कितना भला है-2
छुटकारा पायें हमेशा-2
हाल्लेलुय्याह

2. मांगो तो तुम्हें मिलेगा
ढूँढों तो तुम पाओगे-2
खटखटाओ खुलेगा, खुलेंगी
स्वर्ग की आशीषें-2
पाओ तुम उसे अभी..

3. प्रार्थना करो निरंतर
प्रार्थना करो विश्वास से-2
धर्मी जन की प्रार्थना,
विश्वास की प्रार्थना-2
खोलता है सारा बंधन...

◆◆◆◆

4.

आके देखो सारे लोगों,
मेरा यीशु जिन्दा है
वो जगत का उद्धार करता है,
पापी को बचाता है।

1. स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर आया
मानव से कितना प्रेम किया
मानव के बदले क्रूस उठाकर
खुद उस पर बलिदान हुआ।। (2)
2. अंधों को वो आँखें देता
लगंड़ों को वो चलाता
बीमारों को वो चंगा करता
मुर्दों को वो जिलाता।। (2)
3. करके वायदा वो गया है
जगत में फिर वो आएगा
धर्मियों को ले जाएगा
पापियों को छोड़ देगा।। (2)

◆◆◆◆

5.

आज का दिन यहोवा ने बनाया है,
हम इसमें आनन्दित हों, आनन्दित हों।

1. प्रभु को महिमा मिले,
चाहे हो मेरा अपमान (2)
वह बड़े मैं घटूं, रहे इसी का ध्यान। (2)
2. स्तुति प्रशंसा करें,
क्यों न कुछ होता रहे, (2)
उसको हम भाते रहें,
चाहे जहाँ भी रहें। (2)
3. आता हूँ तेरे पास,
मुझको है तुझसे आस, (2)
मुझको कबूल कर ले,
पापों से शुद्ध कर दे। (2)
4. जीवन से ज्योति जले,
जीवन यह ऐसा बने (2)
ज्योति में चल हम सकें,
यही दुआ है तुझसे। (2)

◆◆◆◆

6.

1. आदि और अन्त तू ही है, अल्फा और
ओमेगा तू ही है
दूतों की स्तुति तू ही है,
बुद्धि और सब ज्ञान तू ही है

यीशु तू महान् है, यीशु तू सच्चा है
यीशु तू ज़िन्दा है, यीशु तू धन्य है
दूतों की स्तुति तू ही है,
बुद्धि और सब ज्ञान तू ही है

2. जीवन मेरा पापों से भरा,
जग अंधेरा और अशुद्ध सारा
मेरे पापों से बचाने को,
मेरे लिये जीवन दिया है।
3. सारे गुनाहगारों के लिये
अपना खून बहाया यीशु ने
खाई कोड़ों की मार भी,
दी सलीब पर उसने अपनी जान।

◆◆◆◆

7.

**आवाज़ उठायेंगे, हम साज़ बजायेंगे
है यीशु महान् अपना ये गीत सुनायेंगे**

1. संसार की सुन्दरता में है रूप तो तेरा ही
इन चाँद सितारों में है अक्स तो तेरा ही (2)
महिमा की तेरी बातें हम सबको बतायेंगे
2. दिल तेरा खज़ाना है एक पाक मोहब्बत का
थाह पा न सका कोई सागर है तू
उल्फत का (2)
हम तेरी मोहब्बत से दिल अपना सजायेंगे
3. न देख सका हमको तू पाप के सागर में
और बनके मनुष्य आया आकाश से सागर
में (2)
मुक्ति का तू दाता है दुनिया को बतायेंगे।

◆◆◆◆

8.

1. आराधना हो आराधना
खुदावन्द यीशु की आराधना (2)
2. शान्तिदाता की आराधना (2)
मुक्तिदाता की आराधना
3. पवित्र दिल से आराधना (2)
प्रेमी मन से आराधना
4. मेरे मसीहा की आराधना (2)
जीवनदाता की आराधना
5. दूतों के संग आराधना (2)
स्तुति प्रशंसा आराधना

◆◆◆◆

9.

**आशीष तुम से चाहते हैं,
हे स्वर्गीय पिता हम आते हैं**

1. ना कोई खूबी है न लियाकत,
बख्शो हमको अपनी ताकत
खाली दिलों को लाते हैं,
हे स्वर्गीय पिता हम आते हैं।
2. तुम हो शक्तिमान् प्रभु जी,
दया भी है अपार प्रभु जी
स्तुति हम सब गाते हैं,
हे स्वर्गीय पिता हम आते हैं।
3. हमने बहुत खताएं की हैं
रहे निकम्मे जफाएं की हैं
शर्म से सिर झुक जाते हैं,
हे स्वर्गीय पिता हम आते हैं।

◆◆◆◆

10.

**अपनी शाँति, तुम्हें देता हूँ,
संसार पर भी, विजय देता हूँ
शाँति-3, अपनी सच्ची शाँति**

1. दुनिया में तुमको दु:ख होगा
कष्ट सदा ही, क्लेश आयेगा

डर न जाओ
मैंने जगत को, जीत लिया
2. न हो व्याकुल, भरोसा रखो
पिता पर वा मुझ पर, विश्वास करो
जगह तैयार, तो
लेने तुम्हें, ज़रूर आऊँगा
3. संसार अशांत है घबराना ना
करे जब वो बैर तो, डर ना जाना
संसार के नहीं तुम
मैंने तुम्हें, बचा लिया है।
4. जाँ देने तक तुम धीरज धरना
ढ़ाँढ़स बाँधो तुम, हिम्मत रखना
आज्ञा मानो तो
पिता के प्रेम में, बने रहोगे ?

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

11.

आओ हम यहोवा का, धन्यवाद करें
अपने सारे हृदय से, वन्दना करें
उसके फाटकों में, स्तुति करें और ललकारें

1. जिसने बनाया हमें, वो है हमारा आधार
जिसने दी हमको स्वांस,
वो है हमारा उद्धार
उसकी हो जय जय हो आराधना
वो है सभी का प्रधान (2)
2. अपने सारे तन मन से हम, प्रभु की महिमा
करें वो है शिफ़ा और नज़ात,
उसकी प्रशंसा करें,
वो है जग का त्राता और तारणहार
उसकी हो जय जय सदा (2)

◆◆◆◆

12.

आने वाला यीशु है जल्द हमारा
उठो सोने वालो वो द्वार पर खड़ा

1. घर बनाने जाता हूँ फिर से जाऊंगा
गम करो न तुम साथ लेकर जाऊँगा
2. जो लिखा वचन में मशाल ले चलो
अपनी कुप्पियों में तुम तेल देख लो=2
3. स्वर्गदूत तुरहियों के साथ हाथ में
बादलों पर दूल्हे की बरात देख लो=2
4. वध हुआ वो मेम्ना है यीशु हमारा
बैठा है सिहाँसन पर मुक्तिदाता=2
5. सूर्य नहीं होगा न चन्द्रमा वहा
यीशु ज्योत होगा ना रात है वहाँ=2
6. आंसू पोंछ देगा दुखदर्द न वहाँ
रोना फिर न होगा युगानयुग जहाँ
7. कोटि-कोटि घुटने झुक जायेंगे जहाँ
नया गीत होगा हर होंठ पर वहाँ=2

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

13.

आनन्द है महा आनन्द है
आश्चर्यकारी यीशु ने
मेरे पापों को है क्षमा कर दिया।

1. सर्वशक्तिमान मेरे सच्चे प्रभु जी,
सर्व सदा स्तुति करूँ मैं तेरी।
2. बन्दीगृह से मैंने पुकारा
स्वर्ग से तूने उत्तर दिया।
3. माँगने से बढ़कर प्रभु देता है
समझ से बाहर कार्य करता है।

◆◆◆◆

14.

1. **आनन्द आनन्द आनन्द है (2)**
अबदी मोहब्बत से हमें प्रेम किया
अपना बेटा हमें बना लिया
यह हमारा सौभाग्य है।
हल्लिलूयाह सदा गायेंगे,
हम प्रभु यीशु के लिए
आनन्द आनन्द आनन्द है (2)
2. आनन्द के तेल से मसह किया है
पवित्र स्थान में दाखिल हुआ
3. पाप-घटा है छाई हुई,
रूह मेरी घबराई हुई।
सुन ले तू इस दिल की दुआ।

◆◆◆◆

15.

आओ हम यहोवा के लिये
ऊँचे स्वर से गाएं
अपनी मुक्ति की चट्टान का
जय जयकार करें

1. धन्यवाद करते हुए उसके सम्मुख आयें
भजन गाते हुए उसका जय जयकार करें
2. क्योंकि यहोवा महान ईश्वर है
सारे देवताओं के ऊपर महान राजा है
3. क्योंकि वो हमारा परमेश्वर है
और हम उसकी प्रजा उसके
साथ की भेड़ें हैं

◆◆◆◆

16.

आया मसीह दुनिया में तू,
पापियों को बचाने को,
लाये ईमान जो बेटे पर,
करेगा पार इस दुनिया को।

1. दुनिया गुनाहों में डूब रही थी,
सादिक गुमराह हो रहे थे,
छोड़ा आसमान, बना इन्सान,
मिली नजात, इस दुनिया को।
2. बैतलहम के मैदानों में,
गड़रिये रात सो रहे थे,
सुना फरिश्तों की जुबान,
पैदा हुआ ख्रीष्ट निधान।
3. आलिमों ने किताबों से,
पढ़ी पैदाइश की तफसील,
चल दिये वह भी ऊँटों पर,
तारे हयात का पीछा कर।
4. समुद्र की सब लहरों पर,
दुनिया की हर जुबानों पर,
है उसका नाम, है उसका काम,
सारा जहाँ लाये ईमान।

◆◆◆◆

17.

आया है यीशु आया है
मुक्ति ले साथ आया है
1. जंगल में मंगल दूत मिल गाते
जय-जय हो प्रभु जय-जय हो
शान्ति और मेल लाया है
2. देखन गड़रिये चले रात को

दूतों से सुन के दूतों से
मसीह मरियम का जाया है

3. पूर्व देश से चले मजूसी
तारे से देखो तारे से
पता यीशु का पाया है

4. यरूशलेम जा, पूछन लागे
किस घर जी, राजा किस घर जी
मुक्ति का राजा आया है

5. बैतलहम में मसीह को पाकर
लोबान मुर्र, सोना, लोबान, मुर्र
नजर उसकी चढ़ाया है

6. दास सुना जब प्रेम मसीह
का तन मन से, लोगों, तन मन से
शरण यीशु की आया है।

◆◆◆◆

18.

आसमानों में है
मेरा भी एक मकान
उसमें रहेंगे हम जाके,
छोड़ेंगे जब ये जहान

1. मैं काहे घबराऊँ, मेरा भरोसा वही
उसने किया है ये वायदा,
वायदा है सच्चा सही
जगह बनाऊँगा जाके,
अपने पिता के यहाँ।।

2. लिखा गया है मेम्ने की,
पुस्तक में भी मेरा नाम
मुझ पापी पर जब हुआ था,
उसके पूजन के ये काम
उसने बचाया है मुझको,
वो है बड़ा मेहरबान।।

3. झूठे जहाँ में तसल्ली, कभी नहीं पाओगे
यीशु के पास बोझ लाओ,
तभी आराम पाओगे
उसके संग रहेंगे हम जाके,
छोड़ेंगे जब ये जहान।।

◆◆◆◆

19.

1. आनन्द मनायें आओ आनन्द मनायें
यीशु राजा मेरा हो गया
इस सृष्टि का पालनहारा
मेरे हृदय का राजा हुआ।।

आ...आ आनन्द है, परम आनन्द
क्या यह मेरा सौभाग्य है (2)
इस सृष्टि का पालनहारा
मेरे हृदय का राजा हुआ।।

2. मेरे बालकपन से उसने मुझे चुन लिया
मैं था भटका और दूर हो गया
उसकी करुणा ने फिर भी नहीं छोड़ा
नया जीवन मुझे दे दिया।।

3. मैं बना रहूँगा प्रेम में अपने प्रभु के
चाहे कोई भी बाधा पड़े
उसकी आज्ञा को नहीं भूलूँगा
जब तक उसका आना न हो।।

4. प्यारा प्रभु आयेगा संग में मुझे ले लेगा
ताकि उसके साथ मैं रहूँ
मैं मगन रहूँगा उसकी संगति में
वहाँ आनन्द ही आनन्द है।।

◆◆◆◆

20.

आनन्द से भर कर जायेंगे हम सब
गाते हुए सिय्योन की तरफ

1. सारे जगत में कोई आनन्द नहीं
   प्यारे प्रभु ने बताया सही
   दु:ख और मुसीबत उठाओगे प्यारो
   थोड़ी देर और अब बाकी रही।।
2. मिस्र को छोड़कर भाइयों पार चलो
   और बंजर जमीन में सिर्फ डेरा करो
   कनान के देश पर नजर उठाओ
   क्योंकि हमें यहां सदा रहना नहीं।।
3. मारा रफीदिम में, आओगे लेकिन
   यीशु पर पूरा भरोसा धरो
   वही ले जायेगा, वही बचायेगा
   वायदा कभी उसका, टलता नहीं।।
4. यीशु के साथ-साथ आगे बढ़ो
   और मिस्र की इच्छाओं को छोड़ो सभी
   तबेरा के बेदीनों के पापों में
   भाईयों तुम हरगिज मिलो ही नहीं।।
5. स्वर्ग पर हमारा वतन है एक ही
   जहाँ से आयेगा प्यारा मसीह
   सिय्योन के गीत हम गायेंगे मिलकर
   दु:ख और तकलीफ वहां होंगे नहीं।

◆◆◆◆

21.

आराधना हो आत्मा से,
आराधना हो सच्चाई से
हर एक चीज़ जिसमें हो प्राण
यहोवा की आराधना करे

1. यहोवा राफा वो है तेरा चंगाई देने वाला
   चंगा करता हाथों से छूकर आ तू उसके पास
   बहता उसका लहू, क्रूस के तले
   आये जो भी उसके पास देता वो छुटकारा
2. यहोवा शालोम वो है तेरा शांति देने वाला
   अब्दी आशीषों से वो भरेगा, तेरे जीवन को
   महासागर जैसी बाधाओं में खोलेगा द्वार
   पाप और श्राप होंगे दूर यीशु के लहू से
3. यहोवा निस्सी वो है तेरा विजय देनेवाला
   शत्रु तेरे घेरे तुझको तू न घबराना
   देख तेरे सामने प्रभु ने दे दी विजय
   छुटकारा केवल यीशु ही में है
4. मैं जीवन भर यहोवा के गीत गाता रहूँ
   बना रहूँगा जब तक मैं गाऊँ उसका भजन
   प्रभु की सेवा करूँ जब तक हो मुझमें जान
   चाहे सारी दुनिया करे मेरा अपमान

◆◆◆◆

22.

आंसू कब मिटेंगे
दर्द मेरे कब होंगे दूर
मुश्किलों के समय में
मुझको छुड़ाना प्रभु -2

1. इस जहां में कुछ भी नहीं,
   जो कमाया सब है बेकार,
   परदेशी हैं हम यहां,
   ये जगह हमारा नहीं।
2. हे प्रभु, तेरे संग रहने को,
   मन मेरा बहुत है व्याकुल,
   अब देर न कर प्रभु
   रुकने की शक्ति नहीं।

◆◆◆◆

23.

इंजील की दुनिया में
हम शम्मा जला देंगे
दुनिया को मसीहत का
परवाना बना देंगे

1. भटके हुए राही को, मंजिल का पता देंगे
   भूले हुए मांझी को, राहों का पता देंगे
   दुनिया को मसीहत की, हम शान दिखा देंगे
2. भारत में मसीहा के, हम फूल खिला देंगे
   दुनिया से नफरत के, कांटों को हटा देंगे
   हम दीन दुखियों की, तकलीफ मिटा देंगे
3. शैतान के हमलों को, मिट्टी में मिला देंगे
   तलवार मसीहा की, दुनिया में नचा देंगे
   हम ऐसे जवान हैं जो, दुनिया को हिला देंगे

◆◆◆◆

24.

उपहार में भेंटें अपनी (2)
प्रभु को चढ़ाना है (2)

1. जो भी हमारा प्रभु का सारा (2)
   जिसका उसको देना है (2)
   भण्डारी हम प्रभु के जग में
   दसवां ही लौटाना है। प्रभु को...
2. ख्रीष्ट यीशु ने स्वर्ग को त्यागा
   हमको प्रेम दिखाना है
   हिस्सा दो प्रभु को जो कुछ हो
   निज भेंट भी लाना है। प्रभु को...
3. ईश्वर की है कृपा भारी
   हमको धन्य दिखाना है
   सारा जीवन दे दो प्रभु को
   तब आशीषें पाना है। प्रभु को...

◆◆◆◆

25.

उसका एक वादा है, और वो निभाएगा
मुझको साथ ले जाने मेरा यीशु आएगा
मसीहा आएगा-5

1. वक्त वो जब होगा,
   कौन जाने कब होगा-2
   प्यार का मसीहा वो, पर जरूर आएगा
   प्यार का मसीहा वो तो जरूर आएगा
   मसीहा आएगा-5
2. जागते ही रहना तुम,
   तुम कभी न सो जाना 2
   दिल तो ले चुका है वो,
   रूह को लेके जाएगा
   दिल तो ले चुका है वो,
   रूह लेके जाएगा
   मसीहा आएगा-5
3. उसका इंतजार है,
   मुझको उससे प्यार है 2
   यीशु राजा आएगा, यीशु राजा आएगा
   यीशु राजा आएगा, यीशु आएगा
   मसीहा आएगा-5

◆◆◆◆

26.

उस मसीह का हम नमन, करते हैं सदा
जिसने जान देकर दी है, पापों से क्षमा

1. वो मसीह जो पानी पर, खुद ही चल पड़ा
   तूफ़ान और आँधी से ले, अपनों को बचा
   ज़िदगी की राहों पर, हो ना घबरा
   यीशु ख्रीष्ट साथ है, वो है मेहरबां

2. वो मसीह जो पाँव धोये, अपने शिष्यों के
कह रहा है जो बड़ा बने वही झुके
उस मसीह का कर नमन प्रणाम हम करें
सबके सेवक बन सकें, प्राण दे सकें

3. पापिनी स्त्री की जिसने, जान ली बचा
हर गुनाहगार को, मौका दे रहा
उस मसीह के कदमों पर, गिर सकें सदा
मन फिरायें पापों से, पालें हम शिफ़ा

4. सामरी स्त्री से यीशु ने यही कहा
आत्मा और सत्य से करो आराधना
ऐसे भक्त ढूंढ़ता, स्वर्ग का पिता
जीवन जल के स्त्रोत जो बन सकें यहाँ
(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

27.

ऐ मेरे दिल, क्यों डर रहा,
ऐ मेरे मन, क्यों रो रहा,
भरोसा रख यीशु मसीह पर
वो है तेरा चरवाहा

1. अंधियारी घाटी में, हो कर है जाना,
दिखती ना राह तुझे, ना है ठिकाना,
शत्रु के सामने, मेज बिछाता है,
जीवन की रोटी यीशु मेरा चौपान है

2. मौत की वादी है, काली वो घाटी है,
जान में जान प्रभु यीशु ले आता है,
यीशु चट्टान है, जीवन का दान है,
शान्ति का राजा मेरा परम प्रधान है,
(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

28.

ऐ मसीह तुझसे अरमान करूँ
अपने जिस्म को कुरबान करूँ

1. मेरा चलना, बोलना और
हर ख्याल तुझ को भाए
मेरी सूरत ऐ, मसीहा
तुझ सी ही होती जाए
ऐसी जिन्दगी, अरमान करूँ
अपने जिस्म को, कुरबान करूँ
2. न बनूं मैं जमाने सा,
पर मन बदलता जाए
मसीह हर दिन जिये मुझमें,
मेरा मैं मरता जाए
यही इच्छा जो है तुम्हारी,
उसको सुबहो-शाम करूँ
अपने जिस्म को कुरबान करूँ

◆◆◆◆

29.

एक आग हर दिल में हम को जलाना है
भटके हुए जीवन को, प्रभु से मिलाना है

1. संसार की आशा भरी नजरें हम ही पर हैं
उद्धार का संदेश भी काँधों के ऊपर है
एक दीप से लाखों दिये हमको जलाना है

2. इतने सरल से ये रास्ते कल न खुले होंगे
प्रचार के अवसर हमें हासिल नहीं होंगे
तैयार रहना कल हमें खुद को मिटाना है

◆◆◆◆

30.

ओ हो मसीह आया जमीन पर,
खुशी होती है सारे आमसान,
आसमान! आसमान!
आसमान! आसमान! आसमान!

1. अपने गल्ले की करते रखवाली
   गड़रिये बारी बारी हो जैसे पासबान।
   पासबान (5)
2. उन पर चमका, उजियाला बड़ावाला,
   कि जिससे हुआ रौशन, तमाम वह मैदान।
   वह मैदान (5)
3. एक लश्कर तब, आया आसमानी,
   सुनाई स्वर्गीय वाणी, बहुत ही खुश इलहान
   खुश इलहान! (5)
4. रब्ब को ऊपर बढ़ाई,
   नीचे सुलह सलामती,
   हो मिन्नत, हो राजी, सब इन्सान।
   सब इन्सान (5)

◆◆◆◆

31.

कौन बचायेगा, मुझको छुड़ाएगा-2
यीशु आ गया, सुनकर मेरी ये पुकार

1. मारा फिरा हूँ, घायल पड़ा हूँ
   दुनिया में यीशु, में गिर पड़ा हूँ
   मुझको उठाने आप आये हैं,
   ज़ख्मों को भरने, यीशु आये हैं
   प्यारे यीशु, प्रेमी यीशु, मेरे यीशु
2. हँसती है दुनिया, ताने देती है
   अपने पड़ोसी से, मैं कट गया हूँ
   घर में तिरस्कार, बाहर अंधेरा
   संभालो मुझे यीशु, मैं थक चुका हूँ
   प्यारे प्रभु, प्रेमी प्रभु, मेरे प्रभु
3. क्रूस पर चढ़ते हुए देखा है
   बहते लहू को मैंने छुआ है
   आप की आँखें मुझ पर लगीं उस
   मोहब्बत ने मुझको जीत लिया है
   प्यारे मसीह, प्रेमी मसीह, मेरे मसीह

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

32.

कौन हमको जुदा उससे कर पायेगा-
खून का प्रेम बंधन हमें बाँधेगा-

1. क्लेश आये सताव संकट हो या अभाव-
   मुझको यीशु के प्रेम से ना कर सके जुदा
2. आये क्यों ना अकाल नग्न-जोखिम तलवार
   ऊँचाई न गहराई सृष्टि की कोई भरमाई
3. ना ही जीवन ना मौत प्रधानता न स्वर्गदूत-
   वर्तमान न भविष्य, शक्तियाँ ना प्रेतभूत
4. जान देते हैं हम वध की भेड़ों तरह-
   प्रेम जयवंत है, यीशु के क्रूस का

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

33.

क्रूस उठाकर, खून बहाकर
तुमने किया हमें प्यार-यीशु
तुमने दिया उद्धार

1. सृष्टिकर्त्ता हमारे घर आये
   ज्योत जगत में लाये (2) ..... यीशु
   फिर भी न हम पहचाने

2. कोड़े लिये तुमने, कपड़े फाड़े हमने
काँटों का ताज पहनाये (2) .....यीशु
फिर भी न हम पछताये

3. कुचला सताया, झूठा ठहराया
विश्वास तुम पर न लाये (2) .....यीशु
फिर भी क्षमा हम पाये

4. धारा लहू की, कलवरी पथ से
बहती चली-चल आये (2) .....यीशु
जीवनदान दिलाये

(शिष्य थॉमसन)

♦♦♦♦

34.

क्रूस हमें दे दो, काँधे पर हम उठा लें
काँटे-ताज दे दो, हम सर पर अब सजालें -2

हम तो मर चुके हैं अब, यीशू इस जहान में -2
पीछे पीछे यीशू तेरे बढ़ते चले जाएँ रे

1. मान या सम्मान नहीं, चाहें तेरा नाम रे
हो जाए दर-दर पर मेरा, चाहे अपमान रे-2
सब कुछ हम अपना, निछावर किए जाएँ रे

2. शरीर की शक्ति को प्रभु, पूरा तुम मीटाय दे
भरोसा बस तुम्ही पर यीशू,
करना अब सिखाई दे -2
आत्मा ही तो जीवन,
अमृत का जल पिलाई दे

3. जी-उठे का अनुभव,
प्रभु हमको तुम कराई दे
हर समय अनुग्रह,
प्रभु हमको तुम दिलाई दे -2
अपना कर इनकार हम पीछे चले आएँ रे

(शिष्य थॉमसन)

♦♦♦♦

35.

क्रूस को धारण कर, सर्वनिछावर कर
दर्शन यीशु के करने चले
संसार को छोड़कर, अपना इन्कार कर
मरणहार देह, छोड़ चले

1. दुनिया ठुकराऐगी, हमको सतायेगी
परिवार छूटेंगे यहाँ (2)
फिर भी हम गायेंगे, हिम्मत न हारेंगे (2)
पीछे मसीह के चलते रहेंगे (2)

2. जो मेरे पीछे आना चाहे
अपनी सलीब वो साथ में लाये (2)
जो मेरा अपना, बनना चाहे (2)
अपनी खुदी को सूली चढ़ाये (2)

3. नम्र बनेगा जो, महिमा पायेगा
सेवा करेगा, पाँव धोयेगा (2)
जीवन खोएगा जो, मृत्युंजय होगा (2)
अनंत जीवन पायेगा (2)

(शिष्य थॉमसन)

♦♦♦♦

36.

क्रूस पर, क्रूस पर, है ये कौन लहूलुहान
मेरा स्वामी, मेरा नाथ, मेरे खातिर देता जान

1. इस महान प्यार को, मैंने ठुकरा दिया
इस महापाप को, हे प्रभु कर क्षमा

2. पाप से करने प्यार, जाऊँगा अब मैं क्या?
तेरी सन्तान बन, मैं प्रभु जीऊँगा

3. आये क्लेश कितने भी, हानि हो हर कहीं
क्रूस के प्रेम को भूलूँगा मैं नहीं।

♦♦♦♦

37.

1. करते हैं तेरी हम स्तुति
 हृदय की गहराइयों से
 यीशु तू ही है, तू ही है हमारा प्रभु।
 महिमा हो तेरी–हाल्लेलुय्याह
 महिमा हो तेरी
 ऊँचा और ऊँचा
 सबसे ऊँचा रहे तेरा नाम–2
2. आत्मा और सच्चाइयों से
 तेरी आराधना करेंगे
 यीशु तू ही है, तू ही है हमारा जीवन।

◆◆◆◆

38.

1. कलवरी के पास खड़ा हो
 खून की धार को देखता जा
 तेरे पापों का यही दाम
 दिया है मसीह यीशु ने।

हर एक आँख उसे देखेगी देखेगी
बादलों पर आते हुए
छेदा था जिन्होंने उसे
छाती पीटकर सिजदा करेंगे।

2. यह हुआ सब तेरे लिये
 तूने भी उसे छेदा था
 फिर भी प्यार से वह बुलाता
 जाता क्यों नहीं पास उसके।
3. ऐ नादान क्यों जाता उदास
 कर कबूल चश्मे में नहा
 सारे दाग मिटाकर पापों के
 रहेगा आराम और खुशी से।
4. जल्दी वक्त गुजरता जाता है
 रात अन्धेरी आती है
 तौबा का दरवाजा होगा बन्द
 कुछ न होगा फिर पछताने से।
5. कबर का वह तोड़कर बन्द
 ऊपर गया भेजा रूह–ए–पाक
 तुम्हें लेने जल्दी आता है
 हो तैयार उससे मिलने को।

◆◆◆◆

39.

1. करुणा से बुलाया है और
 मुझे सम्भालता है,
 इसलिए मैं तुझे भजूँगा और
 तेरी स्तुति करूँगा।
 विश्वास योग्य....
2. मैं तेरे प्रेम से हे प्रभु–
 कितनी ही बार दूर गया (2)
 पर जब मैं तेरे पास आया
 तूने मुझे क्षमा कर दिया
 विश्वास योग्य....
3. तू मेरा सच्चा साथी है–
 विश्वास योग्य प्रभु तू (2)
 सनातन का मेरा प्रभु–
 मैं तेरी स्तुति करूँगा।
 विश्वास योग्य....

◆◆◆◆

40.

कठिन प्रभु तुझसे कुछ नहीं है–2
असम्भव तुझसे कुछ नहीं है–2
कुछ नहीं है यीशु जी कुछ नहीं है–2
असम्भव कुछ भी नहीं है–2

तूने सामर्थी वचन से रचा जमीं और आसमान
अपनी ही भुजबल से संभालता है सारी सृष्टि
तुझसे असम्भव प्रभु कोई चमत्कार नहीं है
हजारों-हजारों पीढ़ियों को
दया दिखाने वाला प्रभु है
कुछ नहीं है यीशु जी,
असम्भव कुछ भी नहीं है।
युक्तियाँ हैं तेरी बड़ी, शक्ति में महान तू ही है
सेवा का प्राणयुक्त एलसदाय तू ही प्रभु।

◆◆◆◆

41.

कितना हसीन वायदा ये किया
खुदावंद ने जहां दो या तीन जमा हों
हाजिर हूं मैं उनमें

1. तुझे अकेला न छोड़ूं मैं, रूह अपनी भेजूं
तुझे अनाथ भी न छोड़ूं एक मददगार भेजूं
यीशु के सिवाय ये कब है बात कही
किसने-2

2. दस्तक वो देता है चाहे, हर दिल में
आना भरता उसको रूह से अपनी,
जिसने उसे जाना जिसका बने वो माली,
कलियां लगे खिलने

3. रूहे पाक जो हाजिर है और करे
खुशमदीद इज्जत दौलत सोहरत जिसकी,
उसकी करे तमजीद रूह के शोले बरसे जब
फिर बदन लगे जलने-2

◆◆◆◆

42.

क्या दिन खुशी का आया,
रहमत का बादल छाया
दुनिया का मुंजी आया
आ... हा... हाल्लेलुय्याह

1. जिब्राइल फरिश्ता आया,
पैगाम खुशी का लाया
सब लोगों को सुनाया
आ... हा... हाल्लेलुय्याह

2. वह तीन मँजूसी आये,
सोना, मुर लोबान लाये
यीशु को नजर चढ़ाये
आ... हा... हाल्लेलुय्याह

3. और देखो गड़रिये आये,
भेड़ों के बच्चे लाये
यीशु को भेंट चढ़ाये
आ... हा... हाल्लेलुय्याह

4. पूरब से निकला तारा,
जिसने मारा चमकारा
रास्ते का हुआ सहारा
आ... हा... हाल्लेलुय्याह

◆◆◆◆

43.

खून अपना बहाके-कीमत मेरी चुकाते
यरूशलेम की गलियों में क्यों
क्रूसित करो के नारे (3)

1. लाठी तलवारें, ले भीड़ साथ में
यहूदा दे धोखा, अंधेरी रात में (2)
यरूशलेम की सड़को में क्यूँ
क्रूसित करो के नारे (3)

2. लालच, घमंड, क्रोध, द्वेष, झूठ, सब
   हमारा अन्याय लिये, क्रूस चढ़े अब (2)
   सूरज ये काला हुआ आज क्यूँ
   क्रूसित करो के नारे (3)
3. पाप की कीमत, ले आये यीशु
   अपना लहू खुद बहाते यीशु (2)
   सारे जगत में, बगावत है क्यूँ
   क्रूसित करो के नारे -3

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

44.

खुशी खुशी मनाओ (4)

बोलो बोलो मसीहा की जय जय जय-2
मेरे लिए आया, मेरे लिए जीया-2
मेरे लिए यीशु ने दुःख उठाया।-2
मेरे लिए मारा गया,
मेरे लिए गाड़ा गया, (2)
मेरे लिए फिर जी उठा,
मेरा है मसीह।
मैं मसीह का हूँ, हम मसीह के हैं,
खुशी खुशी....

◆◆◆◆

45.

खुल जायेंगी किताबें, जब भी हिसाब होगा
इन्साफ का तराजू, यीशु के हाथ होगा।

1. जो भी तू कर रहा है, यीशु वह देखता है
   हर पल का तुझको इन्सा
   देना हिसाब होगा। ...इन्साफ का तराजू
2. आजा अभी भी मुड़कर यीशु बुला रहा है
   वरना यह याद कर ले
   तेरा ही नाश होगा। ...इन्साफ का तराजू
3. कदमों में उसके रोले तौबा गुनाह से कर ले
   फिदिया मसीह ने दिया
   माफी तू आज ले ले।...इन्साफ का तराजू

◆◆◆◆

46.

खुशियों की बहार लिए,
पापी का उद्धार लिए आया है,
आया है, मेरा मसीहा (2)

1. ऐसा प्रेम किया उसने... हा... हा
   स्वर्ग सुख छोड़ा उसने... हा... हा
   हर पापी को बचाने (2)
   आया है, आया है मेरा मसीहा (2)
2. आओ हम सब मिलकर गाएं... हा...हा
   तबला, ढफ और झांझ बजाएं... हा...हा
   सब को गीत सुनाएँ (2)

◆◆◆◆

47.

खुदा से माँगो मिलेगा,
उसका वायदा है वो देगा
उसके वायदे पे ऐतबार करो,
खुदा से प्यार करो...3

1. वो ही तो राह है, सच है,
   वो ही तो जीवन है...2
   और उसने रूह जो भेजी... साथ हरदम है
2. वो सदा साथ चलेगा, उसका वायदा है
   चलेगा उसके वायदे पे ऐतबार करो...

3. पहले उसकी बादशाहत, उसकी राह चुनो
तुमको दुनिया की हर एक चीज भी,
वो देगा सुनो वो जो कहता है करेगा,
उसका वायदा है करेगा,
उसके वायदे पे ऐतबार करो।

♦♦♦♦

48.

गाते बजाते जायेंगे हम
झंडा मसीह का उठायेंगे हम (2)
बोलो यीशु की जय-प्रभु यीशु की जय
यीशु के लहू की जय जय जय (2)

1. अंधों को आँखें-ज्योति जगत को
तुम ही हमारी आशा
हमको बचाने-रक्त बहाने
क्रूस विराजे तुम राजा (2)
मिलकर करेंगे हम्द-ओ-सना हम
यीशु के नाम की जय जय करें..... बोलो
2. भूखों को रोटी-प्यासों को जल भी
मृतकों को तुमने जिलाया
गिरते हुओं को, तुमने उठाया
दलितों को गले लगाया (2)
महिमा करेंगे, धन्य कहेंगे
यीशु के नाम की जय जय करें.....बोलो
3. आँधी थमा दी, सागर में शाँती
पानी पर चलते प्रभुजी
भूतों को तुमने पल में निकाला
यीशु के नाम में शक्ति (2)
बढ़ते चलेंगे ऊँचा करेंगे
यीशु के नाम की जय-जय करें..... बोलो

(शिष्य थॉमसन)

♦♦♦♦

49.

गिन गिन के स्तुति करूँ
बेशुमार तेरे दानों के लिए
अब तक तूने सम्भाला मुझे
अपनी बांहों में लिये हुए

1. तेरे शत्रु का निशाना
तुझ पर होगा न सफल
आँखों की पुतली जैसे
वो रखेगा तुझे हर पल
2. आंधियां बनके आयें
ज़िन्दगी के फ़िकर
कौन है तेरा खेवन हारा
है भरोसा तेरा किधर
3. आये जो तुझको मिटाने
वो शस्त्र हो बेअसर
तेरा रचनेवाला तुझ पर
रखता है अपनी नज़र

♦♦♦♦

50.

गिन गिन के स्तुति करूँ मैं
उपकारों को याद करूँ मैं
चकित करते हैं मुझे तेरे काम
आशीषों को याद करूँ मैं

1. प्रभु ने मुझमें क्या देखा था
कि मसीह ने मुझे चुन लिया
मुझ पापी पर दया दिखाकर
मेरी दुआ को उसने सुन लिया
2. कितने बलवान दुनिया में थे
फिर भी उसने मुझे बुलाया
अपनी सेवा में व्यस्त करके
अपनी महिमा को मुझे दिखाया

♦♦♦♦

51.

घर-घर आये यीशु नाम
हर मुंह में वो पावन नाम
यीशु नाम जय ख्रिस्त नाम
परमेश्वर प्रभु यीशु नाम

1. अंधकार मिट जायेगा
   भारत अब जग जायेगा-2
   जगत ज्योत प्रभु यीशु में सूर्योदय हो जायेगा
2. गलियों में बाज़ारों में गाँव खेत-मैदानों में-2
   सर्वशक्त प्रभु यीशु में नवभारत बन जायेगा
3. जन जन में बीमारों में,
   बंधुओं में कंगालों में-2
   मुक्तिदाता प्रभु यीशु में,
   नवजीवन आ जायेगा

(शिष्य थॉमसन)

♦♦♦♦

52.

चलें हम खुशियाँ लेकर यीशु की
हिमालय पहाड़ों के पार
चलें हम ज्योति लेकर यीशु की
गंगा और यमुना किनार
बोलो यीशु का नाम,
जय-जय यीशु नाम-2

1. तीरथ को आये, प्रभु तुम्हें नहीं पाये
   अंधियारे में अंध भटकायें
   ढूंढन तुम आये यीशु हमको बुलाने प्रभु -2
   पापिन जनों को बचाने......बोलो
2. कितना तुम्हारा करूँ में बयान
   प्रभु यीशु मेरे तुम महान्
   सड़कों और गलियों में, घर-घर जा गाऊँ में-2
   जन-जन में तेरा गुणगान-बोलो.....
3. जग के करतार त्याग सब तुम अधिकार
   आये हमको बचावन अधार
   निर्बल के बल तुम, भोजन और जल तुम-2
   यीशु तुम ही तारणहार.....बोलो

(शिष्य थॉमसन)

♦♦♦♦

53.

चले हो तुम खुदा के साथ
रास्ता सकरा है
खुदा का थामे रहना हाथ
रास्ता सकरा है
चलो चलें यीशु के साथ
आओ थामें यीशु का हाथ
हाल्लेलुय्याह-4

1. बहुतेरे आएंगे देखो,
   कहेंगे हम तुम्हारे हैं
   खुदा की बात तुम सुनना,
   रास्ता सकरा है चलो चलें...
2. खुदा का रूह सिखाएगा
   खुदा का रूह बताएगा
   खुदा की रूह की सुनना बात,
   रास्ता सकरा है चलो चलें...
3. खुदा की बरकत तुम पर हो,
   मसीह की रहमत तुम पर हो
   दुआएं बाप की ले लो,
   रास्ता सकरा है चलो चलें...

♦♦♦♦

54.

चले जाना है, दूर से दूर तलक
लेके यीशु का प्यारा प्यारा नाम
वो ही नाम, प्यारा प्यारा नाम। (2)

1. जिस नाम से हमको मुक्ति मिली
   जिस नाम से हमको शान्ति मिली (2)
   वो ही नाम प्यारा प्यारा नाम। (2)
2. जिस नाम से अन्धा देखने लगा
   जिस नाम से लंगड़ा चलने लगा (2)
   वो ही नाम प्यारा प्यारा नाम। (2)
3. जिस नाम से हमको आनन्द मिला
   उस आनन्द को बांटते चले जाना है
   वो ही नाम प्यारा प्यारा नाम। (2)

◆◆◆◆

55.

चार दिन की जिन्दगी है
दो दिन की है जवानी
कट जायेगी ये चार दिन की जिन्दगी
दुनिया से चले जायेंगे।।

1. सारे संसार ने पाप किया है
   रब्ब की महिमा से दूर हुए हैं।
   पापी का स्वर्ग में निवास नहीं है
   सोच लो तुम्हारा अब वास कहाँ है।।
2. रहना नहीं दुनिया में हमेशा हमें
   जाना जो पड़ेगा एक दिन दुनिया से हमें
   जाने से पहले ये बात सोच लो
   मरने के बाद तुम कहाँ जाओगे।।
3. पापों से बचाने केवल एक ही आया है
   यीशु उद्धारकर्ता जीवन लाया है
   वो ही प्रभु एक दिन न्यायी बनेगा
   सोच लो तुम्हारा क्या फल आयेगा।।

◆◆◆◆

56.

चाहे तुमको दिल से, गायें ये गीत मिलके,
तेरे नाम, यीशु नाम की जय...2

जिय नाम में है जिंदगी,
वो नाम है यीशु मसीह
जिस नाम में है बंदगी, वो नाम है यीशु मसीह
यीशु नाम, यीशु नाम 6, की जय...
यीशु नाम में मिलती है क्षमा,
यीशु नाम में मिलती है शिफा,
यीशु नाम में मिलती है कृपा,
यीशु नाम में करना दुआ
यीशु नाम यीशु नाम...4
यीशु नाम यीशु नाम... 6 की जय

◆◆◆◆

57.

जय यीशु, जय जय यीशु
जय यीशु, जय जय कार
यीशु नाम, प्रभु यीशु नाम
तुझे कोटि-कोटि प्रणाम्

1. शक्तिशाली वो नाम, प्रभु यीशु परमेश्वर नाम
   पाप दुष्ट शैतां पर जयते, पुण्य प्रभु जय नाम-2
   यीशु-यीशु जय नाम
2. महामहिमन वो नाम, त्रिलोकों में यीशु प्रभु नाम
   झुक जायें प्राणी हर शीष, करें साष्टांग प्रणाम-2

यीशु–यीशु जय नाम

3. बंधन तोड़े कबरें खोले, ख्रिस्त प्रभु जय नाम
ऊँचे सुर जय घोष करें, नर नारी यीशु सुनाम–2
यीशु–यीशु जय नाम
4. शैतां की सेना हो चाहे, भूत प्रेत संसार
अंधकार भागे भय से,
सुनकर प्रभु यीशु नाम–2
यीशु–यीशु जय नाम

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

58.

जायेंगे यीशु के पीछे हम, जायेंगे–2

1. तेरी स्तुति, तेरी महिमा
गाते हुऐ हम जायेंगे
हर धड़कन, और हर क्षण
कुरबान हम किए जायेंगे
2. अपना धन, तन और मन
तेरी वेदी पर हम लायेंगे
दुःख और सुख हाँ सब कुछ
भूलेंगे और हम भुलायेंगे।
3. करें इकरार, तज संसार
अपना इनकार, किए जायेंगे
काँधे पर, क्रूस लिये
यीशु सब तुम पर लुटायेंगे

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

59.

1. जी उठा तारणहारा मसीह
मृत्यु पर जीत लाया वही
उसको ढूंढो न मृतको में तुम
कर दो घोषित, जहाँ में ये तुम

जय तुम्हारी जय कार (3) प्रभु यीशु

2. कब्र पर था, पहरा लगा
पीलातुस ने मोहर में रखा
दुनिया डोली, सिपाही भय
लुड़का पत्थर, मसीह जी उठा
3. तड़की चट्टान मरे जी उठे
आये खुलकर, शहर में दिखे
पुनरूत्थान और जीवन मसीह
जीवन दाता, यीशु ख्रिस्त ही
4. उसके हाथों के देखो निशान्
उसकी शाँति लो, डर दो निकाल
दुनिया को दो, ये शुभ संदेश
जीवित है आज, यीशु महान्

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

60.

जीवन का जल हमें दे दे प्रभु
हम तो प्यासे हैं।
तृष्णा बुझादे, पाप मिटा दे
हम आये हैं

1. आये थे यीशु सुखार गांव में
कुँए पर बैठे थे दो पहर में–2
आई जब सामरी स्त्री वे बोले,
प्यासा हूँ मुझको जल दे।
2. यदि तुम जानती मैं कौन हूँ
तभी तुम माँगती मुझ से वो जल–2
नदियां बनकर जो बहता जीवन भर
जल ही जल जीवन का जल
3. सहकर तुम प्यास हमारी क्रूस पर

प्यासे को पास बुलाते हो आकर-2
आत्मा के झरने बनते तब अन्दर
जल ही जल जीवन का जल।
(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

61.

1. जंगली दरख्तों के दर्मियान,
एक सेब के पेड़ के समान
नज़र आता है मुझे ऐ मसीह,
सारे सन्तों के बीच में तू

हम्द करूँ, तेरी ऐ प्रभु
अपने जीवन भर इस, जंगल के सफर में
गाऊँ शुक्र गुज़ारी से मैं

2. तू ही है नर्गिस खास शारोन का
हाँ तू सोसन की वादियों का
सन्तों से भी तू है अति पवित्र
कैसा कामिल और शान से भरा

3. इत्र के समान है तेरा नाम
खुशबू फैलाता है जहाँ में
तंगी, मुसीबत और बदनामी में
बना खुशबूदार तेरे समान

4. घबराहट की लहरों में गर
डूबा दुःखों के सागर में
अपने जोरावर हाथ को बढ़ा
मुझे अपने सीने से लगा

5. अभी आ रहा हूँ मैं तेरे पास
पूरी करने को तेरी मर्ज़ी
ताकि दे दूँ मैं काम को अंजाम
पाऊँ तेरे दीदार में इनाम

◆◆◆◆

62.

जब से प्यारा यीशु आया, मेरा जीवन बदल गया
जब से मैंने उसे है पाया मेरा जीवन बदल गया (2)

1. मुझे ग़म और मुसीबतों में सहारा देकर (2)
मेरे पापों का बोझ लेकर अपने ऊपर (2)
क्रूस पर खून अपना बहाया (2) मेरा
2. इस जहाँ की गन्दगी से मुझे छुड़ाया (2)
जान देकर मुझे गुनाहों से बचाया (2)
तब से दिल मेरा मन मेरी काया (2) मेरा
3. मुझे खरीदा है मसीह ने खून देकर (2)
मैं हूँ उसका मेरा न कोई सिवाय उसके (2)
पुत्र ने है पिता से मिलाया (2) मेरा
4. रात काली बीत गयी है हुआ सवेरा (2)
सुबह का तारा देखो चमका यीशु मेरा (2)
इसलिए मैंने ये गीत गाया (2) मेरा

◆◆◆◆

63.

जय जय प्रभु यीशु की (2)
हमको बचाने आया जगत में
उसकी स्तुति करो, गाओ खुशी के गीत
हे धरती हे आकाश, आया मसीह जग में
पाप का करने नाश

1. खून की धारा बहती सूली से
जिसमें धुले सब पाप
धो लो अब तुम अपने हृदय को
उसमें रहे न दाग
2. ग्रहण करो तुम आज प्रभु को
प्रेम की बहती धार
उसको बना लो खेवनहारा
नाव लगा लो पार

3. वापस आता मेरा प्रभु जी
ले जाएगा साथ
आशा मेरी अब तो यही है
चलो तुम मेरे साथ
4. हर दम होंगे साथ यीशु के
खुशी और शान्ति आराम
आयेगा वह लेने तुम्हें भी
रहना तुम तैयार

◆◆◆◆

64.

जय-जय यीशु, जय-जय यीशु, -2
जय मृत्युंजय, जयकार
सिरजनहार, पालनहार, तारणहार

1. दीनों का दु:ख हरने वाला
हृदय में शान्ति भरने वाला
जय जन रंजन, जय दुख भंजन
जय जयकार सिरजनहार,
पालनहार, तारणहार
2. नरतन धार लियो अवतारा
दे निज प्राण कियो छुटकारा,
जय जगत्राता, जय सुखदाता
जय जयकार सिरजनहार,
पालनहार, तारणहार
3. मृत्यु बन्धन भंजन हारा
अक्षय जीवन देवन हारा
रोगिन शोकिन एक अधारा
जय जयकार सिरजनहार,
पालनहार, तारणहार
4. जय-जयकार करो सब प्यारो
नर नारी एक संग पुकारो
नारे मारो जय ललकारो
जय जयकार सिरजनहार,
पालनहार, तारणहार

◆◆◆◆

65.

1. जैसा मैं हूँ बगैर एक बात,
पर तेरे लहू से हयात
अब तेरे नाम से है नज़ात,
मसीह, मसीह मैं आता हूँ
2. जैसा मैं हूँ कंगाल बदकार,
कमज़ोर नालायक और लाचार
अब तेरे पास ऐ मददगार,
मसीह, मसीह मैं आता हूँ
3. जैसा मैं हूँ कम्बख्त नापाक,
और मेरी हालत दहशतनाक
लड़ाई भीतर बाहर पाक, मसीह,
मसीह मैं आता हूँ
4. जैसा मैं हूँ कबूल कर ले,
मुआफ़ी और तसल्ली दे
सिर्फ तेरे ही वसीले से,
मसीह, मसीह, मैं आता हूँ

◆◆◆◆

66.

जगत में आया है तारणहार
सुनकर हम पतितों की पुकार

1. पाप का प्याला उसने पिया है
मरके मरण को जीत लिया है
खोला स्वर्ग का द्वार
2. गिरते हुओं को पल में उठाकर
पाप करण का नाम मिटाकर

कर दिया बेड़ा पार
3. उठो और उठकर सब मिल गाओ
यीशु मसीह का नाम जगाओ
कर दो प्रेम प्रचार।

♦♦♦♦

67.

जब तू जुम्बिस करे हम पर छाया रहे
रूहे पाक हम परस्तिस हम करते रहें

1. तेरी मीठी जुबां, ये बेगाना जुबां
जो मैं कह न सकूँ, वो तू करता बयां-2
2. यीशु मेरा खुदा, जो सदा बादशाह
तूने नाजल किया, बना तू रहनुमा
3. तू बताता रहे, तू सिखाता रहे
दे जलाल हम यीशु को मसा से तेरे
4. मुझको राहत मिले, मुझको चाहत मिले
रूह की संगत में अब तो नये सिलसिले

♦♦♦♦

68.

जागो सोने वालों वक्त जाने लगा
आज तुमको जगाने कोई आया है
जिन्दगी में किसी की सुनी न सुनी
आज वचन सुनाने कोई आया है।

1. जब दिन का उजाला बढ़ने लगा
गफलत में पड़े क्यों सोने लगे (2)
हर दम तुम्हें कोई जगाने आये
कभी जाग उठे फिर सोने लगे (2)
ऐसों का नतीजा कुछ न मिले
तुम्हें याद दिलाने कोई आया है।
2. दुनिया में तुम ने पाप किये
अपने लिये मौत कमाई है (2)
और मन की शान्ति पाने में
यूँ सारी उम्र गवाई है (2)
मरने से पहले जरा सुन लो
तुम्हें मौत से बचाने कोई आया है।
3. आ जाओ यीशु के कदमों में
छोड़ो यह दुनिया की बातें (2)
जो न मानें मिट जाते हैं
जो बच जाते जीवन पाते (2)
ऐसा न समय फिर आये कभी
तुम्हें जीवन दिलाने कोई आया है।

♦♦♦♦

69.

जिन्दगी मेरी बदल गई
जब से मसीह को पाया है
खिल गई है कलियाँ नयीं
यीशु बहार लाया है।

1. जीवन है क्या, पल ही दो पल का
किसने है जाना, होगा क्या कल का
घड़ियाँ सुनहरी फिर न लौटेगी
मुक्ति और जीवन, वह लाया है।
2. जीवन की रोटी और अमृत जल को
कैसी भरपूरी से देता वह हमको
लहू बहा के पाप हमारा,
प्यारे प्रभु ने उठाया है।
3. मार्ग में हमारे, वह दर्शक रहेगा
कदम डगमगाए हाथ वह थामेगा
भटके हुओं को राह बताने
इस धरती पर वह आया है।

♦♦♦♦

70.

जीवन से भी उत्तम, तेरी करुणा (2)
होठों से स्तुति, करूंगा सर्वदा
तेरे नाम से मैं हाथ उठाऊँगा
तेरे नाम से मैं हाथ उठाऊँगा
होठों से स्तुति करूँगा सर्वदा
तेरे नाम से मैं हाथ उठाऊँगा
है शफ्कत तेरी जिन्दगी से बेहतर (2)
होठों से तारीफ मुबारक गाऊँगा
यीशु नाम से मैं हाथ उठाऊँगा (3)

◆◆◆◆

71.

जो क्रूस पर कुर्बान है, वो मेरा मसीहा है
हर जख्म जो उसका है, वो मेरे गुनाह का है

1. इस दुनिया में ले आए,
   मेरे ही गुनाह उसको (2)
   वह जुल्म सितम उस पर,
   मैंने ही कराया है (2)
2. इन्सान है वह कामिल,
   और सच्चा खुदा वह है (2)
   वह प्यार का दरिया है,
   सच्चाई का रास्ता है (2)
3. देने को मुझे जीवन,
   खुद मौत सही उसने (2)
   क्या खूब है कुर्बानी,
   क्या प्यार अनोखा है (2)

◆◆◆◆

72.

डरेंगे नहीं, मौत से कभी
यीशु के पीछे, चलें हम सभी-(2)

1. क्रूस उठायेंगे हँसते हुए
   जान गवाँ देंगे, जीते-जीते (2)
   अपना करेंगे, इनकार सदा
   यीशु के पीछे, हो लेंगे (2) डरेंगे
2. नम्र बनेंगे, झुकते हुए
   पाँव धोने को, होंगे खड़े (2)
   प्रेमी मसीह के, कदमों में हम
   कुरबान कर देंगे, तन-मन और धन (2)
   डरेंगे
3. नहीं, बचायेंगे प्राण अपने भी
   पायेंगे जीवन का ताज तभी (2)
   नवजन्म पाकर, भारत भूमी पर
   यीशु का जीवन, जीयें हर पल (2) डरेंगे
   (शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

73.

तुम जगत की ज्योति हो
तुम धरा के नमक भी हो)2)

1. तुम को पैदा इसलिये किया
   तुम को जीवन इसलिये मिला
   उसकी मर्ज़ी कर सको सदा (2)
2. वो नगर जो बसे शिखर पर
   छिपता ही नहीं, किसी की नज़र
   तुम्हारे भले काम, चमकें इस तरह (2)
3. पड़ोसी से प्रेम, तुमने सुना है
   दुश्मनों से प्रेम, मेरा कहना है
   तभी तुम संतान, परमेश्वर समान (2)

4. आँख के बदले आँख, बुराई का सामना है
फ़ेरो दूसरा ग़ाल सहलो सब अन्याय
ऐसा जीवन ही, पिता को भाता है (2)
(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

74.

तेरे मार खाने से यीशु मैंने
शिफा पायी है (2)
तेरे खून बहाने से मिली मुझको
रिहाई है (2)

1. कोई चारागाह तुझ सा नहीं
कोई राहबर तुझ सा नहीं (2)
तूने अपनी जान देकर
मेरी जिन्दगी बचाई है (2)
तेरे मार खाने से....
2. तूने वादा पूरा कर दिया है,
तूने पाक रूह से भर दिया है (2)
तूने मेरे कदमों को,
आसमानी राह दिखाई (2)
तेरे मार खाने से.....
3. मैं हर दम यीशु ही तेरी.
हम्दों सना गाऊँ (2)
मैंने अपनी सांसों में,
तेरी खुशबू बसाई है (2)
तेरे मार खाने से.....

◆◆◆◆

75.

तेरे सन्मुख शीष नवाते, हे जग के करतार
डूबे हुओं को दे दो सहारा, कर दो बेड़ा पार

1. पाप के बादल सिर पर
छाये, घिर हुआ तूफान,-2
तुम बिन नैय्या कौन सम्भाले, मेरे प्रभु महान्,
आके बचा लो प्राण हमारे, जग के खेवनहार
2. जन्म के अन्धों को दी आँखें, रोगी लिये बचाये,
पाप क्षमा किये सब पापिन के, मुर्दे दिये जिलाये,
पापी हृदय हम भी लाये, धो दो तारणहार
3. सुन्दर पक्षी पर्वत सागर, सबके सिरजनहार,
आके बिराजो मन मन्दिर में बन्दे करें पुकार,
व्याकुल हृदय तुझको पुकारे, आजा तारणहार

◆◆◆◆

76.

तेरे ज़ख्मों को हम,
देखने आये हैं,
यीशु तेरी प्रेम कहानी,
गाते हुए आये हैं,

1. हाथों के ये निशान,
प्रभु तेरा ये अपमान-2
हमने कर डाला क्या,
प्रभु यीशु तेरा हाल,
2. पैरों में कीलों के,
पसली में भालों से-2
किस ने कर डाला ये,
प्रभु मेरे तेरा हाल,
3. सिर पर जख्मों के ये,
कैसे है तुम्हारे घाव-2,
सबने कर डाला हाँ,
प्रभु तुझे ये बेहाल,
(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

77.

तेरे दिल में मुझको जगह मिली,
मेरा दिल पुकारे मसीह-मसीह
तेरा प्यार है मेरी जिन्दगी,
मेरी जिन्दगी है मेरा मसीह।

1. मैं अंधेरी राह पे ही लिया,
   मैं गुनाह की वादी में खो गया
   तेरी आँख मुझ पे लगी रही,
   मेरे पास आयी सलामती।
2. मैं गुनाह के हाथ बिका हुआ,
   यह है सच कि मैं था मरा हुआ
   तूने मेरी मौत कबूल की,
   मुझे बख्श दी तूने जिन्दगी।
3. न फिरूंगा अब कहीं दर-ब-दर,
   तू हुआ है खुद मेरा हम सफर
   मुझे मंजिलें हैं पुकारती,
   मैं रहूँ अब तेरे साथ ही।।

◆◆◆◆

78.

तेरे पास आता हूँ
यीशु, तेरे पास
हर पल, मेरी हर सांस
तेरी स्तुति, करती रहे
हर दिन, मेरी हर बात
तेरी महिमा, गाती रहे
येशु आ...आ...आ...

◆◆◆◆

79.

तेरे लहू से पाप धोता हूँ-2
तू बढ़ता जा मैं कम होता हूँ-2
तू बढ़ता जा, तू बढ़ता जा,
तू बढ़ता जा, मैं कम होता हूँ-2

1. तेरा कलाम दिल में रखा है
   तेरा वादा हर एक सच्चा है
   तेरा ही नाम सबसे अच्छा है-2
   अपनी खुदी से हाथ धोता हूँ
   तू बढ़ता जा मैं...
2. तेरा लहू है मेल का पैगाम
   तेरे लहू में सब चैन आराम
   तेरे लहू से बने बिगड़े काम-2
   खुद को लहू में डुबोता हूँ
   तू बढ़ता जा मैं...
3. तेरा कलाम जीवन रोटी
   तेरा कलाम राहों की ज्योति
   तेरा कलाम है हंसी मोती-2
   दिल की माला में पिरोता हूँ
   तू बढ़ता जा मैं...

◆◆◆◆

80.

तेरे लहू से, मुझे धो ले तू प्रभु
पूरी तौर से अभी
तेरे ही समान, होने के लिए
मेरे जीवन में, काम कर तू प्रभु

1. दल-दल की कीच से, मुझे उभारा
   चट्टान पर खड़ा कर दिया, तेरे लिए
   क्षमा किया है, तमाम पापों को
   स्मरण करता हूँ कि मैं मिट्टी ही हूँ
2. कलवरी पर बलिदान, हुआ तू
   दान और दाता है तू, मेरे लिए
   विश्वास में, स्थिर रहूँगा
   और तुझसे ज्यादा, प्रेम करूँगा

3. टूटा हुआ मन चाहता है तू
कठोर कर दिया मैंने, पिछले दिनों में
नया बनाया, दया करके
स्वर्गीय स्थानों में बैठा दिया

◆◆◆◆

81.

1. तेरा प्यार है महान, तेरा प्यार है यहाँ
मैं जो पहले मुर्दा था, तूने डाली मुझ में जान
क्यों न बोलूं फिर मैं तेरी जय जयकार (2)
जयजयकार (2)
तूने मेरे लिए क्या कुछ न किया
2. मेरी सूरत बिगड़ी थी, मेरा दिल भी था खाली
तूने सींचा था खून से, ताकि आए हरियाली
क्यों न बोलूं फिर मैं तेरी जयजयकार
3. आयी जीवन में खुशी, आई अब्दी जिन्दगी
तू है जिन्दा शाफिया, तूने यह है किया
क्यों न बोलूं फिर मैं तेरी जयजयकार
4. अपनी रूह से भर दिया,
अपनी शक्ति मुझको दी
ताकि दूँ मैं गवाही, तेरे जी उठने की
क्यों न बोलूँ फिर मैं तेरी जयजयकार

◆◆◆◆

82.

तेरा हो अभिषेक,
अमन के राजकुमार
आज हमारे दिल में जन्म ले
हे प्रभु यीशु महान (2)
1. घोर अन्धेरा था, राहें उलझी थीं
ये जमीं कुछ थी, आसमाँ कुछ था
तूने आकर फिर संभाला (2)
तेरा प्रेम अपार
तेरा हो अभिषेक, अमन के राजकुमार
2. क्या चढ़ाएं हम, भेंट में तुझको
सोना मूर्र लोबान, पास ना देने को
वर दे ऐसा, तुझ पे कर दे (2)
जीवन अपना निसार
तेरा हो अभिषेक, अमन के राजकुमार...
3. लहर बड़े दिन की सदा जहां में रहे
दुआ करें मिलकर, अमन जहां में रहे
हम जहाँ जिस हाल में हों (2)
करेंगे तेरा प्रचार
तेरा हो अभिषेक, अमन के राजकुमार...

◆◆◆◆

83.

तेरी आराधना करूँ.....2
पाप क्षमा कर जीवन दे दे
दया की याचना करूँ।
तेरी आराधना....
1. तू ही महान् सर्वशक्तिमान,
तू ही है मेरे जीवन का संगीत।
हृदय के तार छेड़ें झंकार,
तेरी आराधना है मधुर गीत।
जीवन से मेरे तू महिमा पाये,
एक ही कामना करूँ .....पाप
2. सृष्टि के हर एक कण-कण में,
छाया है तेरी ही महिमा का राज।
पक्षी भी करते हैं तेरी प्रशंसा,
हर पल सुनाते हैं आनन्द का राग।
मेरी भी भक्ति तुझे ग्रहण हो।
हृदय से प्रार्थना करूँ .....पाप
3. पतित जीवन में ज्योति जला दे,
तुझी से लगी है आशा मेरी।

पापमय तन को दूर हटा दे,
पूर्ण हो अभिलाषा मेरी
जीवन के कठिन दुखी क्षणों का
दृढ़ता से सामना करूँ .....पाप

♦♦♦♦

84.

तेरी महिमा हम गायें मेरे यीशु मसीह
तेरी जय जय हम गायें मेरे यीशु

1. तुम बनके मनुष हम साथ रहे
तुम जीवन हमारे साथ जीये
दुःख दर्द हमार तुम जाने प्रभु
तुम सूली पर चढ़ने आये।
2. तुम आये बचान् हम पापिन जनों को
हम तो पतित पावन तुम प्रभु हो
फिर भी, तुमने प्यार दिखलायो प्रभु
तुम सूली पर चढ़ने आये।
3. तुम अँधे लाचारों कंगालों को लाये प्रभु
कुचले हुओं को तुम घर में ले आये।
जान अपनी दे हमको बचाय दियो रे
तुम सूली पर चढ़ने आये।
4. तुम भूत और प्रेतों को मार भगाये
प्रभु शैतां को सूली पर चढ़के हराये
तुम मुक्ति भी हमको दिलाय दियो रे
तुम सूली पर चढ़ने आये।
5. तुम प्रेमी पिता से हमको मिलाये
यीशु खोये हुओं को वापस घर लाये
प्रभु मौत से हमको जिलाय दियो रे
तुम सूली पर चढ़ने आये।

(शिष्य थॉमसन)

♦♦♦♦

85.

तेरी इच्छा पूरी हो जाए
तेरे हाथों में सौंपूंगा मैं
मैं मिट्टी हूँ, तू है कुम्हार
मुझको उठा, मुझको बना
अपनी मर्जी से चलता रहा
तुझको कभी अपना न कहा
लेकिन प्रभु आज से मैं
तेरे क्रूस को ले लेता हूँ

♦♦♦♦

86.

तन मन और धन उसे दो
अपने यीशु को सब कुछ दो
क्योंकि उसी के द्वारा उद्धार पाना है
जीती आत्मा का दान उसे दो।

1. गर यीशु के बनना चाहो
कुछ करके दिखाना होगा
खुद बचना ही काफी नहीं है
औरों को बचाना होगा (2)
दिल में पहली जगह उसे दो।
2. गर यीशु की सेवा करोगे
अपनी आशीष वह तुमको देगा
और पाप की सेवा करोगे
हरगिज नहीं माफ करेगा (2)
उसके लहू से दिल धो लो।
3. गर यीशु नाम को अपना कहना
जैसे काँटो की राहों पर चलना
और सच्चे मसीही बनना
संग क्रूस पर उसके मरना (2)
जिन्दा रहने की शक्ति ले लो

♦♦♦♦

87.

थोड़ा समय है बाकी,
सेवा अभी है काफी,
हम रुके नहीं, पीछे मुड़े नहीं-2
यीशु है हमारा साथी॥ (2)

1. सन्देश सुनाते जाना, सेवा से नहीं शर्माना
   चाहे जग हमें रोके, आये दुख के झोके
   हमें देगा वो भरपूर शान्ति।।
2. हम अपना क्रूस उठाए, और
   यीशु के पीछे आए
   अपने को त्यागें यीशु से मन लगाएं
   हम हैं उसके विश्वासी।।
3. प्रतिफल हमें वो देगा
   विश्वास में स्थिर करेगा
   उसकी आज्ञा को मानें
   उससे शान्ति हम पाएं
   प्रतिज्ञा है उसकी काफी।।
4. यीशु ने हमें भेजा है,
   उसका काम दिन ही दिन में हमें करना है
   वह रात है आने वाली, ये हमारी जिम्मेदारी
   यीशु है हमारा न्यायी।।

◆◆◆◆

88.

देखो देखो कोई आ रहा है
कैसा जलवा मसीह आ रहा है
आँखें अपनी उठाकर तो देखो
कैसी शान से मसीह आ रहा है

1. वह भी कैसी सवारी है देखो
   आसमान की बेदारी तो देखो
   बाजे बजते हैं दूत गाते हैं
   क्योंकि मसीह चला आ रहा है
2. अब नहीं है वह कांटों का सेहरा
   वह तो पहिने है दुल्हे का सेहरा
   जिन्दगी ये वचन कैसी प्यारी दुल्हन
   जिसको लेने दूल्हा आ रहा है
3. वहाँ सूरज, न चाँद है न कोई
   अब तो मुर्दे पड़े हैं न कोई
   हम सब डरते हैं और कांपते हैं
   न्याय करने मसीह आ रहा है
4. यह दुनिया हमारी मिटेगी
   एक नई दुनिया फिर से बसेगी
   सब नया होगा, जग नया होगा
   राज्य करने मसीह आ रहा है

◆◆◆◆

89.

देखो मैं दुनिया के अंत तक
तुम्हारे साथ हूँ
न घबराना तुम, न डरना कभी
मैंने थामा है हाथ तुम्हारा
यही ये कहता मसीह

1. गम है दुनिया में तुमको अभी
   निराश मत होना
   मैं आऊँगा फिर से लिखा वचन में-2
   ले जाने अपनों को अपने करीब,
   अपने करीब
2. इंतजार है हमको मसीह
   तेरे ही आने का तू आयेगा फिर से लिखा
   है वचन में
   ले जाने अपनों को अपने करीब,
   अपने करीब।

◆◆◆◆

90.

1. दिल मेरा ले ले प्यारे यीशु
तुने इसे बनाया है,
इसमें तू अपना घर बना ले
जिसके लिए बनाया है
2. दुनिया की सब चीज़ें निकाल कर
इसे पाक ओ साफ़ कर, (2)
गन्दगी गुनाहों की तू धोकर
उस खून से जो बहाया है (4)
3. बहुत साल मैं रहा, तुझसे दूर
लापरवाही ने किया दूर, (2)
फ़जल प्यार रहम की बख़्शिश ने
सब्र कर मुझे सिखाया है
4. जब पढ़ता हूँ, कलाक-इ-पाक
जो रास्ता है शाहेराह, (2)
राह-हक ओ ज़िन्दगी अब्दी
ईमान उम्मेद बढ़ाया है
5. रूह-इ-पाक का हो जाए मसकन
रूह-इ-पाक के बपतिस्मे से, (2)
हर वक्त हर जगह दूँ गवाही
जैसा उसने सिखाया है

◆◆◆◆

91.

दिल से गाते बजाते रहो (2)
खुदावन्द यीशु के लिये
तारीफ़ और हम्द करो। दिल से...

1. हम भी गाएँ तुम भी गाओ यीशु के लिए (3)
खुदावन्द यीशु के लिये
तारीफ़ और हम्द करो
दिल से.....
2. प्रेम से उसकी स्तुति करो यीशु के लिए (3)
खुदावन्द यीशु के लिये
तारीफ़ और हम्द करो (2)
दिल से.....
3. पापा गाएँ मम्मी गाएँ यीशु के लिए (3)
खुदावन्द यीशु के लिये
तारीफ़ और हम्द करो (2)
दिल से.....

◆◆◆◆

92.

1. दिन में बादल का छाया बना
रात में अग्नि की ज्वाला बना
रक्षक बना हमारा (2) प्रभु जी
सुख शान्ति से सम्भाला
धन्य, धन्य, धन्य प्रभु को
जिसने मुक्ति दी हमको
शरण में अपनी लाया (2) प्रभु जी
दिन-रात है सम्भाला
2. वचन का मन्ना खिलाया हमें
पानी चट्टान से पिलाया हमें
आत्मा को तृप्त किया (2) प्रभु जी
दिल में तू शान्ति लाया
3. इस सुन्दर आत्मिक जीवन में
प्राण, आत्मा, शरीर और हृदय में
है स्वर्गीय जीवन डाला (2) प्रभु जी
आत्मिक जागृति लाया
4. कनान देश में लाया हमें
सन्तों के साथ मिलाया हमें
दण्डवत् तुझे करें हम (2)
प्रभु जी साष्टांग प्रणाम करें हम।

◆◆◆◆

93.

दुनिया में सबसे प्यारी पुस्तक बाइबल (2)

1. पढ़े जो इसको रोज़-ब-रोज़,
   राह में खतरा कोई न हो,
   ओ दुनिया में सबसे प्यारी पुस्तक बाइबल
2. दुनिया में सबसे प्यारा दोस्त है यीशु (2)
   गिरने से बचावेगा–मेरी बिनती सुनेगा,
   हाँ दुनियाँ में सबसे प्यारा दोस्त है यीशु

◆◆◆◆

94.

दुनिया का डेरा छोड़कर, एक दिन
पहूँचूगा मैं अनन्त घर
गाऊँगा खुशी से वहाँ जय गान
क्लेशों पर जयवंत होकर

1. दुनिया के सुख न चाहूँ
   दौलत इज्जत न चाहूँ
   चलना मुझे है, यीशु के कदमों पर
   सर्वस्व करता तुझे अर्पण
   जग के विधाता, प्रभुवर
2. नफरत से मेरे अपने
   मुझसे अपना मुँह मोड़ें
   ठुकरा के मुझको गैरों की तरह
   अपने प्रभु की बाहों में जल्द ही
   रहूँगा मैं हर पल
3. धरती और सारी सृष्टि
   निश्चय उस दिन बदलेगी
   होगा प्रभु से जब मेरा मिलन
   जाऊँगा पंछी के समान उड़कर
   होगा महिमा में रूपांतर।

◆◆◆◆

95.

दुनिया के कोने-कोने में
गूँज रहा यीशु का नाम (2)
कैसा प्यारा यीशु का नाम
दुनिया में हाल्लेलूयाह (2)

खून की नदियां बहती सूली से
दुनिया के सारे जहाँ में (2)
कैसा प्यारा यीशु का नाम
दुनिया में हाल्लेलूयाह (2)

◆◆◆◆

96.

दीपक हम तेरे हैं प्रभु
हम ज्योति जलायेंगे
अंधियारे को हम करके दूर
उजियाला लाएंगे... हा...हा...हा...हा...

1. विनती हमारी तुम से
   बचाओ हमारे प्राण
   लेके शरण हमें अपनी
   मुक्ति दे महान
   तेरे नूर को हम देखकर
   हम शीष झुकायेंगे। अंधियारे...
2. नीले गगन में हमने
   सुनी थी ये पुकार
   आएगा प्यारा यीशु
   बादलों के साथ
   अरमान हमारा है यही
   हम तुझ संग जायेंगे। अंधियारे...

◆◆◆◆

97.

दीप जले प्रभु नाम रहे
मेरे मंदिर में मंदिर में-2

1. सांझ सवेरे यह मन गाये
   यीशु तेरा नाम, प्रभु यीशु तेरा नाम
   नाम रहे मन में प्रभु नाम रहे मन में-2
2. दीप जलाये राह निहारूं
   दर्शन को प्रभु दर्शन को
   आन बसो दिल में
   प्रभु आन बसो दिल में
3. हे प्रभु दाता विश्वविधाता
   नमन करूँ प्रभु नमन करूँ
   राग रहे मन में अनुराग जगे मन में।

◆◆◆◆

98.

1. धन्य तुम्हीं प्रभु, यीशु मसीह मेरे
   सजदा हम करते तेरा (2)
   रक्त बहाकर यीशु जी तुमने
   कर दिये पाप क्षमा
   हालेलूय्याह-2, यीशु की हम्द-ओ-सना
2. लाखों जनों के साथ,
   स्वर्गीय स्थलों में आज
   गूँजें तुम्हारी जय गाथा (2)
   यीशु जी तुमने, क्रूसित होकर
   नव जीवन हमको दिया..... हालेलूय्याह
3. पवित्र आत्मा, तुम, संगत हमारे साथ
   करते हो हरदम सदा (2)
   यीशु की महिमा करते तुम हरदम
   सांत्वना तुमसे यहाँ...... हालेलूय्याह
4. प्रेमी पिता तुमने, वापस बुलाया है
   खोए हुए हम यहाँ (2)
   प्रिय पुत्र यीशु को भेजा जहाँ में
   होने दिया बलिदान..... हालेल्य्याह

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

99.

धन्य नाम प्रभु यीशु सुनकर,
दर्शन को हम आये हैं,
जय जय कार करें सब मिलकर,
यीशु राज विराजे हैं,
जीवन दाता, मुक्ति दाता,
हम गाते हैं तेरी महिमा,

1. हम मिलकर सब भक्त यहाँ,
   प्रभु यीशु के गुण गाते हैं,
   खून बहाने वाले प्रभु के,
   चरणों में सर को झुकाते हैं-2,
   प्रभु आते हैं, गुण गाते हैं
2. बोझ दबे, और थके हुए सब,
   यीशु के दर आये हैं,
   वो ही उठाये, वो ही बचाए-2,
   यीशु शरण में आये हैं,
   प्रभु आये हैं, शरण आये हैं
3. प्यासे हैं जीवन जल यीशु
   प्यास बुझाने आये हैं,
   भूखे है जीवन रोटी, प्रभु
   भूख मिटाने आये हैं-2,
   प्रभु आये हैं, हम आये हैं,
4. सब मिलकर नाचें गायें
   प्रभुवर जग आप ही आये हैं,

ना अब दु:ख ना दर्द हमें,
प्रभु यीशु मोचन लाये हैं-2
प्रभु आये हैं, सब लाये हैं
(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

100.

न कभी वो भूलेगा, न कभी वो छोड़ेगा
यीशु मसीह है वफादार (4)

1. दूध पीते बच्चे को, भूल जाये माँ अगर(2)
तरस न खाये वो तो, रहम के बेटे पर(2)
अपने हाथों पे खोदी, देख सूरत जो तेरी(2)
करे न तेरा इन्कार (4)
2. हर रोज हमारा यीशु, बोझ उठाता (2)
उकाब की मानिद अपने, परों पे बिठाता(2)
मन्ना स्वर्गीय खिलाता,
आये हयात् पिलाता(2)
करता है बेहद प्यार (4)
3. अंधकार की दुनिया में, नूर बनाकर (2)
खुशबू कला में हर, जहाँ फैलाकर (2)
देता अपनी फतह, ताकी बन जाये गवाही(2)
सबका है परवरदिगार (4)
4. धोये लहू से तेरी, सारी बदकारी (2)
चंगी करे वो तेरी, सारी बीमारी (2)
हुआ क्रूस पे कुर्बान,
ताकी बच जाये जहाँ (2)
करता है तेरा इंतजार (4)

◆◆◆◆

101.

न तो बल से न शक्ति से
पर तेरी आत्मा के द्वारा (2)
यह पहाड़ टल जाएगा (3)
पर तेरी आत्मा के द्वारा

◆◆◆◆

102.

नया जीवन होगा, कैसा सुहाना
अनन्त जीवन होगा
जहाँ तुम रहोगे, वहाँ मैं रहूँगा
अनन्त जीवन होगा

1. दुनिया की ये शाम ढल जायेगी
कितना सुहाना, प्रभु का दिन होगा
जहाँ तुम रहोगे, वहाँ मैं रहूँगा।
2. यीशु महिमा की धूम मचेगी
कैसा लुभावना, आलौकिक दिन होगा
जहाँ तुम रहोगे, वहाँ मैं रहूँगा।
3. हाल्लेलुय्याह-हाल्लेलुय्याह
कैसा सुहाना, ईश्वरीय दिन होगा
जहाँ योहन गाएगा, वहाँ पीटर नाचेगा।

◆◆◆◆

103.

नन्हे मुन्ने बच्चों आओ चलें
प्यारे मसीह से हम बातें करें
मिलके चलें, मिलके चलें
प्यारे मसीह से हम बातें करें

1. खाना और कपड़ा वह देता हमें
मामा और पापा और भाई-बहिनें, मिलके चलें
2. छोटा प्यारा यीशु कभी न लड़ा
हम भी किसी से कभी न लड़ें, मिलके चलें
3. कितनी अच्छी चीज़ें वह देता हमें
छोटा सा दिल भी उसी को दे दें, मिलके चलें
4. प्यार से बुलाता है यीशु तुम्हें
उछलते और कूदते और गाते चलें, मिलके चलें

◆◆◆◆

104.

नया हम गीत गायेंगे
यीशु की महिमा के,
सारा संसार स्वर्ग एक सुर में
यीशु की जय गायेंगे...नया हम गीत....

1. मुक्ति हाँ मुझको ये यीशु ने है दी,
अपना लहू बहाकर कीमत उसने दी-2
हम जायेंगे सब मिलकर,
नाचेंगे साज हम बजायेंगे मिलकर-2
नया हम गीत गायेंगे....
2. मेरे गुनाहों को वो याद ना करे,
दुष्कर्मों का हिसाब वो ना रखे-2
स्तुति करेंगे हम मिलकर
नाचेंगे साज हम बजायेंगे मिलकर-2
नया हम गीत गायेंगे....
3. युग युग आनंद उत्सव हम साथ मनाएंगे,
जीवन जल के झरनों से प्यास बुझाएंगे-2
हम खायेंगे जीवन के फल
नाचेंगे साज हम बजायेंगे मिलकर-2
नया हम गीत गायेंगे....

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

105.

नीले आसमान के पार जाएंगे
मेरा यीशु रहता वहाँ
हम मिलेंगे बादलों पर (2)
देखेगा सारा जहाँ

1. उसका कोई भी वादा, न होगा अधूरा
हर एक वादा उसका, होता है पूरा
उसका कोई भी वादा, (2)
उसके आने का वादा भी होगा पूरा,
देखेगा सारा जहाँ (2)
2. ये विश्वास है मेरा जो, होगा पूरा,
सपना ये मेरा, न रहेगा अधूरा,
ये विश्वास है मेरा, (2)
संग-संग हम रहेंगे।
अपने यीशु के देखेगा सारा जहाँ (2)

◆◆◆◆

106.

नाम लियो रे नाम लियो रे
यीशु का मंगलकारी नाम लिया रे-2

1. पाप हरेगा, शाप हरेगा-2
पावन-भावन सुंदर मेरे यीशु का नाम-2
2. शांति वो देगा, शक्ति वो देगा-2
पावन-भावन सुंदर मेरे यीशु का नाम-2

◆◆◆◆

107.

निर्बल पापी, हारे हुए हम
देता प्रभु क्षमादान, हमारा
यीशु ख्रिस्त महान्

1. जीवन कलंकित, ह्दय है दूषित
कर्म, विचार, अधर्म से पूरित
हमको बचा लो आज- यीशु-2
2. कोशिश हमारी, नाकाम हुई सब
निराशा पराजय, ही हाथ लगी अब
हमको संभालो आज..... यीशु (2)
3. जीवन दान कर दो प्रदान
ख्रिस्त की आत्मा का दो वरदान
तुझको करें हम प्रणाम .....यीशु (2)

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

108.

पग पग बढ़ते जाना है,
जीवन पथ पर बढ़ना है।
रुकना कभी ना राहों में,
हर पल बढ़ते जाना है॥

1. काँटों की राह बनाई जग ने,
   इसपे चलना है तुझको
   क्रूस तुझे देगी ये दुनियां,
   उसको उठाना है तुझको
   सम्भल के बढ़ना राहों में,
   पीछे न हटना राहों में....
2. तुझको डरायें काली घटाएँ,
   फिर भी रुकना न हरगिज
   जिस पल रूह भी राह बनाए,
   उससे हटना न हरगिज
   अपना ही क्रूस उठाना है,
   कलवरी राह पे चलना है

◆◆◆◆

109.

पाक रूह हम यीशु के प्यासे हैं
खाली दामन हैं, खाली कांसे हैं
कोई त्रिषणा यहाँ से न लौटे
झोलियाँ खूब भरना चाहते हैं।

1. तेरी सूरत खुदा की सूरत है
   तेरी सीरत मसीह की सीरत है
   कर करम आज अपने लोगों पे
   पाक यीशु से मिलना चाहते हैं।
2. तेरी बातें खुदा की बातें हैं
   तेरी साँसें मसीह की साँसें हैं
   बंधनों से रिहाई पायेंगे
   खूने यीशु से धुलना चाहते हैं।
3. ऐ खुदा रूह हमें सिखाता जा
   गलबामोजी पे तू हमें दिलाता जा
   साथ ईमान भी बढ़ाता जा
   हाथ अपने उठाये आते हैं।।

◆◆◆◆

110.

1. पाप का बन्धन तोड़ा गया,
   मैं आज़ाद हूँ हाँ आज़ाद
   सब अपराध भी दूर हो गया,
   मैं आज़ाद हूँ हाँ आज़ाद
   हालेलूय्याह यीशु मुआ,
   मेरे बदले में मुआ,
   हालेलूय्याह, हालेलूय्याह,
   मैं आज़ाद हूँ हाँ आज़ाद
2. जब से अपना पाप मान लिया,
   मैं आज़ाद हूँ हाँ आज़ाद,
   तब से दिल में आग भी आई,
   मैं आज़ाद हूँ हाँ आज़ाद
3. कोई बन्धन अब नहीं है,
   मैं आज़ाद हूँ हाँ आज़ाद,
   कोई डर भी अब नहीं है,
   मैं आज़ाद हूँ हाँ आज़ाद
4. उसकी स्तुति मैं गाऊँगा,
   मैं आज़ाद हूँ हाँ आज़ाद,
   उसकी सेवा भी करूंगा,
   मैं आज़ाद हूँ हाँ आज़ाद

◆◆◆◆

111.

पावन, प्रभु तुम, शरण तुम्हारे
यीशु भक्त हम आये हैं (2)
तुम बिन डूबें, सब नर नारी
यीशु तेरे चरण आये हैं.... पावन

1. ना हमें चैन यहाँ, कोई नहीं कहे अपना
 यीशु नाम-नाम भाये (2)
 हर पल दु:ख हैं यहाँ, पाप अंधेर जहाँ
 यीशु-यीशु दिल पुकारे (2)
2. तुम चरवाहे मेरे, भेड़ें हम हैं तेरी
 भूख अब प्यास नाही लागे (2)
 तुम ही द्वार अंधेरे में ज्योत बने
 ले चलो साथ घर पिता के (2)
3. तुम ही मार्ग, सत्य और जीवन हो प्रभु
 मृत्युंजय तुम्ही हमारे (2)
 मरके, मरण विजय, पाने वाले तुम्ही
 जीवनदाता यीशु प्यारे (2)
 (शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

112.

प्रभु का आनन्द है मेरी ताकत
संसार में यीशु है मेरी ताकत
वो मेरा आनन्द हर एक दिन में,
वो मेरा सहारा है (2)

1. जब मैंने सोचा, मैं अकेला हूँ तब
 प्रभु यीशु ने मुझ से कहा
 संसार के अन्त तक साथ रहने वाला,
 मैं तेरे साथ हूँ (2)
2. जब मैंने सोचा मैं निर्बल हूँ तब
 प्रभु यीशु ने मुझ से कहा
 शक्ति देने वाला सामर्थ देने वाला,
 मैं तेरे साथ हूँ (2)
3. जब मैंने सोचा कि असम्भव है तब
 प्रभु यीशु ने मुझ से कहा
 असम्भव को सम्भव करने वाला, यीशु
 मैं तेरे साथ हूँ (2)

◆◆◆◆

113.

प्रभु का धन्यवाद करूँगा
उसकी संगति में सदा रहूँगा
साथ चलूँगा मैं, जय जरूर पाऊँगा।
प्रभु का...

1. न देगी मुझे दुनिया कभी भी,
 कोई सुख और शांति आराम,
 मेरे यीशु के साथ धन्य संगति में,
 सदा मिलती खुशी मुझको
2. मेरी जिन्दगी के हर परेशानी में,
 खुल जाता है आशा का द्वार,
 कभी न डरूँगा कभी न हटूंगा,
 चाहे जान भी देना पड़े
3. कितना अच्छा है वो, कितना धन्य है वह,
 यीशु ही मेरे जीवन का साथी,
 मेरी जरूरतों को पूरी करता है वह,
 कोई घटी नहीं मुझको
4. मेरी आयु के दिन पग-पग में सदा,
 तेरी सेवा को पूरी करूँगा,
 एक बत्ती समान जलता रहूँगा,
 तेरी महिमा मेरी कामना

◆◆◆◆

114.

प्रभु का दर्शन, यीशु का दर्शन
पाके भाई लग जा सेवा में (2)

1. भारत वर्ष बुलाये तुझको
   आ बचा मुझको (2)
   आत्मायें मरती (2)
   देखो हज़ारों पाप के सागर में
2. क्रूस पर अपनी जान प्रभु ने
   जग के लिए दी (2)
   जगह हैं देखो (2)
   हिन्द के लिए उसके हृदय में
3. बैठे बैठे साल गंवाये
   नौजवानी के (2)
   अभी भी कर ले (2)
   प्रभु की सेवा बाकी जीवन में
4. चारों ओर अन्धेरा छाया
   रात अब आ पहुंची (2)
   जो कुछ है करना (2)
   अभी तू कर ले दिन की ज्योति में
5. प्रभु के लिए आत्मा बचाने में
   तू जल्दी कर (2)
   फसल है पक्की (2)
   पूले जमाकर उसके खत्ते में

◆◆◆◆

115.

प्रभु मेरा चरवाहा, प्रभु मेरा रखवाला
कोई घटी मुझे नहीं है।।

1. सुखदाई झरने के पास
   ले जाता है बुझाने मेरी प्यास
   धर्म के मार्ग में वो
   ले जाता है मुझे अपने साथ।।
2. शत्रुओं के सामने
   आदर करता है मेरा
   आनन्द के तेल से
   अभिषेक करता है मेरा।।
3. घोर अंधकार से भरी
   घाटी से यदि मैं चलूँ
   कोई हानी से न डरूँगा
   प्रभु मेरी करता है रक्षा।।
4. करुणा भलाई और जीवन
   निश्चय मेरे साथ रहेगा
   अपने प्रभु के भवन में
   सर्वदा मैं वास करूँगा।।

◆◆◆◆

116.

प्रभु तोरे मन्दिरों में पूजन करूँ मैं,
पूजन करूँ मैं, पूजन करूँ मैं (2)

1. यीशु तेरे लहू से अपने को धोऊँ,
   शोधन करूँ मैं, निर्मल होऊँ,
   स्वामी तोरी वेदी की प्रदक्षिणा करूँ मैं।
2. मन और हृदय को, अपने मैं जाँचूँ
   निज अभिलाषा सावधान तौलूँ
   सत्य और आत्मा से, भजन करूँ मैं।
3. जब तोरे मुख को, सम्मुख देखूँ,
   करूँ मैं प्रशंसा शुभ राग गाऊँ,
   तेरे शुद्ध चरणों में शीश नवाऊँ मैं।

◆◆◆◆

117.

1. प्रभु महान् विचारूँ कार्य तेरे
   कितने अद्‌भुत जो तूने बनाये
   देखूं तारे, सुनूं, गर्जन भयंकर
   सामर्थ तेरी सारे भूमंडल पर
   प्रशंसा होवे, प्रभु यीशु की,
   कितना महान् (2)
   प्रशंसा होवे, प्रभु यीशु की,
   कितना महान् (2)
2. वन के बीच में तराई मध्य में विचरूँ
   मधुर संगीत मैं चिड़ियों का सुनूं
   पहाड़ विशाल से जब मैं नीचे देखूँ
   झरने बहते लगती शीतल वायु
3. जब सोचता हूँ कि पिता अपना पुत्र
   मरने भेजा है वर्णन से अपार
   कि क्रूस पर उसने मेरे पाप सब लेकर
   रक्त बहाया कि मेरा हो उद्धार
4. मसीह आवेगा शब्द तुरही का होगा
   मुझे लेगा जहाँ आनन्द महान्
   मैं झुकूंगा साथ आदर भक्ति दीनता
   और गाऊँगा प्रभु कितना महान्

◆◆◆◆

118.

प्रभु तेरा प्यार सागर से भी है गहरा
तू है महान् आसमानों से भी ऊँचा
तेरे विचार सागर की रेत से ज्यादा
प्रभु तेरा दिल सृष्टि से भी है बड़ा

1. प्रभु मैं तुझसे प्यार करूं-2
   तेरी आराधना मैं करूं-2
   प्रभु तू ही है महान्-2
   सिर्फ तू और कोई नहीं।

◆◆◆◆

119.

प्रभु परमेश्वर तू कितना भला है
तेरी भलाई सदा की
मेरा दिल तुझे धन्यवाद देता,
मेरा प्राण तुझे स्तुति देता

1. कठिन समय में तू मजबूत गढ़ है
   अंधेरी राह में तू उजियाला है
   मेरी दोहाई तू सुनता
   मेरा प्रभु कभी नहीं सोता,
   मेरा प्राण...
2. तू कहता है नहीं छोड़ूँगा
   तू कहता है नहीं ठुकराऊँगा
   तेरा हाथ मेरी अगुवाई करता
   तेरा सामर्थ मुझे बल देता,
   मेरा प्राण...

◆◆◆◆

120.

प्रभु मुझको बना, तू अपना पवित्र स्थान
धोकर शुद्ध कर अपने लहू से
मैं धन्यवाद के साथ, मानकर तेरी बात
जीऊँगा प्रभु तेरे लिए।

◆◆◆◆

121.

परम पिता की हम स्तुति गायें
वो ही है जो बचाता हमें
सारे पापों को करता क्षमा
सारे रोगों को करता चंगा

1. धन्यवाद दें उसके आसनों में
   आनन्द से आयें उसके चरणों में
   संगीत गाके खुशी से
   मुक्ति की चट्टान को जय ललकारें

2. वही हमारा है परम पिता
तरस खाता है सर्व सदा
पूरब से पश्चिम हैं जितनी दूर
उतने ही दूर किये हमारे गुनाह
3. माँ की तरह उसने दी तसल्ली
दुनिया के खतरों में छोड़ा नहीं
खालिस दूध है कलाम का दिया
और दी हमेशा की ज़िन्दगी
4. चरवाहे की मानिन्द ढूंढ़ा उसने
पापों की कीच से निकाला हमें
हमको बचाने को जान अपनी दी
ताकि हाथ में हम उसके रहें
5. घोंसले को बार-बार तोड़कर उसने
चाहा की सीखें हम उड़ना उससे
परों पर उठाया उकाब की तरह
ताकि हमको चोट न लगे

◆◆◆◆

122.

पवित्र, अति पवित्र स्थान में ले चल प्रभु
मुझको तू अपने लहू से, धो दे मेरे प्रभु,
तेरे सामने, झुकते हैं, सिजदा हम करते हैं,
आत्मा और सच्चाई से, आराधना करते हैं..

1. शुद्ध जल तू छिड़क दे,
मन को मेरे बदल दे,
प्रार्थना है हमारी, आत्मा से तू भर दे
तेरे सामने
2. जितना मैं तुझको जानूं, उतना करीब पाऊं
जितना मैं तुझको पाऊँ,
उतनी ही आशीष पाऊँ,
तेरे सामने

3. चाहो तो आओ तुम मेरे साथ,
नया जीवन तूने दिया, पापों से छुड़ाया,
चट्टानों पे तूने बिठाया,
शैतान की ताकत से तूने मुझे छुड़ाया
गाऊँगा तेरे ही नाम सुबहो शाम...
4. जिंदा खुदा, फिर जी उठा
जीवन नया तूने दिया,
यीशु मसीह है उसका नाम,
छोडूंगा ना अब तेरा साथ
सबको बताऊँगा मैं आज
चाहू तुझे ही मैं क्यों सुबहो शाम
5. मुरदे को जगाया, अंधों को दिखाया,
कोढ़ी को भी तूने चंगा किया,
दुनिया के पापों में जो डूबे हुए थे,
उनको भी तूने ही प्यार किया।

◆◆◆◆

123.

पवित्र आत्मा आ, पवित्र आत्मा आ
मुझे ले जा यीशु के चरणों में

पवित्र आत्मा आ
सिर्फ तेरे लिए यीशु तेरे लिए (3)
मैं हाथ उठाता हूँ
घुटने टिकाकर सिर झुकाकर
हाथ उठाता तेरे लिए (2)
सिर्फ तेरे लिए यीशु तेरे लिए (3)
मैं सिर झुकाता हूँ
यीशु ही मार्ग है, यीशु ही सत्य है
यीशु ही जीवन है, यीशु मेरा प्रभु
सिर्फ तेरे लिए यीशु तेरे लिए
मैं हाथ उठाता हूँ

◆◆◆◆

124.

पावन है वह प्रभु हमारा
उसकी जय, जयकार करो
निर्बल का वह बल है न्यारा
उसकी जय, जयकार करो
जय हो (3) जय हो (3)

1. दीन दुखियों का है दाता
भटके हुओं को राह दिखाता
सीधे मार्ग में हमें चलाता
उसकी जय, जयकार करो
जय हो (3) जय हो (3)
2. प्रभु हमारा बड़ा महान्
निर्बुद्धियों को देता ज्ञान
पतितों का वह बचाता प्राण
उसकी जय, जयकार करो
जय हो (3) जय हो (3)
3. प्रभु की महिमा अपरम्पार
जग का वह है तारणहार
मानों उसे अपना आधार
उसकी जय जयकार करो
जय हो (3) जय हो (3)

◆◆◆◆

125.

पीछे पीछे यीशु तेरे हम चले आयेंगे
हिमालय की वादियों में जय गायेंगे।

1. मुक्ति की बातें और प्रेम की कहानियां
गली-गली सबको हम सुनायेंगे - 2
2. स्वर्ग में विराजमान प्रभु यीशु आये तुम
पाप दण्ड क्रूस को उठाते हो तुम - 2
3. पाप को क्षमा करो, नव जीवन दान दो
भक्त तेरे चरणों पर आये हैं हम - 2
4. दुनिया को छोड़कर माया मुँह मोड़कर
शैतां को हर दिन, हम हरायेंगे- 2
5. आत्मा उँडेल दो, अनुग्रह और सत्य दो
यीशु राज्य अपना स्थापित करो - 2

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

126.

परमेश्वर पिता परमेश्वर
तू ही है दाता हमारे जीवन का
जीवन से भी है उत्तम
तेरी करुणा सदा हम पर।

1. बंजर जमीं से तू उगाता है फसल, सूखी
नदी से तू बहाता प्रेम जल (2)
ये आसमां और ये जमीं
गाते हैं तेरी महिमा।
2. हमको बनाया तूने अपने रूप में
देकर जीवन भेजा तूने संसार में (2)
ये जिन्दगी मेरी सदा
करती है तेरी महिमा।

◆◆◆◆

127.

प्रार्थना में जो कुछ माँगा,
पूरा करो अरमान
सारी खताएँ माफ करो,
तेरा करूँ अब ध्यान।

1. दिल से धीमी आवाज आई
अपने गुनाहों को मान
जान लिया मैंने आवाज उसकी,
जिसका किया अपमान।

2. ईमान लाए जिस पल मसीहा,
आए तुम्हारे पास
माफ करो अब पाप हमारे,
आओ हमारे पास।
3. जाना सभी को आखिर वहाँ है,
होगा जहाँ इन्साफ
धो दे दिलों को आज हमारे,
कर दे लहू से साफ।

◆◆◆◆

128.

फिर से वो आग बरसा दे,
फिर से तूफान आने दे।
तेरी महिमा से, तेरे सामर्थ से,
फिर से तू अभिषेक कर दे...
आ पवित्र आत्मा...6
1. बहने दे उस हवा को,
छू ले हर एक दिल को,
तेरा दर्शन हमें मिले,
करते हैं प्रार्थना तुझसे,
तेरी महिमा...
2. तू बदल दे मेरे मन को,
दे आशीष इस जीवन को,
तेरी करुणा हम पे बरसे,
अपने मार्ग पे चला हमको
तेरी महिमा...

◆◆◆◆

129.

प्यारो हिम्मत बांधो आगे बढ़ो
क्रूस का लो निशान,
जीतेंगे हम यारो हारेगा शैतान,
1. लड़ो-लड़ो फुर्ती करो यीशु है कप्तान, (2)
हिम्मत बांधो आशा रखो भागेगा शैतान
2. पाप और दुख में चारों तरफ
मरते हैं इंसान, (2)
दया करो भारत पर, वह हुआ परेशान,
3. घर-घर जाकर करो प्यारो,
यीशु का बयान, (2)
वह है राजा मुक्तिदाता, सब पर मेहरबान
4. जल्दी करो सुनाओ सबको
यीशु का फरमान
पापी बचते जाते, लाते जो उस पर ईमान
5. दास कहें बैरी शरमाते सुन यीशु का ज्ञान,
लोग मसीह को मानते जाते, हारता है शैतान

◆◆◆◆

130.

बिजलियाँ चमकेंगी, तुरहियाँ, फूकेंगी-2
मेरा यीशु मुझे लेने आयेगा .....
हाँ मेरा यीशु मुझे लेने आयेगा
1. भूकंप धरती को देंगे हिला
भूख और अकाल में, सारा जहाँ (2)
होगी लड़ाईयाँ चारों तरफ़
फिर भी रखेंगे धीरज हम सब (2)
बिजलियाँ
2. झूठे नबी होंगे, सब लों जमा
धोखा वे देंगे, सब को यहाँ (2)
हम पर न होगा, उनका असर
आत्मा की भरपूरी में अगर (2)
3. सारा जगत उसकी आमद को
देखेंगे उसके जलाल को (2)
रोएंगे छाती वे पीटेंगे
ठुकराया जिन सबने यीशु को (2)

4. सोये हैं जो प्यारे यीशु के संग
पल में उठेंगे विश्वासी जन (2)
कब्रें खुलेंगी, ना कोई डर
मृत्यु का होगा, अब न असर (2)
(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

131.

बोलो जय मिलकर जय,
बोलो जय यीशु की जय, (2)
बोलो जय, जय, जय

1. तेरे प्रेम की यही रीत,
मन में भर दे अपनी प्रीत,
तेरे प्रेम के गाएं गीत
बोलो जय

2. क्रूस पर अपना खून बहाया,
मुझ पापी को दी शिफा,
मन मेरे तू बोल सदा
बोलो जय

3. तेरी कुदरत की यह शान,
खुद ही दाता, खुद ही दान,
पूरे कर मन के अरमान
बोलो जय

4. खिदमत अपनी ले मुझ से,
इस मन्दिर में तू बसे,
हिन्द में तेरा नाम रहे
बोलो जय

◆◆◆◆

132.

बरकत और इज़्ज़त और जय तेरी हो,
और जय तेरी हो, और जय तेरी हो
बरकत और इज़्ज़त और जय तेरी हो,
कि तू ही तख़्त पर है
तारीफ़ तारीफ़ हर एक जन ललकारे, (2)
तारीफ़ तारीफ़, कि तू ही तख़्त पर है
बरकत और इज़्ज़त और जय तेरी हो,
और जय तेरी हो, और जय तेरी हो
बरकत और इज़्ज़त और जय तेरी हो,
कि तू ही तख़्त पर है

◆◆◆◆

133.

बादलों पे यीशु जब आओगे तुम
हम तुमसे मिलन चले आयेंगे-2

1. होशन्ना गाते हुए तेरे भक्त आयेंगे-2
सब जन हम मिलकर गायेंगे
तुमसे मिलन....
2. स्वर्गदूत आयेंगे तुरहियाँ बजायेंगे-2
सुर साज साथ लिए आयेंगे
तुमसे मिलन...
3. यीशु में सोये सब जीवित हो जायेंगे-2
बादलों पे जय ललकारेंगे
तुमसे मिलन...
4. प्रभुओं के प्रभु तुम राजा राजाओं के-2
युग युग हम तेरी स्तुति गायेंगे
तुमसे मिलन....

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

134.

बिनती सुनले यीशु प्यारे (2)
मोहे संग रखो महाराज
अब तुम राखो मेरी लाज
प्रभुजी राखो मेरी लाज

1. बिनती करूं तुमसे कर जोरी
   अब तुम बिनती सुनलो मोरी (2)
   मोहे आशा लग रही तोरी (2)
   दर्श दिखादो आज
   अब तुम राखो मेरी लाज (2)
2. तुमही हमारे नैनों के तारे
   मन के प्यारे दिल के दुलारे (2)
   तुमही हमारे तारणहारे (2)
   हमरे तुम सरताज
   अब तुम राखे मेरी लाज
3. आपका मैं शैदा कहलाऊँ
   आस लगी तोरे दर्शन पाऊँ
   युग-युग आपका मैं गुणगाऊँ
   मेरे ग़रीब नवाज़
   अब तुम .....

◆◆◆◆

135.

बड़ी भोर को तेरे दर्शन को मैं
चरणों में आता हूँ
आराधना स्तुति और प्रशंसा
पिता को चढ़ाता हूँ
आराधना आराधना-2
मेरे यीशु राजा की
पवित्र आत्मा प्रभु की

1. हर दिन के हर एक पल में
   तेरा यीशु ध्यान दें
   मेरे मुँह के वचनों से
   दूजों के घाव भरे
2. तेरी इच्छा तेरी चाहत।
   मेरे मन सबल करें
   उठूँ प्रार्थना वीर बनकर
   हर पल को सफल करें।
3. कलाम को सुनाना
   मेरे मकसद होना है
   तेरे नाम को सुनाने
   पूरे देश में जाना है।

◆◆◆◆

136.

भजने आए हैं पिताजी
आत्मा सच्चाई से तुझ को,
झुकते हैं प्रणाम करते
आए हैं हम भजने भजने।

1. देन पुत्र की है देनी
   सर्वदा भण्डार से जो,
   हे पिता त्रिएक स्वामी
   आए हैं हम भजने भजने।
2. पापियों का मित्र तू है
   पाप को तू मिटाने आया,
   तू है सच्चा मुक्तिदाता
   आए हैं हम भजने भजने।
3. सत्य, मार्ग जीवन तू है
   पिता से हमको मिलाने आया,
   अच्छा चरवाहा तू ही है
   आए है हम भजने भजने।

4. जख्मी हाथ हैं कैसे सुन्दर
तूने जय पाई है सब पर,
अपना प्रभु जान के तुझको
आए हैं हम भजने भजने।

◆◆◆◆

137.

भजो मीठा नाम, प्रभु यीशु नाम
प्यारे प्रभु यीशु का, करो आदरमान

1. महिमा अपनी छोड़कर आया जगत में
जन्म उसने पाया कुंवारी मरियम से
गरीब बनकर रहा सारे जगत में
मेरी जान का प्यारा प्रभु यीशु है।
2. पाप और शर्म के सारे घृणित रोगों को
दिल के गन्दे दागों को मिटाने को
यीशु ने बलिदान दिया अपने आपको
मेरी जान का प्यारा प्रभु यीशु है।
3. आयेगा फिर से अपने लोगों के लिए
अपने साथ आसमान पर ले जाने के लिए
आनंद हर्ष पिता को देने के लिए
मेरी जान का प्यारा प्रभु यीशु है।
4. पाप और श्राप,
और दुष्ट की सारी चालों पर
देता है विजय के, माँगों उससे वर
हृदय में वह शांति भरता सरासर
मेरी जान का प्यारा प्रभु यीशु है।
5. जय जय जय जय मिलकर गाओ भाईयों
खुशी का समाचार सबको जा के दो
हो जाओ तैयार अब उससे मिलने को
मेरी जान का प्यारा प्रभु यीशु है।

◆◆◆◆

138.

भजन करूँ, मैं भजन करूँ
नाम मसीह का मैं लेता रहूँ।

1. दुश्मन मुझको मेरे सताएं
दोष वे झूठे मुझ पर लगाएं
उनके लिए मैं दुआ करूँ।
भजन करूँ ...।
2. लोग जो झूठी बातें गढ़ें
चारों तरफ़ बदनाम करें
फिर भी मैं उनको क्षमा करूँ
भजन करूँ ...।
3. हाथ पकड़ ले, प्यारे मसीह
राह दिखा दे, जो है सही
तेरे मैं पीछे-पीछे चलूँ।
भजन करूँ ...।

◆◆◆◆

139.

भजता क्यों नहीं रे मन मूरख
यीशु नाम सच्चा नाम,
पार करेगा जीवन नैय्या,
यीशु नाम, सच्चा नाम।

1. भव सागर से है यदि तरना,
दु:ख संकट से नहीं कुछ डरना
पार करेगा जीवन नैय्या
यीशु नाम सच्चा नाम।
2. दुनिया के यह गोरख धन्धे,
जीवन के हैं सारे फन्दे
यीशु नाम को भज लें बन्दे,
यीशु नाम सच्चा ना।

3. दुनिया में तूने पाप कमाया,
पाप में सारा वक्त गंवाया
यीशु नाम को क्यों नहीं भजता,
यीशु नाम सच्चा नाम।
4. टूटे फूटे हौज बनायें,
जिनमें पूरी शान्ति न पाये
तुझको पूरी शान्ति देगा।
यीशु नाम सच्चा नाम।
5. दुनिया से है एक दिन जाना,
फिर माया में क्यों फंस जाना
जीना है तू जब तक भज ले,
यीशु नाम सच्चा नाम।

◆◆◆◆

140.

1. मैं तो प्यार की नौका में
परलोक जाता हूँ प्रीतम के संग
ओ...मेरे प्रीतम के संग
यहाँ धरनी में भवन न मान नहीं
मेरा मान नहीं
मेरा भवन यह स्वर्ग में जाना वहीं
मुझे जाना वहीं
2. यदि बादल से घिर मेरी
नाव तरंगों से हिलने लगे
ओ...नाव हिलने लगे
शीघ्र शरण का लंगर वह डालूंगा मैं
उस को डालूंगा मैं
उस के निकट में रहना ही आराम है
मेरा आराम है
3. यहाँ चार दिन रहना है
पीछे हमें वहाँ जाना ही है
ओ...वहाँ जाना ही है
उसके चरण में रहने को जाना ही है
मुझे जाना ही है
आँसू नयनों से पोंछेगा प्यारा मसीह
मेरा प्यार मसीह।
(टी.ए. कुरियन)

◆◆◆◆

141.

मुझको यीशु मसीह मिल गये हैं अभी
जीना है बस अब, यीशु मसीह
1. राह अंधेरी दु:खों से भरी है यहाँ (2)
कुछ न सूझे, जहाँ में कहीं
मिल गया मुझको यीशु मसीह
2. दुश्मन आये हैं जाँ लेने को अब यहाँ (2)
सब लुटा देंगे, अब हम यहीं
मिल गया मुझको यीशु मसीह
3. दोस्त छोड़ें और अपने, सतायें मुझे-2
क्रूस छोड़ेंगे, हम न कभी
मिल गया मुझको यीशु मसीह
4. जान दी उसने मरना सिखाया मुझे-2
इस जहाँ के हैं हम अब नहीं
मिल गया मुझको यीशु मसीह
(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

142.

महफिल मसीहा की,
शाम भी मसीहा की
ये महफिल सजाने आए हैं हम
मसीहा से मिलेंगे, मसीहा से कहेंगे,
तेरे गीत गाने आए हैं हम।
महफिल मसीहा की

1. मस्सा की फराबानी की,
उकाबों सी जवानी की,
शिफा की अबगानी की हमें आरजू
मसा में भर जाएँगे,
हवा में उड़ जाएँगे,
तेरे रूह से भरने आए हैं हम
महफिल मसीहा की...
2. मसीहा ही सहारा है,
मसीहा जाँ से प्यारा है,
गुनाहों का गफारा है,
जिंदा खुदा
मीठी-मीठी जिन्दगी,
रूह की ताज़गी,
नई ज्योति देने आए हैं हम
महफिल मसीहा की...
3. नजर है मसीहा पर,
फकर है मसीहा पर,
ईमान मसीहा पर मसीहा तू आ
है दुल्हन मुल्तजर, नजर
अफलाद पर,
नकारे को सुनने आए हैं हम
महफिल मसीहा की...
4. मसीहा मेरा जीवन है,
मसीहा मेरी दौलत है,
मसीहा मेरी इज्जत है,
जिंदा खुदा।

◆◆◆◆

143.

मुक्तिदाता यीशु नाम
भजले दिल में उसका नाम

1. आदि वो नाम, अंत वह नाम
सब को जीवन दे वह नाम (2)
2. ज्योतिर नाम, सत्य वह नाम
शांति वह देता येशू नाम (2)
3. जय मृत्युंजय, येशू नाम
पापिन को दे पुनरुत्थान (2)
4. निर्बल निष्फल, का वह नाम
शक्ति देता येशू नाम (2)
5. क्रूस पर नाम, खून से नाम
राजाओं का राजा येशू नाम (2)

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

144.

मेरी आँखें खोलो यीशु मसीह
हम भटक रहे अंधियारे में
ज्योति दिलाओ प्यारे प्रभुजी
ले आओ उंजियारे में .....मेरी

1. हम हैं लाचार और गिरे हुए
जग में निर्बल और दबे हुए (2)
तुम शक्तिमान् प्रभु यीशु
हम चरण तुम्हारे आये हैं, ज्योति .....
2. ये पाप हमें दु:ख देते हैं।
हर पग हम उसमें गिरते हैं (2)
तुम परमपिता हो हमारे प्रभु
हम शरण तुम्हारे आये हैं, ज्योति .....
3. परमात्मा का तुम दान करो
मेरे जीवन का बलिदान करो (2)
दुनिया पर विजय की शक्ति दो
मरने के भय से मुक्त करो, ज्योति .....

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

145.

मेरो मन लागो (2)
यीशु जी के ध्यान,
प्रभु जी के ध्यान (2)

1. प्रेम की तेरी रीत निराली (2)
   तेरी निराली शान (2)
2. पापिन कारण क्रूस उठाया (3)
   दे दी अपनी जान-(3)
3. जो कोई तेरी शरण में आया (2)
   बच गये उसके प्राण (3)
4. प्रार्थना में जो कुछ तुझसे मांगा (2)
   पूरे किये अरमान (3)
5. जिसने तेरा दामन छुआ (2)
   पाई शिफा उसी आन (3)
6. बिनती हमारी सुनिए यीशु जी (2)
   दीजो अपना ज्ञान (3)

◆◆◆◆

146.

मेरे जीवन का मकसद तू है
मेरे जीने का कारण तू है
मैं जीयूँ या मरूँ वो तेरे लिये
तू मेरा प्रभु

1. पिछला सब भूलकर
   मैं आगे दौड़ा चलूँ
   जो मेरे लिये धन था
   उसको मैं त्याग दूँ
   कि मैं पाऊँ उससे पुरस्कार
   दौड़ा मैं जाऊँ (2)
   मैं जीयूँ...
2. मुझ पर हुई हैं कृपा
   बेकार ना जाने दूँ
   जिसने मुझे है चुना उसकी ओर मैं बढ़ूँ
   देखूँ तेरी सलीब पर खिंचा मैं जाऊँ
   मैं जीयूँ...

◆◆◆◆

147.

माँगो तो मिल जायेगा
ढूँढ़ो तो तुम पाओगे
खटखटाओ द्वार खोलेगा यीशु
प्यार वो करता तुझे .... माँगो

1. चिड़ियों को देखो तुम, बोते न काटते
   स्वर्गीय पिता पालनहार
   भूखा न रखता वो, हर दिन खिलाता
   तुम हो बहुमूल्यवान् (2)
2. फूलों को देखो तुम, बुनते न कातते
   सुंदर हैं वे कितने
   वस्त्र की चिंता हो, या निर्धनता
   सब कुछ पिता पर छोड़ो (2)
3. कल की न चिंता हो, उस पर भरोसा हो
   रोटी कपड़ा न मकान
   राज्य-धरम उसका जीवन हो यीशु जैसा
   होएं न हम परेशान (2)

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

148.

मुक्ति दिलाये यीशु नाम
शान्ति दिलाये यीशु नाम, (2)

1. यीशु दया का बहता सागर (2)
   यीशु है दाता महान....
2. चरनी में तूने जन्म लिया यीशु (2)
   सूली पर किया विश्राम....
3. हम पर भी यीशु किरपा करना (2)
   हम हैं पापी नादान...
4. हम सब के पापों को मिटाने (2)
   यीशु हुआ बलिदान...
5. क्रूस पर अपना खून बहाया (2)
   सारा चुकाया दाम...

◆◆◆◆

149.

1. महिमा से तू जो भरा हुआ
   ज्योति में सदा रहने वाला
   मनुष्यों में तू ने जन्म लिया
   फिर से यीशु जग में तू आएगा
   आयेगा यीशु (2)
2. भूमि, आकाश में समा न सका
   मन्दिरों में तू रह न सका
   नम्र होके चरनी में पैदा हुआ
   मनों में हमारे घर तू बना
   घर तू बना यीशु (2)
3. खैमे में आकर तू ही बसा
   लोगों को अपने लिए फिरा
   अग्नि और बादल में तू ही दिखा
   फिर से यीशु अपना जलवा दिखा
   जलवा दिखा (2)
4. दानिएल की तूने प्रार्थना सुनी
   एज्रा की तूने सहायता की
   बाबुल में तूने बेदारी भेजी
   अपने लोगों को फिर से दे रिहाई
   दे रिहाई (2)
5. तू ही हमारा राजा है,
   तू ही मुक्तिदाता है
   फिर से आनेवाला है
   प्यारे प्रभु यीशु तू जल्दी आ
   जल्दी आ (2)

◆◆◆◆

150.

मन का दीप जला जीवन दीप जला
ख्वाबों में खोया है, जाग ज़रा मतवाले

1. सच बतलाओ तेरे मन में, रात कैसी छायी
   अच्छा नहीं है देख संभल जा यीशु से है जुदाई
   मन का मैल धुला (2) ख्वाबों में
2. यह दुनिया है ख्वाब सुनहरा,
   इसमें जो फंस जाए
   रोए तड़पे चैन न पाए, घुट-घुट कर मर जाए
   यीशु को अपना (2) ख्वाबों में
3. यीशु को तू अपना जीवन अपना मीत बना ले
   छोड़ दे अब यह दुनिया सुनहरी,
   दुनिया से मन फिरा ले
   होगा तेरा भला (2) ख्वाबों में

◆◆◆◆

151.

मन तो प्रभु का मन्दिर है,
तन अपना दान करो
अपने प्रभु की सेवा में,
सब अपना दान करो।

1. है याद तुम्हें जन्मे थे,
   तुम पाप के सागर में,

और पाने तुम्हें आया,
वह पाप के सागर में,
उस प्यारे प्रभु के नाम के लिए,
कुछ अपना दान करो।

2. कल तुम जो भटकते थे,
अन्जान सी राहों में,
यीशु तुमको बचा लाया,
अपनी प्यार की बाहों में,
जो भी मिला है, प्रभु में तुम्हें,
औरों को दान करो।

3. अन्धकार से जीवन में,
वह रोशनी ले आया,
उस रोशनी में हमने,
एक मार्ग नया पाया
जीवन तुम्हारा है उसका,
जीवन बलिदान करो।

♦♦♦♦

152.

मन मन्दिर में बसने वाला,
यीशु तू है निराला (2)

1. जिसके मन में तू जन्म ले
अविनाशी आनन्द से भर दे (2)
आदि अनन्त की प्रीत रीत की
जल जाएगी ज्वाला (2)

2. मूसा को तून पास बुलाया
स्वर्ग लोक का भवन दिखाया (2)
महा पवित्र स्थान में रहकर
आप ही उसे सम्भाला (2)

3. पाप में दुनिया डूब रही थी
परम पिता से दूर हुई थी (2)
महिमा अपनी आप ही तज कर
रूप मनुष्य ले आया (2)

4. प्रेम हमें अनमोल दिखाया
प्रेम की खातिर रक्त बहाया (2)
क्रूस पर अपनी जान को देकर
मौत से हमें छुड़ाया (2)

5. हर विश्वासी प्रेम से आये
खुशी से अपनी भेंट चढ़ाये (2)
अन्धकार अब सब दूर हुए हैं
मन में हुआ उजाला (2)

♦♦♦♦

153.

1. मैं यीशु के साथ नूर में चलूंगा
दिन और रात उसके पीछे मैं चलूंगा
पीछे चलूंगा, फतह पाऊँगा
यीशु मेरा मुन्जी मसलूब

चलते चलते नूर में यीशु के साथ
चलते चलते थामते यीशु के हाथ
नूर में मैं रहूँगा, फतह पाऊँगा
मैं नूर में चलता रहूँगा

2. मैं यीशु के साथ नूर में चलूंगा
गर अन्धेरी राह में न डरूंगा
पैर उठाऊँगा दिल से गाऊँगा
यीशु मेरा मुन्जी मसलूब

3. मैं यीशु के साथ नूर में चलूंगा
जब कभी आवाज़ उसकी सुनूंगा
उससे कहूँगा, तुझे सब दूंगा
यीशु मेरा मुन्जी मसलूब

♦♦♦♦

154.

मेरे गीतों का विषय, तू मेरी आराधना,
तेरी महिमा मुझसे होवे, यह मेरी है कामना (2)

1. तुझको मैंने मेरे प्रभु जी, जब से पाया है,
   तेरे अनोखे प्रेम के आगे, शीष झुकाया है,
   तेरी महिमा गाने को जो साज उठाया है,
   गीत नया जीवन में मेरे तब से आया है,
   मेरे जीवन का हर-पल अब तू ही मुझको थामना।
   तेरी महिमा....
2. तेरा वचन जो राह में मेरे, दीप सा जलता है,
   मेरे जीवन का हर पहलू, उसमें ढलता है,
   तेरे वचन के द्वारा मुझको साहस मिलता है,
   वह तो कभी न भटकेगा, जो उन पर चलता है,
   तेरे वचन को थामे रहूँ, हो मेरी यह साधना।
   तेरी महिमा....
3. वक्त चुनौती देकर पूछे, तुमसे बारम्बार,
   यीशु मसीह को बनाया तुमने, जीवन का आधार,
   सोचना होगा हर प्राणी को, क्या वह है तैयार,
   देखो शायद कल न आए, करना न इनकार,
   एक दिन करना होगा सबको उसका सामना।
   तेरी महिमा....

◆◆◆◆

155.

1. मेरे हाथों को यीशु थामो,
   मुझे ले चलो अपने साथ,
   मेरे पावों को यीशु संभालो,
   ना भटकें अपनी राह,
   मेरे होंठ करें धन्यवाद,
   तेरा भजन करें दिन रात,
   मैं चलता रहूँ तेरे पीछे पीछे
   करके अपना इनकार
2. मेरी आँखों को यीशु खोलो,
   राह तुम मुझको दिखलाओ,
   तुम ही हो जगत की ज्योति,
   अंधियारा तुम ही मिटाओ,
   मैं देखूं सदा तेरी महिमा,
   तेरी सेवा करूं प्रभुराज,
   मैं चलता रहूँ तेरे पीछे पीछे,
   तजके सारा संसार
3. मेरे कानों को यीशु खोलो,
   सुनु हर पल तेरी आवाज,
   मानूं तेरी आज्ञा मैं सारी,
   पाऊँ मै अनुग्रह आज,
   तन मन धन समर्पण करके,
   बन जाऊं मैं अब तेरा दास,
   मैं चलता रहूँ तेरे पीछे पीछे,
   क्रूस उठाकर साथ

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

156.

मेरे प्रभु, जग करतार मोहे अपने ही प्रेम से भरदे
मोहे अपने ही रंग में रंग दे
मोहे अपने ही प्रेम से भरदे।

1. प्रेम से छोड़ा स्वर्ग सिंहासन
   प्रेम से किया तुमने क्रूस धारण-2
   तुम ही सत् अवतार रे ... मोहे
2. अंधक नैन भी कोढ़िन काया
   मुर्दों को भी तुमने जिलाया
   तुम ही जग करतार रे .... मोहे
3. प्रेम हमे भी करना सिखा दो
   क्रूस पे चढ़ना हमको सिखा दो
   बिनती करत बार बार रे ... मोह

◆◆◆◆

157.

मसीह तू हमको बचा ले
गुनाहों से तू छुड़ा ले,
टूटी हुई है ये नैया
मसीहा तू पार लगा दे (2)

1. पतवार टूट चुकी है, दिखता नहीं है किनारा
   ऐसे में तू ही मसीहा,
   दिखता तू ही सहारा (2)
2. हिम्मत हार चुकी है, छाया है अन्धेरा
   ऐसे में तू ही मसीहा,
   दिखता तू ही सहारा (2)
3. वो सुबह जा रही है, ये रात आ रही है
   ऐसे में तू ही मसीहा,
   दिखता तू ही सहारा (2)

◆◆◆◆

158.

मसीही जिन्दगी, आनन्द की जिन्दगी
है जिसका दाता, यीशु मसीह जी
चाहे कष्ट आयें, चाहे नष्ट होवे
यीशु हे मेरा हमेशा साथी।

1. दुनिया की मदद जब बंद हो जाये
   लोग हमें जब छोड़ भी देवें
   खुद के भाई त्याग भी देवें
   यूसुफ का प्रभु है मेरा साथी।
2. अंधकार जग में जब फैल जावे
   राजा और हाकिम शत्रु हो जावे
   वह अग्नि कुंड हो शेरों की मान्द हो
   दानिय्येल का प्रभु है मेरा साथी।
3. वह मेरा मित्र है वह मेरा चरवाहा
   वह मेरा राजा हमेशा साथ है
   हम दबे क्यों रहें हम व्याकुल क्यों रहें
   प्रभु के पुत्र सब गाते ही रहें।
4. तुरही सुनने का वक्त अब आ गया
   अपने प्रभु को शीघ्र ही देखेंगे
   कब तू आयेगा कितनी देर करेगा
   इन्तजार मुझको है तेरा प्रभु जी।

◆◆◆◆

159.

मिलकर हम सन्ना तेरी गाते
सारे जहाँ को सुनाते
जय जय हो तेरी महिमा हो तेरी
प्रभु सबको हम यह गीत सुनाते।

1. सारे जहाँ का सहारा
   डूबे हुओं का किनारा
   नैय्या हमारी डोले
   मौजों में खाये हिलोरे
   ले चल किनारे ले जा
   बन कर तू माँझी ले जा
   हम सबको पार लगा दे।
2. चारों तरफ है घटायें
   घनघोर बादल हैं छाये
   सूझे नहीं अब किनारा
   तू ही हमारा सहारा
   ले चल किनारे ले जा
   बन कर तू माँझी ले जा
   हम सबको पार लगा दे।
3. पापों में जीवन हमारा
   कष्टों को झेल रहा है
   कैसे बचेंगे सारे ये पापी जीवन हमारे
   तू ही हमारी आशा तू ही हमारा जीवन
   हम सबको पार लगा दे।

◆◆◆◆

160.

मिलती है जय हमको तुझसे
गा मेरे दिल हाल्लेलुय्याह
मसीह मैं तेरे संग चलूं
मसीह में मैं बना रहूँ।

1. तमन्ना दिल की ये जुबां पे आयी है
करे बयां सबको खुशी जो हमने पायी है
वो मेरे संग-संग रहा, जहां भी मैं बढ़ा चला
तो कैसे रहूँ मैं खुदा से जुदा।
2. उकावों से ऊँचा मैं उड़ता आया हूँ
हाँ शेरों से ज्यादा मैं ताकत पाता हूँ
उसी से मुझे बल मिला वही तो मेरा है खुदा
तो कैसे रहूं मैं खुदा से जुदा।

◆◆◆◆

161.

1. मेरा एक ही मित्र यीशु
वो मेरा सब कुछ है
लाखों में वो मेरा एक ही प्रिय है
वो शारोन का गुलाब है
और भोर का तारा है
लाखों में वो मेरा एक ही प्रिय है।
उसके दु:ख से मुझको शांति
और आनन्द मिलता है
उसका क्रूस मुझको चंगा करता है
वो शारोन का गुलाब है
और भोर का तारा है
लाखों में वो मेरा एक ही प्रिय है।
2. मेरा सारा बोझ उठाया
मुझे चंगा कर दिया है
पाँवों को वो मेरे स्थिर किया है
जब अकेला था भटकता
और सबने छोड़ दिया
यीशु मेरा प्यारा मित्र बन गया।
3. अब मैं जीवन भर उसकी महिमा करूँगा
हाथ उठाकर उसकी स्तुति करूँगा
यीशु के लिए जीऊँगा और उसमें मरूँगा
यीशु ही मेरी एक मात्र आशा है।

◆◆◆◆

162.

मेरा मन धो देना प्रभु
विनती करूँ बार-बार

1. मन मेरा हो गया पापों से मैला
मैं धोते-धोते हुआ लाचार
2. गंगा यमुना तीरथ नहाया
और नहाया जाकर हरिद्वार
3. मैंने भूल करी बड़ी भारी
आया नहीं मैं तुम्हारे द्वार
4. बाइबल भीतर मैंने पाया
तुम ही हो दिल के धोवनहार
5. दास कहे इस पापी मन को
कृपा कर तुम दीजियो निखार।

◆◆◆◆

163.

मेरा प्रभु जन्मा, प्यारा यीशु जन्मा
पापिन कारण तारण
मेरा प्यारा यीशु जन्मा

1. मरियम बैठी अपने घर में,
आया दूत स्वर्ग से
बोला कुंवारी मरियम से
कि लो सलाम हमारा जी
2. मरियम बैठी गौशाला में,
राजा बालक चरनी में

आये गड़रिये दंडवत करने
सारे जग के त्राता को
3. आगे-आगे तारा,
पीछे-पीछे पंडित लोग
सोना, मुर्र, लोबान चढ़ाते
करते उसकी महिमा जी।

◆◆◆◆

164.

मेरा यीशु है कितना महान्
उसके जैसा कोई है कहाँ
उसके चरणों में सिजदा करूँ
वही तो है मेरा खुदा-2
हा...हाल्लेलुय्याह-3

1. तूने रचाए धरती आसमां,
अपने एक शब्द के द्वारा।
तूने सजाए चारों ओर दिशा
अपनी सामर्थ के द्वारा।
क्या है इंसा जो तू उसे याद करे,
क्या है इंसा जो तू उसे प्यार करे-2
2. तू है पवित्र यहोवा अलशाहाई,
तू है शालोम यहोवा अदोलाई।
तेरी इच्छा से तूफान उठे,
तेरी आज्ञा से आंधी थम जाए
क्या है इंसा जो तू उसे याद करे,
क्या है इंसा जो तू उसे प्यार करे-2

◆◆◆◆

165.

मेरे महबूब प्यारे मसीहा
किस जगह तेरा जलवा नहीं है
किस जगह तेरी शोहरत नहीं है
किस जगह तेरा चर्चा नहीं है

1. लोग पीते हैं और गिर जाते हैं
मैं तो पीता हूँ गिरता नहीं हूँ
मैं तो पीता हूँ दर से मसीह के
वो अंगूरों का सीरा नहीं है।
2. मर गई थी वह याईर की बेटी
तूने उसपे निगाहें करम की
कर दिया उसको जिन्दा यह कहकर
ये तो सोती है मुर्दा नहीं है।
3. आँख वालों ने तुझको है देखा
कान वालों ने तुझको सुना
तुझको पहचानते हैं वो इन्शां
जिनकी आँखों में पर्दा नहीं है।
4. जिसमें शामिल न हो इश्क तेरा
वह परस्तिश, परस्तिश नहीं है
तेरे कदमों पे होता नहीं तो
कोई सिजदा वह सिजदा नहीं है।

◆◆◆◆

166.

मेरे दिल में नया गाना
मुझे यीशु देता है
आनन्द से गाऊँगा, जीवन भर अपने
प्रभु की स्तुति करूँगा
हाल्लेलुय्याह...

1. पाप की गन्दगी से मुझे उठाया
दिया उसने नया गीत मेरे जीवन में
2. कीच से उसने मेरे प्राण को खींच के
निकाला
खून से उसने बदबू सारा दूर किया
3. माता-पिता भाई-बहन सब कुछ वही है
निन्दा लेकर उसकी महिमा करता रहूँगा

4. इस जहाँ की मुसीबतें क्या करेंगी उस
जहाँ की जिन्दगी पर आशा रखता हूँ
5. मेरे लिए जल्दी वह आने वाला है उसके
साथ हमेशा मैं गाता रहूँगा

◆◆◆◆

167.

मेरे मन कर ले तारीफ
तारीफ के योग्य प्रभु है
उसने किये हैं बड़े-बड़े काम
उसकी हो महिमा हम से सदा

1. भेंट जो तुम लाये हो
कर लो उसे तुम दान
दिल से चढ़ायें मिलकर हम
धन्यवादों की ये बलिदान
2. तारीफों में विराजमान
प्रभु है कितना महान्।
दिल से चढ़ायें मिलकर हम
धन्यवादों के ये बलिदान।

◆◆◆◆

168.

मैं आता हूँ तेरे पास, प्रभु यीशु मेरे मसीह
मेरे पापों के लिये ही, उद्धार दे दे मसीह

1. स्वर्गधाम छोड़ के आया,
उद्धार देने मसीह
चरणों में तेरे आता,
तुझको ये दिल देता मसीह।
2. मुझे पापों से छुड़ाने,
खून क्रूस पर बहा दिया
कितना गहरा प्यार किया है,
मैं भूला न सकूँगा मसीह।
3. स्वीकार कर प्रभु मुझे,
अपने राज्य में ले ले
आजा तू मेरी जिन्दगी में,
मेरी जिन्दगी तेरी मसीह।

◆◆◆◆

169.

ये दुनिया बाज़ार है
हर दिल में व्यापार है
शैतां के पिंजरे में फंसते
जाते हम इन्सान हैं।

1. पत्थर से रोटी बनालो
कहते सारे आज हैं
झूठ-फरेब और लालच करलो
ऐश करो आराम है,
बोलें यीशु वचन है जीवन
रोटी नहीं जिलाये रे
2. धन-दौलत और वैभव ले लो
बड़े बनो दुनिया में तुम
शैतां की खुशखबरी यही है
फंस न जाना इसमें तुम
बोलें यीशु झूठ ये बातें
स्वर्ग राज्य मन लागो रे
3. दुनिया तुम्हें दिलाये, शैतां
शक्ति पाओगे तब तुम
गर तुम शैतां से हारोगे
झुक, जाओगे गर अब तुम
बोलें यीशु परमेश्वर की
भक्ति हमें सुहाए रे

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

170.

1. यीशु आये गाँव समरिया में
बैठे कुँए दुपहरिया में
आई नारी पानी भरने
ले जाने साथ गगरिया में
2. यीशु बोले देखो नारी
में प्यासा दो मुझको पानी
बोली झट से तब वो नारी
जब छुआछूत तब क्यों पानी
पीता न हमरे हाथ कोई
यहाँ छुआछूत भाई,
कहीं प्रेम मिलत नाहीं भाई-2
3. ले आओ पति को अपने तुम
घर जाओ गाँव अब झटपट तुम
हाँ पाँच पति करके भी तुम
अंधियारे में भटकी हो तुम
4. नहीं बुझती प्यास गुनाहों की
नहीं सुलझे बात खताओं की
जीवन जल लेकर आया हूँ
मैं प्यास बुझाने आया हूँ
5. ईश्वर ना हाथ बने घर में
रहता है आत्मा में दिल में
जो खून बहाने आया है
हाँ ख्रिस्त हमारा आया है
6. चाहे चोर या कातिल ही ना हो
वेश्या या अधर्मी कोई ना हो
यीशु प्यार संदेशा लाया है।
पापिन को बचाने आया है।
सारा जग मिलकर अब गाये रे
यीशु की जय ललकारे
जग ख्रिस्त हमारे आये हाँ-2

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

171.

यीशु के नाम से थर-थर काँपें
भूत भागें अंधियारे में
यीशु के खून की जय ललकारें
बच जायें पापी जो पुकारें

1. क्रूस पर मरने वाले, खून बहाने वाले (2)
यीशु का नाम श्रेष्ठ नाम है
यीशु राजाधिराज आज है।
2. मेरी चट्टान मेरा गढ़ मेरी ढाल है (2)
उद्धार का सींग, शरणस्थान है,
जीवन दाता यीशु महान है।
3. सब नामों में है ऊँचा, नाम यीशु-यीशु का (2)
स्वर्ग, पृथ्वी, अधोलोक आयें
उसके चरणों पर सब झुक जायें
4. दाहिने पिता के स्वर्ग में यीशु विराजा है (2)
शैतां के सर को उसने कुचला है,
यीशु का नाम सबसे ऊँचा है।

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

172.

यीशु के पीछे मैं चलने लगा, (3)
न लौटूंगा, न लौटूंगा। यीशु के...

1. गर कोई मेरे साथ न आवे, (3)
न लौटूंगा, न लौटूंगा। यीशु के...
2. संसार को छोड़कर सलीब को लेकर, (3)
न लौटूंगा, न लौटूंगा। यीशु के...
3. अगर मैं उसका इन्तज़ार करूं, (3)
ताज पाऊँगा, ताज पाऊँगा। यीशु के...

◆◆◆◆

173.

यीशु का नाम है सारी ज़मीन पर,
जिससे हम पाते उद्धार

1. वह दुनिया में आया, लहू बहाया,
   फिदिया जहान का दिया
   हम को बचाने मुक्ति दिलाने
   यीशु सलीब पर मुआ
2. आसमान के नीचे लोगों के बीच में
   कोई दूसरा नाम नहीं है,
   सिर्फ यीशु का नाम है,
   सारी ज़मीन पर जिससे हम पाते उद्धार
3. लोगों बाइबल पढ़ो और दुआ करो तुम
   यीशु जल्दी आने वाला है
   जागते रहो और प्रार्थना करो तुम
   यीशु जल्दी आने वाला है
4. जो लाये ईमान अब यीशु नाम पर
   जिन्दा हमेशा रहेगा
   वह ही मार्ग है, वह ही सत्य है
   वह ही अनन्त जीवन है

◆◆◆◆

174.

यीशु का दरबार रे, मोहे
प्यारा लगत है,
दुलारा लगत है (2)

1. तेरे दरबार मसीह कौन-कौन आए?
   धर्मों के भूखे, हज़ार रे,
   हमें प्यारा लगत है।
2. तेरे दरबार मसीह कौन-कौन बैठे?
   पण्डित, मूर्ख, गंवार रे
   हमें प्यार लगत है।
3. तेरे दरबार मसीह, क्या-क्या मिलते है?
   मुक्ति और शान्ति, अपार रे,
   हमें प्यारा लगत है।
4. तेरे दरबार मसीह, हब सब है आये
   बख्शों अपनी पहचान रे,
   हमें प्यारा लगत है !

◆◆◆◆

175.

यीशु ने कलवरी दुःख क्यों सह लिया
मुझ पापी में क्या देखा था
कोई खूबी न थी कोई खूबी नहीं
मुझमें कोई भी खूबी नहीं

1. प्रेमियों ने तो छोड़ दिया था
   कोई न मिला था तेरे ही सिवाय -यीशु
2. पांव से न मैं तेरी राह चला
   हाथ से मैं ने न तेरी सेवा की - यीशु
3. नैन से मैंने पाप किया था
   जीभ से न मैंने तेरी स्तुति की - यीशु
4. पाप में मर के जी उदास हुआ
   जीना ही मेरा था मौत की तरह - यीशु
5. प्रेम की सन्ती क्या मैं उसे देऊं
   सोच सोचकर उसके पांव पर गिरूं- यीशु

(टी.ए. कुरियन)

◆◆◆◆

176.

यीशु तेरा नाम, है कितना सुन्दर
यीशु तेरा नाम, है कितना पावन

1. तुझमें मिली है हमको क्षमा,
   तुझमें मिला है नया जीवन।
2. तुझमें मिली है हमको कृपा,
   तुझसे हुए है हम पावन।

3. तुझमें मिली है हमको शिफा,
तुझमें मिला है अनन्त जीवन।

◆◆◆◆

177.

येशु तेरा नाम सबसे ऊँचा है (2)

1. जिस नाम में है मुक्ति,
जिस नाम में है शक्ति
जिस नाम में है शांति
देता वो नाम चंगाई
जिस नाम में है जिन्दगी,
यीशु है वो नाम
जिस नाम में है बन्दगी,
यीशु है वो नाम

2. बीमारी से गरीबी से,
श्रापों से है छुड़ाता
वो नाम है जो अन्धों को,
रोशनी भी है देता
जिस नाम में है जिन्दगी...

3. जिस नाम में शैतान डरे,
उस नाम की जय-जय करें
जिस नाम से जमाना झुके,
उस नाम को हम सलाम करें
जिस नाम में है जिन्दगी...

178.

यीशु तेरी प्रेम कहानी
गली-गली गाऊँ मैं
यीशु तेरी मीठी वाणी
घर-घर सुनाऊँ मैं (2)

1. भूखों को जीवन रोटी
देने यीशु आये तुम
प्यासों की प्यास बुझाने
जीवन जल लाये तुम-(2)
निर्बलों के हो बलवान
यीशु नाम गाओ रे...

2. अंधों को आँखें देने
यीशु चले आये तुम
कोढ़ियों की आहें सुनकर
प्रभु चले आये तुम-(2)
पतितों के पालनहार
यीशु नाम प्यारा रे

3. टूटे दिलों को जोड़े
बंधनों को यीशु तोड़े
कैदियों को दे रिहाई
अंधेरों में ज्योति आई (2)
मरण को जीते आज
मरके बचायो रे

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

179.

यीशु है सच्चा गड़रिया,
उसकी हम भेड़ें हैं
हरी चराइयों में, हमें चराता है

1. घाटी पहाड़ों में ले चलता है, आ..हा..हा.
जहाँ पर सुखदाई जल के झरने हैं, आ..हा..हा..

2. मार्गों में मेरी रक्षा वह करता है, आ..हा..हा..
शैतान के हाथों से हमें बचाता है, आ..हा..हा..

3. हमें किसी का अब तो डर नहीं है,
आ..हा..हा..
क्योंकि यीशु जो मेरा साथी है,
आ...हा...हा...

◆◆◆◆

180.

यीशु है मेरी पनाह, वही है मेरी चट्टान
लंगर मैं डालता उसमें,
जिस वक्त आ घेरते तूफान

1. दुनिया के इस सफर में,
   फिक्रों का होता जब शोर
   यीशु एक ही झिड़की से,
   तोड़ता सब आंधी का जोर
2. दु:ख से जब हूँ परेशान,
   जब जाना चाहता हूँ पार
   तब उसका उम्दा कलाम,
   रोशनी का होता मीनार
3. मुझे है पूरा यकीन,
   पहुंचूँगा एक दिन किनार
   सुनहरे साहिल पर मैं,
   पाऊँगा उसका दीदार

♦♦♦♦

181.

यीशु का नाम सुखदाई, भजन करो भाई
ये जीवन दो दिन का (2)

1. ये जीवन है माटी का पुतला
   पानी लगत धुल जायी, भजन करो भाई
2. ये जीवन है चन्दन की लकड़ी
   आग लगत जल जायी. भजन करो भाई
3. ये जीवन है घास का तिनका
   धूप लगत मुरझाई, भजन करो भाई
4. ये जीवन है कागज़ की पुड़िया
   हवा चलत उड़ जायी, भजन करो भाई।

♦♦♦♦

182.

यीशु का नाम है, सारी जमीन पर,
जिससे पापी पाते उद्धार

1. वह दुनिया में आया, लहू बहाया,
   फिदिया जहान का दिया,
   हम को बचाने, मुक्ति दिलाने,
   यीशु सलीब पर मुआ।
2. आसमान के नीचे, लोगों के बीच में
   कोई दूसरा नाम नहीं है,
   सिर्फ यीशु का नाम है,
   सारी जमीन पर जिससे पापी पाते उद्धार।
3. लोगों बाइबल पढ़ो, और दुआ करो तुम
   यीशु जल्दी आने वाला है।
   जागते रहो और, प्रार्थना करो तुम
   यीशु जल्दी आने वाला है।
4. जो लाये ईमान अब, यीशु के नाम पर
   जिन्दा वो हमेशा रहेगा
   वह ही मार्ग है, वह ही सत्य है
   वह ही अनन्त जीवन है।

♦♦♦♦

183.

यीशु का प्रेम है, जीवन का आधार,
महासागर से भी है गहरा, (2)
जीवन करता पार।

1. प्रेम जगत में आया,
   पाप का बोझ उठाया, (2)
   प्रेम में उसके अमृत जीवन, (2)
   जिससे मिले उद्धार
2. जिसने प्रेम से ये पाया,
   उसमें छल न माया,

दिल की वीणा गूँजे स्वर में,
प्रेम का बजता तार
3. प्रेम कनक और मोती,
नव जीवन की ज्योति,
प्रेम के इन रत्नों से आओ,
अपना करें श्रृंगार।

◆◆◆◆

184.

यीशु का हाथ-हाथों में लेके
तूफानी लहरों पर मैं चलूँगा
हो चाहे सामने कैसी भी मुश्किल
मैं न डरूँगा, मैं न डरूँगा...

1. राहों में हो काँटे, या हो अन्धेरा
ना कोई साथी अकेला चलूँगा
शैतान के तीर, घायल भी कर दे
मैं न डरूँगा, मैं न डरूँगा
2. मेरे लिए जिसने दी जिन्दगानी
मैं उसकी खिदमत सदा करूँगा
गर जाए जान, उसकी लगन में
मैं न डरूँगा, मैं न डरूँगा।

◆◆◆◆

185.

यीशु के संग संग चलें,
उसी के गुण हम गाएं
वो ही हमारा मुक्तिदाता
उससे प्रीति लगाएं

1. प्रेमी पिता वो है हमारा जग का तारणहारा
दीन दुःखी और लाचारों का वही एक सहारा
ऐसे अनोखे प्रेम को हम
सारे जहाँ को बताएं।
2. पापों से अपने मन को फिराएं
तज के ये जग सारा
देता एक नया जीवन वो प्रभु यीशु हमारा
आओ उसके चरणों में हम
हृदय भेंट चढ़ाएँ।

◆◆◆◆

186.

1. यीशु को मैं सब कुछ देता
सब कुछ करता हूँ कुरबान
जीऊँगा मैं रोज मसीह में
उस पर रखूँगा ईमान।

सब मैं देता हूँ, सब मैं देता हूँ
तुझी को मुबारक मुन्जी,
सब कुछ देता हूँ।

2. यीशु को मैं सब कुछ देता
झुकता तेरे कदमों पर
छोड़ता सारी दुनियादारी
मुझे ले और अपना कर।
3. यीशु को मैं सब कुछ देता
मुझे बिल्कुल अपना कर
दे मकबूलियत की गवाही
हूँ मैं तेरा सरासर।

◆◆◆◆

187.

यीशु ने हमें छुड़ाया है
पापों के जाल से
यीशु ने हमें बचाया है
शैतान की चाल से
तो गाओ हाल्लेलुय्याह-3

1. हमने शांति पाई है, यीशु के नाम से
हमने पाई है क्षमा मुक्ति श्रापों से (2)
तो गाओ...
2. अब हम न डरेंगे, यीशु जो साथ है
शैतान से हम लड़ेंगे, यीशु के नाम से (2)
तो गाओ...
3. शालोम, शांति और सलाम
लाए हैं आपके नाम
शालोम, शांति और सलाम
ये है यीशु का पैगाम।

♦♦♦♦

188.

यीशु मेरा हाथ न छोड़ेगा (2)

बड़ी आन्धी आने से, बड़ा तूफान आने से
यीशु मेरा हाथ न छोड़ेगा
मैं भी उसका हाथ न छोडूँगा
बड़ी आन्धी आने से, बड़ा तूफान आने से
यीशु मेरा हाथ न छोड़ेगा
मेरा दिया जलता रहेगा।
बड़ी आन्धी आने से, बड़ा तूफान आने से
यीशु मेरा हाथ न छोड़ेगा।

♦♦♦♦

189.

यीशु रखना हमें, साये में अपना सदा।
हमें बचाना, प्रभु बचाना सारे गुनाहों से।

1. शैतान की ये राहें, मुझको बहकाती हैं।
उसकी जो बातें हैं, मुझको सताती हैं।
मुझको न दूर कर मेरे मसीहा अपनी निगाहों से।
2. थामो ये मेरा हाथ, छोड़ो ना मेरा साथ
हारा हुआ हूँ मैं, सुन लो ये मेरी बात।

♦♦♦♦

190.

यीशु राजा मुक्तिदाता
जीवन की आशा
पास आओ, मुक्ति पाओ
वो सबको है बुलाता।।

1. हम हैं निर्बल प्राणी लेकिन
वो ही हमारा बल है
वो ही हमारा उद्धारकर्ता
वो ही जीवन जल है।।
2. भूखों की वो, भूख मिटाता
प्यासों की, प्यास बुझाता
भटके हुओं को राह दिखाता
नया जीवन वो देता।।
3. छोड़ दिया उसने, स्वर्ग अपना
धरती पर वो आया
मेरे उद्धार के लिए उसने
अपना लहू बहाया।।

♦♦♦♦

191.

यीशु बुला रहा है,
आवाज़ दे रहा है
मुझको न रोको लोगो,
मैने मन बना लिया है।

1. ये सब शरीर बंधन
लालच लोभ और धन-2
मुझे रोक न सकेंगे
प्रभु ने बुला लिया है।

2. ये चार दिन का मेला
मुझको न रोक लेगा-2
चलता रहूँगा पीछे
यीशु बुला रहा है
3. मेरे दोस्त दुनिया दुश्मन
संसार-मान-प्रियजन
मुझे मोड़ न सकेंगे
मैं चला हूँ पाके दर्शन
4. अब क्रूस ही निशा हैं
कलवरी पथ यहाँ है
काश जान में भी दे दूँ
उसने भी ये किया है
(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

192.

यीशु लियो तेरो नाम (4)
जिसने लियो, तेरो नाम प्रभु
पाये वो उसी में मुकाम।

1. सुख चैन मिलता है,
गम दूर होते हैं
मिटती है सारी परेशानियाँ
हर सांस पर नाम लिखते हैं तेरा
तू करता है उन पर मेहरबानियाँ
उजड़े मुक्कदर संवर जाते हैं
कदमों में मोती बिखर जाते हैं
श्रद्धा से जो तेरे दर आते हैं
बिगड़े बने सारे काम (2)
यीशु लियो...
2. लेते हैं दिल से जो नाम तेरा
वो तेरी कृपा से भर जाते हैं
होती है पूरी तमन्ना उनकी
हर वक्त तेरे ये गुण गाते हैं
धड़कन मेरी मुझ से कहने लगी
अर्पित करूँ अपनी ये जिन्दगी
करता रहूँ आपकी बन्दगी
दिल को मिले विश्राम (2)।
यीशु लियो....

◆◆◆◆

193.

यीशु नाम में उद्धार हमको,
हालेल्लुय्याह
प्रभु यीशु नाम में अनन्त जीवन,
हालेल्लुय्याह

1. राजाओं का राजा यीशु, हालेल्लुय्याह
प्रभुओं का प्रभु यीशु, हालेल्लुय्याह...
2. चंगा करने वाला यीशु, हालेल्लुय्याह
छुटकारा देने वाला यीशु, हालेल्लुय्याह
3. अद्भुत करने वाला यीशु, हालेल्लुय्याह
शान्ति देने वाला यीशु, हालेल्लुय्याह
4. मुक्ति का है मार्ग यीशु, हालेल्लुय्याह
स्वर्ग का है द्वार यीशु, हालेल्लुय्याह

◆◆◆◆

194.

यीशु सलीब पर मुआ
तेरे लिए मेरे लिए
कैसे महान दुःख सहा
तेरे लिए मेरे लिए

1. नदिया वह कैसी खून की,
ख्रीष्ट के लहू से बह गई
धुल गए पाप मिट गए दाग,
यीशु ख्रीष्ट के लहू से।

2. मारा गया था क्रूस पर,
छेदा गया था क्रूस पर
मैं भी बचा और तुम भी बचो,
यहोवा की सजाओं से।
3. धो डालो आज पापों को
दिल से मिटा लो दागों को
हो जाओ साफ तन मन से, आज
यीशु ख्रीष्ट के लहू से।

◆◆◆◆

195.

यीशु मसीह पैदा हो गए,
चौबीसा की रात-2
आ हा............

झीलम का बिच भयो, झीलम का बिच-2
यीशु मसीह पैदा हो गए, चरनी को बिच-2
आ हा...........
खाई जालो भात भायो, खाई जालो भात-2
यीशु मसीह पैदा हो गए, चौबीसा की रात-2
आ हा............
बाजी जालो, बाजा भायो, बाजी जालो बाजा-2
यीशु मसीह पैदा हो गए, उद्धार को राजा-2
आ हा...........

◆◆◆◆

196.

यीशु ने अपना खून बहाके
मुझे बचा लिया
क्यों न मैं गाऊँगा गीत उसी के,
मुझे बचा लिया...

1. जब मैं गुनाहों में पड़ा हुआ था
यीशु आ गया,
उसी के मारे जाने से मैं
जीवन भी पा गया,
इसलिए गाऊँगा गुण उसी के,
मुझे बचा लिया।
2. मेरे गुनाहों का बोझ उठाकर
क्या-क्या न उसने सहा?
मेरे गुनाहों को माफ कराने
खून भी उसका बहा,
कितना अनोखा है प्यार मसीह का
मुझे बचा लिया।
3. सेवा करेंगे प्यारे प्रभु की
जैसा कि उसने कहा,
मर भी मिटेंगे प्यारे प्रभु में
जैसा कि उसने सहा,
हरदम हम गाएँगे गीत उसी के,
हमें बचा लिया।

◆◆◆◆

197.

यीशु बुलाता तुम्हें (2)
बड़ी चाहत से तुमको,
बांहों में लेने,
यीशु बुलाता तुम्हें (2)।

1. दुःख की गहराइयों में,
देगा शान्ति तुम्हें,
सोच समझकर उसे निहारो,
आनन्द अनोखा देगा तुम्हें।
2. आँसू मिटाकर तेरे,
रक्षा करेगा तेरी,
अपनी आँखों की पुतली जैसे,
वह सच्ची सुरक्षा देगा तुम्हें।

3. गर तेरा दिल दुखित हो,
वह शान्ति देगा तुम्हें,
यीशु तेरी मुक्ति और रोशनी है,
संकोच मिटाकर आओ अभी।

4. हर रोग मिटाने की,
शक्ति है उसी के पास,
बिना किसी भेद के तैयार है उद्धारक,
अपनी दया से प्यार करने को।

◆◆◆◆

198.

यीशु मसीह दिलावर है
शैतान से जोरावर है
उसके जोर से जीतेंगे, हम जीतेंगे
हम हारेंगे न शैतान से हम जीतेंगे।

1. फौज हमारी थोड़ी है,
पर हममें दिलेरी है

2. रूह–ऊल–कुद्दस की तेज तलवार
खाली नहीं जिसका वार

3. शाह हमारा यीशु है,
जिसके खून में कुदरत है।

◆◆◆◆

199.

यीशु मसीह, तेरे जैसा है कोई नहीं
तेरे चरणों में झुके आसमां,
और महिमा गाये जमीं
हम गायें होसन्ना, तू राजाओं का है राजा
तेरी महिमा होवे सदा,
तू है प्रभु हमारा खुदा (2)

1. प्यारे पिता, तूने हमसे
कितना प्यार किया
हमें पापों से छुड़ाने को
अपने बेटे को कुर्बान किया (2)

◆◆◆◆

200.

यहोवा चरवाहा मेरा,
कोई घटी मुझे नहीं है
हरी चराइयों में मुझे स्नेह
से चराता वह है

1. मृत्यु की वादी से, जब मुझे जाना हो
प्रभु मेरे साथ है सदा, मुझे कोई भय नहीं है
2. शत्रुओं के सामने, मेज़ वह बिछाता है
सिर पर वह तेल मलता है,
अभिषेक मुझे करता है।।
3. करुणा भलाई मेरे, जीवन भर साथ रहेगी
प्रभु के भवन में सदा, स्तुति की ध्वनि रहेगी।

◆◆◆◆

201.

यहोवा जिन्दा खुदा, वह हमारा बादशाह
जो मसीह में मुजस्सम हुआ, यहोवा

1. यहोवा शाम्मा भी तू,
जो रहता साथ–साथ–2
यहोवा राफा भी तू,
मेरा चौपान साथ–साथ
जो भी मांगेंगे, वही मिल जाएगा
जो भी ढूँढ़ेंगे वही पायेंगे
खटखटाए तो खुल जाएगा यहोवा–3
2. ऐ पाक यहोवा निस्सी,
तू झंडा कौम का–2

ऐ पाक यहोवा राफा, तू शाफी कौम का
तेरे पीछे चले और शक न करे
बल्कि रखे ईमान, है मसीह मेहरबान
जो भी चाहे हो जाएगा यहोवा-3

3. तू है यहोवा यिरै, जो मुहैया करता है-2
तू है यहोवा शालोम जो तसल्ली देता है
तूने बेटा दिया, सबको माफ किया
नया जन्म दिया, रूह से भर दिया
आज शैतान झुक जाएगा यहोवा-3

◆◆◆◆

202.

यादें जब सताए, यीशु को याद करना
ख्वाहिशें जब रूलाऐं-2
यीशु को याद करना...करना...करना।

1. सूली उठाना अपनी, यीशु के पीछे चलना-2
रूहे खुदा से कहना, मुझको संभाले रखना
जब सांस घुट के आए...यीशु को याद करना।

2. हर एक गुनाह को अपने, यीशु के खून से धोना-2
खामोश बैठ जाना, परस्तिश खुदा की करना
जब पैर लड़खड़ाएं...यीशु को याद करना।

3. साथी और खुदा भी, और है वो सच्चा भाई-2
वो साथ है हमेशा, जिसने है जान लुटाई
जब अपने छोड़ जायें...यीशु को याद करना।

◆◆◆◆

203.

यात्री हूँ मैं जग में प्रभु जी,
चलता हूँ मार्ग मैं तेरा
वह निशान तू यीशु जी,
बंदरगाह तू मेरा।

1. सोचा था मैं यह जग मेरा,
खेस कुटुम्ब सब है प्यारा,
धोखा सब! कोई न सहारा,
व्यर्थ ही व्यर्थ है सारा।

2. धन दौलत सब मान और इज्जत,
यहीं रहेगा जल जाएगा,
यह जगत! पाप से जो भरा,
श्राप ही श्राप है सारा।

3. ऐसा कर प्रभु अन्त मैं जानूँ,
और जानूँ मेरी आयु के दिन को,
अब बता! कैसा अनित्य हूँ,
खेदित हूँ मैं पूरा।

4. जान गया मैं उस दिन प्रभु जी,
बदला जीवन लोहू से मेरा,
बड़ा आनन्द! तूने कहा था,
पाप क्षमा हुआ मेरा।

5. इस जग में अब मैं हूँ मुसाफिर,
क्रूस उठा कर चलता रहूँगा,
पाया मैं! अनमोल धन को,
है जो यीशु से भरा।

6. आँख जब मेरी बन्द हो जाए,
यात्रा मेरी पूरी हो जाए,
पहुँचूं मैं! स्वर्गीय वतन में,
यह है गीत अब मेरा।

◆◆◆◆

204.

रक्तम जयम-रक्तम जयम (2)
रक्तम जयम (3)

1. यीशु मेरा चरवाहा है (2)
यीशु मेरा चरवाहा है, बोलो है न.... हाँ

2. मेरी शरण यीशु ही है (2)
3. जीवन की रोटी यीशु ही है (2)
4. जीवन का जल यीशु ही है (2)

◆◆◆◆

205.

राजाधिराज महिमा के साथ
आ रहा है मेघों पर होकर सवार

1. मुसीबत निन्दा, दु:खों का सिलसिला
   खतम होने का समय आ गया (2)
2. मेरे प्रिय का, जलाली चेहरा
   देखने का अब समय आ गया (2)
3. सब दु:खों से परे, अनन्त वास में
   ले जाने के लिये, वो आ रहा है (2)
4. अपने प्रिय के साथ, करने सदा का वास
   हम जाने वाले हैं, रहें हर पल तैयार (2)

◆◆◆◆

206.

राजाओं का राजा यीशु राजा,
जगत में राज करेगा
हालेल्लुय्याह, हालेल्लुय्याह
उसका धन्यवाद करो

1. यहोवा का धन्यवाद करो,
   क्योंकि वह भला है,
   उसकी करुणा सदा की है
   धन्यवाद करो।
2. जो ईश्वरों का परमेश्वर है,
   उसका धन्यवाद करो,
   उसकी करुणा सदा की है,
   धन्यवाद करो।
3. जो प्रभुओं का प्रभु है,
   उसका धन्यवाद करो,
   उसकी करुणा सदा की है,
   धन्यवाद करो।
4. उसको छोड़ कोई बड़े-बड़े
   आश्चर्य कर्म नहीं करता,
   उसकी करुणा सदा की है,
   धन्यवाद करो।
5. उसने अपनी बुद्धि से,
   आकाश बनाया
   उसकी करुणा सदा की है,
   धन्यवाद करो।

◆◆◆◆

207.

राजा यीशु आये हैं सब मिलके गाएँगे
ताली बजाएँगे,
खुशियाँ मनाओ (2)
चिंता छोड़ो स्तुति गाओ

1. तुम माँगो वो सुनेगा
   कमी घटी को पूरा करेगा (2)
   मन से बुलाने वालों के (2)
   दिल में आएगा
2. करुणा में अव्वल है
   माफी में कामिल है (2)
   पास तेरे रहता है वो (2)
   तू भी पास आ
3. आँसुओं को पोंछेगा
   हाथों को थामेगा (2)
   दिल की सारी हसरत को (2)
   पूरी करेगा
4. निर्बल को बल देगा
   रोगी को छू लेगा (2)
   शैतान भी काँपेगा (2)
   यीशु के सामने।

◆◆◆◆

208.

रब्ब की होवे सन्ना हमेशा,
रब्ब की होवे सन्ना

1. रब्ब की होवे मदहसराई
उसके नाम की सन्ना
उसके नाम की सन्ना हमेशा
2. रब्ब के घर में होवे सिताईश
उसकी हम्द ओ सन्ना
उसकी हम्द ओ सन्ना हमेशा
3. कामों में है वह कैसा कादिर
उसकी कुदरत बता
उसकी कुदरत बता हमेशा
4. जय के जोर से फूंको नरसिंगे,
बरबत बीन बजा
बरबत बीन बजा हमेशा
5. तारदार साजों पे रागिनी छेड़ो
ढफ और तबला बजा
ढफ और तबला बजा हमेशा
6. बांसुरी पर सुना सुरें सुरीली
झन-झन झांझ बजा
झन-झन झांझ बजा हमेशा
7. सारे मिलकर ताली बजाओ
गाओ रब्ब की सन्ना
गाओ रब्ब की सन्ना हमेशा

◆◆◆◆

209.

रब्ब खुदावन्द बादशाह है
वह जलाल का बादशाह है

1. ऊँचे करो सिर दरवाजों
ऊँचे हो सब द्वारों
जहाँ जलाल का बादशाह आवे
सिर तब ऊँचे करो
2. यह जलाल का बादशाह कौन है?
कौन बादशाह कमाल का
रब्ब जो जंग में जोरावर
वह बादशाह जलाल का
3. ऊँचे करो सिर दरवाजों
ऊँचे हो सब द्वारों
जहाँ जलाल का बादशाह बैठे
सिर तब ऊँचे करो
4. यह जलाल का बादशाह कौन है?
कौन बादशाह कमाल का
लश्करों का रब्ब खुदावन्द
वह बादशाह जलाल का।

◆◆◆◆

210.

रहनुमाई जिस तरह प्रभु ने की
जब करता हूँ उस पर ध्यान
बहती आँखों से आंसुओं की धार
दिल में भरता स्तुति धन्यवाद-2

1. जीवन की राहों में
जब लगा अकेला हूँ मैं-2
हिम्मत दी मुझे अपने वचनों से-2
2. कष्टों और मुसीबतों में
मन हुआ जब मेरा निराश-2
लेके बाहों में शांति दी मुझे-2
3. मेरे परम मित्रों के बीच
मुझ पर डाला आनंद का तेल-2
शत्रुओं के बीच उठाया मेरा सिर-2

◆◆◆◆

211.

रूहे पाक खुदावंद आ तू आ
जान जिस्म और रूह में तू बस जा
आ...आ...आ... रूह आ
रूह...तू आ...(2)
रूह आ (2)

1. रूह के शोले लपक-लपक जब आते हैं
   बंधन सारे टूट के गिरते जाते हैं (2)
2. रूह की सूरत में यीशु जब आएगा
   तहस नहस होगा शैतान झुक जाएगा (2)
3. बारिश होगी रूहे पाक के बादल से
   धुल जायेंगे मैल दिलों के अंदर से। (2)

◆◆◆◆

212.

लाखों हज़ार ज़ुबानो के साथ,
वर्णन ना कर पाऊं तेरे प्रेम का-2,
मेरे प्रभु यीशु मसीह,
करलो कबूल ये आराधना

1. याद करूँ जब घायल बदन को,
   कोड़ों की मार और कांटे जखम को-2,
   तब आये होठों पे गीत ये मेरे,
   लाखों हजार.....
2. याद करूँ जब तेरे वचन को,
   मेरे पिता इन्हें क्षमा करो-2,
   तब आये होठों पे गीत ये मेरे,
   लाखों हजार.....
3. याद करूँ जब तेरे लुटने को,
   काठ पर कीलों से लटके बदन को-2,
   तब आये होठों पे गीत ये मेरे,
   लाखों हजार.....
4. याद करूँ जब क्रूस मरण को,
   तेरे पवित्र और पावन लहू को-2,
   तब आये होठों पे गीत ये मेरे,
   लाखों हजार.....

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

213.

लहू बहाने वाले यीशु, तेरी जयजयकार हो
पाक रूह बरसाने वाले, शत् शत् तुझे प्रणाम हो
लहू बहाने वाले यीशु, तेरी जय जयकार हो
जीवन-जल बरसाने वाले,
यीशु तुझे प्रणाम हो

1. भेड़ तरह भटके हम खोये, ढूँढन प्रभु तुम आये
   काँधे पर बैठाकर घर तुम,
   हम पापिन को लाये-2
   खुशखबरी तुम लाये..... लहू
2. लहूलुहान ज़ख्म के मारे, हम राही घबराये
   तब यीशु तुम मरहम करने,
   तेल दाखरस लाये-2
   खुशखबरी तुम लाये...... लहू
3. दुश्मन जब हम, पावन प्रभु
   तुम, पास हमारे आये
   रक्तदान बलिदान प्राण कर,
   जीवन हमें दिलाये-2
   खुशखबरी तुम लाये..... लहू
4. स्वर्गपिता परमेश्वर की तुम,
   प्रेम कथा ले आये
   खोये हुओं को घर ले जाने, तुम प्रभुवर जग आये-2
   खुशखबरी तुम लाये..... लहू

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

214.

वन्दे प्रभु, वन्दे मसीह,
शत् शत् वन्दना वन्दे मसीह

1. इस शुभ दिन हम अपने को,
   चरणों में तेरे लाते हैं,
   इस शुभ घड़ी दोहराते हैं,
   तेरे ही मधुर वचन को।।
2. अर्पण करते हैं इस जीवन को,
   वचनामृत दे शरणागत को,
   अपने में कर ले पूर्ण प्रभु,
   धन्य मसीह, धन्य प्रभु।।

◆◆◆◆

215.

वन्दना करते हैं हम, (2)
हृदय को तेरे सामने,
लाकर रखते हैं हम,
वन्दना करते हैं हम।

1. हृदय में मेरे मसीहा,
   जीवन दीप जलाओ,
   हृदय के पापों को धोकर,
   प्रेम की राह दिखाओ।
2. मैं हूँ निर्बल मानव,
   पापों के सागर में खोया,
   अब तुम सम्भालो यीशु जी,
   भवसागर में हूँ खोया।
3. शक्ति दे दो मुझको,
   मेरा नहीं कोई मीत,
   जीवन को मेरे ले ले,
   गाऊँ मैं तेरे ही गीत।

◆◆◆◆

216.

वो प्रभु है, वो प्रभु है
मुर्दों से जी उठा, वो प्रभु है।

हर एक घुटना टिकेगा
हर जुबान मानेगी
कि यीशु ही प्रभु है।

◆◆◆◆

217.

सर नवाते हैं हम, ख्रिस्त आते हैं हम
तेरे चरणों पर मस्तक, टिकाते हैं हम (2)

1. उसने पापों को मेरे क्षमा कर दिया
   मेरे दामन के छीटों को भी धो दिया
2. उसने प्यासे को जीवन का जल दे दिया
   और भूखों को जीवन की रोटी खिला
3. उसने बोला डरो मत, जहाँ में कभी
   मैंने पा ली है, खुद ही जगत पर फ़तह
4. उसने क्रूस पर न्याय हमारा किया
   अपने ही खून से कर दी कीमत अदा
   (शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

218.

सबसे ऊँचा...
सबसे ऊँचा सबसे प्यारा यीशु
का वो नाम रे
स्वर्गलोक, संसार में,
अधोलोक पाताल में–2

1. भूत प्रेत सब थरथर काँपे
   सुन यीशु का नाम रे
   सब घबरायें डर–डर भागें

यीशु के शुभनाम से
सबसे ऊँचा...

2. राजे-राज और सब नर नारी
महिमा उसकी जान के
चरण-कमल पर सब रख जायें
हर वैभव और शान रे
सबसे ऊँचा...

3. यीशु नाम जय ख्रिस्त नाम
राजाधिराज वो नाम रे
पाप हरण सब जीवन पायें
यीशु के बलिदान से
(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

219.

संकट के दिन गाऊंगा
यीशु नाम पुकारूँगा,
सर्वशक्तिमान परमेश्वर मेरा गढ़ होगा

1. लाल समुन्दर की लहरें अब
मुझको डरा ना पाएंगी-2
दिन में बादल रात में अग्नि
मुझको घर पहुँचायेगी-2

2. भूख और प्यास जहाँ में
मुझको फिर ना थकाने पाएगी-2
स्वर्ग से रोटी खाएं हर दिन
जीवन जल का पानी भी-2

3. दुश्मन के घोड़े रथ मुझको,
नहीं हराने पायेंगे-2
ऊंची दीवार यरीहो की हो,
यीशुजी ही गिराएंगे-2

4. कोई पहाड़ ही क्यों ना अब हो,
कर विश्वास उखाड़ेंगे-2
प्रभु का नाम लिए हुए मुंह पर,
आगे बढ़ते जायेंगे-2
(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

220.

1. शून्य से लेके तूने मुझे
रच लिया अपने ही रूप में
प्रेम किया हे अनन्त प्रेम से
दिया पुत्र मेरी मुक्ति के लिए
अनोखा प्यार है तेरा
करूँगा स्तुति तेरी मैं सर्वदा

2. जग में आया यीशु स्वर्ग छोड़ के
मेरा सारा दण्ड सह लिया उसने
कोड़े खाके, क्रूस उठाके यीशु ने
मुझे मुक्ति और चंगाई दे दी है

3. अन्न वस्त्र और सभी आशिषें
दी मुझे उसने भरपूरी से
खतरों और सब मुसीबतों से
आँख की पुतली, जैसे सम्भाला मुझे।

◆◆◆◆

221.

सब मिलकर गायेंगे महिमा यीशु की हम
नाचेंगे गायेंगे स्तुति करें हर दम-2

1. क्रूस को रख निशां, बढ़ते हम जायेंगे,
दु:ख या संकट क्यों ना,
विजयी हो जायेंगे-2

2. यीशु ही मंजिल है, राह सकरी भी है,
डर भी लागे चाहे, हमको वो थामे है-2

3. जीना या मरना अब, यीशु के कदमों पर,
उस पर कुरबां कर दें, अपना है
जो सब कुछ–2
4. अब तो आ जाओ तुम, प्राण प्रिय यीशु तुम,
हमको घर ले जाओ, साथ में अपने तुम–2
(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

222.

साष्टांग प्रणाम हम करते हैं
राजा प्रभु यीशु को,
तन मन धन अर्पण करते हैं
आये हैं दर्शन को

1. तुम खाए कोड़े लहू लुहान,
कांटे सिर ले हुए महिमावान–2
गिरते थे क्रूस के भार से तुम,
मेरे पाप का बोझ उठाये तुम
2. तुम मुँह ना खोले निंदा सुन,
खाते थे मार जनों कि तुम–2
कपड़े फाड़े थूके तुझ पर,
मुक्ति लाये तुम धरती पर
3. तुम क्रूस विराजे थे प्रभुवर,
दे प्राण अदा किये मेरे कर्ज–2
कैसे ये प्रेम को जानू मैं,
युग युग गुणगान ही गाऊं मैं
4. तुम खून बहा कर पाप क्षमा,
बैठे दाहिने सर्व शक्तिमान–2
आदि वा अनन्त हो तुम ही प्रभु,
परमेश्वर ख्रिस्त प्रभु यीशु
(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

223.

सिय्योन देश हमारा है देश
रहते हैं हम परदेश,
जाएंगे हम अपने देश,
हल्लेलुय्याह (4)

1. दिल न लगायें यहाँ, जाना है हमको वहाँ (2)
हमारा दूल्हा यीशु मसीह है (2)
सत्य और जीवन मार्ग वही है (2)
2. दु:ख जो हमारे यहाँ, न होंगे फिर वहाँ (2)
यहाँ के दुखों का अन्त होगा (2)
वहाँ के सुखों का अन्त न होगा (2)
3. आयेगा यीशु यहाँ, ले जाएगा हमको वहाँ (2)
वायदा यीशु का पूरा होगा (2)
अनन्त जीवन हमको मिलेगा (2)

◆◆◆◆

224.

सिय्योन के सफर में
मेरे मन व्याकुल न होना कभी
अब्राहम का प्रभु, इसहाक का प्रभु
याकूब का प्रभु, मेरे साथ है सदा।

1. मुझे अब किसी बात की,
कोई चिन्ता डर नहीं
जीवन की रोटी देके
वो चलाता कुशल से मुझे।
2. दुनिया की नजरों में मैं
भले मूर्ख ही गिना जाऊँ
लेकिन प्रभु की नजरों में मैं
सर्वश्रेष्ठ ही गिना जाऊँ
3. किसी मनुष्य पर आश्रय नहीं,
अब मेरा निश्चय यही
मेरा आसरा केवल यीशु ही,
वो सनातन शरण मेरी।

◆◆◆◆

225.

स्तुति हो यीशु तेरी,
हल्लेलुय्याह स्तुति हो यीशु तेरी। (2)
स्तुति हो तेरी कि तूने बचाया,
और किया है हमको बरी (2)

1. जमा हुए हैं हम अब,
   हल्लेलुय्याह गाते हैं मिलकर हम सब (2)
   तू ही हमारा है त्राता और दाता,
   और तू ही हमारा है सब (2)
2. कीच से निकाला हमको,
   हल्लेलुय्याह किया है तू ने आज़ाद (2)
   स्तुति अब गायें हम सब क्यों न तेरी,
   और हो जायें तेरे हम दास (2)
3. सारे फरिश्ते एक साथ,
   हल्लेलुय्याह गाते हैं मिलकर हरदम (2)
   स्तुति वे करते हैं तेरी हमेशा,
   और करते नहीं हैं विश्राम (2)
4. जायेंगे जब हम आसमान,
   हल्लेलुय्याह गायेंगे मिलकर हरदम (2)
   बरबत बजाके आवाजें मिलाके,
   हम गायेंगे सुबह और शाम (2)

◆◆◆◆

226.

स्तुति आराधना ऊपर जाती है

आशीषें देखो नीचे आती हैं
प्रभु हमारा कितना महान्
देखो वो हमसे करता है प्यार (2)
हालेलू, हल्लेलुय्याह (2)

◆◆◆◆

227.

स्तुति करो प्रशंसा करो
यहोवा की स्तुति करो,

यहोवा के मकदिस में - 2
उसकी स्तुति करो
करिश्मा से भर तू, उसके फलख पर - 2
यहोवा की स्तुति करो

1. नरसिंगे की गूँज पर सारंगी सितार पर
   स्तुति करो उसकी स्तुति करो
   डफली बजाते, नाचते और गाते स्तुति करो
   उसकी स्तुति करो
   तार वाले साज और बाँसुरी बजा के -2
   यहोवा की स्तुति करो
2. बुलंद आवाज की झाँझ बजा के - 2
   उसकी स्तुति करो
   झनझनाती झाँझ को, बजाते और गाते
   स्तुति करो उसकी स्तुति करो
   जितने हो प्राणी आओ सब गाओ - 2
   यहोवा की स्तुति करो।

◆◆◆◆

228.

1. स्वर्गीय आशीष दे (2)
   स्वर्ग को तू खोल हाथ अपना बढ़ा
   स्वर्गीय आशीष दे।
2. आत्मा की चंगाई दे (2)
   आत्मा पवित्र शुद्ध कर चरित्र
   आत्मा की चंगाई दे।
3. यीशु मेरे दिल में आ (2)
   खोलता हूँ द्वार करता इकरार
   यीशु मेरे दिल में आ।
4. पवित्र आत्मा तू दे (2)

भर दे मुझे सामर्थ से
पवित्र आत्मा तू दे।

5. हमको ग्रहण कर प्रभु (2)
जैसे भी हैं हम हैं तेरे
हमको ग्रहण कर प्रभु।

♦♦♦♦

229.

स्वर्गीय पिता हम आते हैं
प्रार्थना में सर को झुकाते हैं
पवित्र माना जाये नाम
राज्य तुम्हारा आये आज

1 मर्ज़ी तुम्हारी स्वर्ग में जैसे
पृथ्वी पर भी हो वैसे
रोटी हमें दिन भर की दो
आज की ज़रूरत पूरी हो-

2. हम पापिन को करते क्षमा
वैसे ही तुम हमें क्षमा करो
परीक्षा में न लाओ हमें
बुराई से बचालो हमें...

3. पराक्रमी तुम प्रेमी पिता
राज्य और धर्म तुम्हारा सदा
महिमा, आदर, आराधना
होवे तेरी परम पिता

(शिष्य थॉमसन)

♦♦♦♦

230.

शांति का राजा आ रहा है
उसकी जय-जयकार
उसकी जय-जयकार
राजाओं के राजा यीशु मसीह की
होवे जय-जयकार,
होवे जय-जयकार।

1. बालक उसका स्वागत करते,
राह में अपने कपड़े बिछाते,
इतना गहरा प्यार दिखाते,
मानो अपने दिल है बिछाते,
ऊँचे स्वर में दिल से कहते,
उसकी जय-जयकार,
उसकी जय-जयकार।

2. होसन्ना के नारे उनके,
सारे आकाश में गूँज रहे हैं,
श्रद्धा, भक्ति और खुशी से,
दिल भी उनके झूम रहे हैं,
दाऊद वंशी यीशु मसीह है
उसकी जय-जयकार,
उसकी जय-जयकार।

3. सुनने वालों आज दिलों को
सामने उसके अर्पण कर दो,
खाली दिलों को अर्पण कर के,
उसकी महिमा का दर्शन कर लो,
साथ हमारे आवाज मिला दो
उसकी जय-जयकार,
उसकी जय-जयकार।

♦♦♦♦

231.

1. सारी सृष्टि के मालिक तुम्हीं हो,
सारी सृष्टि के रक्षक तुम्हीं हो
करते हैं तुझको सादर प्रणाम
गाते हैं तेरे ही गुण गान
हा...हा...हलिल्लूयाह आमीन (3)

2. सारी सृष्टि को तेरा सहारा
सारे संकट से हमको बचाना
तेरे हाथों में जीवन हमारा है
अपनी राह पर हम को चलाना
हा...हा...हलिल्लूयाह आमीन (3)
3. हम हैं तेरे हाथों की रचना
हम पर रहे तेरी करुणा
तन मन धन हमारा तेरा है
इन्हें शैतान को छूने ना देना
हा...हा...हलिल्लूयाह आमीन (3)
4. अब दूर नहीं है किनारा
धीरज को हमारे बढ़ाना
जीवन की हमारी इस नैय्या को
भव सागर में खोने न देना
हा...हा...हलिल्लूयाह आमीन (3)

◆◆◆◆

232.

सहारा मुझको चाहिये
सहारा दे मुझे खुदा
मुझे सम्भाल मैं गिरा
मुझे सम्भाल मैं गिरा।

1. ये बोझ जो गुनाहों का
मैं ले के आज चल रहा (2)
उठायेगा अगर कोई,
वो तू ही है ऐ खुदा।
मुझे सम्भाल मैं गिरा...
2. कठिन हैं रास्ते बहुत,
हर एक मोड़ पर खतरा (2)
अंधेरे सायों को हटा,
दिखा दे मुझ को अब सहर।
मुझे सम्भाल मैं गिरा...
3. जहाँ के रास्तों पे मैं,
अकेले चल ना पाऊँगा (2)
अगर जो चलना चाहूँ भी,
फिसल के गिर मैं जाऊँगा।
मुझे सम्भाल मैं गिरा...

◆◆◆◆

233.

सुन लो मेरे भाईयों मसीहा मेरा
दुनिया में आया।

1. दुनिया में आया, मुक्ति को लाया (2),
पापिन को आन बचाया बचाने यीशु
दुनिया में आया।
2. स्वर्गीय पिता का एकलौता बेटा (2)
आदम का पुत्र कहलाया
कहलाने यीशु दुनिया में आया
3. अंधों को आँखें, गूँगों को बोली (2),
बहरों को शब्द सुनाया, सुनाने यीशु
दुनिया में आया।
4. कोढ़ी अपाहिज, चंगे किये हैं (2),
मुर्दों को क्षण में जिलाया, जिलाने यीशु
दुनिया में आया।
5. जब हम गुनाह में, पड़े हुए थे (2),
अद्‌भुत प्रेम दिखाया, दिखाने यीशु
दुनिया में आया।
6. दुनिया की खातिर, क्रूस पर चढ़के (2),
अपना ही रक्त बहाया, बहाने यीशु
दुनिया में आया।
7. जो कोई उस पर विश्वास लाया (2),
उसको मसीह ने बचाया, बचाने यीशु
दुनिया में आया।

8. धन्य, धन्य यीशु, स्वामी हमारे (2),
हमको पिता से मिलाया, मिलाने यीशु
दुनिया में आया।

◆◆◆◆

234.

सम्भालने वाला प्रभु मैं हूँ
व्याकुल क्यों होते हो
आंसुओं की तराईयों में
तुझे न छोड़ूँ कभी

1. मेरी महिमा को तू देख
मेरे हाथों में दे तुझे-2
मेरी सामर्थ तुझे मैं उडेलकर
तेरे अनुग्रह में चलाऊँगा-2
2. चाहे सभी तुझे भूल जाएं
क्या मैं तुझे भूलुंगा-2
अपने हाथों में तुझे रखकर
इस दुनिया में अगुवाई करूँगा-2
3. अब्राहम का प्रभु मैं हूँ
अद्‌भुत काम में राह बनाने
क्या मैं सामर्थी नहीं-2

◆◆◆◆

235.

सुबह सुबह स्तुति बलि
अब्बा पिता, देंगे तुझे
आराधना, स्तुति बलि
अब्बा पिता, देंगे तुझे

1. एबनेजर, एबनेजर
अब तक संभाला है-एबनेजर-एबनेजर
2. एल-शदाय, एल-शदाय
सर्व-शक्तिमान
3. एल-रोही, एल-रोही
मुझ पर तेरी नजर
4. यहोवा-यिरै,
पूर्ति करता है।

◆◆◆◆

236.

सेनाओं का यहोवा हमारे संग-संग है
याकूब का परमेश्वर हमारा ऊँचा गढ़ है

1. जिसने आकाश बनाया,
जिसने पृथ्वी बनायी,
जो सर्वशक्तिमान प्रभु है,
वो यहोवा हमारे संग-संग है
2. समुंदर को जिसने दो-भागा,
जंगल में मार्ग को निकाला,
जो वायदे को करता है पूरा
वो यहोवा हमारे संग-संग है
3. लाजर को जिसने जिलाया,
जक्कई को जिसने बचाया,
जिसके लिए सब कुछ संभव,
वो यहोवा हमारे संग-संग है।

◆◆◆◆

237.

सदा मैं स्तुति करूँगा
सदा मैं सेवा करूँगा
मुझे बचाया प्रभु ने,
सदा मैं स्तुति करूँगा

1. मुझे बचाने आया, जब मैं गुनाहों में था
स्वर्ग को छोड़कर जगत में आया मुझे बचाने को
2. जब मैं निराशा में था, तूने मुझे आशा दी
जगत में आया जीवन को दिया पवित्र प्रेमी यीशु

3. प्रेमी प्रभु यीशु, बचाया तूने मुझे देता हूँ मैं
सारा जीवन, सम्पूर्ण आनन्द से
4. अनादि परमेश्वर, सच्चाई और जीवन है
तू स्तुति प्रशंसा करता रहूँगा, तेरे आने समय तक

♦♦♦♦

238.

हृदय भेंट चढ़ाएं प्रभु को,
स्तुति प्रशंसा करें,
हम सब सन्त जन मिलकर

1. पाप का भार उठाने, आया मसीह जग में,
पापियों के सब पाप मिटाने
जीवन सनातन दिया
2. संकट क्लेश उठाया,
नम्र और दीन बनकर,
द्वार उद्धार का खोला प्रभु जी
सनातन आशा दी
3. आश्चर्य स्वर्गीय प्रेम, हम पापियों के लिए,
फिर मत जाना पापी जगत में
पाप में न फंसकर
4. अर्पण करते है तुझको,
आत्मा प्राण देह भी,
रक्षा करो प्रभु इस जीवन की
बिनती हमारी यही

♦♦♦♦

239.

हो जय जयकार,
जय जयकार करें

1. वह है हमारा राजा राजा,
दुख संकट से बचाता बचाता
हम पर अपनी करुणा करता
और करता उपकार
क्यों न उस पर तन मन वारें,
दें अपना अधिकार
2. स्वर्ग है उसका सिंहासन सिंहासन,
पृथ्वी बनी है आसन आसन,
आकाश उसकी महिमा बताये,
हस्त कला को दिखाये
सारी पृथ्वी उसकी रचना,
उसका ही प्रताप
3. उस पर जिसका भरोसा भरोसा,
वह तो कभी न डिगेगा डिगेगा,
चाहे बीमारी चाहे गरीबी,
चाहे हो अकाल
सब संकट से सब कष्टों से,
हो जायेगा पार

♦♦♦♦

240.

होके कुर्बान हर गुनाह से
तूने मुझको है बचाया
हर खुशी मिली तुझ में ऐ मसीह
जब से दिल में तू है आया

1. इस जहाँ की कोई दौलत
लगती नहीं प्यारी मुझे (2)
जब से प्यारा प्यारा तेरा नाम
मेरे होठों पर है आया।
2. क्या कोई रोक सकेगा
मुझको जाने से तेरे करीब (2)
जब भी चलती आँधी कोई
साथ अपने तुझे पाया।।

3. जिन्दगी मेरी मेरे खुदा
तेरे आने की राह तके (2)
जल्दी आना संग मैं चलूँ
तूने जो घर है बनाया।

◆◆◆◆

241.

1. होवेगी बरकत की बारिश,
वायदा पुर प्यार है सही,
आवेगी ताज़गी आसमान से,
भेजेगा जिसको मसीह

बरकत की बारिश, बरकत की बारिश भरपूर,
रहम की बूँदें टपकती, पर बारिश हमको ज़रूर

2. होवेगी बरकत की बारिश,
होगी नई कूव्वत ज़रूर,
वादी पहाड़ और मैदान पर,
जब बारिश होगी भरपूर
3. होवेगी बरकत की बारिश,
काश अभी पावें हम सब,
यीशु तू ताज़गी अब बख्श दे,
वायदे को पूरा कर अब
4. होवेगी बरकत की बारिश,
भेज उसे अभी हाँ अब,
मानते गुनाह जब हम अपने,
दे बारिश यीशु ऐ रब्ब

◆◆◆◆

242.

हे यहोवा, बल मेरे मैं
तुझ पर आस लगाऊँगा
मैं जीवन भर तेरे भवन में
तुझ पर दृष्टि लगाऊँगा

1. जग में कुकर्मी, आयें सताने
मुझ पर चढ़ाई करने को
चाहे सेना छावनी डाले
मैं निश्चिंत निडर होऊँ (2) हे यहोवा
2. मेरे सहायक, मेरे उद्धारक
मुझ को तुम ही थामों अब
अपने मार्ग में करो अगुवाई
चौरस राह पर लाओ तुम (2) हे यहोवा
3. एक ये वर मैं तुझ से माँगूं
जीवन भर तेरे घर में रहूँ
तेरी मनोहरता को निहारूँ
तेरे प्रेम पर ध्यान करूँ (2) हे यहोवा

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

243.

हम से बरनी न जाये,
मसीह तुम्हारी महिमा

1. तुम स्वर्ग छोड़कर आये,
तुम मुक्ति पदारथ लाए,
कि पापी लिए बचाये, मसीह तुम्हारी....
2. अन्धों को आँखें दीना, कोढ़िन को चंगा कीना,
कि मुर्दे दिये जिलाय, मसीह तुम्हारी....
3. पानी पर चल दिखलाया,
तूने हवा को डाँट थमाया,
कि चेले लिए बचाय, मसीह तुम्हारी....
4. मेरे पाप क्षमा सब कीना,
मेरे दिल में दर्शन दीना,

कि प्रभु से दिया मिलाय, मसीह तुम्हारी....
5. सूली पर बरछी खाई,
तूने अमृत धार बहाई,
कि दास सदा गुन गाए, मसीह तुम्हारी....

◆◆◆◆

244.

हम जायेंगे, हम जायेंगे
अपना इन्कार कर, क्रूस उठाकर,
यीशु के पीछे पीछे स्वर्ग जायेंगे

1. आंसू हमारे वो पोंछेगा,
आनंद ही आनंद वहाँ मिलेगा,-2
जीवन के फल से हम खायेंगे,
हम सब वहाँ अमर हो जायेंगे-2
2. दुनिया के माया मोह छूटेंगे,
शैतां के बंधन सारे टूटेंगे-2
बलिहारी यीशु प्रभु आयेंगे,
युग युग हम गाते चले जायेंगे-2
3. दुनियां के लोगो सुनो खुशखबरी,
यीशु ने पापों से दी है मुक्ति-2
कर लो भरोसा आज यीशु पर,
पालो उद्धार हो जाओ अमर-2

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

245.

हे मेरे मन यहोवा को धन्य कह,
उसके उपकार को नहीं भूलना,
हे मेरे मन यहोवा की जय जय कह,
उसके उद्धार को नहीं भूलना

1. वो मेरा शरण और द्रड़ गढ़ है,
दुष्टों के जाल से बचाता वो है,
पंखों की आढ़ में रक्षा करे,
उसको नहीं भूलना...-2
2. उसकी सच्चाई झिलम ढाल है,
रात और अँधेरे से ना डरूंगा,
मुझको बचाता है वो तीरों से,
उसको नहीं भूलना...
3. महा रोग आये, हज़ारों गिर जाएँ,
मेरा भरोसा यहोवा पर है,
धाम हमारा परम प्रभु है,
उसको नहीं भूलना...
4. सिंह हो या नाग, या अजगर शैतान,
मुझको परमेश्वर ही संभालेगा,
संकट में संग संग उद्धार लाये,
उसको नहीं भूलना...2

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

246.

हमको यहाँ से ले जाने, स्वर्गीय राज्य दिलाने
आये है मुक्तिदाता हमारे प्रिय प्रभु यीशु-2

1. आँखों में दृष्टि दिलाने
जीवन ज्योत दिलाने... आये हैं
2. कंगाल को घूरे से उठाने
पतिततारण लाने... आये हैं
3. टूटे दिलों को जुड़ाने
बंधन सारे मिटाने... आये हैं
4. संसार ने उसको नकारा
अंधियारों ने ललकारा
अपनों ने खून बहाया
उसका प्रिय प्रभु यीशु... हमको यहाँ

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

247.

हम हालेल्लुय्याह, हालेल्लुय्याह कहके
उड़ जाने वाले हैं, उड़ जाने वाले हैं,
हम दु:ख, रंज, भूख, लंग सह के (2)
उड़ जाने वाले हैं (2)

1. यीशु इबने खुदा जब आया,
   इन्सान का कर्ज चुकाया (2)
   सारे जग को उसने बचाया
   और हम भी बचाये हैं...
2. तेरा शुक्र हो यीशु खुदाया
   तूने मौत से हमको छुड़ाया (2)
   और प्यार से हमको बुलाया,
   हम मिलकर आये हैं...
3. रूह का ताजा मशा अब कर दे
   यूँ तू नूर-ए-प्यार से भर दे (2)
   होंगे दूर तारीकी के पर्दे
   ये ही आरजू लाये हैं...
4. दिल लगता नहीं अब यहाँ पे
   ले जा यीशु तू जल्दी यहाँ से
   हम्दो सन्ना करेंगे वहाँ पे
   जो तुझ को भाए हैं...

◆◆◆◆

248.

हम यीशु मसीह के चेले हैं
दुनिया में धूम मचा देंगे
जो नींद में गाफिल सोते हैं
उपदेश से उनको जगा देंगे।

1. हम मन की घुँडी खोलेंगे
   और ज्ञान के मोती रोलेंगे-2
   इंजील मुकद्दस पढ़-पढ़कर
   हृदयों को शान्त बना देंगे
2. बन्दे हैं एक खुदा के हम
   मिल जुल कर क्यों न रहें अब हम-2
   इंजील मुकद्दस दुनिया के हर
   कोने में पहुँचा देंगे
3. हम रंज के सहने वाले हैं
   उफ तक नहीं करने वाले हैं-2
   और पीछे प्यारे यीशु के
   चलने की राह बता देंगे
4. दु:ख और तकलीफ उठायेंगे
   प्रेम का राग सुनायेंगे-2
   हम दूर करेंगे रंज और गम
   और प्रेम का दरस पढ़ा देंगे।

◆◆◆◆

249.

हम तो जलते दीप हैं
यीशु की ज्योति के
जब तक हम हैं इस जहाँ में,
जलते जाना है
अँधियारे डगर पे हो, आँधिया कहीं
हर डगर पे ज्योत यीशु की फैलाना है (2)

जलना जिन्दगी हमारी, यीशु के लिए
जिसने दाग हर गुनाह के मेरे धो दिये (2)
जिसने सूली पर जलाई ज्योति प्रेम की
वो ही ज्योति मेरे दिल में आज जल रही
कोई भटका हो डगर पे, बे पनाह सा
आज सूली के तले उसे बुलाना है।

◆◆◆◆

250.

हाल्लेलुय्याह स्तुति गाएं हम
यीशु की स्तुति गाएं हम
हा....हाल्लेलुय्याह (6)

1. क्रूस पर बलि द्वारा,
अपना लहू बहाया (2)
पाप को हटा के, साफ हम को किया
हम को बचा लिया (2) हाल्लेलुय्याह
2. यीशु के पास आओ,
और मुक्ति को अपनाओ (2)
आशीष वह देगा, साथ अपने लेगा
कभी नहीं छोड़ेगा (2) हाल्लेलुयाह...
3. इस जीवन भर मैं,
सदा तुझको याद करूँगा (2)
तेरी आत्मा पाके, तेरी इच्छा जान के
आगे ही बढ़ता रहूँगा (2) हाल्लेलुय्याह

◆◆◆◆

251.

हा-हा हाल्लेलुय्याह मिलकर गाएं
भजन प्रभु जी के।

1. वह है राजाओं का राजा
उसके चरणों में तू अब आजा
उसकी स्तुति सुना, उसकी महिमा में गा
तन मन से उसे भज ले।
2. जब जान निकल जायेगी
देह मिट्टी में मिल जायेगी
तब ये माया तेरी, जिस पे आस धरी
कुछ काम न आयेगी।
3. यीशु ख्रीष्ट जगत में आया
तेरे पापों का भार उठाया
उस पर विश्वास ला,
उसके चरणों में आ
मिले मुक्ति का दान
4. जाति जाति के लोगों आओ
प्रभु यीशु के गुण सब गाओ
वही पाप हरे, मन में शान्ति भरे
वही बेड़ा पार करे।

◆◆◆◆

252.

हे पवित्र आत्मा शक्ति हमें देना (2)
तेरी वो सामर्थ हमको चाहिए
प्रभु ये तू जानता है। (2)

1. पहले युग के जैसे ही
आश्चर्य कर्म होने को (2)
पहले जैसी आत्मिक-शक्ति
तू हमको देना। (2)
2. वरदानों से सुशोभित हो
हमें वचनों में जड़ से बढ़ने को (2)
जागृति हम में आने को
आत्मिक बारिश तू भेज। (2)
3. सांसारिक अभिलाषा से भागने
और शैतान की शक्ति से जय पाने (2)
धीरज से तेरी सेवा करने
अभिषेक करना हमें। (2)

◆◆◆◆

253.

जय जय नाम येशु नाम,
गाऊँ मैं सुबहो-शाम-4

1. बलिहीन का सहारा,
पापियों का दोस्त है तू
यीशु तू है कितना प्यारा,
शब्द न कैसे बताऊं-2
2. तुम में बना रहूँ तो,
अमृत फल लाऊँ मैं
गाऊँ तेरी जय सदा तो,
तुझ सा बन जाऊँ मैं-2
3. तू ही है जो मुझको बुलाता,
देता है जीवन जल
तेरी शक्ति पाऊँ सदा
और योजना हो सफल।

◆◆◆◆

254.

फिर से वो आग बरसा दे, फिर से तूफान आने दे

1. तेरी महिमा से, तेरे सामर्थ से,
फिर से तू अभिषेक कर दे...
आ पवित्र आत्मा...6
2. बहने दे उस हवा को,
छू ले हर एक दिल को,
तेरा दर्शन हमें मिले, करते हैं प्रार्थना तुझसे,
तेरी महिमा...
3. तू बदल दे मेरे मन को,
दे आशीष इस जीवन को,
तेरी करुणा हम पे बरसे,
अपने मार्ग पे चला हमको
तेरी महिमा....

◆◆◆◆

255.

ले चल मुझे, ले चल मुझे,
तेरे सिंहासन के पास ले चल मुझे

1. मैं तेरे पास आता हूं, पवित्र दिल से,
आराधना मैं करता हूं, प्रेमी मन से,
तुझे ढूंढता हुआ, तुझे चाहता हुआ,
मुझे खींच ले, मैं दौडूंगा... ले चल मुझे...
2. तुझे देखना मैं चाहता हूं, हर घड़ी हर पल,
तुझे ढूंढता हुआ, तुझे चाहता हुआ,
मुझे खींच ले, मैं दौडूंगा... ले चल मुझे...
3. जैसे हिरणी पानी के लिए,
प्यासा मैं भी हूं तेरे लिए, तुझे ढूंढता हुआ,
तुझे चाहता हुआ, मुझे खींच ले,
मैं दौडूंगा... ले चल मुझे...

◆◆◆◆

256.

भजो नाम जपो नाम,
प्यारा नाम यीशु नाम
चाहे सुबहा हो या शाम-2
यीशु नाम रे,
सब भक्ति करो मिल गाओ यीशु नाम रे-2

1. भक्त बिना भक्ति अधूरी,
ख्रीस्त शरण तुम्हें आना है
छोड़ दे अपनी शक्ति बल,
ख्रीस्त में मोह लगाना है
जीवन अर्पण कर दो प्रभु में,
प्रभु की आशीष पाना है,
जय जयकार करो मिल सारे धन्य मनाना है।
2. पाप की राह को छोड़ना है,
स्वर्ग की मंजिल पाना है,
इस दुनिया में चैन नहीं,
स्वर्गीय पिता को जानना है,
शांति मुक्ति का मार्ग वही है,
उसमें मोह लगाना है,
सच्चा साथी प्रभु हमारा उसे अपनाना है।

◆◆◆◆

257.

तेरी है ज़मीं, तेरा आसमां
तू बड़ा मेहरबां तू बख्शीश कर
सभी का है तू सभी तेरे खुदा
मेरे तू बख्शीश कर

1. तेरी मर्ज़ी से ऐ मालिक
हम इस दुनिया में आए हैं
तेरी रहमत से हम सबने
ये जिस्म और जान पाए हैं
तू अपनी नज़र हम पर रखना
किस हाल में हैं यह खबर रखना

2. तू चाहे तो हमें रखे
तू चाहे तो हमें मारे
तेरे आगे झुका के सर
खड़े हैं आज हम सारे
ओ सबसे बड़ी ताकत वाले
तू चाहे तो हर आफत टाले।

◆◆◆◆

258.

ऐ गमजदा परेशान, होता है क्यों हिरासान
यीशु के कदमों में आ, पायेगा तू इत्मिनान

1. तेरे गुनाह बेशुमार,
फिक्रों और दु:खों का भार
यीशु उठायेगा आज
उलफत है यह बे बयान (2)
2. शक दिल में कोई न ला,
यू न भटक आ भी जा
तुझको न ठुकरायेगा, वह है बड़ा मेहरबान।
3. आता हूँ प्यारे मसीह,
जैसा भी हूँ मैं सही
तू ही मेरी उम्मीद, तू ही है मेरी चट्टान।

◆◆◆◆

259.

प्रभु ख्रीस्त मेरे स्वामी मन के
तुम प्रेम मिलन को आ जाओ
मैं भटका राही जीवन में
तुम राह नयी दिखला जाओ

1. ये जीवन पग-पग उजड़ा है
और हर पग-पग में अंधेरा है
तुम ज्योति बनो मेरे मन की
और मन में ज्योति जला जाओ।
2. ये जीवन कण-कण बिखरा है
और पाप में इसका बसेरा है
दो अपने से वरदान मुझे
और प्रेम का राग सिखा जाओ।

◆◆◆◆

260.

सम्भाल प्रभु जी, जीवन के हर पल में
अब तक हम को, सम्भाला तूने
आगे भी अगुवाई कर।।

1. जैसे मुर्गी बच्चों को, पंखों तले छिपाती
वैसे ही तेरी छाया, शरण है हमारी।।
2. सनातन के यहोवा, तू ही हमारा गढ़ है
तेरे वचन से हमने, जीवन में ज्योति पायी।।
3. वायदा यह तूने किया, छोड़े न कभी मुझे
लिखा है रूप मेरा, हथेली में अपनी।।
4. हे यीशु तेरा यह प्यार, वर्णन से है अपार
हाथों से हाथ मिलाया,
आसमानी बाप से हमारा।।

◆◆◆◆

261.

सुना, चरवाहों ने दूतों का पैगाम
देखा, मजूसियों ने तारे का अंदाज-2
कहते हैं सारे जमीं आसमां,
ये खूबसूरत समां
बैतलहम के गौशाले की चरनी में,
जन्मा है यीशु महान्

1. जगमग-जगमग दीप जले
आशाओं के फूल खिले
टिम-टिम चमका उजियाला,
दूर हुआ सब अंधियारा-2
आजादी हमें देने को, आबाद हमें करने को
सुना, चरवाहों ने....
2. रात सुहानी क्या अजब,
भोर समां था क्या गजब

तरस गई थी ये बगियां,
शबनम पीने को कलियां-2
आसमानी प्यार लाया है, इंसानों में आया है
सुना, चरवाहों ने....
3. युग-युग से उजड़ी बगियां,
नई बहारें लाया है
गली-गली में हंगामा
खुदा का नूर आया है-2
खुशनसीब हैं कितने हम,
खुदाई प्यार पाया है
सुना, चरवाहों ने....।

♦♦♦♦

262.

यीशु तू महान है, यीशु तू अच्छा है
यीशु तू जिन्दा है, यीशु तू धन्य है
दूतों की स्तुति, भी तू ही है
बुद्धि और सब ज्ञान, तू ही है
राजाओं का राजा, तू ही है,
प्रभुओं का प्रभु तू ही है

1. आदि और अन्त तू ही है
अल्फा और ओमेगा तू ही है
दूतों की स्तुति भी तू ही है
बुद्धि और सब ज्ञान तू ही है
2. जीवन भरा पापों से मेरा
जग अन्धेरा और अशुद्ध सारा
मेरे पापों से बचाने को
मेरे लिए जीवन दिया है।।
3. सारे गुनहगारों के लिए
अपना खून बहाया यीशु ने
खाई कोड़ों की मार भी
दी सलीब पर उसने अपनी जान।।
4. वायदा, किया है तूने
वायदा तू करता है पूरा
वायदे के लिए आते हैं
बरकतों की बारिश अब उण्डेल।।
5. न्याय करने, आने वाला है
न्याय के साथ राज्य करने को
धर्मियों को लेकर न्याय से
सिंहासन पर राज्य करेगा।।

♦♦♦♦

263.

अपना बोझ प्रभु पर डाल
कभी न घबराना
तेरा आदर मान करेगा,
आश्चर्य कर्म करेगा।।

1. भक्तों को वह भूलेगा नहीं
हमेशा उनको सम्भालेगा करेगा।।
2. तारणहारा हमारी शरण
साये में लेकर चलता है।।
3. माता-पिता यदि छोड़ देवें
वो तो गले लगायेगा।।
4. प्रभु हमारे साथ रहे
सामना कौन कर पायेगा।।
5. पूरा समर्पण उसको करें
वो ही सब कुछ देखेगा।।
6. बोझ प्रभु पर डाल दिया है
अब क्यों घबराना।।

♦♦♦♦

264.

अपनों को तो इस दुनिया में,
सब प्यार करते हैं!
गैरों को भी प्यार करना,
मसीहा सिखाता है।

1. एक गाल पर कोई, मारे जो चांटा

दूजा गाल भी देना
ले जाये कोई एक मील जबरन,
दो मील साथ जाना
अपनों को तो अपना सब कुछ
सब लोग देते हैं गैरों
पर भी सब कुछ लुटाना
मसीहा सिखाता है

2. अपनों से जैसा वैसा ही अपने,
पड़ोसी से प्यार करो
यीशु मरा तेरे पापों के खातिर,
यह विश्वास करो
अपनों पर तो लोग यहां पर
ऐतबार करते हैं
गैरों पर भी ऐतबार करना
मसीहा सिखाता है।

3. जो दे तुमको कांटे उसका,
दामन फूलों से भर दो
यीशु ने तुमको माफ किया
तुम भी माफ कर दो
अपनों को तो गुनाहों की माफी
सब लोग देते हैं
बैरी को भी माफ करना
मसीहा सिखाता है।

◆◆◆◆

265.

ये जीवन है क्या, तेरे बिना मसीहा
मार्ग वो ढूंढता हूँ,
जिसमें की तू चला है-2

1. पहले मन में सोचा,
फिर दिल में मेरे जागा
अर्पण मैं करता हूँ
तुझको जीवन ये मेरा मसीहा

2. अब दिल की चाह यही है
तुझ में ही डूबा रहूँ मैं
मिलता रहे साथ तेरा,
और कृपा महान।

◆◆◆◆

266.

सेनाओं का यहोवा प्रभु महान
आता है, बादलों पर सर्वशक्तिमान
आता है, आता है, आता है, आता है

1. सब दीन धर्म जातियों,
का न्याय करने को
सब पापियों के पापों का,
उद्धार करने को
वह दीनबन्धु जग का त्राता,
जग को तारने को
आता है, आता है, आता है, आता है।।

2. शैतान और उसकी सेना का,
संहार करने को
नरक के अग्नि कुण्ड का,
आहार करने को
दुनिया की सारी जातियों पर,
राज्य करने को
आता है, आता है, आता है, आता है।।

3. सिंहासनों पर सोने के,
विराजमान है जो
स्वर्गदूतों और सन्तों का,
पासबां है जो
नरसिंगों की आवाजों से,
जहान गूँज उठा
आता है, आता है, आता है, आता है।।

◆◆◆◆

267.

जिन्दा है प्रभु हमारा, जिन्दा है प्रभु
हमारा जीवन देता है, शान्ति देता है
वो ही हमारा, राजा है
हम सब उसके सेवक हैं

1. भजो हरदम यीशु नाम,
शैतान को कर दे नाकाम
उस पर डालो बोझ तमाम,
जीवन होगा तब आसान
चिन्ता, हमारी वो करता है,
सारे दु:खों को वो हरता है
2. हर पल रहता है यीशु साथ,
क्या है फिर चिन्ता की बात
कितनी भी हो काली रात,
यीशु दिखलाएगा राह
वो सच्चा चरवाहा है,
तृप्त हमें वो करता है
3. यीशु है इतना बलवान,
कोई नहीं है उसके समान
शैतान के सब चालों का,
किया है उसने काम तमाम
यीशु मुक्तिदाता है
पाप क्षमा सब करता है।

◆◆◆◆

268.

गाओ-गाओ जय के गीत गाओ
ताली बजा के तुम गाओ
यीशु राजा जिन्दा हुआ हाल्लेलुय्याह
खुशी से यह सबको सुनाओ

1. कब्र पर था एक बड़ा पत्थर
देखो कैसे हट गया वह
रोमी राज्य की मोहर बन्द न रख सकी
कभी भी ईश्वर के पुत्र को
2. रो मत, रो मत, विलाप करो मत
गलील मे ंजाकर कहो यह बात
कि वह वचन अनुसार कब्र से निकला
जाकर सुनाओ सुसमाचार
3. हन्ना कैफा पुरनियों की सभा
खतरे से हुए परेशान
अन्धकार की सामर्थ खत्म होने पर
बहुत घबराया शैतान
4. ऊँचे करो सिर दरवाजों
आता है बड़ा बादशाह
नरसिंगे, सितार और तबले बजाकर
गाओ तुम हाल्लेलुय्याह।

◆◆◆◆

269.

कलवरी का वायदा निभाते हम चलेंगे
अपनी (2) सूली उठाके हम चलेंगे
जाना है, जाना है

1. रास्ते बड़े हैं कठिन रे
चलते रहेंगे हम इन पर
राहों में तूफान खड़े हैं
बढ़ते चलेंगे हम मिलकर
2. संग हमारे वह होगा
फिदिया दिया है जिसने
अब्दी जीवन वह देगा
लहू बहाया है जिसने
3. रोशन करेगा दिलों को
तारीक उन्मूल हो सारे

बनके सफीना वो रहबर
हमको ले जाये किनारे

4. पहुँचेंगे एक बार एक
दिन पूर्ण होंगे ये सारे
होगी सिताइस मसीह की
वही है मुंजी हमारा।

◆◆◆◆

270.

हे यीशु तेरा, प्रेम कैसा महान है
आकाश के तारे पर्वत समुन्दर
सबसे महान है

1. अगम्य आनन्द से हाँ-हाँ हृदय भरपूर है
प्रभु का कार्य है हाँ-हाँ कैसा महान है
हर एक बिहान और हर एक संध्या
स्तुति के योग्य है-2 ....हे यीशु

2. संकट के समय में हाँ-हाँ जीवन निराश होता
ईश्वर पुकारता हूँ हाँ-हाँ दया मुझ पर दर्शा
बिनती से पहले वह मुझसे कहता
मैं तेरे साथ हूँ-2 ....हे यीशु

3. अंधेरी घाटी से हाँ-हाँ होकर मुझे जान
मृत्यु और जोखिम से हाँ-हाँ सफर मुझे करना
चरवाहा बनकर अगुवाई करता
सदा वह साथ रहता-2

4. घटी और कमी का हाँ-हाँ
मुझे नहीं डर है
हरी चराईयों में हाँ-हाँ
मुझे बिठाता है भोजन और जल से
वह तृप्त करता है
वह मेरे साथ है-2 ....हे यीशु

5. ईश्वर के भवन में हाँ-हाँ
स्तुति सदा करूँगा
सम्पूर्ण हृदय से हाँ-हाँ
उसको सदा भजूँगा
स्तुति प्रशंसा के योग्य ईश्वर
हाल्लेलुय्याह आमीन-2 ....हे यीशु

◆◆◆◆

271.

लहू के बगैर न शिफ़ा न नजात है-2
तौबा के साथ ये तो मुफ्त सौगात है-2

1. एक तू ही बचेना बचेगा कुल घराना-2
लहू की कुदरत को तूने न पहचाना
वादों का सच्चा और सच उसकी जात है-2
तौबा के साथ...

2. एक ही बार उसने लहू को बहाया-2
बंधनों को तोड़के तो बाप से मिलाया
हुआ अब सवेरा खत्म हुई रात है-2
तौबा के साथ...

3. प्यारे तू क्यों सोचे खुदावंद तुझसे दूर-2
मुक्ति फजल से मिले उसके हुजूर है
ईमाँ जो लाए खुदावंद उसके साथ है-2
तौबा के साथ...

◆◆◆◆

272.

भेज अबर रूह का, भेज अबर रूह का-2
छम-छम मी बरसात, छम-छम मी बरसात-2
भेज अबर...

1. रूह की अग्नि की भट्टी में,
झोख हमें खुदाया

जैसे पिघल के साफ़ चाँदी,
ऐसा कर खुदाया-3
ऐसा कर खुदाया
हमको भी पिघला, हमको भी पिघला-3
छम-छम मी...

2. सुखी बंज़र दिलों की धरती,
रूह अपनी से सिंचों
रूहे पाक की बूंदें डालो,
बीज कलाम बीजो-3
बीज कलाम की बीजो
मुझे कर दो हरा भरा,
मुझे कर दो हरा भरा-2
छम-छम मी...

3. जैसे फौज फरिश्तों की,
नबियों के संग रखता था
अपनी रूह की ताक़त से,
उन नबियों को भरता था-3
उन नबियों को भरता था
उस रूह का मज़ा चखा,
उस रूह का मज़ा चखा-2
छम-छम मी...

◆◆◆◆

273.

बोल येशु मसीहा जय... जय...
येशु मसीह की जय...
आनंद उत्सव आनंद उत्सव आनंद उत्सव-3

1. सुरीले-सुरीले वचन है मसीह के
जीवन के प्याले वचन है मसीह के
येशु के दरबार आओ चलो
आनंद उत्सव मानते चलो
आनंद उत्सव। ....

2. संगीत मेरा उसका अनुग्रह
हर गीत मेरा उसका अनुग्रह-2
कितने निराले श्रीजन है मसीह के
जीवन के प्याले वचन है मसीह के
येशु के दरबार आओ चलो
आनंद उत्सव मानते चलो
आनंद उत्सव। ....

3. येशु वचन से अभिषेक आये
अभिषेक आये बंधन मिटाये-2
मिलते हैं ऐसे मौसम खुशी
जीवन के प्याले वचन है मसीह के
येशु के दरबार आओ चलो
आनंद उत्सव मानते चलो
आनंद उत्सव। ....

◆◆◆◆

274.

पल्ला तेरा फड़या ते, पार लग जावांगे
यीशु तेरे मिट्ठे मिट्ठे-3
गीत अस्सी गावांगे
पल्ला तेरा...

1. पता सारी दुनिया नू, प्यार मेरे यीशु है-2
टूटे हुए दिल दा, करार हुन यीशु ए
पाक यहोवा नाल, ज़िन्दगी बितावांगे-2
यीशु तेरे मिट्ठे...

2. तेरा इंतज़ार हुन, तेरिया उडिका ने-2
छेति छेति दस गत, और भी तरीका ने
रब्बा तेरी बंदगी विच, ज़िन्दगी बितावांगे-2
यीशु तेरे मिट्ठे...

◆◆◆◆

275.

तेरा लहू तेरा लहू, तेरा लहू पाक करता है
तेरा लहू कूवत देता है
तेरा लहू....
तेरे लहू की धार से,
मिटते गुनाह और खिलते हैं फूल
तेरा लहू (2) धोकर के साफ़ करता है
तेरा लहू कूवत देता है
तेरे लहू में जो छिपे,
किसी भी बला से कभी न डरे
तेरा लूह (2) तेरा लहू हिम्मत देता है
तेरा लहू कूवत देता है
तेरा लहू ढाल और किला
अब्दी पनाह मज़बूत आसरा
तेरा लहू (2) दिल में सकून भरता है
तेरा लहू कूवत देता है
तेरे लहू के झरनों से
ज़ख्म तो क्या मिटे नासूर भी
तेरा लहू (2) मरहम का काम करता है
तेरा लहू कूवत देता है

♦♦♦♦

276.

चरणों में हम तेरे आते हैं,
सारा आदर तुझको देते हैं (2)
शीश हम झुकाते हैं, वंदना करते हैं (2)
चरणों में हम आते हैं...
हालेलुऐया आऽऽऽऽऽ...
हालेलुऐया आऽऽ... आमीन (2)

1. हमको यकी है, कि तू है खुदा
इस कारण ही, करते सजदा (2)
शीश हम झुकाते हैं, वंदना करते हैं
हालेलुऐया......
धन्य तुझे हम, कहते हैं आज
सारे जहां का, है तू सरताज (2)
भेंट हम चढ़ाते हैं, वंदना करते हैं (2)

♦♦♦♦

277.

गाओ गाओ रे अम्बर धरती,
गाओ गाओ रे गाओ मेरे संग (2)
आज प्रभु आगमन हुआ है,
येशु जी संग मिलन हुआ है
आज होंठ रुक न पाएं गाओ गाओ रे

1. दूतों गाओ पंछी चहचाओ,
जल जंतु जल तरंग बजाओ
मोर थिरक-थिरक नाचो (2)
गाओ गाओ रे....

2. सारंगी वीणा का राग उठाओ (2)
तबला सितार तुम ताल मिलाओ (2)
खंजरी अब करो झंकार (2)
गाओ गाओ रे....

♦♦♦♦

278.

कमज़ोर दिल की, ताकत है यीशु
बेआसरों की हिम्मत है यीशु
तो गा लो यीशु नाम
बन जायेंगे काम

1. दुनिया किसी के काम न आई
इस दुनिया में सब हरजाई
वो पकड़े जो हाथ, छोड़ेगा ना साथ
तो गा लो...

2. चारों तरफ है आफत मुसीबत
कितनी बुरी है दुनिया की हालत
जो हो गये बेजान, डालेगा वो जान
तो गा लो यीशु नाम...

◆◆◆◆

279.

चखकर मैंने जाना है,
यहोवा कैसा है भला
उद्धारकर्ता की शरण में,
मैं आके धन्य हुआ

1. जीवन भर मैं तेरी, स्तुति किया करूँगा
उत्तम पदार्थों से तूने, मुझको है तृप्त किया
चखकर...
2. जीवन भर मैं तेरी, करुणा को ना भूलूंगा
संकट में जब मैं पड़ा, तूने आके सहारा दिया
चखकर...
3. प्रतिकूल परिस्थिति में, सामर्थ मैंने तेरी देखी
अपने वायदों को तूने, मेरे जीवन में पूरा किया
चखकर...

◆◆◆◆

280.

खूबसूरत है मसीह तू,
किस कलम रंग से लिखूं
तेरे चेहरे पे है जो बात, होंठों से कैसे कहूं
खूबसूरत है मसीह तू।

1. कर सके बयां न फरिश्ते, तेरी मुहब्बत का
मैं तो माटी हूँ दो पल की,
मैं करूँ तो कैसे करूँ
तेरे चेहरे....

2. दिल तो डूबे फिर से डूबे, तेरी मुहब्बत में
तेरा चेहरा जो न देखूं,
फिर भला मैं कैसे जिऊँ
तेरे चेहरे....

3. कितने खुदगर्ज़ हैं यहाँ लोग,
नज़र में प्यार नहीं
मर भी जाऊँ जो मैं तेरी,
एक नज़र से दूर नहीं
तेरे चेहरे....

◆◆◆◆

281.

1. मेरे गुनाह की ली तूने सजा
चाबुक की मार से
कुछ ना दिया मैंने ना दिया
बदले में प्यार के
ये क्या किया तूने क्यों ये किया
जान देके तूने ये जीवन दिया।

2. दर्द था मेरा जो तूने सहा
चढ़के सलीब पे
कर्ज किया तूने मेरा अदा
काँटो और किलो से
फिर भी ना कम हुआ प्रेम तेरा
जान देके तूने ये जीवन दिया।

3. मरते हुए माफ करके गया
जुल्म सितम मेरे
मेरे लिए तूने खाई सजा
दुनिया की ठोकरें
ये क्या किया तूने क्यों ये किया
जान देके तूने ये जीवन दिया।

◆◆◆◆

282.

उसकी महिमा करो बंधन टूट जाएंगे
मेरा यीशु मौजूद है यहां-2
जितने बीमार हैं चंगे हो जाएंगे
मेरा यीशु है मौजूद है यहां
उसकी महिमा करो

1. ना तू कमजोर हो, तेरी ताकत है वो
   वो तेरा हौंसला, तेरी हिम्मत है वो-2
   जितने कमजोर हैं नया बल पाएंगे
   मेरा यीशु मौजूद है यहां....2
   उसकी महिमा करो...
   वो मौजूद है यहां....8
2. ना हालातों से डर, थोड़ा विश्वास कर
   वो वफादार है, थोड़ा रख तो सब्र-2
   तेरे जितने रुके काम हो जाएंगे
   मेरा यीशु मौजूद है यहां....2
   उसकी महिमा करो...
3. वो है जिन्दा खुदा, वो है सबका खुदा
   तेरे नजदीक है, ना वो तुझसे जुदा-2
   जितने पापी हैं सब वो क्षमा पाएंगे
   मेरा यीशु मौजूद है यहां....2
   उसकी महिमा करो...
   वो मौजूद है यहां....8

◆◆◆◆

283.

झूमो नाचो खुशी से आज
यीशु पैदा हुआ (2)
यीशु पैदा हुआ ओ हो... (2)
यीशु पैदा हुआ...

1. बेतलहम की छोटी नगरिया,
   चमका सितारा रे...
   चरनी में आया यीशु मसीहा,
   दूतों ने गाया रे...
   प्रभु सबका आया
   यीशु सबका आया (2)
   झूमो नाचो....
2. राजा सब घबराए ही गए
   यीशु के आने से...
   द्वार-द्वार ढूंढ़वाया यीशु को
   पाया पता न रे...
   यीशु राजा हुआ (3)
   झूमो नाचो....
3. आनन्द खुशियाँ आई जगत में
   यीशु के आने से...
   ज्योति मुक्ति आयी जगत में
   यीशु के आने से...
   मुक्ति दाता आया (3)

◆◆◆◆

284.

जय देनेवाले प्रभु यीशु को
कोटि कोटि धन्यवाद
जीवन देनेवाले प्रभु यीशु को
जीवन भर धन्यवाद
हालेल्लुय्याह, हालेल्लुय्याह गाएँगे
आत्मा से भर कर नाचेंगे
यीशु जिन्दा है वो आने वाला है

1. सामर्थ देने वाले प्रभु यीशु को,
   कोटि-कोटि धन्यवाद (4)
   यीशु जिन्दा है वो आने वाला
   हालेल्लुय्याह (2) गायेंगे (4)
2. चंगा करने वाले प्रभु यीशु को
   कोटि-कोटि धन्यवाद।
3. छुटकारा देने वाले प्रभु यीशु को
   कोटि-कोटि धन्यवाद।
4. शान्ति देने वाले प्रभु यीशु को
   कोटि-कोटि धन्यवाद।

◆◆◆◆

285.

क्या दे सकता हूँ, क्या ला सकता हूँ
कहता तुझे बस शुक्रिया (2)
तुझमें ही मेरी सुबह
तुझमें ही मेरी हर शाम
तुझसे ही करता शुरू
हर कोई काम (2)
शुक्रिया करता हूँ मैं, लेके तेरा नाम
आदर और धन्यवाद, आज तेरे नाम
शुक्रिया (2)
शुक्रिया तेरा शुक्रिया (2)
शुक्रिया यीशु तेरा

1. सारी दुनिया तेरी है
   सबकुछ तूने रचाया है (2)
   मुझको भी तूने बनाया है
   तेरे जैसा किया है
   क्या दे सकता...

◆◆◆◆

286.

तेरी भक्ति करने आए हम यीशु यीशु
तेरे दर्शन करने आए हम यीशु यीशु

1. तेरे द्वार हम हैं आए
   मीलों चल के आस लगाए
   भेंट चढ़ाने यीशु तुझको
   पापी हृदय हम हैं लाए।
2. अपनी वाणी हमें सुना दे
   कृपा कर दर्शन करा दे
   हसरत है हम सबके दिल की
   आज जीवन ज्योति जला दे।
3. तू ही अद्‌भुत युक्ति करता
   सुख चैन और शान्ति से भरता
   तू ही देवों में सबसे ऊँचा
   हम सबकी तू रक्षा करता।

◆◆◆◆

287.

गुण गाए उस प्रभु के
जिसने हमें बचाया (2)
करें वन्दना उसकी जिसने
लाल सागर सुखाया (2)

1. मूसा जब अपनी प्रजा को लेकर आगे बढ़ा
   पग-पग इम्तेहान कठिन
   देना था उसे पड़ा
   भूख प्यास के मारे लोग
   जो मूर्छित होने लगे
   कीजिये दया के सागर
   ये मूसा कहने लगे (2)
   स्वर्ग से आपने प्रभु जी
   तब मन्ना बरसाया (2)
   करें वन्दना....
2. सुन्दर जीवन हो धरती
   पर तभी तो सबके लिये
   मूसा अपने दास को
   दस सुन्दर नियम दिये
   पहले चार नियम भक्ति करना सिखलाते हैं
   और छः नियम जहाँ में
   हमें जीना सिखलाते (2)
   हर मानव का जीवन हो
   सुखमय ये समझाया (2)
   करें वन्दना....
3. भटक न जाए पथ से
   कहीं हम हमको न छोड़िये
   भक्ति आदर महिमा हर दिन
   दिया करें तुमको
   तुम ही झोली भरते हो
   करते हो काम बड़े
   निर्धन को धनवान बना दो
   पल में खड़े-खड़े (2)

विश्वासयोग्य परमेश्वर हो
तुमने साथ निभाया (2)
करें वन्दना....

♦♦♦♦

288.

यीशु तू सबसे प्यारा
प्यारा आंखों का तारा
दिल का दुलारा है (2)
तू ही हम सबका सहारा
राजकुमार है हमारा
तू जाँ से प्यारा है (2)
यीशु तू सबसे...

1. तू ही चित में है छाया
तू ही इस दिल को भाया
नैनों में तेरी सूरत
तू ही रग-रग में समाया (2)
हर पल तू ही संग रहता
और रूहे पाक से भरता
तू सबसे न्यारा है
तू ही हम सबका सहारा...
2. तू ही संसार की ज्योति
तू ही जीवन की रोटी
तू ही चरवाहा सच्चा
सच्ची तेरी बातें होती (2)
परमेश्वर का बेटा तू
और जीवन जल देता तू
तू सबसे न्यारा है
तू ही हम सबका सहारा...
3. तू ही है मेरी भक्ति
मेरे जीने की शक्ति
तू है तो बल है मेरा
तू मेरा और मैं तेरा (2)
तेरी बातों पे भरोसा
तुझमें नहीं छल और धोखा
तू सबसे न्यारा है
तू ही हम सबका सहारा...

♦♦♦♦

289.

बिन यीशु हो नहीं निस्तारा
बिन प्रभु कौन हमारा
कि प्रभु बिन नहीं निस्तारा

1. पूरब ढूँढ़ा पश्चिम ढूँढ़ा
ढूँढ़ा फिर जग सारा (2)
बाइबल पढ़कर राह जो पाई (2)
खोज लियो जग सारा
कि प्रभु...
2. खेश कुटुम्ब कोई काम न आवे
जा तन होवे उद्धारा (2)
पापन ते भरी नाव हमारी (2)
डूबत हो मझधारा
कि प्रभु....
3. वह बिन अब कुछ बन न परत है
लाख जतन कर हारा (2)
रे मन अब तक काहे को भूला (2)
वो नहीं गुजारा
कि प्रभु....

♦♦♦♦

290.

नारे लगाओ और गाओ रे,
झंडा मसीह का फैलाओ रे,
हाल्लेलुय्याह, हाल्लेलुय्याह,
हाल्लेलुय्याह, हाल्लेलुय्याह।

1. जीवन से उलझा हुआ राही,
यीशु के पास तुम आओ रे,

गम की यह राहें सब छोड़ो,
जिन्दगी में अब कुछ जोड़ो रे।
2. लम्बा सफर जिन्दगी का,
सच्चाई कोई न जाने रे,
आँखें ऊपर को लगाओ,
यीशु के पास तुम आओ रे।
3. यीशु फिर जी उठा है,
पापों का अन्त हुआ है
खुशियाँ वो बाँट रहा है,
प्रेम की धारा बही है।

◆◆◆◆

291.

आखरी नरसिंगा फूंका जाने वाला है,
तेरा-मेरा सबका यीशु
आने वाला है, तू कहाँ होगा (2)

1. पहले जो मसीह में-मुर्दे जी उठेंगे,
बाकी जो हम जिन्दा हैं
बदल जाएँगे (2)
पल भर में ये देखो-सब कुछ होने वाला है
तू कहाँ होगा (2)
2. तेरे दिल के सारे गम बदल जायेंगे,
बीत गये जो लम्हे तेरे
पास न आएँगे (2)
दुनिया में तू तनहा ही रह जाने वाला है
तू कहाँ होगा (2)
3. तेरी दौलत तेरी शौहरत काम न आएगी,
यह सब चीज़ें प्यारे तेरे
साथ न जायेगी (2)
सब चीज़ों का खात्मा जल्दी होने वाला है
तू कहाँ होगा (2)

◆◆◆◆

292.

मेरी हो गई मसीह से मुलाकात
मैं खूब नाचूं आज
कि मेरा मन झूम रहा है।-2
ओ ओ ओ मेरे दिल का ना पूछे कोई हाल-2
मैं खूब नाचूं आज
कि मेरा मन झूम रहा है।

1. धर के भेस गेरु ढूँढ़ा जिसको
मल के राख बैरी समझा जग को-2
हो हो हो मिला मुझको ही मुझमें आज-2
मैं खूब नाचूं आज...
2. गाती है आज नदी, खुशियों के साथ हो
धरती आज करे तारों से बात हो-2
हो हो हो सभी गाते हैं आज मेरे साथ-2
मैं खूब नाचूं आज...
3. माँग के पाप क्षमा, अपने को दीन कर
यीशु की भक्ति में तू अपने को लीन कर-2
हो हो हो पूरी होगी जो भी हो तेरी बात-2
मैं खूब नाचूं आज...
हो हो हो मेरे दिल का ना पूछे कोई हाल,
हो मेरे दिल का न पूछे कोई हाल,
मैं खूब नाचूं आज कि मेरा मन झूम रहा है
मेरी हो गई मसीह से मुलाकात....

◆◆◆◆

293.

जय बोलो जय बोलो
यीशु मसीही की जय बोलो-2

1. अन्धों को आँख दिया यीशु ने-2
लंगड़ों को चला दिया यीशु ने-2
जय बोलो, जय बोलो, यीशु-2
2. कोढ़ी को चंगा किया यीशु ने-2
लाजर को जिला दिया यीशु ने-2

जय बोलो, जय बोलो, यीशु-2

3. हम सबको बचा लिया यीशु ने-2
पापो से छुड़ा लिया यीशु ने-2
जय बोलो, जय बोलो, यीशु-2
4. गूंगों को बुला दिया यीशु ने-2
बहरों को सुना दिया यीशु ने-2
जय बोलो, जय बोलो, यीशु-2

♦♦♦♦

294.

मारा गया गाड़ा गया
फिर तीसरे दिन जिन्दा हुआ (2)
आज भी यीशु जिन्दा है,
हम बताने आये हैं (2)

1. अन्धों को उसने आंखें दिया
लंगड़ों को उसने चला दिया (2)
फिर क्यों न बोले मेरा जिया
मेरे यीशु ने क्या न किया (2)
आज भी यीशु जिन्दा....
2. कोढ़ी को उसने चंगा किया
मुर्दों को उसने जिला दिया (2)
फिर क्यों न बोले मेरा जिया
मेरे यीशु ने क्या न किया (2)
आज भी यीशु जिन्दा.....
3. बादलों पर यीशु राजा आयेगा
हम सबको लेकर जायेगा (2)
फिर क्यों न बोले मेरा जिया
मेरे यीशु ने क्या न किया (2)
आज भी यीशु जिन्दा.....

♦♦♦♦

295.

मेरे जीवन में यीशु तेरा नाम
जलाल पाता रहे-2

1. मेरा उठना बैठना और-2
चलना तुझे भाता रहे
मेरे जीवन में यीशु.....
2. बेमिसाल है तू मैं मिसाल बनूं
तू कामील है मैं भी कमाल बनूं-3
दुनियां का नूर है यीशु
मेरी राहें सजाता रहे-2
मेरा उठना बैठना और....
3. मेरी सोचों में तू मेरे ख्वाबों में तू
मेरे सारे सवालों जवाबों में तू-4
जब भी तुझे पुकारूं
तेरा रूह मुझ पे भाता रहे-2
मेरा उठना बैठना....
4. जिन्दगी भर तेरे गीत गाता रहूँ,
तू सुनता रहे मैं सुनाता रहूँ-4
जब गीत तेरे गाऊँ,
तेरा रूह मुझमें गाता रहे-2
मेरा उठना बैठना और....

♦♦♦♦

296.

छू मुझे जैसा भी हूं, अपनी हजुरी से
भर मुझे मेरे मसीह, अपनी मामुरी से

1. सोना चाहूं न मोती तेरा फजल बस रहे
जीवन की रोटी है तू ही तेरा रहम बस रहे
छाट मुझे मेरे मसीह अपनी मामुरी से-2
छू मुझे जैसा...
2. मोती परस्तिस के चुनके के,
तेरी नजर मैं करूं
बांहों में लेले खुदावंद, यही तमन्ना करूं-2
सीच मुझे मेरे मसीह अपनी मामुरी से
छू मुझे जैसा...

3. सांसों में तेरी हो सांसें
जीवन पवित्र रहे–2
पूजा करूं पूरे दिल से
जब तक यह सांस रहे–2
जाँच मुझे मेरे मसीह
अपनी मामुरी से
छू मुझे जैसा...
छू मुझे छू यीशु मुझे छू–2

♦♦♦♦

297.

छू मुझे छू खुदा रूह मुझे छू
मेरी जां को, मेरी रूह को
मेरे बदन को छू –2

1. मिट्टी को कुम्हार जैसे,
हाथों से अपने सवारे
यूँ ही कलामे खुदावंद गुंधे हमें और निखारे–2
भर मुझे भर खुदा रूह मुझे भर
छू मुझे छू खुदा रूह मुझे छू
2. जीवन की ज्योत जला यूँ,
जैसे जले ज्योत तेरी
सोच हो मेरी भी ऐसी
जैसी है सोच तेरी–2
ले मुझे ले खुदा रूह मुझे ले,
छू मुझे छू खुदा रूह मुझे छू
3. आलुदगी जा जिस्म की
रूह की दूर कर दे
खौफ ए यहोवा हो कामील
पाकीजगी से भर दे–2
धो मुझे धो खुदा रूह मुझे धो
छू मुझे छू खुदा रूह मुझे छू
4. मेरी जां को मेरी रूह को
मेरे बदन को छू–2
छू मुझे छू खुदा रूह मुझे छूं
होंठों को छू सोचों को छू
ख्यालों को छू ऐ यीशु–2
छू मुझे छू प्यारे यीशु–2
छू मुझे छू खुदा रूह मुझे छू–2

♦♦♦♦

298.

सब मिलकर जयजयकार करो
खुशखबरी लेकर आया है
आया है यीशु तारणहार
उसकी हम्द ओ सना करो ...

1. जग में प्रभु यीशु आया
संदेशा प्रेम का लाया
परमेश्वर वो हमारे संग – 2
सब मिलकर....
2. कंगालों लाचारों का
अंधे कुचले बंधुओं का
आशा – है यीशु नाम संग –2
सब मिलकर...
3. घर घर गांवों में आया
परमेश्वर राज्य वो लाया
राजा यीशु हमारे संग – 2
सब मिलकर....
4. क्रूस लेकर कांधे पर
पापों की कीमत देकर
मुक्तिदाता हमारे संग – 2
सब मिलकर ....

(शिष्य थॉमसन)

♦♦♦♦

299.

जगत के ज्योत प्रभु यीशु
तमस मिटावें ख्रीस्त प्रभु –2

जय-जय हो पालनहार, परम पिता
जन-जन करते नमन, सर्वसदा -2
जय जय परमात्मा ..
पिता पुत्र आत्मा - 2

1. पावन परम प्रभु यीशु
   राह दिखाये सत्य प्रभु - 2
2. जन-जन की प्रभु आस हो तुम
   जीवन जल के स्रोत हो तुम
3. सच्ची दाखलता हो तुम
   फलदायी तुझ में ही हम
4. द्वार हो, मुक्तिधाम हो तुम
   जीवन की रोटी भी तुम
5. दान भी तुम बलिदान भी तुम
   पापिन जन के तारण तुम

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

300.

हम होशन्ना गाते हुए जाएंगे सब
प्रभु यीशु के पीछे पीछे
अब तज के संसार कर अपना इनकार
चलें यीशु के पीछे पीछे

1. यहां चार दिन जीना है, हमको अगर
   उसको भजेंगे इधार
   नहीं दुनिया से हमको है चाहत ही अब
   चलें - यीशु के पीछे पीछे - 2
2. वो ही मृत्युंजय है, वो ही जीवनदाता
   कल का नहीं अब है डर
   नारे हालेलुयाह के लगाते हुए
   चलें - यीशु के पीछे पीछे - 2
3. न ही दौलत संपत्ति की चाहत मुझे
   भरोसा प्रभु पर मुझे
   उस नगरी पर नजरें लगाएंगे हम
   चलें - यीशु के पीछे पीछे - 2

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

301.

ऐ राही तू, उठाकर क्रूस बढ़ता जा - 2
मंजिल नहीं है दूर, चलता जा
तू चलता जा...

1. चाहे कठिनाई हो, तूफानी राहें हो 2
   वो है कश्ती में साथ तेरे, तू चलता जा
   तू चलता जा...
2. भूख और प्यास यहां पर,
   तुझ को सताती हो - 2
   जीवन की रोटी, जीवन जल ले,
   तू चलता जा
   तू चलता जा...
3. संकट और क्लेश यहां हैं,
   दर्द और दुख जहां में - 2
   नजरों को यीशु से न हटा,
   तू चलता जा
   तू चलता जा...

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

302.

प्रभु यीशु आये, जगत में आए
हमको बचाए

1. आए जगत प्रभु ख्रीस्त हमारे
   क्रूस पे रक्त बहाने
   यीशु ही एक नाम दिया है
   स्वर्गलोक दुनिया में

2. बूंद बूंद वो रक्त बहाये
पाप का कर्ज चुकाने
कांटे ताज वो लेकर आए
राज्याभिषेक कराने
3. यीशु नाम से अंधे देखें
लंगड़े दौड़ लगाएं
यीशु नाम से तूफा रुकते
लहरें भी थम जाएं
4. यीशु नाम से थरथर कांपें
भूत प्रेत सब भागें
यीशु नाम से रोगी बचते
मुर्दे भी उठ जाएं
6. हर घुटना अब झुक जाए
हर जीभ स्तुति अब गाए
इस दुनिया की प्रीत नहीं अब
यीशु को ही चाहें

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

303.

यीशु मसीह तोरे प्रेम की खातिर
जीवन हम अपना कुर्बान किए रे
संसार को छोड़ हम अपना इनकार कर
क्रूस अब अपना उठाय लिए रे

1. दुनिया के लालच झूठ और चाहत
हमने सुन छोड़ दिए तोरी बुलाहट
अब तो इस दुनिया में मन नहीं लागे
यीशु तेरे दर पे, जिया मोरा लागे
2. घर गांव हमरे प्रभु तुम आए
बीमार कंगाल खुशखबरी पाए
हमको प्रभु मुक्ति तुम ही दिलाए
अब हुए हम तोरे प्रेम पे वारे
3. भरोसा बस तुम पे की ढूंढन तुम आए
बंधुओं कमजोरों को घर तुम लाए
शांति की बातें, तुम ही सुनाते
प्रभु तोरे दर पे जिया मोरा लागे

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

304.

शान्ति का राजकुमार, आया है
मेरा वो तारणहार, आया है

1. आओ चलें हम बेतलहम
चरनी में प्रभु, चरण में हम
करें स्तुति और आराधाना,
संग चरवाहे हम - 2
2. आओ चलें मिल कलवरी हम
क्रूस निहारें मिलकर हम,
काँटों का ताज वो धारे है,
राजाधिराज स्वयं - 2
3. आओ चलें दर्शन को हम,
शीश नवाने, करने नमन
जी उठा प्रभु यीशु आज,
दंडवत करने हम - 2

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

305.

हे बोझ से दबे और थके लोगो
मैं विश्राम लेकर आया हूँ
हे खोये हुए भटके लोगो
मैं राह दिखाने आया हूँ

1. घबराओ न तुम न ही छिप जाओ
मैं दोस्त हूँ प्यार मैं करता हूँ - 2

ये जख्म तुम्हारे मैं ही भरूँ
ये दर्द तुम्हारे मैं ले लूँ

2. आँसू ये तुम्हारे देखकर मैं
आया हूँ यहाँ तुमसे मिलने
ये भूख और प्यास मिटाने मैं
रोटी और जल ले आया हूँ

3. तुम खोज चुके सारे जग में
और ढूंढ़ता मैं घर आया हूँ
मेरे क्रूस पर कर लो एक नजर
तुम को ही बचाने आया हूँ

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

306.

**धन्यवाद के साथ स्तुति
गाऊँगा हे येशु मेरे खुदा
उपकार तेरे हैं बेशुमार
कोटि कोटि स्तुति धन्यवाद**

1. योग्यता से बढ़के दिया है
अपनी दया से तूने मुझे–2
मांगने से ज्यादा मिलता मुझे
आभारी हूं प्रभु मैं...–2
धन्यवाद के साथ...

2. तू है सच्चा जिन्दा खुदा
तुझ पर ही भरोसा मेरा...–2
सेवा पूरी करके पाऊँ इनाम
प्रभु ऐसा दो वरदान.....–2
धन्यवाद के साथ.....

◆◆◆◆

307.

तेरे चरणों पर शीष नवाते
हे प्रभु ख्रिस्त महान्
रक्त बहाने वाले यीशु
करते तुझको प्रणाम्

**दंडवत करते सब ही प्राणी
स्वर्ग धरा पाताल–2**

हर मुँह भक्ति में गुण गाये
हर घुटना टिक जाये
बलिवेदी पर ख्रिस्त विराजे
जग के तारणहार

महिमा राज्य पराक्रम आदर
युग युग प्रभु के पास
सहस्र जनों के राजाधिराजे
परम प्रभु जयकार

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

308.

**तेरे बिना कहाँ जाऊँ मैं
जीवन की बातें तेरे पास हैं
भटका हुआ मैं अंधियारों में
शांति की बातें तेरे पास हैं**

1. दुनिया में आया तूफान ये
सांसें मेरी डूबी जायें रे
आँधी थमाने वाले, शांति ले आने वाले
तू ही मेरा हाथ थाम ले

2. आशा न थी, भूख प्यास थी
कंगालों कुचलों की आहें सुनी
मुक्ति दिलाने वाले, रक्त बहाने वाले
अच्छे चरवाहे तुम आ गये

3. धोखा और झूठ, न है सच यहाँ
न्याय नहीं अन्याय यहाँ
राजाओं के राजा, यीशु प्रभु मेरे
स्वर्ग का राज्य लेकर आये।

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

309.

नज़र उठा कर ज़रा तुम देखो
तुम्हें मसीहा बुला रहा है (2)
निरास हो तुम और मन है व्याकुल
वो शांति देने बुला रहा है (2)
नज़र उठा कर ....

1. जहां में कोई नहीं तुम्हारा
तुम्हारे साथी चले गये हें (2)
जिनका ना कोई मसीह है उनका
तुम्हारा नाम ले बुला रहा है। (2)
नज़र उठा कर ....
2. मुश्किल तुम्हारी जीवन की राहें
ना कोई मंज़िल ना है ठिकाना (2)
निर्बल का वो बल, बेघर का वो घर
घर अपने तुम को ले जा रहा है (2)
नज़र उठा कर ....

(भाई जॉनसन)

◆◆◆◆

310.

प्रभु यीशु बचा लो हमारे प्राण...(2)

1. करो किरपा–हम पर किरपालू
करो किरपा–हम पर किरपालू
कृपा सिंधू करतार, करो उद्धार
प्रभु यीशु बचा लो हमारे प्राण...(2)
2. निर्बल, निष्फल हम नर नारी
हैं निर्बल, निष्फल हम नर नारी
नित्य नरक के भाग, प्रकोप के भाग
प्रभु यीशु बचा लो हमारे प्राण...(2)
3. छोड़ स्वर्ग, इस जगत में आए
तुम छोड़ स्वर्ग, इस जगत में आए
हुए सूली पे बलिदान, ये प्रेम महान्
प्रभु यीशु बचा लो हमारे प्राण...2
4. पावन प्रभु यीशु परम पुजारी
पावन प्रभु यीशु परम पुजारी
हम पूजत पुण्य सुनाम, सुप्रिय यीशु नाम
प्रभु यीशु बचा लो हमारे प्राण
प्रभु यीशु बचा लो हमारे प्राण...2

(भाई जॉनसन)

◆◆◆◆

311.

मेरे प्यारे यीशु, आ भी जाओ,
हम कब से तरस रहे हैं दर्शन को
मेरे प्यारे यीशु आ भी जाओ।

1. तुम मेरे जीवन–तुम मेरे रक्षक,
तुम मेरे स्वामी हो...2
तुमको पुकारूं, तुमको बुलाऊं, आ भी जाओ,
मेरे प्यारे यीशु...2
2. आऊँगा एक दिन, मैं तुमको लिवाने
ये है वचन तुम्हारा...2
तुम तो वचन के पालनहारे आ भी जाओ
मेरे प्यारे यीशु...2
3. मेरे लिए एक जगह की तैयारी
तुमने स्वर्ग में है की...2
उस घर में रहने का मैं अभिलाषी आ भी जाओ।
मेरे प्यारे यीशु...2

(भाई जॉनसन)

◆◆◆◆

312.

जायेंगे हम यीशु के पास
जायेंगे हम क्रूस के पास

1. यीशु ने आज बुलाया हमको अपने पास

गुनाह सब धोकर हमको करता वो ही पाक-2
जायेंगे-अपना हम क्रूस उठाकर साथ
2. निंदा अपमान सहने हमको है जाना
सहना अन्याय फिर भी प्यार है करना-2
जायेंगे-अपना हम क्रूस उठाकर साथ।
3. आये तलवार संकअ जोखिम भी सहना
चाहे हो क्लेश, नंगाई फिर भी बढ़ना-2
जायेंगे-अपना हम क्रूम उठाकर साथ
4. जीना भी है मसीह और लाभ ही मरना
तज के संसार सब परित्याग भी करना-2
जायेंगे-अपना हम क्रूम उठाकर साथ
5. न होगा दर्द, दुःख न आँसू ही वहाँ
प्रभु होगा सिंहासन पर विराजमाँ-2
जायेंगे-अपना हम क्रूस उठाकर साथ।
(शिष्य थॉमसन)

♦♦♦♦

313.

आशीषों की बारिशों में हम चलें प्रभु
तेरे गुण गाते-गाते हम जिएं प्रभु-2

जय तुम्हारी हो, स्तुति प्रशंसा हो-2
अनुग्रह पर अनुग्रह पाऊँ, ऐसा जीवन दो-2

माया मोह छोड़ूँ मुझे, दर्शन अपना दो
शैतां के संसार से, मुझको बचा लो-2

मन मुझे दो तेरी इच्छा, कर सकूँ प्रभु
आज्ञा पालन पथ क्रूस, ले जीऊँ मरूँ-2
(शिष्य थॉमसन)

♦♦♦♦

314.

कलवरी पर यीशु मुआ (2)
वहां जीवन का सोता बहा
यहां जीवन का सोता निकला
पापी प्यास तू अपनी बुझा

उसके पंजर में भाला छिदा
उसके हाथों में कीलें ठुकीं
उसने क्या क्या न दुख सहा

उसके लहू से ले तू नहा
साफ होंगे तेरे गुनाह
वह सब के लिए है मुआ

हे पापियों तुम भी पिओ
हे धर्मियों तुम भी पिओ
वह सबके लिए है बहा
(शिष्य थॉमसन)

♦♦♦♦

315.

यीशु नाम मिला (2)
मेरा जीवन संवर गया (2)

तूने लहू के कतरों को मेरे लिए बहा दिया
तूने जान बदन देकर यीशु मुझ को बचा लिया
तेरे लहू से (2) मेरा जीवन संवर गया (2)
तेरा नाम जो लेता है वो ज़िदगी पाता है
तेरी राहों पे चलकर रूह इनाम में पाता है
तेरे रूह से (2) मेरा जीवन संवर गया (2)

यीशु तेरी हुजूरी में कुदरत और जलाल है
यीशु तेरे हाथों में मुवाज़ात कमाल है
तेरे छूने से (2) मेरा जीवन संवर गया (2)

(शिष्य थॉमसन)

◆◆◆◆

II.

बाइबिल के 100 शब्दों/विषयों की परिभाषा और संक्षिप्त व्याख्या

क्रम	विषय	पृष्ठ नं.
1.	अनुग्रह	118
2.	अनंत जीवन	119
3.	अभिलाषा/लालसा	134
4.	अपनी मृत्यु के विषय यीशु की	147
5.	अंत के दिनों में झूठे विश्वासियों	142
6.	आत्मा और सच्चाई	123
7.	आशा क्या है	138
8.	आत्मिक युद्ध के हथियार	150
9.	इकलौता	121
10.	इच्छा	151
11.	इस्राएल के 12 गोत्र	144
12.	इब्राहीम विश्वास का पिता	153
13.	एक नई आज्ञा-और सबसे बड़ी	142
14.	कलीसिया	138
15.	क्रूस उठाना	135
16.	कृपा	118
17.	ख्रिस्त	118
18.	गलील और यहूदिया	150
19.	गवाही	152
20.	चरवाहा, भेड़, द्वार, शब्द	123
21.	चंगाई	125
22.	चिन्ह	123
23.	जीवन का जल	131
24.	जीवन की पुस्तक	144
25.	ज्योति	120

क्रम	विषय	पृष्ठ नं.
26.	ठोकर खाना	132
27.	दान कैसे दें	148
28.	दुष्टात्मा	152
29.	दृष्टांत	134
30.	धर्मी ठहराया जाना	140
31.	धार्मिकता	151
32.	धनी मनुष्य और स्वर्ग राज्य	147
33.	नमक	121
34.	नया जन्म	127
35.	प्रभु	118
36.	प्रभु यीशु का मांस और लहू	120
37.	प्रभु यीशु के 12 शिष्य	145
38.	प्रभुभोज	121
39.	परमेश्वर का राज्य और स्वर्ग का	140
40.	पाप का दासत्व	140
41.	पवित्र आत्मा के फल	141
42.	पवित्र आत्मा के वरदान	141
43.	परीक्षा	131
44.	पहाड़ी उपदेश	143
45.	पवित्र आत्मा	132
46.	प्रधानताएं	138
47.	प्रेरित	139
48.	प्रार्थना	139
49.	प्रेम के गुण	144
50.	पुराना शरीर और नया जन्म साथ	127

क्रम	विषय	पृष्ठ नं.
51.	पहिलौठा	121
52.	फसह	117
53.	फरीसी	153
53.	बपतिस्मा	125
55.	बरअब्बा	136
56.	बाइबिल	144
57.	बादलों पर प्रभु यीशु का पुनरागमन	140
58.	बाइबिल के हर वचन में प्रभु यीशु	148
59.	बंधुवाई	150
60.	बलिदान	151
61.	भरपूर जीवन	131
62.	भेड़िया	131
63.	भले या बुरे के ज्ञान का वृक्ष	146
64.	भविष्यद्वक्ता और झूठे भविष्यद्वक्ता	152
65.	मसीह	118
66.	मन्ना	119
67.	मेमना	126
68.	मनुष्य का पुत्र	126
69.	मंदिर और आराधनालय में अंतर	127
70.	मैं हूँ, प्रभु यीशु ने 7 बार कहा	123
71.	मैं तुम्हें नहीं जानता	147
72.	मेरा राज्य इस संसार का नहीं है	136
73.	मन फिराओ	137
74.	मीरास का बयाना	137
75.	मेलमिलाप का सुसमाचार	138

क्रम	विषय	पृष्ठ नं.
76.	मनुष्यत्व	139
77.	मिट्टी के पात्र में धन	143
78.	मसीह में हम जो बहुत हैं एक देह	149
79.	महिमा	151
80.	मिस्र पर परमेश्वर द्वारा भेजी गई	128
81.	यहूदियों का राजा	136
82.	रोटी	120
83.	लहू और पानी	136
84.	वचन	122
85.	वरदान	119
86.	वाचा	154
87.	वाचा का संदूक	141
88.	विश्वास	118
89.	व्यवस्था	117
90.	शांति	137
91.	शरीर से जन्म और आत्मा से जन्म	128
92.	सदूकी	153
93.	सहायक भेजूंगा	132
94.	साँप का ऊँचे पर चढ़ाया जाना	130
95.	सत्य, ज्ञान, जीवन की ज्योति	121
96.	सब्त का दिन	122
97.	संसार की भाषाओं की उत्पत्ति	146
98.	संसार, शरीर, शैतान	134
99.	स्वभाव	139
100.	स्वर्गारोहण	134

सरल भाषा में बाइबिल के 100 शब्दों/विषयों की परिभाषा और संक्षिप्त व्याख्या

1. फसह

यहूदी लोग मिस्र की 430 वर्ष की गुलामी से परमेश्वर द्वारा छुड़ाए गए, रात को हर घर में एक भेड़ की कुर्बानी हुई उसका खून दरवाजों की चौखट पर लगाया गया ताकि रात को स्वर्गदूत की तलवार से यहूदी घर के पहिलौठे न मारे जाएं पर बच जाएं। फसह का बलिदान प्रभु यीशु की क्रूस की मृत्यु को दिखाता है, वो हमारा बलिदान बना और पाप की गुलामी से बचाने के लिए फसह के पर्व के दिन ही करीब 2000 साल बाद क्रूस पर चढ़ा।

निर्गमन 12:12-24 क्योंकि उस रात को मैं मिस्र देश के बीच में से होकर जाऊंगा, और मिस्र देश के क्या मनुष्य क्या पशु, सब के पहिलौठों को मारूंगा; और मिस्र के सारे देवताओं को भी मैं दण्ड दूंगाय मैं तो यहोवा हूं।

तब मूसा ने इस्राएल के सब पुरनियों को बुलाकर कहा, तुम अपने अपने कुल के अनुसार एक एक मेम्ना अलग कर रखो, और फसह का पशु बलि करना।

Can

यहोवा देश के बीच होकर मिस्रियों को मारता जाएगा; इसलिये जहां जहां वह चौखट के सिरे, और दोनों अलंगों पर उस लोहू को देखेगा, वहां वहां वह उस द्वार को छोड़ जाएगा, और नाश करने वाले को तुम्हारे घरों में मारने के लिये न जाने देगा। फिर तुम इस विधि को अपने और अपने वंश के लिये सदा की विधि जानकर माना करो।

2. व्यवस्था

परमेश्वर द्वारा गई 10 आज्ञाएं और बहुत से धार्मिक और सामाजिक कानून मूसा को सिनाई पहाड़ पर परमेश्वर द्वारा दिए गए। व्यवस्था मनुष्य को परमेश्वर की पवित्रता और मनुष्य की अयोग्यता दिखाती है। पुराने नियम की पहली 5 किताबों में इनका वर्णन है। व्यवस्था से पाप नहीं धुलते हैं, ये पाप की पहचान कराता है।

व्यवस्था एक शिक्षक है जो हमें प्रभु यीशु के आने तक मार्गदर्शन करता है।

उत्पत्ति 15:5 में एक प्रतिज्ञा दी गई थी कि इब्राहीम के वंश की संख्या अनगिनित तारों की तरह होगी, जबकि उस समय उसकी कोई संतान ही नहीं थी और वो बूढ़ा था। इब्राहीम ने परमेश्वर की बात पर विश्वास किया। और इब्राहीम को ''विश्वास की आशीष'' (प्रतिज्ञा), उसको और उसके वंश को मिलती है, व्यवस्था के कर्म करने से नहीं मिलती है। इब्राहीम का वंश प्रभु यीशु को माना गया और प्रभु यीशु के द्वारा हम

को भी मुक्ति मिली है इस तरह इब्राहीम हमारे विश्वास का भी पिता हुआ है। और आज विश्वासी असली इस्राएल कहलाते हैं।

3. अनुग्रह

जैसे बीमारी से बचने के लिए दवा होती है, इसी तरह पाप से बचने के लिए अनुग्रह होता है। ये शब्द आत्मिक है, और अनुग्रह हमारी जरूरत के समय परमेश्वर की ओर से हमें मिलता है। अनुग्रह का रूप अदृश्य सहायता, क्षमा, चंगाई, भोजन, पाप पर विजय, या किसी भी रूप से अनुभव करी जा सकती है। ये नए नियम में अधिक पाया जाने वाला शब्द है।

इब्रानियों 4:16 इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे।

4. कृपा

ये शब्द का अधिक इस्तेमाल पुराने नियम में हुआ है। इसका अर्थ है, हमारे कमजोर हालात में पाप में गिरने पर या दुनिया की शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक मुसीबतों में गिरने के बाद जब हम परमेश्वर से दया की याचना करते हैं तो वो हमारी सुनकर हमारा निकास करता है।

5. विश्वास

परमेश्वर द्वारा कहे गए, हर वचन को चाहे वो देखी बात हो या अनदेखी आनेवाली बात हो उसे सत्य मानना और भरोसा करना, विश्वास कहलाता है।

इब्रानियों 11:1 अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।

6. मसीह

परमेश्वर की ओर से मुक्तिदाता जो आनेवाला था, उसे इब्रानी भाषा में मसीह बोलते हैं।

7. ख्रीस्त

परमेश्वर की ओर से मनुष्य के मध्य जो मुक्तिदाता आनेवाला था उसको यूनानी भाषा में ख्रीस्त कहते हैं।

8. प्रभु

प्रभु यीशु मुक्तिदाता तो हैं, क्योंकि वो हमें पाप से मुक्ति देते हैं। लेकिन उससे बाद अगला कदम हम जब लेते हैं और उसके दास बनकर उसकी हर इच्छा को पूरा करते हैं, तो वह हमारा प्रभु कहलाता है।

यूहन्ना 13:13,14 तुम मुझे गुरू, और प्रभु, कहते हो, और भला कहते हो, क्योंकि मैं वही हूं।

यदि मैं ने प्रभु और गुरू होकर तुम्हारे पांव धोए; तो तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना चाहिए।

9. अनंत जीवन

वो जीवन जिसका कभी अंत न होगा। हमारे जीवन का प्रारंभ तो होता है पर अंत नहीं होता है। परमेश्वर के साथ स्वर्गलोक में सदा जीवित रहने वाला शाश्वत जीवन या सार्वकालिक जीवन इसे है कहते हैं।

यूहन्ना 17:2 क्योंकि तू ने उस को सब प्राणियों पर अधिकार दिया, कि जिन्हें तू ने उस को दिया है, उन सबको वह अनन्त जीवन दे।

यूहन्ना 17:3 और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने।

10. वरदान

वो दान हो परमेश्वर की ओर से होता है, और वापस नहीं लिया जाता, उसे वरदान कहते हैं। (मनुष्य कई बार इस वरदान का दुरुपयोग भी कर सकता है)

यूहन्ना 3:16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

यूहन्ना 4:10 यीशु ने उत्तर दिया, यदि तू परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझ से कहता है; मुझे पानी पिला तो तू उस से मांगती, और वह तुझे जीवन का जल देता।

11. मन्ना

मिस्र की गुलामी से परमेश्वर इब्राहीम की संतान जो इस्राइली लोग थे, उन्हें बाहर निकाल कर अपने देश कनान में ला रहा था। इसमें 40 वर्ष लगे, लाखों लोग, जंगल के मार्ग में चले, पुरुष, स्त्री और बच्चे। उनको खाने के लिए परमेश्वर हर रात मन्ना कहलाने वाला भोजन गिराता था। जो सुबह वो पकाकर खाते थे।

निर्गमन 16:14-32 और जब ओस सूख गई तो वे क्या देखते हैं, कि जंगल की भूमि पर छोटे-छोटे छिलके छोटाई में पाले के किनकों के समान पड़े हैं।

यह देखकर इस्राएली, जो न जानते थे कि यह क्या वस्तु है, सो आपस में कहने लगे यह तो मन्ना है। तब मूसा ने उन से कहा, यह तो वही भोजन वस्तु है जिसे यहोवा तुम्हें खाने के लिये देता है।

और इस्राएल के घराने वालों ने उस वस्तु का नाम मन्ना रखाय और वह धनिया के समान श्वेत था, और उसका स्वाद मधु के बने हुए पुए का सा था।

फिर मूसा ने कहा, यहोवा ने जो आज्ञा दी वह यह है, कि इस में से ओमेर भर अपने

वंश की पीढ़ी पीढ़ी के लिये रख छोड़ो, जिससे वे जानें कि यहोवा हम को मिस्र देश से निकाल कर जंगल में कैसी रोटी खिलाता था।

12. प्रभु यीशु का मांस और लहू

प्रभु यीशु के बारे में कहा जाए तो वह हमारी मुक्ति के लिए परमेश्वर की तरफ से भेजे गए मेमना थे। शारीरिक जीवन जीने के लिए जिस तरह रोटी पानी चाहिए उसी तरह आत्मिक जीवन, मुक्ति और अनंत जीवन जीने के लिए हमें प्रभु यीशु का मांस खाना और लहू पीना है।

ये एक सांकेतिक भाषा है, जिसका अर्थ है हमें हर प्रकार से परमेश्वर की इच्छा पूरी करना है। वचन में - इच्छा को भोजन कहा गया है।

यूहन्ना 6:48-55 जीवन की रोटी मैं हूं।

तुम्हारे बाप दादों ने जंगल में मन्ना खाया और मर गए।

जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी मैं हूं। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा, वह मेरा मांस है।

जो मेरा मांस खाता, और मेरा लोहू पीता है, अनन्त जीवन उसी का है, और मैं अंतिम दिन फिर उसे जिला उठाऊंगा। क्योंकि मेरा मांस वास्तव में खाने की वस्तु है और मेरा लोहू वास्तव में पीने की वस्तु है।

13. रोटी

प्रभु यीशु को जीवन की रोटी कहा गया है, क्योंकि उसने कहा, जो मेरे पास आयेगा वो भूखा नहीं होगा, याने सांसारिक वस्तुओं की चाहत खतम हो जाएगी।

यूहन्ना 6:26-35 यीशु ने उन्हें उत्तर दिया, कि मैं तुम से सच सच कहता हूं, तुम मुझे इसलिये नहीं ढूंढ़ते हो कि तुम ने अचम्भित काम देखे, परन्तु इसलिये कि तुम रोटियां खाकर तृप्त हुए।

नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा, क्योंकि पिता, अर्थात परमेश्वर ने उसी पर छाप कर दी है।

यीशु ने उन से कहा, जीवन की रोटी मैं हूं: जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न होगा।

14. ज्योति

प्रभु यीशु कहते हैं जगत की ज्योति मैं हूं जिसका अर्थ है सारे ज्ञान, सत्य, मुक्ति व दृश्य-अदृश्य का रचनेवाला और शासक मैं हूं।

यूहन्ना 8:12 तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो

लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।

15. नमक

नमक स्वाद के लिए इस्तेमाल किया जाता है, प्रभु यीशु जब हमें नमक कहते हैं, तो इसका अर्थ है हमें हमारे समाज में एक स्वर्गीय गवाह रहना चाहिए जो अपने खास स्वाद या गुण याने जीवन और चालचलन से पहचाने जाएं।

मत्ती 5:13 तुम पृथ्वी के नमक होय परन्तु यदि नमक का स्वाद बिगड़ जाए, तो वह फिर किस वस्तु से नमकीन किया जाएगा? फिर वह किसी काम का नहीं, केवल इस के कि बाहर फेंका जाए और मनुष्यों के पैरों तले रौंदा जाए।

16. इकलौता

जो परिवार का एकमात्र पुत्र होता है उसे इकलौता कहते हैं। जैसे प्रभु यीशु

यूहन्ना 3:16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

17. पहिलौठा

एक परिवार का पहिला पुत्र पहिलौठा कहलाता है, उस समय जब उसके और भी छोटे भाई होते हैं, प्रभु यीशु का नाम पहले इकलौता था लेकिन कब्र से जीवित होने के बाद पहिलौठा कहलाया क्योंकि उसने हम सब को भी परमेश्वर के परिवार का अंग बना दिया था।

यूहन्ना 20:17 यीशु ने उस से कहा, ...परन्तु मेरे भाइयों के पास जाकर उन से कह दे, कि मैं अपने पिता, और तुम्हारे पिता, और अपने परमेश्वर और तुम्हारे परमेश्वर के पास ऊपर जाता हूं।

18. सत्य, ज्ञान, जीवन की ज्योति

ये तीनों शब्दों को वचन मैं एक ही अर्थ के रूप में लिया गया है। और इस के स्रोत प्रभु यीशु है, ओर स्वयं प्रभु यीशु हैं।

यूहन्ना 1:4 उस में जीवन था; और वह जीवन मुनष्यों की ज्योति थी।

यूहन्ना 14:6 यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।

19. प्रभुभोज

प्रभु यीशु ने आखिरी रात मृत्यु के पहले जो फसह का पर्व था, जब एक मेमने की कुर्बानी करी जाती है उस रात प्रभु यीशु खुद मेमना बनते हैं, और कुर्बान होते हैं जगत के पाप उठाने के लिए।

यूहन्ना 1:29 दूसरे दिन उस ने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, देखो, यह

परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप उठा ले जाता है।
प्रभु भोज में रोटी प्रभु यीशु के शरीर टूटने को दिखाता है। और दाखरस प्रभु यीशु का पवित्र खून दिखाता है। और उसमें भाग लेने वाला ये प्रगट करता है कि यीशु का जीवन ओर मेरा जीवन एक है।
1 कुरिन्थियों 11:24,25,26 और धन्यवाद करके उसे तोड़ी, और कहा; कि यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है: मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।
इसी रीति से उस ने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया, और कहा; यह कटोरा मेरे लोहू में नई वाचा है: जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।
क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते, और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो।

20. वचन

बाईबल के वचन परमेश्वर की प्रेरणा से लिखी हुई बातें हैं प्रभु यीशु का जीवन और वचन भी परमेश्वर का था।
यूहन्ना 1:1,14 आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।
और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।
2 तीमुथियुस 3:16,17 हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है।
ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।

21. सब्त का दिन

परमेश्वर ने 6 दिन में सारी सृष्टि बनाई और 7 वे दिन विश्राम किया, जो कि शनिवार का दिन है। हिब्रू भाषा में इसे सब्त कहते हैं। यहूदी मत के लोग इस दिन कुछ भी काम करने से रोकते थे, चाहे भलाई ही क्यों न हो। प्रभु यीशु ने बीमारों को चंगा सब्त के दिन भी किया और कहा की में सब्त का भी प्रभु हूं।
लूका 6:2,5,9 तब फरीसियों में से कई एक कहने लगे, तुम वह काम क्यों करते हो जो सब्त के दिन करना उचित नहीं?
लूका 6:5 और उस ने उन से कहा; मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का भी प्रभु है।
लूका 6:9 यीशु ने उन से कहा; मैं तुम से यह पूछता हूं कि सब्त के दिन क्या उचित है, भला करना या बुरा करना; प्राण को बचाना या नाश करना?

22. आत्मा और सच्चाई

परमेश्वर की आत्मा द्वारा प्रेरित ओर निर्देशित नम्रता और दीनता पूर्वक परमेश्वर की आराधना होनी चाहिए और उसे परमेश्वर के वचन पर आधारित होना चाहिए, उसमें कुछ भी दिखावा या झूठ नहीं हो सकता है तभी वो आराधना आत्मा और सच्चाई से पूर्ण होगी।

यूहन्ना 4:23,24 परन्तु वह समय आता है, वरन अब भी है जिस में सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, क्योंकि पिता अपने लिये ऐसे ही भजन करने वालों को ढूंढ़ता है।

परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।

23. चरवाहा, भेड़, द्वार, शब्द

प्रभु यीशु अपने आप को सच्चे चरवाहे कहते हैं, भेड़ मनुष्य हैं, जो उसका शब्द पहचानती हैं वे उसकी भेड़ें हैं, मजदूर भेड़ को खतरे मैं छोड़कर भाग जाता है, द्वार से अर्थ मुक्ति के मार्ग से है। शब्द सुनना विश्वास करना है।

यूहन्ना 10:8,9,11 जितने मुझ से पहिले आए; वे सब चोर और डाकू हैं परन्तु भेड़ों ने उन की न सुनी।

द्वार मैं हूं: यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा और भीतर बाहर आया जाया करेगा और चारा पाएगा।

अच्छा चरवाहा मैं हूं, अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है।

24. चिन्ह

ऐसे घटनाएं या बातें जो किसी खास समय के बारे में या किसी व्यक्ति को विशेष रूप से प्रगट करे उसे चिन्ह कहते हैं।

मत्ती 12:38,39, 40 इस पर कितने शास्त्रियों और फरीसियों ने उस से कहा, हे गुरू, हम तुझ से एक चिन्ह देखना चाहते हैं।

उसने उन्हें उत्तर दिया, कि इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिन्ह ढूंढ़ते हैं; परन्तु यूनुस भविष्यद्वक्ता के चिन्ह को छोड़ कोई और चिन्ह उन को न दिया जाएगा।

यूनुस तीन रात दिन जल-जन्तु के पेट में रहा, वैसे ही मनुष्य का पुत्र तीन रात दिन पृथ्वी के भीतर रहेगा।

25. मैं हूं - प्रभु यीशु ने 7 बार कहा

1. जीवन की रोटी मैं हूं

यूहन्ना 6:35 यीशु ने उन से कहा, जीवन की रोटी मैं हूं: जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न होगा।

इसका अर्थ है यदि हम प्रभु यीशु के नजदीक आकर उसके जीवन को देखेंगे, तो हम फिर दुनिया की ओर मुड़कर उसकी रंग रेलियों के पीछे नहीं जाएंगे।
और जो विश्वास करेगा उसकी प्यास बुझेगी, याने पवित्र आत्मा वह हमें देगा, और प्यास और मृत्यु के पार होकर हमें मुक्ति मिल जाएगी।
यूहन्ना 7:38, 39 जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी।
उस ने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे।

2. जगत की ज्योति मैं हूं

यूहन्ना 8:12 तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।
इसका अर्थ है–
मैं मापदंड हूं, में न्याय हूं, मैं प्रेम हूं, और क्षमा और जीवन दान देने का अधिकार बस मेरे ही पास है।

3. द्वार मैं हूं

यूहन्ना 10:7 तब यीशु ने उन से फिर कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि भेड़ों का द्वार मैं हूं।
मुक्ति द्वार बस प्रभु यीशु ही हैं, उन्होंने क्षमा और अनंत जीवन के लिए सारी शर्तें हमारे लिए पूरी करी हैं।

4. अच्छा चरवाहा

यूहन्ना 10:11 अच्छा चरवाहा मैं हूंय अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है।
प्रभु यीशु ने मुक्ति इसलिए दी, क्योंकि उसने हम से प्रेम किया, चरवाहे की हर बात प्रभु यीशु के प्रेम को प्रगट करती है।

5. पुनरुत्थान और जीवन मैं हूं

यूहन्ना 11:25,26 यीशु ने उस से कहा, पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा।
और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा, क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?

इसका अर्थ है–
विश्वास है - मर जाए - जीएगा
जीवित है - विश्वास है - नहीं मरेगा
मनुष्य के अनंत जीवन की आशा का भरोसा प्रभु यीशु पर है।

6. मार्ग और सत्य और जीवन मैं हूं

यूहन्ना 14:6 यीशु ने उस से कहा, मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।
संसार के ज्ञान ने अंधकार तक पहुंचाया है।
प्रभु यीशु स्वयं मार्ग हैं, क्रूस के मार्ग से, वचन के सत्य से वे अनंत जीवन तक हमें पहुंचाते हैं।

7. सच्ची दाखलता मैं हूं

यूहन्ना 15:1,4 सच्ची दाखलता मैं हूं; और मेरा पिता किसान है।
तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में: जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।
प्रभु यीशु का जीवन हमारे जीवन का आधार पर उसके स्वरूप में बदलते जाना चाहिए, ताकि फलवंत हो।

26. चंगाई

प्रभु यीशु की चंगाई हर बीमारी के लिए थी, और प्रभु यीशु हमेशा कहा करते थे कि तुम्हारे विश्वास ने तुम्हें चंगा किया है, कोई खाली हाथ कभी न लौटा, सब तुरंत ठीक हुए।
मत्ती 4:23, 24 और यीशु सारे गलील में फिरता हुआ उन की सभाओं में उपदेश करता और राज्य का सुसमाचार प्रचार करता, और लोगों की हर प्रकार की बीमारी और दुर्बलता को दूर करता रहा।
और सारे सूरिया में उसका यश फैल गया; और लोग सब बीमारों को, जो नाना प्रकार की बीमारियों और दुखों में जकड़े हुए थे, और जिन में दुष्टात्माएं थीं और मिर्गी वालों और झोले के मारे हुओं को उसके पास लाए और उस ने उन्हें चंगा किया।

27. बपतिस्मा

ये यूनानी भाषा बप्तिजो से निकला है, जिसका अर्थ है डूबना जिसका सांकेतिक अर्थ है मरना, यदि कोई मौत से निकल कर आता है तो वो एक नया जीवन है।

जिस ने प्रभु यीशु पर विश्वास करके नया जीवन पा लिया है वो उसकी गवाही पानी के अंदर जाकर बाहर आने मैं चित्रित करता है, और अपने आप का प्रभु यीशु का चेला खुले रूप से घोषित करता है! बपतिस्मा से पापों की क्षमा नहीं होती, पाप प्रभु यीशु के क्रूस पर बहाए पवित्र लहू से धुलते हैं, बपतिस्मा संसार के सामने प्रभु यीशु को स्वीकार करना है।

प्रेरितों के काम 8:36, 37 मार्ग में चलते चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है।

फिलेप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है: उस ने उत्तर दिया मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है।

गलातियों 3:27 और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है।

रोमियों 6:3, 4 क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया। सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।

28. मेमना

पुराने नियम में हम देखते हैं एक मेमने की कुर्बानी मनुष्य को देनी होती थी अपने पापों के प्रायश्चित के रूप में लेकिन ये तस्वीर हमारे आने वाले मसीह की थी जो परमेश्वर का मेमना बनकर सारे संसार के पापों के लिए एक बार मृत्यु उठाएगा।

लैव्यव्यवस्था 4:27,28 और यदि साधारण लोगों में से कोई अज्ञानता से पाप करे, अर्थात् कोई ऐसा काम जिसे यहोवा ने मना किया हो करके दोषी हो, और उसका वह पाप उस पर प्रगट हो जाए, तो वह उस पाप के कारण एक निर्दोष बकरी बलिदान के लिये ले आए।

लैव्यव्यवस्था 17:11 क्योंकि शरीर का प्राण लोहू में रहता है, और उसको मैं ने तुम लोगों को वेदी पर चढ़ाने के लिये दिया है, कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त किया जाए, क्योंकि प्राण के कारण लोहू ही से प्रायश्चित्त होता है।

29. मनुष्य का पुत्र

प्रभु यीशु जब अपने आप को संबोधित करते थे तो अपने आप को मनुष्य का पुत्र कहते थे। जिसका अर्थ था कि मैं सारे अधिकार और स्वर्ग की महिमा छोड़कर शून्य बनकर तुम्हारे साथ डेरा करने आया हूं, और मनुष्य के सारे हालात में मैं उनके साथ हूं।

फिलिप्पियों 2:5, 6, 7 जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।

जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा।
वरन् अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।

30. मंदिर और आराधनालय में अंतर

यहूदियों का पहला मंदिर 1000 BC (ईसा पूर्व) में राजा सुलेमान ने बनाया था। ये यरूशलेम में था इस मंदिर को 586 BC (ईसा पूर्व) में बेबीलोन के राजा नबूकदनेस्सर ने यरूशेलम पर चढ़ाई कर के नष्ट कर दिया था।
बाइबिल में एजरा की किताब से मालूम पड़ता है कि सन् 538 BC (ईसा पूर्व) इसको फिर से उसी जगह खड़ा किया गया इस काम को फारस के राजा साइरस के द्वारा निर्देश पर किया गया।
इस बीच यहूदियों के मंदिर पर अनेक राजाओं और अन्य धर्मों के हमले होते रहे, इनकी फिर से मरम्मत और नवनिर्माण राजा हेरोदेस ने करीब 20 BC (ईसा पूर्व) में किया इसके बाद प्रभु यीशु के जीवनकाल में ये मंदिर विद्यमान था। प्रभु यीशु की क्रूस पर मृत्यु के बाद उस मंदिर में कभी भी कुर्बानियां नहीं हुईं। फिर 70 AD में रोम के शासक टाईटस ने इस मंदिर को भी नष्ट कर दिया। सातवीं शताब्दी में मुस्लिम सेनाओं ने यरूशलेम पर अधिकार कर लिया, और उसी स्थान पर अल अक्सा मस्जिद का निर्माण किया।
आराधनालय यहूदियों के शहरों में और बस्तियों में एक हॉल के रूप में होते थे जहां बाइबिल की और परमेश्वर की शिक्षाएं लोगों को हर सबत के दिन सिखाई जाती थीं।

31. नया जन्म

जो शरीर से जन्मा वो शरीर है, और जो आत्मा से जन्मा वो आत्मा है। जब हम अपने पापों को मान कर प्रभु यीशु के पवित्र लहू के बहाए जाने का द्वारा पापों की क्षमा प्राप्त करते हैं, तब प्रभु न केवल हमारे पाप क्षमा करते हैं, परन्तु साथ ही साथ वो हमारी मरी हुई आत्मा को जीवित कर देते हैं, और अपनी पवित्र आत्मा का दान हमें दे देते हैं ताकि हम परमेश्वर की इच्छा पर चल सकें, और हमारा स्वभाव और चालचलन नया हो जाता है।
2 कुरिन्थियों 5:17 सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं, देखो, वे सब नई हो गईं।

32. पुराना शरीर और नया जन्म साथ साथ कैसे

पुराने शरीर के मन से - मनुष्यत्व - याने मन की अभिलाषाएं/इच्छाएं निकलती हैं।

नए जन्मे मनुष्य के अन्दर पवित्र आत्मा नया स्वभाव और नई इच्छाएं जाग्रत करता है। हमारा ये विश्वास है कि हमारा मनुष्यत्व उस क्रूस पर प्रभु यीशु के साथ मारा गया है, जिसका अर्थ है हमारा पुराना मन और उसके द्वारा उत्पन्न होती अभिलाषाएं/इच्छाएं भी क्रूस पर मर जाती हैं।

और अब नया जन्म का अर्थ है पवित्र आत्मा के द्वारा एक नया मन जिसमें पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर की इच्छा दिखाता है और उस पर चलने की सामर्थ देता है।

इफिसियों 2:1, 3, 5, 8, 9 और उस ने तुम्हें भी जिलाया, जो अपने अपराधों और पापों के कारण मरे हुए थे।

इन में हम भी सब के सब पहिले अपने शरीर की लालसाओं में दिन बिताते थे, और शरीर, और मन की मनसाएं पूरी करते थे, और और लोगों के समान स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान थे।

जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलायाय (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।)

क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है, और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है।

और न कर्मो के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।

33. शरीर से जन्म और आत्मा से जन्म

एक शारीरिक व्यक्ति को अपने मन की अभिलाषाओं और इच्छाओं को पूरा करता रहता है, शरीर का अर्थ है परमेश्वर की आत्मा के बिना का जीवन।

उद्धार का कार्य परमेश्वर की ओर से होता है। प्रभु यीशु ने कहा मैंने तुम्हें चुन लिया है, पवित्र आत्मा हम को पाप, न्याय ओर धार्मिकता के बारे में बताता है, हमारी मेरी हुई आत्मा को जिलाता है, ओर नए जन्म के अनुभव में लेकर चलता है।

यूहन्ना 3:5 यीशु ने उत्तर दिया, कि मैं तुझ से सच सच कहता हूं, जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता।

यूहन्ना 3:6 क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है, और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।

34. मिस्र पर परमेश्वर द्वारा भेजी गई 10 विपत्तियां

(दरवाजे पर लगाया मेमने का लहू, प्रभु यीशु के पवित्र लहू की एक तस्वीर है)

निर्गमन 7 से 10 अध्याय

जो जो आज्ञा मैं तुझे दूं वही तू कहना, और हारून उसे फिरौन से कहेगा जिस से वह इस्राएलियों को अपने देश से निकल जाने दे।

तौभी फिरौन तुम्हारी न सुनेगा, और मैं मिस्र देश पर अपना हाथ बढ़ाकर मिस्रियों को भारी दण्ड देकर अपनी सेना अर्थात् अपनी इस्राएली प्रजा को मिस्र देश से निकाल लूंगा। और जब मैं मिस्र पर हाथ बढ़ा कर इस्राएलियों को उनके बीच से निकालूंगा तब मिस्री जान लेंगे, कि मैं यहोवा हूं।

1.

निर्गमन 7:20 तब मूसा और हारून ने यहोवा की आज्ञा ही के अनुसार किया, अर्थात् उसने लाठी को उठा कर फिरौन और उसके कर्मचारियों के देखते नील नदी के जल पर मारा, और नदी का सब जल लोहू बन गया।

2.

निर्गमन 8:6 तब हारून ने मिस्र के जलाशयों के ऊपर अपना हाथ बढ़ाया, और मेंढ़कों ने मिस्र देश पर चढ़कर उसे छा लिया।

3.

निर्गमन 8:17 हारून ने लाठी को ले हाथ बढ़ाकर भूमि की धूल पर मारा, तब मनुष्य और पशु दोनों पर कुटकियां हो गई वरन सारे मिस्र देश में भूमि की धूल कुटकियां बन गई।

4.

निर्गमन 8:24 और फिरौन के भवन, और उसके कर्मचारियों के घरों में, और सारे मिस्र देश में डांसों के झुंड के झुंड भर गए, और डांसों के मारे वह देश नाश हुआ।

5.

निर्गमन 9:3, 6 जो घोड़े, गदहे, ऊंट, गाय-बैल, भेड़-बकरी आदि पशु मैदान में हैं, उन पर यहोवा का हाथ ऐसा पड़ेगा कि बहुत भारी मरी होगी। और मिस्र के तो सब पशु मर गए, परन्तु इस्राएलियों का एक भी पशु न मरा।

6.

निर्गमन 9:10 वे भट्‌टी में की राख लेकर फिरौन के सामने खड़े हुए, और मूसा ने उसे आकाश की ओर उड़ा दिया, और वह मनुष्यों और पशुओं दोनों पर फफोले और फोड़े बन गई।

7.

निर्गमन 9:23 तब मूसा ने अपनी लाठी को आकाश की ओर उठाया, और यहोवा मेघ गरजाने और ओले बरसाने लगा, और आग पृथ्वी तक आती रही। इस प्रकार यहोवा ने मिस्र देश पर ओले बरसाए।

8.

निर्गमन 10:14 टिड्डियों ने चढ़ के मिस्र देश के सारे स्थानों मे बसेरा किया, उनका दल

बहुत भारी था, वरन न तो उनसे पहले ऐसी टिड्डियां आई थीं, और न उनके पीछे ऐसी फिर आएंगी।

9.

निर्गमन 10:22 मूसा ने अपना हाथ आकाश की ओर बढ़ाया, और सारे मिस्र देश में तीन दिन तक घोर अन्धकार छाया रहा।

तीन दिन तक न तो किसी ने किसी को देखा, और न कोई अपने स्थान से उठा, परन्तु सारे इस्राएलियों के घरों में उजियाला रहा।

निर्गमन 10:27-29 पर यहोवा ने फिरौन का मन हठीला कर दिया, जिस से उसने उन्हें जाने न दिया।

तब फिरौन ने उससे कहा, मेरे सामने से चला जाये और सचेत रह, मुझे अपना मुख फिर न दिखाना, क्योंकि जिस दिन तू मुझे मुंह दिखलाए उसी दिन तू मारा जाएगा।

मूसा ने कहा, कि तू ने ठीक कहा है, मैं तेरे मुंह को फिर कभी न देखूंगा।

10.

निर्गमन 12:12-29 तब मूसा ने इस्राएल के सब पुरनियों को बुलाकर कहा, फसह का पशु बलि करना।

और उसका लोहू जो तसले में होगा उस में जूफा का एक गुच्छा डुबाकर उसी तसले में के लोहू से द्वार के चौखट के सिरे और दोनों अलंगों पर कुछ लगाना, और भोर तक तुम में से कोई घर से बाहर न निकले।

इसलिये जहां जहां वह चौखट के सिरे, और दोनों अलंगों पर उस लोहू को देखेगा, वहां वहां वह उस द्वार को छोड़ जाएगा,

निर्गमन 12:12-29 उस रात को मैं मिस्र देश के बीच में से होकर जाऊंगा, और मिस्र देश के क्या मनुष्य क्या पशु, सब के पहिलौठों को मारूंगा, और मिस्र के सारे देवताओं को भी मैं दण्ड दूंगा, मैं तो यहोवा हूं।

और ऐसा हुआ कि आधी रात को यहोवा ने मिस्र देश में सिंहासन पर विराजने वाले फिरौन से लेकर गड़हे में पड़े हुए बन्धुए तक सब के पहिलौठों को, वरन पशुओं तक के सब पहिलौठों को मार डाला।

35. सांप का ऊंचे पर चढ़ाया जाना

पाप के कारण जंगल में इस्राइलियों को जहरीले सांपों ने डसना चालू किया और कई हजार मर गए। तब मूसा की प्रार्थना पर परमेश्वर ने उपाय बताया कि एक पीतल का सर्प बनाकर एक लकड़ी पर ऊंचा उठाओ और जो कोई उसे देखेगा वो बच जाएगा, नहीं मरेगा। इसके पीछे का अर्थ था, अपने मरने का कारण देखो में फिराओ और परमेश्वर

के उपाय पर विश्वास करो।
और अब जहर का डर नहीं है, प्रभु यीशु की ये एक तस्वीर है। क्रूस पर मृत्यु के द्वारा उसने पाप के जहर और दण्ड को उठा लिया और हमें मुक्ति देता है।
1 कुरिन्थियों 15:54, 55, 56, 57 जय ने मृत्यु को निगल लिया।
हे मृत्यु तेरी जय कहां रही?
हे मृत्यु तेरा डंक कहां रहा? मृत्यु का डंक पाप है, और पाप का बल व्यवस्था है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।
मुद्दा पाप है जो हमें मृत्यु दे सकता है। पर अब लकड़ी के ऊपर उठाए पीतल के सांप की तरह वो शक्ति हीन है। क्रूस की ओर हमें देखना है।
उस पर हमारे पाप का स्वभाव (मनुष्यत्व) क्रूसित है। प्रभु यीशु पाप ओर श्राप बनकर क्रूस पर है हमें उस देखकर विश्वास से उद्धार पाना है।

36. जीवन का जल

प्रभु यीशु ने इसका अर्थ पवित्र आत्मा बताया है।
यूहन्ना 4 - 7
यूहन्ना 7:38, 39 जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी।
उस ने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे, क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा थाय क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था।

37. भरपूर जीवन

ये वो जीवन है जिसमें परमेश्वर अपनी इच्छा हमारे जीवन के द्वारा पूरी कर सकता है
यूहन्ना 10:10 चोर किसी और काम के लिये नहीं परन्तु केवल चोरी करने और घात करने और नष्ट करने को आता है। मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएं, और बहुतायत से पाएं।

38. भेड़िया

वचन में भेड़िया उसे कहते हैं, जो शैतान का एजेंट होता है और उसका काम भेड़ या परमेश्वर के लोगों पर अत्याचार करना है, उन्हें तितर बितर करना है।
लूका 10:3 जाओ, देखों मैं तुम्हें भेड़ों की नाई भेडियों के बीच में भेजता हूं।

39. परीक्षा

हिंदी भाषा में बस ये एक ही शब्द है लेकिन अंग्रेजी में इसके दो शब्द हैं। कहा जाये

एक परीक्षा परमेश्वर की तरफ से होती है जिसे Test कहते हैं यह विश्वास की परख है इस परीक्षा मैं दुख का सामना करते हुए अपने विश्वास में बने रहना है उदाहरण, इब्राहीम का इसहाक को कुर्बान करने के लिए कहा जाना।

दूसरी परीक्षा को अंग्रेजी में temptation कहते हैं, ये शैतान की तरफ से होती है, इसमें लालच और पाप की ओर आकर्षित कर विश्वास से गिराने का प्रयास किया जाता है।

उदाहरण - प्रभु यीशु की जंगल में परीक्षा

मत्ती 4:8-10 फिर शैतान उसे एक बहुत ऊंचे पहाड़ पर ले गया और सारे जगत के राज्य और उसका वैभव दिखाकर उस से कहा, कि यदि तू गिरकर मुझे प्रणाम करे, तो मैं यह सब कुछ तुझे दे दूंगा।

तब यीशु ने उस से कहा, हे शैतान दूर हो जा, क्योंकि लिखा है, कि तू प्रभु अपने परमेश्वर को प्रणाम कर, और केवल उसी की उपासना कर।

1 कुरिन्थियों 10:13 तुम किसी ऐसी परीक्षा में नहीं पड़े, जो मनुष्य के सहने से बाहर है: और परमेश्वर सच्चा है: वह तुम्हें सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा, कि तुम सह सको।

40. ठोकर खाना

एक विश्वासी का परमेश्वर के वचन पर संदेह करना, और उसके कारण पाप के लिए दरवाजा खोलना।

मत्ती 11:2-6 यूहन्ना ने बन्दीगृह में मसीह के कामों का समाचार सुनकर अपने चेलों को उस से यह पूछने भेजा।

कि क्या आनेवाला तू ही है: या हम दूसरे की बाट जोहें?

यीशु ने उत्तर दिया, कि जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब जाकर यूहन्ना से कह दो। और धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए।

41. सहायक भेजूंगा

ये एक और सहायक पवित्र आत्मा है "एक और" का अर्थ है एक सहायक स्वयं प्रभु यीशु हैं, जो स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिनी तरफ बैठकर हमारे लिए निवेदन करते हैं मध्यस्थ प्रार्थना करते हैं।

और पवित्र आत्मा इस संसार में आकर हमें पाप, न्याय और धार्मिकता के बारे में चिताता है।

42. पवित्र आत्मा

पवित्र आत्मा हमारा, सहायक है, सांत्वना देता है, हमारा शिक्षक है, हमें सशक्त करता है, हमारे लिए प्रार्थना करता है, और हमारे साथ रहता है।

पवित्र आत्मा के सामर्थ के काम के द्वारा विश्वासी उद्धार पाते हैं, आत्मा से भरपूर होते हैं, और उद्धार की निष्चयता का बयाना पाते हैं, और शुद्धता की ओर बढ़ते हैं।
एक विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा निम्न रीति से काम करता है।

1. पवित्र आत्मा एक सहायक ओर शिक्षक है - यूहन्ना 14:26
2. यूहन्ना 16:8 और वह आकर संसार को पाप के विषय में आगाह करता है,
3. पवित्र आत्मा विश्वासी के अंदर करता है, और उन्हें भरपूर करता है।

1 कुरिन्थियों 3:16 क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर का आत्मा तुम में वास करता है?

4. पवित्र आत्मा प्रगट करता है, बुद्धि और ज्ञान देता है।

1 कुरिन्थियों 2:10 परन्तु परमेश्वर ने उन को अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया, क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है।

5. पवित्र आत्मा सत्य बताता है और भविष्य की बातें भी वचन से सिखाता है।

यूहन्ना 16:13 परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।

6. पवित्र आत्मा सेवा के लिए आत्मिक वरदान देता है।

कुरिन्थियों 12: 7-11

7. पवित्र आत्मा द्वारा ही विश्वासियों के छुटकारे की छाप मिलती है।

इफिसियों 1:13 और उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी।

8. पवित्र आत्मा हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, और हमारे लिये बिनती करता है।

रोमियों 8:26 इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते, कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर है, हमारे लिये विनती करता है।

9. पवित्र आत्मा अनंत जीवन के लिए हमें जीवित करेगा।

रोमियों 8:10 और यदि मसीह तुम में है, तो देह पाप के कारण मरी हुई है, परन्तु आत्मा धर्म के कारण जीवित है।

रोमियों 8:11 और यदि उसी का आत्मा जिस ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया तुम में बसा हुआ है, तो जिस ने मसीह को मरे हुओं में से जिलाया, वह तुम्हारी मरनहार देहों को भी अपने आत्मा के द्वारा जो तुम में बसा हुआ है जिलाएगा।

10. पवित्र आत्मा हमें शुद्धता की ओर ले जाता है ओर फलवंत करता है।
गलातियों 5: 22-23 पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज,
गलातियों 5:23 और कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं, ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।

43. दृष्टांत

ये एक शिक्षा देने का तरीका है, जिससे साधारण लोग भी किसी सत्य को समझ लें। ये तरीका प्रभु यीशु ने अपने प्रचार शैली में इस्तेमाल किया है। ये एक कहानी होती है जिसका संकेत सुनने वाले लोगों की वर्तमान हालात को दिखाता है, ताकि हम सच्चाई को स्वीकार करें।

44. संसार, शरीर, शैतान

ये तीनों पाप की लालसाओं को उत्पन्न करके मनुष्य को मृत्यु मार्ग में ले जाने की क्षमता रखते हैं।

45. अभिलाषा/लालसा

शरीर की इच्छा जो परमेश्वर की इच्छा के विपरीत है, और अविश्वासी मनुष्य के मन से निकलती है।
गलातियों 5:24 और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।

46. स्वर्गारोहण

- प्रभु यीशु द्वारा अपने स्वर्गारोहण की भविष्यवाणी
यूहन्ना 3:13 और कोई स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, केवल वही जो स्वर्ग से उतरा, अर्थात् मनुष्य का पुत्र जो स्वर्ग में है।
यूहन्ना 6:62 और यदि तुम मनुष्य के पुत्र को जहां वह पहिले था, वहां ऊपर जाते देखोगे, तो क्या होगा?
यूहन्ना 7:33 इस पर यीशु ने कहा, मैं थोड़ी देर तक और तुम्हारे साथ हूं, तब अपने भेजने वाले के पास चला जाऊंगा।
यूहन्ना 7:34 तुम मुझे ढूंढ़ोगे, परन्तु नहीं पाओगे और जहां मैं हूं, वहां तुम नहीं आ सकते।
यूहन्ना 14:2 मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं।
यूहन्ना 16:28 मैं पिता से निकलकर जगत में आया हूं, फिर जगत को छोड़कर पिता के पास जाता हूं।
पुनरुत्थान के बाद प्रभु यीशु द्वारा स्वर्गारोहण की चर्चा

- स्वर्गारोहण
लूका 24:50 तब वह उन्हें बैतनिय्याह तक बाहर ले गया, और अपने हाथ उठाकर उन्हें आशीष दी।
मरकुस 16:19 निदान प्रभु यीशु उन से बातें करने के बाद स्वर्ग पर उठा लिया गया, और परमेश्वर की दाहिनी ओर बैठ गया।
प्रेरितों के काम 1:12 तब वे जैतून नाम के पहाड़ से जो यरूशलेम के निकट एक सब्त के दिन की दूरी पर है, यरूशलेम को लौटे।
लूका 24:53 और लगातार मन्दिर में उपस्थित होकर परमेश्वर की स्तुति किया करते थे।
- आज वो विश्वासियों की आशा हैं
इब्रानियों 6:19 वह आशा हमारे प्राण के लिये ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है, और परदे के भीतर तक पहुंचता है। (स्वर्ग)
इब्रानियों 6:20 जहां यीशु मलिकिसिदक की रीति पर सदा काल का महायाजक बन कर, हमारे लिये अगुआ की रीति पर प्रवेश हुआ है (स्वर्ग)
- आज स्वर्ग मैं प्रभु यीशु विराजमान हैं
इफिसियों 1:20,21 जो उस ने मसीह के विषय में किया, कि उस को मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्यानों में अपनी दाहिनी ओर।
सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ, और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आने वाले लोक में भी लिया जाएगा, बैठाया।
इब्रानियों 1:3 वह उस की महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है: वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन के दाहिने जा बैठा।

47. क्रूस उठाना

परमेश्वर से और मनुष्य से प्रेम करने के लिए जान तक दे देना क्रूस पर हर दिन हमारी अपनी इच्छा, लालसा और अभिलाषा (मनुष्यता) को क्रूसित करना होता है, ताकि परमेश्वर के मार्ग में उसकी इच्छा पूरी करते हुए हैं जी सकें।
अपना इनकार का अर्थ है।
अपनी इच्छा नहीं करना, अपनी उन लालसाओं अभिलाषा को पूरा नहीं करना जो प्रभु की मर्जी के विपरीत हैं।
लूका 9:23 उस ने सब से कहा, यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रति दिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।
लूका 9:24 क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहेगा वह उसे खोएगा, परन्तु जो कोई

मेरे लिये अपना प्राण खोएगा वही उसे बचाएगा।
गलातियों 5:24 और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उस की लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।

48. यहूदियों का राजा

वास्तव में प्रभु यीशु यहूदियों के राजा तो थे ही क्योंकि वे दाऊद की संतान थे, लेकिन वो हम सब के महाराजा भी हैं। जब वे बेतलेहम में पैदा हुए तब ज्योतिषी ढूंढने आए थे - यहूदियों के राजा को, ओर अंत में जब वे क्रूस पर चढ़े हुए थे तो क्रूस की पट्टी पर भी उसका नाम लिखा था - यहूदियों का राजा।
लूका 23:3 पीलातुस ने उस से पूछा, क्या तू यहूदियों का राजा है? उस ने उसे उत्तर दिया, कि तू आप ही कह रहा है।

49. बरअब्बा

कहा जाए तो बरअब्बा संसार के हम मनुष्यों की तस्वीर है, यदि प्रभु यीशु को पिलातुस छोड़ देता, तो हम मारे जाते, क्योंकि पाप की मजदूरी (सजा) तो मृत्यु है।
लूका 23:18 इस का काम तमाम कर, और हमारे लिये बरअब्बा को छोड़ दे।
लूका 23:25 और उस ने उस मनुष्य को जो बलवे और हत्या के कारण बन्दीगृह में डाला गया था, और जिसे वे मांगते थे, छोड़ दिया, और यीशु को उन की इच्छा के अनुसार सौंप दिया।

50. मेरा राज्य इस संसार का नहीं है

परमेश्वर का राज्य वो लेकर आए थे, और जो उसपर विश्वास करता है वो उस राज्य में शामिल हो जाता है, परमेश्वर के राज्य के नियम अपने जीवन में लागू करने लगता है। प्रभु यीशु ने क्रूसित होने के पहले कहा था।
यूहन्ना 14:30 इस संसार का सरदार आता है, और मुझ में उसका कुछ नहीं।
यूहन्ना 18:36 यीशु ने उत्तर दिया, कि मेरा राज्य इस जगत का नहीं, यदि मेरा राज्य इस जगत का होता, तो मेरे सेवक लड़ते, कि मैं यहूदियों के हाथ सौंपा न जाता: परन्तु अब मेरा राज्य यहां का नहीं।

51. लहू और पानी

प्रभु यीशु की क्रूस की मृत्यु के बाद एक सिपाही ने ये पक्का करने के लिए की वो मर चुका है, उसके पंजर में भाला घोंप दिया, उसमें से खून और पानी निकला। इसका कारण चाहे कुछ भी क्यों न हो।
लेकिन संकेत और छिपी तस्वीर है
लहू - जिसका अर्थ है हमारे पाप की कीमत उसके पवित्र लहू के बहाए जाने से पूरी

हो गई है। लहू बह चुका है

पानी - जीवन का जल याने पवित्र आत्मा का दान आ गया है ताकि हम इस संसार में प्रभु यीशु की इच्छा पूरी कर सकें

यूहन्ना 19:34 परन्तु सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा और उस में से तुरन्त लोहू और पानी निकला।

यूहन्ना 7:38,39 जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी।

उस ने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करने वाले पाने पर थे, क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा थाय क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था।

52. शांति

''डर जब दूर होता है, तो बाकी जो बचता है उसे शांति कहते हैं''

चारों तरफ अशांति, संकट क्लेश के बीच प्रभु यीशु शांति देते हैं, क्योंकि ये उसकी अपनी शांति है जो अंदर वास करती है।

यूहन्ना 14:27 मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं, जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।

53. मन फिराओ

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने और फिर प्रभु यीशु ने भी में फायराव का प्रचार किया। हमारा मन हमारे विचार उत्पन्न करता है जो हमारी लालसा ओर शारीरिक अभिलाषाओं का स्रोत है।

हमें अपनी सोच और कर्म के रास्ते को मोड़ना है, ये काम हमारी शक्ति से नहीं हो सकता है, पर पवित्र आत्मा का हमारे अंदर वास करने से होगा।

इसीलिए यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहता है मेरे बाद आनेवाला मुझ से शक्तिशाली है और वो तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।

मत्ती 3:1, 2 उन दिनों में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला आकर यहूदिया के जंगल में यह प्रचार करने लगा। कि मन फिराओ, क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।

मत्ती 4:17 उस समय से यीशु प्रचार करना और यह कहना आरम्भ किया, कि मन फिराओ क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आया है।

54. मीरास का बयाना

मीरास का अर्थ होता है पैत्रिक संपत्ति, या विरासत, जो हमारे परमेश्वर ने हमको जो उसकी संतान बन गए हैं, दी है, इसके सबूत के लिए उसने पवित्र आत्मा का दान हम

सब विश्वास करने वालों को दिया है।
2 कुरिन्थियों 1:22 जिस ने हम पर छाप भी कर दी है और बयाने में आत्मा को हमारे मनों में दिया।
इफिसियों 1:13,14 और उसी में तुम पर भी जब तुम ने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है, और जिस पर तुम ने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किए हुए पवित्र आत्मा की छाप लगी।
वह उसके मोल लिए हुओं के छुटकारे के लिये हमारी मीरास का बयाना है, कि उस की महिमा की स्तुति हो।

55. आशा क्या है

वो जिसे हमने विश्वास की आंखों से तो देखा है, पर अभी तक हाथ में नहीं आया है
1 तीमुथियुस 1:1 हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर, और हमारी आशा-स्थान मसीह यीशु की आज्ञा से मसीह यीशु का प्रेरित है, तीमुथियुस के नाम जो विश्वास में मेरा सच्चा पुत्र है।
1 तीमुथियुस 4:10 क्योंकि हम परिश्रम और यत्न इसीलिये करते हैं, कि हमारी आशा उस जीवते परमेश्वर पर है, जो सब मनुष्यों का, और निज करके विश्वासियों का उद्धारकर्ता है।

56. प्रधानताएं

ये शैतान द्वारा नियुक्त दुष्ट शक्तियां हैं जो मिलकर काम करती हैं और मनुष्यों और समाज को बंधक बनाती हैं। और मिलकर परमेश्वर की खिलाफत करती हैं।

57. कलीसिया

जो प्रभु यीशु द्वारा मुक्ति पाए हुओं का समूह है, इसकी दीवार नहीं होती ये कोई बिल्डिंग नहीं है ये लोग हैं, ये उनकी अपनी doctrine से विभाजित नहीं है, ये पवित्र छुड़ाए अनुग्रह पाए लोगों का झुंड है।

58. मेलमिलाप का सुसमाचार

परमेश्वर और मनुष्य की पाप के कारण दूरी आ गई थी, एक दीवार खड़ी हो गई थी, मनुष्य पाप के परिणामों से मृत्यु के चंगुल में फंसा था, अदन के बाग से जो अलगाव था उसको दूर करने प्रभु यीशु इस संसार में आए।
यूहन्ना 3:17 परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।
लूका 4:18 कि प्रभु का आत्मा मुझ पर है, इसलिये कि उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को

छुड़ाऊं।
लूका 4:19 और प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष का प्रचार करूं।

59. प्रेरित

प्रेरित उसे कहते हैं, जो प्रभु यीशु द्वारा चुना गया था, ओर प्रभु यीशु के जीवन काल मैं उसके साथ साथ घुमा था।
प्रेरितों के काम 1:21, 22, 25 इसलिये जितने दिन तक प्रभु यीशु हमारे साथ आता जाता रहा, अर्थात् यूहन्ना के बपतिस्मा से लेकर उसके हमारे पास से उठाए जाने तक, जो लोग बराबर हमारे साथ रहे।
उचित है कि उन में से एक व्यक्ति हमारे साथ उसके जी उठने का गवाह हो जाए। कि वह इस सेवकाई और प्रेरिताई का पद ले जिसे यहूदा छोड़ कर अपने स्थान को गया।

60. मनुष्यत्व

पुराने शरीर के मन से याने मन की अभिलाषाएं/इच्छाएं जो निकलती हैं
मनुष्यता उस क्रूस पर प्रभु यीशु के साथ मरती हैं जिसका अर्थ है हमारा पुराना मन और उसके द्वारा उत्पन्न होती अभिलाषाएं/इच्छाएं भी प्रभु यीशु के साथ क्रूस पर मर जाती हैं, और तब हमारा नया जन्म होता है जिसका अर्थ है पवित्र आत्मा के द्वारा एक नया मन जिसमें पवित्र आत्मा हमें परमेश्वर की इच्छा दिखाता है और उस पर चलने की सामर्थ देता है।
रोमियों 6:6 क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें।

61. स्वभाव

हमारे मन (mind) से हमारी इच्छा, सोच और निर्णयों के रूप में हमारे स्वभाव का निर्माण करता है।
प्रभु का आत्मा हमें नया में देता है।
रोमियों 12:2 और इस संसार के सदृश न बनो, परन्तु तुम्हारी बुद्धि के नये हो जाने से तुम्हारा चाल-चलन भी बदलता जाए, जिस से तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो।
फिलिप्पियों 2:5 जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।
फिलिप्पियों 2:6 जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।

62. प्रार्थना

प्रार्थना (कमजोरी से निकलती है)

हमारी कमजोरी हालात से निकल कर आती है, हमारी निर्भरता प्रभु के ऊपर है इसे प्रगट करती है, परमेश्वर की इच्छा जानना चाहती है, अनुग्रह चाहती है।

वचन कहता है हमारी आहें भी शब्द बनकर परमेश्वर के सामने पहुंच जाती है।

परमेश्वर हमसे हमेशा प्रार्थना के समय बात करता है, हमारे मन से, या वचन याद दिलाकर, और हमारे साथ संगति करता है

जब हम प्रार्थना पर घुटनों में आते हैं तो हम अपना घर चर्च और शहर छोड़कर परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के सामने आ जाते हैं। और घुटना यह संकेत करता है कि हम उसके आधीन हैं और आज्ञाकारी हैं।

घुटनों पर प्रार्थना करिये

रोमियों 8:26 इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते, कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर भरकर जो बयान से बाहर है, हमारे लिये विनती करता है।

63. धर्मी ठहराया जाना

हम धर्मी हैं नहीं पर मान लिए गए हैं, या ठहराए गए हैं, हमने किसी और की याने प्रभु यीशु की धार्मिकता को पहन लिया है। पवित्रता के बाहर दिखने वाले गुण को धार्मिकता कहते हैं। अंदर पवित्रता नजर आती है और बाहर धार्मिकता।

64. परमेश्वर का राज्य और स्वर्ग का राज्य

परमेश्वर का राज्य सारे ब्रह्मांड पर है (जैसे केंद्र सरकार) और स्वर्ग का राज्य भी एक मायने में यही है, लेकिन जब हम एक ऐसे संसार की बात करते हैं जो कि ब्रह्मांड का एक छोटा हिस्सा है जहां शैतान का बोलबाला है, तब वहां स्वर्ग का राज्य स्थापित करने की बात करते हैं। जैसे इस संसार में, हमारे समाज में, हमारे परिवार में हर हमारे अंदर। (राज्य सरकार)

लूका 17:20,21 जब फरीसियों ने उस से पूछा, कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा? तो उस ने उन को उत्तर दिया, कि परमेश्वर का राज्य प्रगट रूप से नहीं आता।

और लोग यह न कहेंगे, कि देखो, यहां है, या वहां है, क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है।

65. पाप का दासत्व

पाप के पीछे एक अभिलाषा या इच्छा है और उसके पीछे एक मन है जिसका स्वभाव पाप का है, और वह शरीर को अपना गुलाम बना देता है।

66. बादलों पर प्रभु यीशु का पुनरागमन

प्रभु यीशु बादलों पर आयेंगे और हम विश्वासी लोग और मरे विश्वासी जी उठकर उससे

मिलने जाएंगे। इसे अंग्रेजी में Rapture कहते हैं।
1 थिस्सलुनीकियों 4:15,16 क्योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं, कि हम जो जीवित हैं, और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे तो सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे।
1 थिस्सलुनीकियों 4:16,17 क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा, उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे।
तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।

67. पवित्र आत्मा के फल

ये जीवन जीने के लिए आवश्यक हैं ये हमारी नई सृष्टि की पहचान है।
गलातियों 5:22, 23, 24 पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, और कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं, ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।

68. पवित्र आत्मा के वरदान

ये सेवा में सहायता करने के लिए बाहरी साधन है। ये हमारे अंदर काम नहीं करते हैं, पर गवाही बढ़ाते हैं। ये दान हो बहीरी, ये जीवन नहीं है।
1 कुरिन्थियों 12:8-11 क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं, और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें।
और किसी को उसी आत्मा से विश्वास, और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है।
फिर किसी को सामर्थ के काम करने की शक्ति, और किसी को भविष्यद्वाणी की, और किसी को आत्माओं की परख, और किसी को अनेक प्रकार की भाषा, और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना।
परन्तु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करवाता है, और जिसे जो चाहता है वह बांट देता है।

69. वाचा का संदूक

वाचा का संदूक एक लकड़ी की पेटी थी जिसके ऊपर सोना मढ़ा हुआ था, इसकी बनावट की सारी बातें परमेश्वर ने मूसा को बताई थीं और बनाने के लिए कारीगरों केनांदर परमेश्वर ने अपनी आत्मा के द्वारा बुद्धि डाली थी।
ये संदूक उन 40 वर्षों के जंगल के मार्ग में इस्राइलियों के संग था, और कभी ये लड़ाई में भी संदूक को आगे रखते थे।

संदूक इस्राइलियों के साथ परमेश्वर की उपस्थिति का एक सबूत था।
इसे उठाने, रखने, नजदीक जाने इत्यादि के नियम थे जिनके उल्लंघन से मृत्यु हो जाती थी।
इस संदूक के अंदर क्या था–
- पत्थर की पट्टियां जिस पर दस आज्ञाएं लिखी थीं
- हारून याजक की लाठी जिसमें पत्ते आ गए थे
- मन्ना, भोजन जो आसमान से 40 वर्ष तक गिरा

जो परमेश्वर की पवित्रता, प्रभु यीशु का महा याजक पद और मनुष्य की संपूर्ण आवश्यक्ता परमेश्वर में ही परिपूर्ण होने को दर्शाता है।
संदूक एक तरह से प्रभु यीशु की तस्वीर है।
इब्रानियों 9:4 उस में सोने की धूपदानी, और चारों ओर सोने से मढ़ा हुआ वाचा का संदूक और इस में मन्ना से भरा हुआ सोने का मर्तबान और हारून की छड़ी जिस में फूल फल आ गए थे और वाचा की पट्टियां थीं।
इब्रानियों 9:5 और उसके ऊपर दोनों तेजोमय करूब थे, जो प्रायश्चित्त के ढकने पर छाया किए हुए थे।

70. एक नई आज्ञा - और सबसे बड़ी आज्ञा

इसकी आवश्यकता क्यों थी, क्या 10 आज्ञाएं काफी नहीं थीं?
अंतर देखिए दो
दस आज्ञाएं व्यक्तिगत हैं लेकिन
नई आज्ञा सामूहिक है या कहा जाए, ये एक व्यक्ति से अकेले पूरी नहीं होती है, दो जनों के बीच में ये एक दूसरे से प्रेम करने में पूरी होती है। ये आज्ञा प्रभु के आने के पहले नहीं थी।
यूहन्ना 13:34 मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखो: जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दुसरे से प्रेम रखो।
यूहन्ना 13:35 यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो।
सबसे बड़ी आज्ञा
मत्ती 22:36-40 व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है?
उस ने उस से कहा, तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है।
और उसी के समान यह दूसरी भी है, कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।
ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार है।

71. मिट्टी के पात्र में धन

हमारा बाहरी शरीर और मनुष्यत्व की कीमत नहीं है, और हम कमजोर भी हैं जिस तरह एक मिट्टी का बर्तन होता है। इसका आत्मिक अर्थ ये है, की हम अपनी काबिलियत या शक्ति के कारण पवित्र आत्मा को नहीं पाए हैं जो हमारे अंदर वास करता है, पर परमेश्वर का वरदान है।

2 कुरिन्थियों 4:7 परन्तु हमारे पास यह धन मिट्टी के बरतनों में रखा है, कि यह असीम सामर्थ हमारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर ही की ओर से ठहरे।

72. अंत के दिनों में झूठे विश्वासियों और झूठे अगुओं के चिन्ह

2 तीमुथियुस 3:1-5

पर यह जान रख, कि अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे।

क्योंकि मनुष्य अपस्वार्थी, लोभी, डींगमार, अभिमानी, निन्दक, माता-पिता की आज्ञा टालने वाले, कृतघ्न, अपवित्र।

दयारहित, क्षमारहित, दोष लगाने वाले, असंयमी, कठोर, भले के बैरी।

विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के नहीं वरन सुखविलास ही के चाहने वाले होंगे।

वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उस की शक्ति को न मानेंगे, ऐसों से परे रहना।

73. पहाड़ी उपदेश

प्रभु यीशु ने ये उपदेश गलील के इलाके में एक छोटे पहाड़ पर बैठकर अपने चेलों और लोगों से कहे।

ये मत्ती के 5,6,7 अध्याय में लिखा है

पहाड़ी उपदेश का संदेश दिखाता है कि परमेश्वर के राज्य में जीवन कैसा होता है, परमेश्वर कैसा जीवन चाहता है, पाप के बारे में मनुष्य की समझ परमेश्वर के मापदंड से बिल्कुल भिन्न है।

महत्वपूर्ण बात जो प्रभु कहते हैं वो है,

तुमने सुना है, पर मैं कहता हूं

जैसे कुछ उदाहरण

तुमने सुना है हत्या नहीं करना, पर मैं कहता हूं तुम क्रोध भी न करना।

तुमने सुना है अपने पड़ोसी से प्रेम करना पर मैं कहता हूं अपने दुश्मनों से प्रेम करना।

तुमने सुना है व्यभिचार नहीं करना पर मैं कहता हूं तुम हृदय में वासना नहीं रखना।

परमेश्वर के राज्य में इस संसार में रहते हुए एक विश्वासी का चालचलन इन उपदेशों के मुताबिक होना चाहिए

74. इस्राएल के 12 गोत्र

इस्राएल के बारह गोत्र और याकूब के बारह पुत्रों में कुछ अंतर है।
लेवी जो याकूब का पुत्र था वो परमेश्वर की सेवा और याजकीय काम के लिए चुन लिया गया था इसलिए उसका नाम 12 गोत्रों में नहीं आया, इसी तरह यूसुफ का नाम भी 12 गोत्रों में नहीं आया पर उसके छ्ह बेटों को शामिल किया गया जिनका नाम एप्रैम और मनासेह है जिनके लिए मूसा ने भूमि का बंटवारा कनान देश में किया।
व्यवस्थाविवरण 27 - रूबेन, शिमौन, यहूदा, इस्साकार, जबूलून, मनश्शे और एप्रैम (युसुफ) और बिन्यामीन, दान, नप्ताली, गाद, आशेर।

75. जीवन की पुस्तक

ये एक ऐसी पुस्तक है जो स्वर्ग में है। इसमें संसार के उन सब लोगों के नाम लिखे हुए हैं जिन्होंने मुक्ति पाई है।
न्याय के दिन जिसका नाम उस पुस्तक में नहीं होगा, वो नरक उनके अग्निकुंड में डाला जाएगा।
प्रकाशितवाक्य 20:12 फिर मैं ने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें खोली गई, और फिर एक और पुस्तक खोली गई, और फिर एक और पुस्तक खोली गई, अर्थात् जीवन की पुस्तक, और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उन के कामों के अनुसार मरे हुओं का न्याय किया गया।
प्रकाशितवाक्य 20:15 और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया।

76. प्रेम के गुण

प्रेम धीरजवन्त है, कृपाल, डाह नहीं करता, अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं। वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है।
वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।
''प्रेम कभी टलता नहीं'' 1 कुरिन्थियों 13:4-8

77. बाइबिल

पवित्र परमेश्वर के वचन

बाइबिल परमेश्वर का जीवित वचन है, जिसमें परमेश्वर सृष्टि, मनुष्य, पाप, मुक्ति न्याय का दिन, और अनंत जीवन की बातें मनुष्य पर प्रगट की गई है।
2 तीमुथियुस 3:15,16 पवित्र शास्त्र तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने

के लिये बुद्धिमान बना सकता है।
हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है।
पवित्र शास्त्र बाइबिल में कुल 66 किताबें है, प्रभु यीशु के आने के पहले लिखी गई किताबें 39 हैं जिनका संग्रह पुराना नियम कहलाता है।
प्रभु यीशु के आने के पश्चात् 27 किताबें लिखी गई जिसमें 4 सुसमाचार प्रभु यीशु की जीवनी, उसके कार्य, क्रूस मरण, पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण का जिक्र करते हैं।
बाइबिल करीब 1500 साल के दौरान लिखी गई है कहा जाए तो ये एक पुस्तक नहीं पर 66 किताबों की एक लाइब्रेरी है।
बाइबिल कई अलग अलग समय कालों ओर वंशों के बीच लिखी गई।
आज के इस्राएल, मिस्र, अरब क्षेत्रों और रोम की भूमि में लिखी गई।
इसे हिब्रू, अर्माईक, ग्रीक भाषा में लिखा गया ओर दानिएल की किताब का कुछ भाग बेबीलोन कि भाषा में लिखा है।
अलग अलग परिस्थिति में स्थानों में लिखा है। कोई जेल में कैदी था, कोई किसी टापू में सजा काटता था, कोई भेड़ चराता था, कोई राजा था।
कोई नबी था, कोई मछुआरा, कोई वकील, तो कोई गैर यहूदी डॉक्टर था।
40 से अधिक अलग अलग लोगों ने इसे लिखा था।
बाइबिल की लेखन शैली में, कविता, इतिहास, भजन, जीवनी, व्यक्तिगत पत्राचार, कानून व्यवस्था, और प्रभु यीशु के पहली शताब्दी के अनुयाइयों, की जीवन शैली और कार्यो का वर्णन है।

78. प्रभु यीशु के 12 शिष्य

प्रभु यीशु ने अपने बारह शिष्यों का चुनाव उनकी योग्यता के कारण नहीं किया था। वे लोग साधारण चरवाहे और अन्य कामकाजी थे तथा आसपास के इलाके में रहने वाले थे।
मत्ती 4:19 और उन से कहा, मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को (मनुष्यों के पकड़ने वाले) बनाऊंगा।
बनाऊंगा का अर्थ है, मैं तुम्हें योग्यता दूंगा।
मत्ती 10:2-4 और बारह प्रेरितों के नाम ये हैं: पहिला शमौन, जो पतरस कहलाता है, और उसका भाई अन्द्रियास, जब्दी का पुत्र याकूब, और उसका भाई यूहन्ना,
फिलिप्पुस और बर-तुल्मै थोमा और महसूल लेनेवाला मत्ती, हलफै का पुत्र याकूब और तद्दै।
शमौन कनानी, और यहूदा इस्करियोती, जिस ने उसे पकड़वा भी दिया।

79. भले या बुरे के ज्ञान का वृक्ष

अदन के बाग में परमेश्वर ने जब मनुष्य की सृष्टि करी तो बाग के बीचों बीच एक पेड़ था जो दिखने में सुंदर था फल बे चाहने योग्य थे।

उसका नाम भी बहुत सुंदर था–

''भले या बुरे के ज्ञान का वृक्ष''

लेकिन परमेश्वर ने इसके फल को खाने की मनाही कर दी थी, क्योंकि इसको खाने से मनुष्य परमेश्वर से अलग आजाद हो जाता है और जो दोनों को जोड़ने वाली मनुष्य की आत्मा थी वो भी मर सकती थी।

और मनुष्य परमेश्वर के नहीं पर अपने नैतिक नियम बनाने लगा।

पाप और पुण्य अच्छा और बुरा वो नहीं जो परमेश्वर कहता है पर वो जो उसका अपना ज्ञान कहता है।

इसे खाकर मनुष्य अपना ज्ञान और अपने सत्य से जीने लगा।

परमेश्वर और मनुष्य के बीच का रिश्ता खत्म हो गया।

उत्पत्ति 2:16 तब यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है:

उत्पत्ति 2:17 पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा।

80. संसार की भाषाओं की उत्पत्ति

इसका वर्णन हमें उत्पत्ति 11 में मिलता है।

उत्पत्ति 11:1 सारी पृथ्वी पर एक ही भाषा, और एक ही बोली थी।

बाबुल में मनुष्य ने परमेश्वर से बगावत करने की ठानी, वहीं की परमेश्वर हमने पर राज्य न करी।

ऊंची मीनार की ऊंचाई से मतलब नहीं था, लेकिन उनकी परमेश्वर का विरोध करने की ऊंचाई उनके दिलों में अधिक थी, ये आकाश की दुष्ट शक्ति के साथ एक जुट हो चाहते थे, इस कारण मनुष्य के भले केनलिए उन्हें उनके इस गलत काम में सफल न होने देने के लिए परमेश्वर ने भाषाएं लाकर उनके मंसूबों को खतम किया और उन्हें तितर बितर किया।

उत्पत्ति 11:3 तब वे आपस में कहने लगे, कि आओ, हम ईंटें बना बना के भली भाँति आग में पकाएं, और उन्होंने पत्थर के स्थान में ईंट से, और चूने के स्थान में मिट्टी के गारे से काम लिया।

उत्पत्ति 11:4 फिर उन्होंने कहा, आओ, हम एससक नगर और एक गुम्मट बना लें,

जिसकी चोटी आकाश से बातें करे, इस प्रकार से हम अपना नाम करें ऐसा न हो कि हम को सारी पृथ्वी पर फैलना पड़े।

81. मैं तुम्हें नहीं जानता

उस दिन वो कहेगा

हमने क्या किया इससे मतलब नहीं है, क्या हमने परमेश्वर की इच्छा पूरी करी और उसकी शर्तों को माना?

हां सवाल बस यही होगा

मत्ती 7:21-23, जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।

चमत्कार नहीं जीवन चाहिए।

उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे, हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यद्वाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए?

तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा कि मैं ने तुम को कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करने वालों, मेरे पास से चले जाओ।

82. धनी मनुष्य और स्वर्ग राज्य

प्रभु यीशु ने कहा प्रवेश करना उतना ही असंभव है जितना, सुई की आंख के अंदर से ऊंट का गुजरना।

वो इसलिए कि जहां तेरा धन होगा वहां तेरा में होगा।

धनी मनुष्य अपने धन पर भरोसा रखता है, लेकिन ये काम परमेश्वर से हो सकता है, यदि वो अपने आप को परमेश्वर के हाथ में मुक्ति के लिए दे, तो परमेश्वर उसे मुक्ति दे सकता है।

मत्ती 19:23-26 तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, कि धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश करना कठिन है।

धनवान के प्रवेश करने से ऊंट का सूई के नाके में से निकल जाना सहज है।

चेलों ने बहुत चकित होकर कहा, फिर किस का उद्धार हो सकता है?

यीशु कहा, मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।

83. अपनी मृत्यु के विषय यीशु की भविष्यवाणी

तीन बार उसने साफ अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी करी।

1.

मरकुस 8:31 और वह उन्हें सिखाने लगा, कि मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि

वह बहुत दुख उठाए, और पुरनिए और महायाजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें और वह तीन दिन के बाद जी उठे।

2.

मरकुस 9:31 वह अपने चेलों को उपदेश देता और उन से कहता था, कि मनुष्य का पुत्र मनुष्यों के हाथ में पकड़वाया जाएगा, और वे उसे मार डालेंगे, और वह मरने के तीन दिन बाद जी उठेगा।

3.

मरकुस 10:32, 33 और वे यरूशलेम को जाते हुए मार्ग में थे, और यीशु उन के आगे आगे जा रहा था: और वे अचम्भा करने लगे और जो उसके पीछे पीछे चलते थे डरने लगे, तब वह फिर उन बारहों को लेकर उन से वे बातें कहने लगा, जो उस पर आने वाली थीं।

कि देखो, हम यरूशलेम को जाते हैं, और मनुष्य का पुत्र महायाजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया जाएगा, और वे उस को घात के योग्य ठहराएंगे, और अन्यजातियों के हाथ में सौंपेंगे।

84. बाइबिल के हर वचन में प्रभु यीशु की तस्वीर है

हम यदि थोड़ा सा खोदेंगे, तो प्रभु यीशु की तस्वीर किसी भी रूप में अवश्य मिलेगी, संपूर्ण बाइबिल में, और इसलिए ये साबित करता है की हमारे जीवन के केंद्र बिंदु भी सिर्फ प्रभु यीशु ही हो सकते हैं।

यूहन्ना 5:39, 40, 46, 47 तुम पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ते हो, क्योंकि समझते हो कि उस में अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है।

फिर भी तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आना नहीं चाहते।

क्योंकि यदि तुम मूसा की प्रतीति करते, तो मेरी भी प्रतीति करते, इसलिये कि उस ने मेरे विषय में लिखा है।

परन्तु यदि तुम उस की लिखी हुई बातों की प्रतीति नहीं करते, तो मेरी बातों की क्योंकर प्रतीति करोगे।

लूका 24:25, 26 तब उस ने उन से कहा, हे निर्बुद्धियों, और भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियों!

तब उस ने मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्र शास्त्रों में से, अपने विषय में की बातों का अर्थ, उन्हें समझा दिया।

85. दान कैसे दें

सरल शब्दों में पौलुस ने लिखा है।

2 कुरिन्थियों 9:6,7, 8, 9, 12, 13, 14 परन्तु बात तो यह है, कि जो थोड़ा बोता है वह थोड़ा काटेगा भी, और जो बहुत बोता है, वह बहुत काटेगा।
हर एक जन जैसा मन में ठाने वैसा ही दान करे न कुढ़ कुढ़ के, और न दबाव से, क्योंकि परमेश्वर हर्ष से देने वाले से प्रेम रखता है।
और परमेश्वर सब प्रकार का अनुग्रह तुम्हें बहुतायत से दे सकता है जिस से हर बात में और हर समय, सब कुछ, जो तुम्हें आवश्यक हो, तुम्हारे पास रहे, और हर एक भले काम के लिये तुम्हारे पास बहुत कुछ हो।
जैसा लिखा है, उस ने बिथराया, उस ने कंगालों को दान दिया, उसका धर्म सदा बना रहेगा।
क्योंकि इस सेवा के पूरा करने से, न केवल पवित्र लोगों की घटियां पूरी होती हैं, परन्तु लोगों की ओर से परमेश्वर का बहुत धन्यवाद होता है।
क्योंकि इस सेवा से प्रमाण लेकर वे परमेश्वर की महिमा प्रगट करते हैं, और वे तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं।

86. मसीह में हम जो बहुत हैं एक देह बने हैं

1 कुरिन्थियों 12:4-27 वरदान तो कई प्रकार के हैं, परन्तु आत्मा एक ही है।
और सेवा भी कई प्रकार की है, परन्तु प्रभु एक ही है।
और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परन्तु परमेश्वर एक ही है, और जिसे जो चाहता है वह बांट देता है।
क्योंकि जिस प्रकार देह तो एक है और उसके अंग बहुत से हैं, और उस एक देह के सब अंग, बहुत होने पर भी सब मिलकर एक ही देह हैं, उसी प्रकार मसीह भी है।
क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या युनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।
इसलिये कि देह में एक ही अंग नहीं, परन्तु बहुत से हैं।
परन्तु सचमुच परमेश्वर ने अंगो को अपनी इच्छा के अनुसार एक एक कर के देह में रखा है।
परन्तु देह के वे अंग जो औरों से निर्बल देख पड़ते हैं, बहुत ही आवश्यक हैं।
ताकि देह में फूट न पड़े, परन्तु अंग एक दूसरे की बराबर चिन्ता करें।
इसी प्रकार तुम सब मिल कर मसीह की देह हो, और अलग अलग उसके अंग हो।
कुलुस्सियों 1:18 और वही देह, अर्थात् कलीसिया का सिर है, वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे।

87. आत्मिक युद्ध के हथियार

इफिसियों 6:11-18 परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको।

क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।

इसलिये परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो, कि तुम बुरे दिन में साम्हना कर सको, और सब कुछ पूरा करके स्थिर रह सको।

सो सत्य से अपनी कमर कसकर, और धार्मिकता की झिलम पहिन कर।

और पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर।

विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो

और उद्धार का टोप, और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो।

और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो,

88. गलील और यहूदिया

प्रभु यीशु जब इस संसार में आए उस समय इस्राएल दो प्रदेशों में जाना जाता था। उत्तर का भाग गलील कहलाता था, जहां गरीब, कम पढ़े लिखे लोग जिनमें कुछ विदेशी भी रहते थे, और इनकी भाषा भी साफ इब्रानी नहीं थी, प्रभु यीशु की सेवा का तीन साल में से करीब ढाई साल यहीं बीता।

दक्षिण का इलाका जहां यरूशलेम भी था और उनका बड़ा मंदिर भी था, यहां के लोग कट्टर यहूदी धर्म को मानने वाले और बहुत फरीसी भी थे, यहां धन ओर शिक्षा अधिक थी, प्रभु यीशु की सेवा का संभवतः करीब 6 माह यहां बीता। यहां चमत्कार काम किए गए, यहूदी कट्टरपंथियों से वादविवाद अधिक हुए।

89. बंधुवाई

इस्राइली लोग दो बार बंधुवाई में गए प्रभु यीशु के आने से करीब 2000 BC (साल पहले) इब्राहीम के पोते याकूब और उसके बच्चे मिस्र देश में गए ओर वहां आखिर गुलाम बन गए करीब 430 साल तक वे वहीं रहे, और तब मूसा के नेतृत्व में परमेश्वर उन्हें बाहर ले आया।

और वे कनान देश में बसाए गए, जो इब्राहीम से प्रतिज्ञा किया हुआ देश है।

दूसरी बंधुआई 70 साल की थी जब करीब 600 ठब में यरूशलेम से नबुकड़नेजर लोगों को बाबुल में ले गया और मंदिर ओर यरूशलेम को तबाह कर गया। समय बीतने पर यहूदी वापस यरूशलेम लौटे।

इनका वर्णन हमें निम्न किताबों में मिलता है—निर्गमन, दानिएल, एज्रा और नहेमिया

90. महिमा

जब परमेश्वर की इच्छा पूरी होती है और उसे सब लोग देख सकते हैं और परमेश्वर की बड़ाई होती है तो इस बात को बयान करने के लिए जो एक आत्मिक शब्द इस्तेमाल होता है उसे महिमा कहते हैं।

यूहन्ना 17:5 और अब, हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत के होने से पहिले, मेरी तेरे साथ थी।

91. धार्मिकता

परमेश्वर की पवित्रता का जीवन और उसका प्रगट रूप धार्मिकता कहलाता है।

और जब मनुष्य अपने संसार के जीवन और चालचलन में उसके कहे हर वचन पर विश्वास और भरोसा रखता है तो ये उसके लिए परमेश्वर की ओर से धार्मिकता जीना जाता है और वह व्यक्ति अपने विश्वास के कारण धर्मी ठहरता है।

उत्पत्ति 15:5,6 और उसने उसको बाहर ले जाके कहा, आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उन को गिन सकता है? फिर उसने उससे कहा, तेरा वंश ऐसा ही होगा।

गलातियों 3:6 इब्राहीम ने तो परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिये धामिर्कता गिनी गई।

उसने यहोवा पर विश्वास किया, और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना।

92. इच्छा

परमेश्वर की प्रगट की हुई इच्छा वचन में हमें मिलती है, जिसे हम अपने चालचलन में लागू करते हैं और उसकी इच्छा हम प्रार्थना के द्वारा अपनी दिनचर्या में भी मालूम कर सकते हैं।

रोमियों 1:19, 20 इसलिये कि परमेश्वर के विषय का ज्ञान उन के मनों में प्रगट है, क्योंकि परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया है। (इच्छा)

क्योंकि उसके अनदेखे गुण, अर्थात् उस की सनातन सामर्थ, और परमेश्वरत्व जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते है, यहां तक कि वे निरुत्तर हैं। (प्रगट किए गए हैं)

93. बलिदान

ऐसा दान जिसमें दाता खुद भी त्याग करता हो उस दान को बलिदान कहते हैं।

हमारी कोई भी सेवा जो बलि(दान) नहीं कहलाई जा सकती है

जिसमें हमारा, समय, पसीना, परिश्रम और धन या भोजन में से कुछ भी न लगे, और वो

परमेश्वर के सामने आदर के योग्य नहीं होता है।
लूका 21:3, 4 इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला है। क्योंकि उन सब ने 'अपनी बढ़ती में से दान में' कुछ डाला है, परन्तु इस ने 'अपनी घटी में से अपनी' सारी जीविका डाल दी है।

94. भविष्यद्वक्ता और झूठे भविष्यद्वक्ता (नबी)

वह व्यक्ति जो परमेश्वर के छिपे हुए संदेशों को जो उसके वचन में लिखी हैं, पवित्र आत्मा के सिखाए जाने के द्वारा उनका अर्थ बताता हो और लोगों को चिताता हो वो भी भविष्यद्वक्ता कहलाता है। केवल भविष्य बताने वाला ही भविष्यद्वक्ता नहीं कहलाता है। और झूठे भविष्यद्वक्ता भी हैं।
यिर्मयाह 14:14 और यहोवा ने मुझ से कहा, ये भविष्यद्वक्ता मेरा नाम लेकर झूठी भविष्यद्वाणी करते हैं, मैं ने उन को न तो भेजा और न कुछ आज्ञा दी और न उन से कोई भी बात कही। वे तुम लोगों से दर्शन का झूठा दावा कर के अपने ही मन से व्यर्थ और धोखे की भविष्यद्वाणी करते हैं।

95. गवाही

जिस बात को हमने देखा है या जिसका हमने अपने जीवन में अनुभव किया है और जब हम उसे दूसरे को बताते हैं तो हम गवाह कहलाते हैं, वो हमारी गवाही होती है,
प्रेरितों के काम 1:8 परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे, और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होगे।
लूका 24:47,48 और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा।
लूका 24:48 तुम इन सब बातें के गवाह हो।

96. दुष्टात्मा

ये ऐसी आत्माएं हैं जिनके पास शरीर नहीं है, ये शैतान के साथ मिलकर काम करती हैं, क्योंकि ये बुरी आत्माएं हैं। ये वे स्वर्गदूत नहीं हैं जो लूसिफर शैतान के साथ स्वर्ग में परमेश्वर से बगावत में शामिल थे।
ये मनुष्य के अंदर प्रवेश करके रहना चाहती हैं, और जब मनुष्य पाप के जीवन द्वारा जैसे मूर्तिपूजा इत्यादि करता है तो प्रवेश कर पाती हैं।
प्रभु यीशु के नाम और उसके पवित्र लहू की सामर्थ से हर दुष्ट आत्मा को निकलने का आदेश दिया जा सकता है।
लूका 10:17,20 वे सत्तर आनन्द से फिर आकर कहने लगे, हे प्रभु, तेरे नाम से दुष्टात्मा भी हमारे वश में हैं।

तौभी इस से आनन्दित मत हो, कि आत्मा तुम्हारे वश में हैं, परन्तु इस से आनन्दित हो कि तुम्हारे नाम स्वर्ग पर लिखे हैं।

97. फरीसी

प्रभु यीशु के समय के कट्टरपंथी यहूदी मत मानने वाले और उनके अनुयाई जो रीति रिवाजों पर जोर देते थे पर उनके पास जीवन नहीं था।
प्रभु यीशु ने इनके बारे में मत्ती 23 में सचेत किया है।
मत्ती 23:3,4 परन्तु उन के से काम मत करनाय क्योंकि वे कहते तो हैं पर करते नहीं। वे एक ऐसे भारी बोझ को जिन को उठाना कठिन है, बान्धकर उन्हें मनुष्यों के कन्धों पर रखते हैं, परन्तु आप उन्हें अपनी उंगली से भी सरकाना नहीं चाहते।
और प्रभु यीशु ने जिन शब्दों से उन्हें संबोधित किया है वो ये हैं
हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों तुम पर हाय!
हे अन्धे अगुवों, तुम पर हाय,
हे मूर्खों, और अन्धों
हे अन्धे अगुवों
हे अन्धे फरीसी
हे सांपो, हे करैतों के बच्चो

98. सदूकी

ये प्रभु यीशु के समय के बाइबिल के शिक्षक थे जिनकी शिखा कई विषयों में गलत थीं, जैसे ये मरे हुओं के पुनरुत्थान पर विश्वास नहीं करते थे।
मरकुस 12:18 फिर सदूकियों ने भी, जो कहते हैं कि मरे हुओं का जी उठना है ही नहीं, प्रभु यीशु ने जवाब दिया,
मरकुस 12:27 परमेश्वर मरे हुओं का नहीं, वरन जीवतों का परमेश्वर है: सो तुम बड़ी भूल में पड़े हो।

99. इब्राहीम विश्वास का पिता

वो इसलिए, क्योंकि वो हमारा आदर्श था। जब परमेश्वर ने उसे मूर्तिपूजा से और उर देश से बुलाया और कहा कि में तुम्हें एक नए देश में ले जाऊंगा, तो वो विश्वास करके बाहर आ गया।
इब्रानियों 11:8 विश्वास ही से इब्राहीम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेने वाला था, और यह न जानता था, कि मैं किधर जाता हूं, तौभी निकल गया।
गलातियों 3:6 इब्राहीम ने तो परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिये धार्मिकता

गिना गया।
उत्पत्ति 15:5,6 और उसने उसको बाहर ले जाके कहा, आकाश की ओर दृष्टि करके तारागण को गिन, क्या तू उन को गिन सकता है? फिर उसने उससे कहा, तेरा वंश ऐसा ही होगा।
उसने यहोवा पर विश्वास किया, और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना।

100. वाचा

परमेश्वर जब मनुष्य से कोई वादा करता है तो उसे नहीं तोड़ता है, क्योंकि परमेश्वर कभी झूठ नहीं बोल सकता। और वो विश्वास योग्य है, याने उसके दिए वचन पर भरोसा किया जा सकता है।
उदाहरण - वाचा जो उसने इब्राहीम से बांधी, की तेरे वंश को आशीष दूंगा, इब्राहीम का वंश प्रभु यीशु हुए और वे सभी जो विश्वास के द्वारा परमेश्वर के पास आए उसके वंशज आज हम सब है।
प्रभु यीशु के लहू में नई वाचा ये है कि उसके द्वारा हमें क्षमा और अनत जीवन मिलता है।
गलातियों 3:6-29 इब्राहीम ने तो परमेश्वर पर विश्वास किया और यह उसके लिये धामिर्कता गिनी गई।
तो यह जान लो, कि जो विश्वास करने वाले हैं, वे ही इब्राहीम की सन्तान हैं।
तो जो विश्वास करने वाले हैं, वे विश्वासी इब्राहीम के साथ आशीष पाते हैं।
यह इसलिये हुआ, कि इब्राहीम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुंचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें, जिस की प्रतिज्ञा हुई है।
निदान, प्रतिज्ञाएं इब्राहीम को, और उसके वंश को दी गई, वह यह नहीं कहता, कि वंशों को य जैसे बहुतों के विषय में कहा, पर जैसे एक के विषय में कि तेरे वंश को: और वह मसीह है।
पर विश्वास के आने से पहिले व्यवस्था की आधीनता में हमारी रखवाली होती थी, और उस विश्वास के आने तक जो प्रगट होने वाला था, हम उसी के बन्धन में रहे।
इसलिये व्यवस्था मसीह तक पहुंचाने को हमारा शिक्षक हुई है, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें।
क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो।
और यदि तुम मसीह के हो, तो इब्राहीम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो।

III.

आज सवाल है – लेख

(शिष्य थॉमसन)

क्रम	आज सवाल है	पृष्ठ नं.
1.	अच्छा हुआ कि आप नहीं थे	262
2.	अंधे नहीं हैं वो...	249
3.	अपना बचाव न चाहा	165
4.	आपके घर में	159
5.	आपके चर्च के बारे में	160
6.	आपकी जिंदगी पर किसी ने किताब	160
7.	आग लगवा दी थी परमेश्वर ने	162
8.	आदर पाने की होड़	163
9.	आखिर आप हो कौन	164
10.	इमानुएल–यानी परमेश्वर हमारे	240
11.	इर्द गिर्द	237
12.	इस पत्थर पर	166
13.	उम्र 2019 साल नहीं है, प्रभु यीशु	266
14.	उपवास प्रार्थना ऊपर सुनाई नहीं	301
15.	ऋषिकेश	228
16.	एक दिन - प्रभु यीशु के जीवन	167
17.	एक मसीही शहीद हो जाए	281
18.	एक विश्वासी की जीवनशैली की	321
19.	एकलौता पुत्र मर गया	168
20.	कमजोरी में ताकत	322
21.	कागजी विश्वास	313
22.	कत्ल हुआ था	261
23.	क्या किया?	170
24.	क्या लगता है?	171
25.	क्या मैं हिन्दू हूं?	265

क्रम	आज सवाल है	पृष्ठ नं.
26.	किससे लड़ रहे हो?	171
27.	किराए के भविष्यद्वक्ता	316
28.	कौन सा है, आपका चर्च?	245
29.	'क्रूस और प्रेम' का रिश्ता	246
30.	कुतुबुद्दीन ऐबक की हार	258
31.	कुर्सी	263
32.	कुँए पर बैठा आदमी कहीं मसीह	169
33.	गली नुक्कड़-संगती	276
34.	गणित पढ़ाने वाला क्या शराब नहीं	172
35.	गीत गवालो, संदेश दिलवालो	173
36.	ग्रहण योग्य भेंट	174
37.	घी तो वो था जो...	218
38.	चरवाहा और भेड़ एक हो गए	311
39.	चाहे हो कोई सरकार	175
40.	चोरी हुई थी	176
41.	'चिंता' आखिर है क्या?	177
42.	चिल्ला रही थी वो ... हां	279
43.	जनाजे में उसके...दो जन थे...	288
44.	जंतर मंतर से...	240
45.	जलता हुआ दीपक	215
46.	जीना जरूरी नहीं है	258
47.	ठहरो, अभी प्रचार मत करो	178
48.	डाकुओं की खोह	254
49.	डर या शांति?	257
50.	तलवार ले लो प्रभु यीशु के मुंह	229

क्रम	आज सवाल है	पृष्ठ नं.
51.	तुम में से एक	253
52.	दो रास्ते हैं, और आप एक पर हैं	310
53.	दोनों ही ने खून बहाया	178
54.	दीवार के पीछे	247
55.	दूसरे की जरूरत का सामान तो घर	308
56.	दुश्मन के लिए भी कोई जान देता	332
57.	धर्म, धन, राज शक्ति, व्यापार	179
58.	धर्म और धन का जाल	289
59.	धर्मों का अंधापन क्या है	271
60.	न इस पहाड़ पर, न यरूशलेम में	297
61.	न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी	254
62.	नाम	267
63.	नामधारी विश्वास-नहीं सुना था	180
64.	नया जन्म - क्या अर्थ है?	181
65.	नरक से सुसमाचार प्रचार	308
66.	नहीं चाहिए ऐसी-आराधना	184
67.	नुक्कड़ संगति की लघु कथा	277
68.	पटेल जी का सवाल	219
69.	पर मैं, पहचान ही न पाया उस	234
70.	पांच पति करने के बाद	329
71.	पान वाला	184
72.	परमेश्वर और धन में समानता है	214
73.	परमेश्वर का राज्य धन और	186
74.	परमेश्वर का लंबा परिचय दे रहे हो	188
75.	परमेश्वर से व्यापारी रिश्ता	185
76.	परमेश्वर हँसेगा	189
77.	परमेश्वर दान नहीं, बलि(दान)	280
78.	पैसे जमा कर सकता हूँ	190
79.	पीछे मुड़कर प्रभु यीशु ने क्या देखा	190
80.	पवित्र आत्मा जीभ की शक्ल में	191
81.	प्रार्थना और प्रार्थनाएं	281
82.	प्रार्थना में घुटने टेकने का अर्थ	192
83.	प्रार्थना (कमजोरी से निकलती है)	318
84.	प्रभु यीशु उद्घाटन में	194
85.	प्रभु यीशु ''दो टुकड़े'' करता है	195
86.	प्याले में आखिर था क्या?	221
87.	बगावत	305
88.	बंदर → बंदुष्य → मनुष्य	225
89.	बपतिस्मा क्यों लिया प्रभु यीशु ने?	268
90.	बहाने बहुत हैं	241
91.	बारह चेले कैसे चुने प्रभु यीशु ने?	195
92.	बाइबिल में ''सूर्य नमस्कार'' पाप	242
93.	बुरा लगता है न?	197
94.	बिना कान के मनुष्य	198
95.	बिना मुंह खोले बात कह दी	326
96.	भविष्यवाणी-जो जल्द पूरी होगी	290
97.	भूखे	199
98.	मजदूर नहीं मैनेजर हैं	199
99.	मनुष्य का पुत्र	207
100.	मुँह में यीशु, बगल में छुरी	200
101.	मैं उसे नहीं जानता	201
102.	मैं नही हूँ	202
103.	मैं भी रोया	203
104.	मैं संत नहीं हूं	250
105.	मैंने ये गीत क्यों लिखा?	231
106.	मेरा नाम शिष्य है, और मैं	235
107.	मेरे पीछे आओ	269
108.	मेरा मांस-वास्तव में खाने की	304
109.	मार खाते खाते मर गए	204
110.	मारो उसे पत्थरों से	325
111.	मोहब्बत जो गुनाह माफ कर दे	331
112.	मोक्ष प्राप्ति की प्रार्थना आप	244
113.	मौत से मुनाफा	205
114.	मौत है?	208
115.	मुक्ति चाहिये है, धर्म नहीं	206

क्रम	आज सवाल है	पृष्ठ नं.
116.	मुक्तिदाता बस वो ही है	239
117.	मुन्नीबाई	324
118.	मार्टिन लूथर	314
119.	मसीहियत में Celebrity (मशहूरी)	233
120.	यहां आंख बंद हुई और वहां आंख	277
121.	यदि नाश हो गई, तो हो गई	217
122.	राई के दाने का सिद्धांत	320
123.	लज्जा	208
124.	'वक्त तो उसके पास' था..	227
125.	वचन पर विश्वास हो चिन्हों पर	322
126.	वह धूल में क्या लिख रहा था	212
127.	वो क्षमा, तो क्षमा थी ही नहीं	244
128.	वो बातें करने आया था	273
129.	वो एकलौता बनकर आया लेकिन	302
130.	विश्वास - सरल शब्दों में	274
131.	शांति बस घुटनों पर आती है	278
132.	सब प्रभु यीशु को छूना चाहते थे	312
133.	सवाल बदल गया है	211

क्रम	आज सवाल है	पृष्ठ नं.
134.	समझ नहीं पाया था	255
135.	सम्मेलन/कांफ्रेंस (Conference)	259
136.	सत्याग्रह नहीं किया था मूसा ने	209
137.	साइमन वाईसंथाल खामोश क्यों?	210
138.	साधु सुंदर सिंह की जयंती	320
139.	स्वर्ग का राज्य 'ईसाई धर्म' नहीं	252
140.	हर सरकार परमेश्वर की है	251
141.	हत्यारा बना संसार का पहला जन्मा	318
142.	हां बाजार ही तो है	309
143.	हारे हुए जीवन के खंडहर	323
144.	ज्ञान-कर्म या विश्वास	224
145.	2 + 2 = 5	238
146.	33% अंक लेकर पास होना चाहते	228
147.	4 क्रूस की मृत्यु के रहस्य	284
148.	490 साल की रहस्यमय पहेली	298
149.	CAA, NRC - प्रभु यीशु पर भी	261
150.	E=mc2 (Theory of relativety & Albert Einstein)	297

आज सवाल है

1. आपके घर में

दावत पर आये लोगों के सामने, भोजन के बाद क्या आप अपने नौकर या नौकरानी का परिचय मेहमानों से कराते हैं?
नहीं।
जी सच कहा आपने।
रसोई के कोने में वो इस तरह बैठी रहती है कि कहीं कोई उसे देख न ले सुन न ले। धीमे बोलती है। उसके मैले कपड़ों पर, या उसके थके हारे चेहरे पर कहीं उनकी नजर न पड़ जाए।
यही सेवक, नौकर, नौकरानी की परिभाषा है।
स्वादिष्ट भोजन है, घर चमक रहा है, कपड़े साफ हैं सब एकदम बढ़िया है, लेकिन नौकरानी का कोई पता नहीं। न घर वालों ने न ही मेहमानों ने उसे जानने या पहचानने की कोशिश की।
सेवक दिखाई नहीं देता है, नम्र और दीन होता है। बस उसके काम दिखते हैं।
''क्योंकि बड़ा कौन है? वह जो भोजन पर बैठा है, या वह जो सेवा करता है क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है? परंतु मैं तुम्हारे बीच में सेवक के समान हूँ।'' लूका 22:27
प्रभु यीशु ने जब कहा कि मैं सेवा करवाने नहीं, सेवा करने आया हूँ, तो वो इंसान ही नहीं बना, हमारा नौकर या सेवक बना।
लेकिन साथ ही साथ उसने हमारी गालियां खाईं, अपमान सहा, हमने उसके मुंह पर थूका, और उसे थप्पड़ मारे, उसे खदेड़ते हुए शहर के बाहर तक ले गए, उसे मार पीट कर अधमुआ करके क्रूस पर चढ़ा कर उसकी हत्या कर दी।
और कहते हैं, हमारा सेवक था?
''मनुष्य का पुत्र इसलिए आया कि दूसरों की सेवा टहल करे। और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे।'' मत्ती 20:28
आज सवाल है–
यदि हम प्रभु यीशु के हमशक्ल हैं, सेवक हैं, तो क्या हमारा भी अनुभव कुछ ऐसा ही है?

2. आपके चर्च के बारे में

प्रभु यीशु ने कुछ कहा है।
प्रभु यीशु के स्वर्ग जाने के बाद 'चर्च युग' चालू होता है।
इसके पहले, हमारे व्यक्तिगत जीवन, मुक्ति और गवाही के बारे में तो उसने धरती पर रहते हुए हमें सब बता ही दिया था।
तो चर्च के बारे में वो हमसे बाइबिल की आखिरी किताब प्रकाशितवाक्य में क्या कहता है?
सुनिए–सात चर्च हैं?
सब अलग-अलग स्वरूप के कुछ समानता कुछ विभिन्नता।
(इफिसुस, स्मुरना, पिर्गमुन, थुआतीरा, सरदीस, फिल्दिल्फिया, लौदीकिया)
ये सात चर्च 'हर युग' में मौजूद रहते हैं।
''और इसमें से एक चर्च आपका है''
सातों चर्च से प्रभु ने 'एक ही जैसी' (common) बात क्या कही?
1. यदि कान हैं तो सुन लो, सातों से कहा (यानी–मेरे कहे को पूरा करो)
2. जय पाना होगा, सातों से कहा–(किस पर? हमारे झूठ, लालच, घमंड, स्वार्थ, धन, और शैतान की परीक्षाओं पर)
3. सातों चर्च में से एक से भी उसने सांसारिक आशीषों का न वादा किया न जिक्र किया। (तो आज आपका चर्च किन सांसारिक आशीषों की मांग कर रहा है?)
नीचे निर्देश (reference) दिए हैं
'कान हैं?' प्रका. 2:7; 2:11; 2:17; 2:29; 3:6; 3:13; 3:22 (सातों से)
'जय पाना होगा?' प्रका. 2:7; 2:11; 2:17; 2:26; 3:5; 3:12; 3:21 (सातों से)
'सांसारिक आशीषें देना का वादा नहीं किया?' प्रका. 2:7; 2:11; 2:17; 2:28; 3:5; 3:12; 3:21 (सातों से)
आज सवाल है–
आपका चर्च कौन सा है?
कान हैं? जयवंत है? सांसारिक आशीषों के पीछे तो नहीं पड़ा?

3. आपकी जिंदगी पर किसी ने किताब लिखी है

आपके अंदर एक 'किताब' है।

उस किताब की एक भाषा है, उसको DNA कहते हैं और शब्दों को जीन्स (Genes)- अक्षर को पेप्टाइड्स (Peptides) कहते हैं।
''तेरी आँखों ने मेरे बैडोल तत्व को देखा, और मेरे-'सब अंग' जो-'दिन दिन'-बनते जाते थे वे 'रचे जाने से पहले' तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे''-भजन संहिता 137:16
हमारे शरीर के अंग (part) और उनके कार्य (function) पर किताब लिखी गयी है। क्या मेरे जीवन की किताब का लिखने वाला सर्वशक्तिमान - जीवित परमेश्वर नहीं। हमें जीवन देने वाला सर्वबुद्धिमान परमेश्वर क्या निर्जीव हो सकता है? या कोई बड़ा धमाका (big bang) हो सकता है?
तो फिर ये क्छ। है क्या (Deoxy ribonucleic acid), ये किस तरह की भाषा है?
हमारा शरीर, या कोई भी जीवित प्राणी हो या पेड़ पौधे हों वे सबसे छोटे अंग, याने सेल से बने होते हैं। ये आंखों से सीधे नहीं दिखते हैं। पर शक्तिशाली माइक्रोस्कोप से देखे जा सकते हैं।
सेल (Cell) की रचना (structure) - चाहे मनुष्य की हो, या पौधे की हो या जानवर, पक्षी या मछली की हो, करीब एक जैसी ही दिखाई देती है।
सेल (Cell) के अंदर एक रस्सी या सीढ़ी (double helix) की तरह इसमें एक भाग (part) है जिसे क्रोमोजोम कहते हैं। मनुष्य के शरीर की सेल में 46 क्रोमोसोम होते हैं और ये DNA से बना है।
समझने के लिए, Chromosome के अंदर एक DNA होता है जिसकी लंबाई अधिक होती है पर एक coil के रूप में सीड़ी की तरह chromosome के अंदर टाइट पैक होता है।
DNA की बनावट Peptides के लाइन से जुड़ने से बनती है।
DNA में जुड़े peptides की अलग-अलग sequence और length को Genes कहते हैं। और ये genes एक code हैं (या कहें एक भाषा के शब्द हैं) जिसके द्वारा शरीर के अंगों की बनावट और कार्य (function) निर्धारित होते हैं।
मनुष्य के शरीर के DNAs को एक लाइन में रखेंगे तो पृथ्वी से सूर्य तक का फासला (14.96 करोड़ Kms) कई बार पूरा होगा।
ये ''हमारे जीवन की किताब'' (book of physical life) की भाषा है। इसमें हमारे शरीर के हर अंग को कैसा बढ़ना चाहिए और क्या-क्या कार्य करना चाहिए निर्देश है।
संसार में हर जीव का DNA - unique होता है। और उससे उसकी शिनाख्त की जा सकती है।
आंख का रंग काला, नीला, हरा, बाल का रंग, ऊंचाई, शक्ल और हमारी पहचान, और हर, जीव, पक्षी, कीड़े, पौधे की खास पहचान होती है।

इसी तरह परमेश्वर द्वारा लिखी कुछ और किताबें भी देखें जो हमें उस आत्मिक संसार में देखने और सुनने को मिलेंगी जब हम परमेश्वर के न्याय आसन के सामने खड़े होंगे। लिखा है,

"फिर मैंने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें (books) खोली गयीं, और फिर एक और पुस्तक (another book) खोली गई अर्थात जीवन की पुस्तक और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उनके कामों के अनुसार उन का न्याय किया गया।"

"और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया" प्रकाशितवाक्य 20:12, 16

स्वर्गलोक (आत्मिक लोक) में, जो हर इंसान के कर्मों और धार्मिकता का हिसाब रखने वाली किताबें हैं। न्याय के समय हर इंसान के आत्मिक जीवन की अपनी किताब भी खोली जाएगी।

जिसको पढ़कर मालूम पड़ेगा, क्या हमने परमेश्वर की आज्ञा मानी, क्या पाप मोचन प्राप्त किया, इत्यादि कुछ भी परमेश्वर से छिपा नहीं है।

आज सवाल है–

आपके आत्मिक जीवन की किताब में क्या लिखा है?

क्या आपका भविष्य सुरक्षित है?

4. आग लगवा दी थी परमेश्वर ने

अपने यरूशलेम के मंदिर में,

बाबुल के राजा नेबुकदनेजर ने परमेश्वर का भवन फूंक दिया। और सारा खजाना, सोने के मंदिर के पात्र लूटकर बाबुल ले गया। यरुशलम की शहरपनाह को तोड़ डाला और उसके भवनों को जलाया।

किसने करवाया ये काम? परमेश्वर ने क्यों किया?

इसलिए कि यहूदा के राजाओं ने और लोगों ने वह काम किये जो परमेश्वर कि दृष्टि में बुरे थे, और उसकी आज्ञा नहीं मानी, हालांकि परमेश्वर का मंदिर उनके बीच में था। ये दंड था।

(इसी दौरान यिर्मयाह नबी - राजा और लोगों को चेतावनी देता रहा, पर वे न माने, 70 साल की बन्धुवाई में बाबुल चले गए) 2 इतिहास 36:17-19

याद रखिये, बाइबिल का परमेश्वर अपना मंदिर खुद फुंकवा देता है, जब उसकी पवित्रता खत्म हो जाती है।

(आज भी यदि आप अपने चर्च और संस्था की इमारत (बिल्डिंग) पर गर्व करते हैं, और परमेश्वर की इच्छा नकारते हैं? तो परमेश्वर को इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है।)
और आगे एक बड़ी बात सुनिये, वापस दोबारा बनवाता कौन है?
क्या यहूदी राजा? नहीं,
फारस का राजा कुस्रु (Cyrus)
"फारस के राजा कुस्रु (Cyrus) के पहले वर्ष में यहोवा ने उसके मन को उभारा, तब कुस्रु ने ऐलान किया कि स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने पृथ्वी भर का राज्य मुझे दिया है, और उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि यरुशलम जो यहूदा में है उसमें मेरा एक भवन (मंदिर) बनवा।" 2 इतिहास 36:22, 23

आज सवाल है–

कहीं हम इस धोखे में तो नहीं हैं कि परमेश्वर केवल हम ही से अपना काम करवा सकता है? (कुस्रु?)

5. आदर पाने की होड़

मसीही जगत में एक ऐसा पाप है जिसे हम देख नहीं रहे हैं या देखना नहीं चाहते।
प्रभु यीशु ने कहा, "मैं मनुष्यों का आदर नहीं चाहता" - यूहन्ना 5:41
सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु जगत में आते हैं। क्या आदर पाते हैं। क्या मनुष्यों का आदर चाहते हैं?
वो जगत में आया और सृष्टिकर्ता था पर जगत ने उसे स्वीकार नहीं किया। वो अपने लोगों में आया और लोगों ने उसे नही पहचाना। वो ज्योति था और अंधकार ने उसे स्वीकार नहीं किया। (यूहन्ना 1)
वो यरूशलेम की धर्मनगरी में नहीं आया, एक छोटे से कस्बे में गरीबों में कंगाल बनकर आया। तीर्थयात्रियों की वाहवाही लेने वो उनके त्योहारों ओर मेलों में नहीं गया।
भीड़ इकट्ठी करने चेलों को बस्तियों में नहीं भेजा। चमत्कारी सभाएं करने के लिए शामियाने नहीं गाड़े।
धन इकट्ठा करके धन इस्तेमाल करके अपना प्रचार नहीं किया। (यहूदा ने हर दिन उसकी चोरी करी थी।)
शैतान की परीक्षा में उसने मंदिर के कंगूरे से कूदकर अपने आप को ईश्वर पुत्र साबित नहीं किया।
संसार के साम्राज्य का शासक होने के प्रस्ताव (ऑफर) को ठुकरा दिया।

जब उसने अपना पहला प्रचार नासरत के आराधनालय में दिया और घोषणा की कि यशायाह की पुस्तक में जिस मसीह का जिक्र है वह मैं हूँ और मैं
कंगालों को खुशखबरी
अंधों को आंखें
बंधुओं को मुक्ति और कुचले हुओं को उठाने आया हूँ।
तब बैठे भक्तों ने उसे फूलों की माला नहीं पहनाई जैसे आज होता है। उसे धक्के, गालियां और मौत का खतरा झेलना पड़ा।
लोगों ने उसे आराधनालय से बाहर खदेड़ा और उसे खींचते निरादर करते हुए शहर के बाहर पहाड़ से गिराकर मार डालने ले गए।
कई बार उन्होंने उसे पत्थरवाह करने की कोशिश की।
प्रभु यीशु ने कहा, यदि कोई मेरी सेवा करना चाहे तो मेरे पीछे हो ले। जहां में रहूंगा वहां मेरा सेवक रहेगा और मेरा पिता उसका आदर करेगा।
(मेरे पीछे आये, यानि मेरा जीवन धारण करे)
सवाल है – आज ये मसीही जगत में किस तरह की दौड़ चल रही है?
आदर, सम्मान, धन, दौलत, पद, संपत्ति (प्रॉपर्टी), बिल्डिंग्स, नाम, राजनीति और अधिकार व शक्ति। यूहन्ना 12:43
कहाँ है प्रभु यीशु के अपमान, निंदा, अपने आप का इनकार, क्रूस उठाने, और सर्वत्याग का रास्ता?
आज सवाल है–
किसी और यीशु के पीछे तो नहीं चल रहे?

6. आखिर आप हो कौन

कभी लोग जानना चाहते हैं कि आखिर मैं हूँ कौन?
कहां रहता हूँ? क्या शाकाहारी हूं? खादी पहनता हूँ?
मैं जिस तरह दिखता हूँ, तो क्यों दिखता हूँ ?
मेरी संस्था का नाम क्या है?
बाइबिल स्कूल या कॉलेज चलाता हूँ कि नहीं?
कन्वेंशन में प्रचार के लिए कितना खर्चा लेता हूँ?
तमाम सवालों के जवाब चाहते हैं (पता नहीं क्यों, हालांकि मैं एक छोटा सा, आम आदमी हूँ)
अलग-अलग भाषा में जवाब चाहते हैं। नेपाली में, हिंदी में, उर्दू में, अंग्रेजी में,

कहीं से धमकियां आती हैं, तो कहीं से अपमान।
प्रभु यीशु ने सिखाया है शून्य बनना,
''वह शून्य बन गया था'' फिलिप्पियों - 2:7
यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने अपना नाम नहीं बताया, बस कह दिया में एक ''शब्द'' हूँ।
'काश कि मैं अपना नाम ही भूल जाऊं'
प्रभु यीशु ने कहा, ''तुम जो एक दूसरे से आदर (अपना नाम) चाहते हो और वह आदर जो एकमात्र परमेश्वर की ओर से है नहीं चाहते'' यूहन्ना 5:44
आज सवाल है–
आखिर आप हो कौन?

7. अपना बचाव न चाहा

''कितने तो मार खाते खाते मर गए और छुटकारा न चाहा''–इब्रानियों 11:35–38
ये किन लोगों के बारे में लिखा है? इनके साथ क्या हुआ था?
ठट्ठों में उड़ाए गए। कोड़े खाये, बांधे गए, जेल खानों में बंद किये गए।
इन पर पथराव हुआ। आरे से चीरे गए। तलवार से मारे गए।
कंगाल रहे, क्लेश में दुखों में खालें ओढ़े इधर उधर मारे मारे मारे फिरे
जंगलों में पहाड़ों में गुफाओं में और पृथ्वी की दरारों में भटकते फिरे
संसार उनके योग्य न था।
ये वे लोग हैं। जिनके पास पूरी बाइबिल नहीं थीं। जो चाहते थे कि भले ही जान चली जाए पर फिर भी वे परमेश्वर की इच्छा और पवित्र जीवन को न ठुकरायें।
जान बचाना आसान है।
जान खोना इस संसार में बहुत मुश्किल।
आज मसीहियत में संसार में सफलता पाने के लिए हर तरीके अपनाए जा रहे हैं।
प्रभु यीशु शून्य बने। पर हमें अधिकार चाहिए।
प्रभु यीशु ने कहा दुश्मन से प्रेम करो।
पर हम मसीही एक होकर दुश्मन से लड़ेंगे। अपनी शक्ति का एहसास दिलाएंगे।
प्रभु यीशु ने कहा, कोई एक गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा भी फेर दो।
हमारा कहना है कि ये आज की स्थिति में प्रायोगिक (practical) नहीं है।
क्या अपनी शर्तों पर परमेश्वर के राज्य में दाखिल होंगे?
कहीं ऐसा न हो कि वो कहें मैं तुम्हें नहीं जानता।

"जो इस जीवन में अपनी जान बचाएगा वो उसे खोएगा।"

आज सवाल है–

मसीहियत का कहीं नारा ऐसा तो नहीं सुनने में आता कि संसार हमारा है, हम यहां के हैं और हम राज्य करेंगे और अपने अधिकार को लेकर रहेंगे?

8. इस पत्थर पर

मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। - मत्ती: 16:16-18

16. शमौन पतरस ने उत्तर दिया, "कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है"

17. यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।

18. और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा: और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।

इस भाग में हम क्या सीखते हैं?

यही कि कलीसिया या चर्च का निर्माण प्रभु यीशु ही करते हैं। चर्च प्लांटिंग (स्थापना) हमारी ताकत, प्रतिभा, योग्यता या रुपए (डॉलर) की शक्ति द्वारा नहीं होता है। यह काम केवल प्रभु यीशु का है। कहाँ और कैसे निर्माण होगा यह उसकी आत्मा द्वारा निर्देशित होता है।

और यह कि कलीसिया का निर्माण और शैतान का हमला साथ-साथ चलता है - क्योंकि प्रभु यहाँ कहते हैं कि अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।

यदि हमारी कलीसिया आत्मिक युद्ध नहीं महसूस कर रही है तो शायद हम कलीसिया निर्माण स्वयं कर रहे हैं प्रभु यीशु नहीं। आज मसीही जगत मे चर्च प्लांटिंग (कलीसिया स्थापना) एक मल्टीनेशनल बिजनेस (बहुराष्ट्रीय व्यापार) की तरह चल रहा है - बजट पर आधारित है।

किस पत्थर पर कलीसिया का निर्माण होगा?

जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह पत्थर, इस वचन पर प्रभु यीशु को परमेश्वर का पुत्र का खिताब देने के खिलाफ शैतान है - मत्ती 4 में वो बारबार कहता है - यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो? आज ऐसे धर्म हैं जो कहते हैं प्रभु यीशु परमेश्वर के पुत्र नहीं हो सकते। यहूदियों ने यीशु को मारने के लिए पत्थर उठाए, यूहन्ना 5 में उनका आरोप था कि उसने अपने आपको परमेश्वर का पुत्र कहकर परमेश्वर की निंदा की है।

पतरस को प्रभु यीशु का जवाब-मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में

है, यह बात तुझ पर प्रगट की है। - कहने का अर्थ - ज्ञान से नहीं ख्र यीशु के साथ घूमने फिरने से नहीं - साथ में तो यहूदा भी रहता था।
ये परमेश्वर का प्रगट करना है।
मत्ती 11:25 में यीशु ने कहा, हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया है।
कुरिन्थियों 1:26-28 में जैसे लिखा है, ''हे भाइयो, अपके बुलाए जाने को तो सोचो, कि न शरीर के अनुसार बहुत ज्ञानवान, और न बहुत सामर्थी, और न बहुत कुलीन बुलाए गए। परन्तु परमेश्वर ने जगत के मूर्खों को चुन लिया है, कि ज्ञानवालों को लज्जित करे, और परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया है, कि बलवानों को लज्जित करे। और परमेश्वर ने जगत के नीचों और तुच्छों को, वरन जो हैं भी नहीं उन को भी चुन लिया, कि उन्हें जो हैं, व्यर्थ ठहराए।''
यूहन्ना 4 में सामरी स्त्री - 5 पति कर चुकी थी, 6 वें के साथ बिन ब्याहे रहती थी, अनपढ़, गँवार ही थी - फिर भी जीवन का जल - पवित्र आत्मा, पाकर वो सारे गाँव वालों को आत्मिक कलीसिया मे लाती है - क्योंकि वह नहीं बोल रही थी - पर उसके अंदर से पवित्र आत्मा कार्य कर रहा था। परमेश्वर का प्रगट करना था। सारा निनवे बदल गया इसलिए नहीं कि उन्हें मछली का चमत्कार पसंद आया, पर इसलिए कि पवित्र आत्मा ने उन्हें पाप से कायल किया।

आज सवाल है-

कहीं हम तो नहीं बना रहे कलीसिया - प्रभु यीशु को बनाने दें।

9. एक दिन-प्रभु यीशु के जीवन का (मरकुस 1:21-39)

अपने शिष्यों का चुनाव करने के बाद वो कफरनहूम नाम की बस्ती में आये। आराधनालय में गए उपदेश दिया। उसके उपदेश से लोग चकित हुए क्योंकि वो शास्त्रियों की तरह नहीं - जो सिर्फ ज्ञान बाँटते थे।
पर अधिकार के साथ - प्रभु यीशु का उपदेश होता था। (जिसका अर्थ है वो लोगों को खुश करना नहीं चाहता था, उसकी कथनी और करनी में फर्क नहीं था)
वो जीवन बांटता था ज्ञान नहीं।
उसकी बातें सुनने और उससे चंगाई पाने के लिए सारा नगर उसके द्वार के आगे जमा हो गया। उसने हर प्रकार की बीमारियों से पीड़ित लोगों को चंगा किया, भूत प्रेतों को निकाला।

इसके बाद क्या किया प्रभु ने। सुबह दिन निकलने के बहुत पहले वो उठा (क्या सोचते हैं? क्या समय होगा। शायद सुबह के 4 बजे) वो एक जंगली स्थान (चर्च?) में गया और वहां प्रार्थना करने लगा।
सवाल है–क्या प्रार्थना की इतनी बड़ी आवश्यकता थी कि परमेश्वर का पुत्र, जगत का सृष्टिकर्ता, सृष्टि में आकर हर बात के लिये अपने पिता की इच्छा जानना चाहता है और उस पर निर्भर रहना चाहता है?
आज मसीहियत में प्रार्थना की कमी है। गीत जोरों पर हैं। गायक नामी हैं, क्वायर अच्छा है। चर्च बड़ा है। मेंबर बहुत हैं। अनेक समाज सेवा के काम चल रहे है। लेकिन प्रार्थना न के बराबर। बस कुछ लोग, कभी-कभी, चंद मिनटों के लिए प्रार्थना करते हैं।
जब प्रभु यीशु से प्रेम होगा तो प्रार्थना अधिक होगी। जब प्रभु यीशु पर भरोसा होगा तो प्रार्थना अधिक होगी। जब हम कमजोर होंगे और प्रभु पर निर्भरता होगी तो प्रार्थना अधिक होगी। जब हम पिता की इच्छा इस संसार में करेंगे तो प्रार्थना अधिक होगी। जब हम प्रभु यीशु का जीवन चाहेंगे। और पवित्र आत्मा की भरपूरी चाहेंगे तो प्रार्थना अधिक होगी जब हम प्रभु यीशु के गवाह बनना चाहेंगे तो प्रार्थना अधिक होगी। शरीर है लेकिन आत्मा?

आज सवाल है–

कब, कहाँ और कितनी प्रार्थना करते हैं?

10. एकलौता पुत्र मर गया

जो जीवित हुआ तो उसका परिचय हमेशा के लिए बदल गया। पुनरुत्थान के बाद बाइबिल में कहीं भी प्रभु यीशु को 'एकलौता नहीं' कहा गया।
उसे ''पहिलौठा पुत्र'' कहा गया।
(मृत्यु पर जय पाने वालों में पहला)
(उन्हें पहले से ठहराया भी है, कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, ताकि वो बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे - रोमियों 8:29)
ऐसा क्यों?
भाई कहलाना तो दूर की बात थी, प्रभु यीशु ने जब स्वयं अपने आप को परमेश्वर का पुत्र कहा तो फरीसियों ने उसे मारने के लिए पत्थर उठाये।
प्रभु यीशु का इस संसार में आना और क्रूस पर मर के फिर से जी उठने के परिणाम से हमको मिला है ये वरदान।

हमारा भी 'पुराना मनुष्यत्व' उसके साथ क्रूस पर मर गया, जब हमने उस पर विश्वास किया। रोमियों 6:6

अब हम आम इंसान नहीं रहे। परमेश्वर की संतान हैं हम पाप के लिए, और इस संसार के लिए मर गये। और प्रभु यीशु की आत्मा में हम जीवित हैं।

इसी लिये पुनरुत्थान के बाद प्रभु यीशु ने मरियम से कहा, ''मेरे भाइयों के पास जाकर उनसे कह दे कि मैं अपने पिता और 'तुम्हारे पिता', और अपने परमेश्वर और 'तुम्हारे परमेश्वर' के पास ऊपर जाता हूँ। - यूहन्ना 20:10

यदि हम प्रभु यीशु के भाई बंधु बने हैं, तो हमारी शक्ल हमारा व्यवहार उससे मिलना चाहिए।

आज सवाल है,

क्या हम प्रभु यीशु के हमशक्ल दिखते हैं?

11. कुँए पर बैठा आदमी कहीं मसीह तो नहीं? यूहन्ना 4

मूर्खता की बात तो लगती है। और वो भी एक गंवार सी औरत के मुंह से।

और सच तो ये है कि आत्मिक बातें तो मूर्खता लगती हैं और इसीलिए तो उन्हें मानने के लिए विश्वास की आवश्यकता है।

''क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दे।'' - 1 कुरिन्थियों 1:21

यदि तुम जानती और पहचानती तो मांगती।

परमेश्वर सत्य और आत्मा से भजने वाले भक्तों को ढूंढ़ता है। न जानना, न पहचानना अंधकार है। तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें बंधन से आजाद करेगा।

सामरी स्त्री की गवाही क्या थी। यह कि उसने मुझे सब कुछ बता दिया।

उसका अपना जीवन झूठ से भरा था। कभी किसी को सीधा जवाब शायद नहीं दिया था। कपट और बस धोखा, न ही उससे किसी ने उसके जीवन के कड़वे सच को बताया था। सामरी स्त्री का प्रचार - आओ देखो उसे। इससे बड़ा कोई प्रचार नहीं होता जो अपना नहीं पर मसीह का प्रचार करे।

वह जो कुँए पर बैठा है कहीं मसीह तो नहीं?

सामरियों ने गांव के बाहर कुँए पर बैठे यीशु को जगत का उद्धारकर्ता मान लिया।

और आज ये आलम है कि क्रूस पर लटकते मसीह को देखकर भी हमारा विश्वास

कमजोर है।
जब तक चमत्कार की चमक न दिखे तो कुछ न लगे।
आज सवाल है–
कुँए पर बैठा हुआ आदमी मसीह है?

12. क्या किया?

ये सवाल आप से नहीं पूछा जाएगा, प्रभु यीशु के न्याय आसन के सामने।
वहां हमसे सवाल बस एक पूछा जाएगा - क्यों किया?
क्यों किया सवाल होते ही हमारे बड़े-बड़े नामी काम जो हमने इस धरती पर किये थे उनका X-ray निकल जाएगा। यानि, हर काम करने के पीछे छिपा उद्देश्य प्रगट किया जाएगा।
तब शायद घास फूस से बना हमारा मसीही कार्यों और योजनाओं (projects) का महल जलकर राख हो जाएगा।
जिसका अर्थ है। शायद हमारे स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, चर्च प्रोपर्टी, आर्गेनाइजेशन, देश-विदेश की यात्राएं, कांफ्रेंस, और हमारी डिग्रियां आग की लपटों में जलकर राख हो जाएंगी। जी उसके न्याय आसन के सामने।
इसके विपरीत, परमेश्वर की महिमा के उद्देश्य से किया गया हर काम एक सोने के भवन की तरह आग की जांच में खड़ा रहेगा।
''वो दिन आग के साथ प्रगट होगा। और वह आग हर एक का काम परखेगी की कैसा है।'' 1 कुरिन्थियों 3:12, 13; मत्ती 6:1
आज परमेश्वर की इच्छा जानकर, उस पर भरोसा रखकर निर्भर रहकर किया गया कार्य बहुत कम है।
शायद जो भी हम करते हैं उससे हमारा नाम हमारे चर्च (कलीसिया) का नाम या हमारे परिवार का नाम होता है। प्रभु यीशु के न्याय आसन के सामने कुछ और ही नजारा होगा। हमारा हर काम आग से जांचा जाएगा।
बाइबिल कहती है, ''क्या मेरा वचन आग सा नहीं है?'' यिर्मयाह 23:29
वचन के आधार पर हमारा न्याय होगा।
आज सवाल है–
क्या जवाब होगा, क्यों किया था?

13. क्या लगता है?

प्रेम ने न्याय को बिगाड़ दिया है?
कहां गया न्याय जब,
- व्यभिचारी स्त्री को पत्थरवाह से बचा लिया
- गुनाहगारों को बचाने आ गया
- कहता था दुश्मनों से प्यार करो।
- जो एक मील बेगार में ले जाए तो 2 मील चले जाओ
- जो एक गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा भी फेर दो
- क्रूस पर लटकते हुए अपने 'हत्यारों से बदला' या 'अपने लिए न्याय' की मांग नहीं करता।

''मरना तो हमें था, कोई और मर गया''
लगता तो है अन्याय
मूसा कानून और दंड लेकर आया
प्रभु यीशु सत्य के साथ प्रेम, अनुग्रह और क्षमा लेकर आये। यूहन्ना 1:17
''व्यवस्था 'पाप' के साथ 'पापी' को भी नष्ट करे लेकिन प्रेम की आत्मा पाप को तो करे नष्ट पर पापी को बचा ले।''
इसके पीछे सच तो ये है कि हर गुनाह हम 'परमेश्वर के खिलाफ' करते हैं चाहे वो शरीर, आत्मा, प्राण से किसी प्रकार का हो, किसी के खिलाफ हो।
यही कारण है कि वह हमारे विरुद्ध जो ''आरोप और दंड'' है उसे वापस लेने का अधिकार रखता है।
क्रूस की मृत्यु हर गुनाह की सजा है, और उसके अनोखे प्रेम की कीमत है।
उसने अन्याय नहीं, हमारा न्याय किया
'जो प्रभु यीशु में हैं उन पर दंड की आज्ञा नहीं' रोमियों 8:1
आज सवाल है–
न्याय की मांग कर रहे हैं आप, या प्रेम की आत्मा का प्रदर्शन?

14. किससे लड़ रहे हो?

हमारी लड़ाई
न संसार से है,
न सरकार से,

न लोगों से है...
एक मसीही अपना जीवन उस समय व्यर्थ गंवाने लगता है जब आंखों से दिखने वाली वस्तुओं से लड़ता रहता है।
शारीरिक युद्ध लड़ता है। और आत्मिक हार जीवन में अनुभव करता रहता है।
क्योंकि हमारा ये मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परंतु प्रधानों से और अधिकारियों से और इस संसार के अंधकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। इफिसियों 6:12
अपनी लड़ाई को मनुष्य के साथ मत रखो। हमारी लड़ाई मनुष्य से नहीं है।
इसीलिए हमें क्रूस उठाने और मरने और निंदा और दुख सहने के लिए हर दिन तैयार रहना है।
आज सवाल है–
आपका समय किससे लड़ने में बीत रहा है?

15. गणित पढ़ाने वाला क्या शराब नहीं पी सकता?

क्यों नही, पी सकता है।
2. इलेक्शन में प्रचार करने वाला क्या गाली नहीं दे सकता?
क्यों नहीं, दे सकता है।
3. क्या बाइबिल सिखाने वाला कपट का दोहरा जीवन नहीं जी सकता?
क्यों नहीं, जी सकता है।
लेकिन वो इसलिए कि उसके पास मात्र ज्ञान है प्रभु यीशु का सत्य नहीं है।
क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा है।
''तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा''
यूहन्ना 8:32
सत्य कुछ करता है।
सत्य ज्ञान नहीं है 'अनुभव' है।
सत्य विवेक नहीं है 'जीवन' है।
सत्य बोध नहीं है 'आत्मा' है।
सत्य परिचय नहीं है 'रिश्ता' है।
सत्य और कोई नहीं 'प्रभु यीशु' है।
सत्य पवित्रता लाता है।
जीवन बदल देता है।

संसार, शरीर, शैतान और पाप के बंधनों को तोड़ता है।
आजाद करता है।
आज सवाल है–
सत्य ने आपको ज्ञान दिया है या जीवन?

16. गीत गवालो, संदेश दिलवालो, और तमाम कार्यकलाप (Activities) करवालो

लेकिन,
प्रार्थना में चंद मिनट भी बहुत लंबे और थकान वाले होते हैं।
शायद हमारे पास प्रार्थना तो है, लेकिन लगता ऐसे है जैसे फोन के दूसरे छोर पर कोई उठाने वाला (Receiver) नहीं है।
"जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा और द्वार बंद करके अपने पिता से जो "गुप्त" में है प्रार्थना कर, और तेरा पिता जो गुप्त में "देखता" है, तुझे "प्रतिफल" (उत्तर) देगा। मत्ती 6:6
इस वचन के अनुसार
आपको परमेश्वर दिखाई नहीं देता है।
लेकिन क्या आप - उसे दिखाई देते हैं?
जवाब - दिखाई देते हैं।
क्या वह आपकी प्रार्थना सुन रहा है?
जवाब - सुन रहा है, क्योंकि वह उसका जवाब भी दे रहा है (प्रतिफल)
मैंने मसीहियों में प्रार्थना का जीवन बहुत कमजोर पाया है।
ऐसा क्यों?
परमेश्वर से रिश्ता कमजोर है। इस जीवन में, दिनचर्या में परमेश्वर का स्थान (Involvement) नहीं है।
समझिए आपका बच्चा दूसरे शहर में रहता है, लेकिन कभी कोई सम्पर्क नहीं रखता है। उसके पास बस आप एक तस्वीर हैं, और दीवार पर टंगे हैं।
प्रार्थना रहित जीवन, परमेश्वर रहित जीवन है।
आज सवाल है–
आपका परमेश्वर मात्र एक तस्वीर बनकर तो नहीं रह गया?

17. ग्रहण योग्य भेंट

विदेश यात्रा के दौरान मुझे एक चर्च में प्रचार करने के लिए आमंत्रित किया गया। 100 साल से अधिक समय से वहां उसी स्थल पर यह चर्च चल रहा है। सब कुछ आलीशान था। गाड़ियों की पार्किंग के लिए बहुत अच्छी व्यवस्था थी। बगीचा (गार्डन) बहुत बड़ा था। सुंदर वृक्ष थे। चर्च के अंदर अलग-अलग हॉल थे। लाइब्रेरी थी। सभी आधुनिक साधन थे।

आराधना आरम्भ हुई। भक्ति गीत गाये गए। इसमें एक घंटा हुआ और इसके बाद उन्होंने कॉफी ब्रेक (Coffee break) कर दिया। हम सब चर्च हॉल से एक दूसरे हॉल में आये और कॉफी (Coffee) पीने लगे।

जब लौटे तो मैंने देखा कुछ पुराने लोग चले गए पर कुछ नए लोग शामिल हो गए थे। अगले एक घंटे के दौरान प्रभु भोज (Holy Communion) हुआ। और फिर से एक कॉफी ब्रेक (Coffee break)। इसके बाद मेरा प्रचार शुरू हुआ। मैंने वहां नोट किया कि कुछ पिछले चेहरे गायब थे पर कुछ नए चेहरे शामिल हो गए थे।

आराधना खत्म होने के बाद मैंने सवाल किया कि 3 घंटे की मीटिंग के दौरान 2 कॉफी ब्रेक क्यों हुए।

जवाब था, भाई यहां पर लोग बहुत व्यस्त हैं।

कोई सिर्फ भजन के सेशन अटेंड करके वापस चला जाता है, तो कोई सिर्फ कम्यूनियन में भाग लेकर लौट जाता है तो कोई सिर्फ मैसेज सुनने आता है।

हाँ कोई तो 3 घंटे तक भी बैठता है। व्यवस्थित करने के लिए हमने कॉफी (coffee) ब्रेक के इंटरवल डाले हैं।

तो क्या ख्याल है आपका?

उत्पत्ति के चौथे अध्याय में हम आदम के दो बेटों के परमेश्वर की वेदी पर कुछ अर्पण करने के बारे में देखते हैं।

कैन किसान था और अपनी उपज से - कुछ भेंट ले आया (सबसे उत्तम उपज नहीं लिखा है। बस - कुछ) और हाबिल अपनी भेड़ बकरियों के पहिलौठे लाया (याने सर्वोत्तम भाग लेकर आया।)

परमेश्वर ने कैन को (उसके छोटे मन) और उसकी भेंट (जो उसकी उपज की सर्वश्रेष्ठ नहीं थी) को ग्रहण नहीं किया।

पर हाबिल को (उसके मन) और उसकी भेंट (उसकी सर्वोत्तम भेड़ें थीं) को ग्रहण किया। उत्पत्ति 4:3-5

याद रखिये—जब हम परमेश्वर के पास कुछ भेंट लाते हैं तो पहले वो हमारे देने वाले

मन को देखता है और फिर हमारी भेंट को देखता है।
दोनों ग्रहण योग्य होना चाहिए।
परमेश्वर कहता है तुम अंधे, लंगड़े और रोगी पशुओं को मेरे पास बलिदान चढ़ाने लाते हो? क्या तुम अपने किसी अधिकारी को भी वो भेंट में दे सकोगे? मलाकी 1:8
आज हम परमेश्वर की न इज्जत करना चाहते हैं। ना अपनी कोई कीमती वस्तु ही देना चाहते हैं। बस जो बचा खुचा, बेकाम का समय, धन या सेवा देने चाहते है? कुर्बानी की मनसा हमारे अंदर नहीं है।

आज सवाल है–

क्या आप और आप की भेंट दोनों परमेश्वर को ग्रहण योग्य है?

18. चाहे हो कोई सरकार प्रभु यीशु का है अधिकार

(प्रभु यीशु के अनुयायियों का नारा)
नेबुकदनेजर राजा सोच बैठा था कि शायद राज्य उसका है और वो शासन कर रहा है। जब वह बाबुल के राजभवन की छत पर टहल रहा था, तब वह कहने लगा, क्या यह महान बाबुल नहीं है, जिसे मैंने ही अपने बल और सामर्थ से राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बड़ाई के लिये बसाया है। उसी समय उसका शासन उसके हाथ से निकल गया और वो कंगाल बन गया, और उसका दिमाग और प्रकृति भी बदल गई। यहां तक कि वो घास खाने लगा और जानवर की तरह हो गया। ये एक ऐसे व्यक्ति की तस्वीर है जो परमेश्वर के अधिकार को चुनौती देता है और बगावत करता है।
आज भी हमारे संसार में ऐसे लोग हैं जो अपने बल और वैभव को कुछ समझते हैं। उनके घास खाने के दिन नजदीक हैं।
जब नेबुकदनेजर को सात साल घास खाने के बाद होश आया तो उसने स्वीकार किया और ऐलान किया कि जो जीवित हैं वे जान लें कि परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है, और उसको जिसे चाहे उसे दे देता है, और वह छोटे से छोटे मनुष्य को भी उस पर नियुक्त कर देता है। वह छोटे इंसान को भी तख्त पर बैठा देता है। बाइबिल में एक दुनिया का सबसे बड़ा रिकॉर्ड है तख्त पाने का। युसूफ मिस्र देश के तहखाने में सुबह तक कैद था और शाम को मिस्र का प्रधानमंत्री बन जाता है।
मेरा एक पसंदीदा बाइबिल वचन है:
भजन 113:7 – ‘‘वह कंगाल को मिट्टी पर से, और दरिद्र (निर्धन) को घूरे पर से उठा कर ऊंचा करता है।’’

फिली 2:5-11 जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था ... जिसने अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास बना... अपने आप को दीन किया... हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।
उसने हमें अपनी संतान होने का अधिकार दिया है-यूहन्ना 1:12
प्रभु यीशु ने कहा, सारा अधिकार मुझे दिया गया है इसलिए जाओ।
आज सवाल है–
क्या अभी भी डर है?

19. चोरी हुई थी

चोरी हुई थी, प्रभु यीशु की हर दिन तो क्या किया उसने, और क्या करते आप?
मैं सोचता हूँ कि बारह चेलों में से सबसे चतुर (educated) यहूदा इस्करियोती था। शायद इसलिए उसे 'पैसों के थैले' को रखने का काम मिल गया था।
पैसों का सही इस्तेमाल करने के बारे में उसके पास कई विचार (idea) थे।
जब एक स्त्री ने प्रभु यीशु के पांवों पर बहुमूल्य इत्र डाल दिया तो यहूदा स्त्री पर नाराज हुआ और कहा इस इत्र का सत्यानाश हो गया। इसे बेचकर कंगालों को दिया जा सकता था।
लेकिन उसे न कंगालों की फिक्र थी, न ही प्रभु यीशु की परवाह। वह प्रभु यीशु के अनुयाइयों को व्यापार सिखा रहा था। कैसे खरीदा-बेचा जाता है।
वहां लिखा है वो पैसा जो थैले में डाला जाता था, उसे वह चुरा लेता था। यूहन्ना 12:1-6
प्रभु यीशु को आखिर 30 चांदी के सिक्कों में पकड़वाने का काम भी उसी ने किया।
क्या प्रभु को यह न मालूम था कि उसकी हर रोज चोरी हो रही है?
आखिर हर दिन की चोरी की जानकारी होते हुए भी प्रभु यीशु ने यहूदा के हाथ से थैला लेकर किसी और चेले को क्यों नहीं थमाया? इन बातों की शिकायत उसने दूसरे चेलों से क्यों नहीं की? कभी सोचा इस बारे में आपने ?
वो इसलिए क्योंकि उसका राज्य इस संसार का नहीं था।
इस राज्य में लेनदेन पैसों से होता है, और भरोसा धन पर होता है। लेकिन जिस राज्य से वो आया था, वहां का लेन देन सब कुछ परमेश्वर की सामर्थ पर भरोसे से होता है।
प्रभु यीशु को पैसों (Money) या धन पर निर्भर होने की जरूरत नहीं थी। इसलिए वो हर दिन लुटता रहा। और थैला आखिरी दिन तक यहूदा के हाथ में ही रहा।

आज सवाल है–
कहीं आप परमेश्वर का राज्य धन से तो नहीं बढ़ा रहे?

20. 'चिंता' आखिर है क्या?

'चिंता' और 'डर' (Worry and Fear) में फर्क क्या है?
'डर' और 'चिंता' एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।
हर एक व्यक्ति के अंदर 'डर' है।
आने वाले किसी 'खतरे की उम्मीद' को डर कह सकते हैं।
जैसे बेरोजगारी, निर्धनता, बीमारी, इम्तहान, परिवार से जुड़ी बातें इत्यादि एक 'डर' उत्पन्न कर देती है।
डर और चिंता में अंतर
'डर' किसी बुरे परिणाम की उम्मीद से जुड़ी व्याकुलता है। और 'चिंता' (worry) उस 'डर' को दूर करने के अनेक उपायों की खोजबीन/संघर्ष है। जिसमें हम उलझ जाते हैं। 'चिंता' उपाय नहीं है। हल की 'तलाश' है।
डर दूर करने की 'दवा ढूंढना' है।
जब प्रभु यीशु कहते हैं तुम चिंता मत करो तो उसका मतलब क्या है।
यह कि, मेरे पास सबसे अच्छा समाधान है मुझ पर भरोसा रखो। मुझ पर निर्भर हो जाओ। यदि हम उसकी मानेंगे तो हमारी चिंता दूर हो जाती है। और चिंता दूर होने से डर भी निकल जाता है।
प्रभु यीशु ने कहा, तुम्हारा मन व्याकुल न हो तुम मुझ पर विश्वास रखो। यूहन्ना 14:1
तुम चिंता न करो। अपने प्राण के लिए ये चिंता न करना की हम क्या खाएंगे और क्या पीएंगे, और क्या पहिनेंगे।
तुम में कौन है जो चिंता करके अपने जीवन की एक घड़ी भी बढ़ा सकता है। सो चिंता न करो। मत्ती 6:25-34
हमारी हर जटिल (complex) समस्या का परमेश्वर के पास सरल (simple) सा उपाय होता है।
अपनी चिंताएं प्रभु के हाथ देकर तो देखिए
उसने कहा था। अपनी चिंता मुख पर डाल दो। भजन 55:22
हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे लोगो मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मत्ती 11:28

हमारे प्रयास 'चिंता' उत्पन्न करते है। लेकिन परमेश्वर पर निर्भरता 'शांति' लाती है। रोमियों 8:28

आज सवाल है–

आपके पास चिंता है या शांति?

21. ठहरो, अभी प्रचार मत करो

(और देखो जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूंगा, और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी शहर में ठहरे रहो। लूका 24:49)

कब्र से बाहर जीवित होकर आए थे। बाग में कब्र का पत्थर लुढ़का पड़ा था। चेलों के पास प्रभु यीशु बंद दरवाजे होने के बावजूद अंदर आते रहे। उन्हें अपने जख्म दिखाये, उनके साथ भोजन करते हैं।

उनके साथ सड़क पर चलते हैं।

परमेश्वर के राज्य के और भेद भी 40 दिन तक उन्हें बताते हैं।

शहर के बाहर जैतून के पहाड़ पर एक बड़े झुंड को चेलों के साथ लेकर जाते हैं। चेलों ओर जमा लोगों के देखते-देखते वे स्वर्ग की ओर आसमान में चले जाते हैं। क्या ये सारी अद्‌भुत बातें और आंखों देखे चमत्कार चेलों के प्रचार कार्य और गवाही के लिए काफी नहीं थे?

क्यों कहा अभी ठहरो।

जी हां काफी नहीं थे।

हमारा ज्ञान, हमारी बुद्धि, हमारी शिक्षा, डिग्रियां, धन दौलत, हमारा अनुभव, चमत्कार की बातें और काबिलियत परमेश्वर के सुसमाचार प्रचार और गवाही के लिए काफी नहीं हैं। क्योंकि प्रभु यीशु ने उनसे कहा–

ठहरो, उस समय तक चुप रहो जब तक पवित्र आत्मा तुम्हारे अंदर अपनी शक्ति से न आये, ताकि तुम्हारे कर्म और वचन तुम्हारे न रहें। लेकिन परमेश्वर के रहें।

प्रेरित 1:7, 8, यशायाह 55:11

आज सवाल है–

कहीं हम अपनी सामर्थ से तो प्रभु की सेवा नहीं कर रहे?

22. दोनों ही ने खून बहाया

(रणभूमि में जब वे मिले, तो खून ही खून बहा)

संसार के सबसे क्रूर, दुष्ट, खूनी राजा का सामना मानव इतिहास के सबसे प्रेमी, दयावंत, और दीन राजा से होता है।
यरूशलेम / बेतलेहेम की रणभूमि पर –
एक राजा – महल में स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान है। और संसार के इतिहास के सबसे जघन्य अपराध को अंजाम देता है।
इतिहास की एकमात्र घटना जब केवल 2 वर्ष से कम उम्र के मासूम बच्चों का कत्लेआम हुआ। घरों में गलियों में बस खून ही खून!
दूसरा राजा – निर्बल बनकर, एक जानवरों के गौशाले में जन्म लेता है, और कंगालों को कुचले हुओं को ख्रष्टिहीनों को और बंधुओं को स्वर्ग राज्य देने के लिए अपने खून की आखिरी बून्द भी बहा देता है।
''राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'' – प्रकाशितवाक्य 19:16
आज सवाल है–
किस राजा की महिमा देख रहे हैं?

23. धर्म, धन, राज शक्ति, व्यापार = डाकुओं की खोह

गदहे पर सवारी करने की क्या जरूरत थी?
(मत्ती 21, लूका 19, मरकुस 11, यूहन्ना 12)
प्रभु यीशु तो गांव गांव पदयात्रा करते हुए। अनुग्रह और सत्य का शुभ सन्देश बांट रहे थे।
यरुशलम जो धर्म, धन, समृद्धि, वैभव और शक्ति का प्रतीक था वहां गलील प्रदेश के कस्बे से आये प्रभु यीशु, गांव वालों की भीड़ लेकर क्या ला रहे हैं?
विजय प्रवेश?
अनपढ़ों की, गरीबों की, कमजोरों की भीड़ लेकर कौन सी क्रांति लाये हैं?
जिस यरुशलम की सड़कों पर घोड़ों, हाथियों, रथों पर सवार राजा महाराजा विजयी सेनाओं के साथ, रोम, बेबीलोन, असीरिया, मिस्र और यूनान से गर्व से प्रवेश करते थे और अपनी विजय का परचम फहराते थे, वहीं आज नजारा दुनिया की नजर में है, एक कंगाल, कमजोर और कुचले, बंधुओं की भीड़ का।
उस के ऊपर एक अजीब बात ये, की उनका क्रांतिकारी प्रभु, चिल्ला चिल्ला कर रो रहा था। और कुछ बोल रहा था ये कोई क्रांति है?
जी हां, प्रभु यीशु की क्रांति सड़कों तक सीमित नहीं थी, भीड़ को लेकर वो यरूशलेम के आत्मिक गढ़ की विजय को निकला था, जिसको झूठे भविष्यद्वक्ताओं

ने, लुटेरे याजकों ने और व्यापारियों ने अपना अड्डा बना रखा था।
वहां वह सीधे पहुंचता है। और अपने पिता के प्रार्थना के घर को आजाद करता है।
आज सवाल है–
क्या आज 'प्रार्थना के घर' व्यापार के अड्डे तो नहीं बने हुए हैं?

24. नामधारी विश्वास - नहीं सुना था आपने?

(बस 'नामधारी ईसाई' ही सुना होगा।) समझाता हूँ।
हमारे सूर्य के अंदर करीब दस लाख पृथ्वी समा सकती हैं। ये विज्ञान है, सत्य है, आप विश्वास करते हैं। लेकिन इससे क्या किसी के झूठ बोलने की आदत या शराब पीने की आदत पर कोई असर पड़ता है? नहीं पड़ता है।
ये 'नामधारी विश्वास' का उदाहरण है। मैंने 'नामधारी विश्वास' की एक 'परिभाषा' बनाई है। ये "ऐसा विश्वास है जो जीवन में परिवर्तन/असर नहीं लाता है"
ऐसा विश्वास जो दुष्ट आत्माएं भी परमेश्वर पर रखती हैं याकूब 2:19
ऐसा विश्वास जो हमारे जीवन में कार्य न करे वो बस 'ज्ञान' है। इब्रानियों 11:6 में लिखा है। "विश्वास (भरोसे) के बिना उसे प्रसन्न करना असंभव है" (without faith it is impossible to please God)
हिंदी बाइबिल में Faith का अनुवाद सही नहीं है। विश्वास (Faith) का अनुवाद 'भरोसा' होना चाहिये। क्योंकि तभी उसका सही मतलब हमें समझ में आएगा। बाइबिल समझ में आने लगेगी। भरोसा - निर्भरता को जन्म देता है। और यही परमेश्वर चाहता है। ऐसा विश्वास जो हमें परमेश्वर पर निर्भर न करे, वो बेकार है।
इब्रानियों 11:1 को मैं नये अनुवाद के साथ लिखता हूँ।
"अब परमेश्वर पर भरोसा (Faith)", आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है। विश्वास (भरोसा) से धर्मी जन जीवित रहेगा।
रोमियों 1:17 (Just shall live by faith)
यशायाह 26:3/नीतिवचन 3:5
विश्वास (Believe) - सत्य को मानना परमेश्वर की सच्चाई को स्वीकार करना है।
भरोसा (Faith)-विश्वास को अनुभव में बदलकर परमेश्वर पर निर्भर रहना।
हिंदी अनुवाद (translation) सही अर्थ बताने में असमर्थ है।
अंग्रेजी में 2 शब्द हैं। to Beleive (विश्वास करना) और have faith (भरोसा रखना)। हिंदी भाषा बाइबिल में अधिकतर जगहों पर दोनों शब्दों का अनुवाद बस विश्वास किया गया है। खास कर नये नियम में।

नये नियम में जहां जहां faith आया है वहां वहां आप 'भरोसा' शब्द इस्तेमाल करिये। ये आप के जीवन को क्रांतिकारी रूप से बदलेगा।
इब्रानियों 12:2 में प्रभु यीशु को - विश्वास का कर्ता (author and finisher)- कहा गया है। जिसका अर्थ है। प्रभ यीशु पर हम जब भरोसा रखते हैं तो प्रभु कार्य करते हैं। और परिणाम (result) लाते हैं।
'नामधारी विश्वास' हमें अग्निकुंड में ले डूबेगा।
प्रभु यीशु ने कहा जब मनुष्य का पुत्र लौटेगा तो क्या इस पृथ्वी पर विश्वास (भरोसा) पाएगा। उसका उत्तर है 'नहीं'। लूका 18:8
क्यों? वो इसलिए कि उनका 'विश्वास नामधारी' होगा। लेकिन प्रभु यीशु पर भरोसा नहीं होगा।
आज सवाल है–
कहीं 'नामधारी विश्वास' लिए तो नहीं जी रहे?

25. नया जन्म - क्या अर्थ है?

कुछ वर्ष पहले एक छोटे से कस्बे में मेरी एक प्रार्थना सभा हुई। समाप्ति के बाद एक सज्जन से मुझे मिलाया गया। उनका परिचय ये था कि उन्होंने अपने जीवन की किसी समस्या से निकलने के उपाय के रूप में किसी तांत्रिक के कहने पर अपने दो छोटे बच्चों की बलि चढ़ा दी थी। सीधे बोलें तो दो कत्ल (double #murder) किया था।
बहुत साल सेंट्रल जेल में थे। मौत की सजा सुनाई गई, बाद में आजीवन कारावास में बदल गयी, और एक दिन वो जेल से बाहर आ गए।
बाहर आने के पहले जेल में किसी ने उसे बताया कि एक आदमी जिसने कत्लेआम किया था डाकू था, वो उसी दिन क्रूस की मौत मर रहा था जिस दिन प्रभु यीशु क्रूस पर चढ़े थे। उसे सरकार ने, समाज ने, परिवार ने और अदालत (कोर्ट) ने माफ नहीं किया था। उस दिन प्रभु यीशु के बाजू में क्रूस पर मरते हुए उसने यीशु से 'जीवन' मांगा था।
उसी वक्त प्रभु यीशु ने उसे क्षमा किया था। और प्रभु यीशु के साथ उसी दिन वो पहला व्यक्ति एक कातिल उसके साथ साथ स्वर्गलोक में पहुंच गया था।
ये सज्जन अपने खुद के 2 बच्चों का खून बहाने के बाद भी प्रभु यीशु से क्षमा और नया जीवन पाकर वापस अपने परिवार में लौट आया था। और आज आजाद था, आनंदित था।

(कुछ पंक्तियां मैंने लिखीं)
ये दाग जो लाल मेरे चेहरे पर हैं।
किसी और के नहीं, मेरे मासूमों के हैं।
ये चीखें जो आती हैं कानों में
कहती, कातिल हूँ मैं, कातिल हूँ मैं
मौत के फंदे से फिर भी निकल आया हूँ मैं
ले ली थी मेरी मौत, किसी और ही ने

प्रभु यीशु क्रूस पर मरे, और हम सब उसके साथ क्रूस पर मर गए। (ये हमारा विश्वास और भरोसा है)

क्योंकि वह हमारे पापों की सजा अपने ऊपर लेकर हमारी मृत्यु उठा रहा था। रोमियों 6:6

जब तक हम पाप के कारण अपनी आत्मा को मरा नहीं जानेंगे तब तक जीवित होने (नए जन्म) की जरूरत को क्यों चाहेंगे?

तो फिर अदन के बाग में हुआ क्या था?

अदन के बाग में कौन मर गया था? अच्छे और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल खाने से?

तो पहले मनुष्य की सृष्टि समझनी होगी

तीन भाग मनुष्य के हैं, जब परमेश्वर ने उसे अदन में बनाया।

1. **शरीर** - जिससे संसार को जाना जाता है। पांच इंद्रियां उसमें शामिल हैं (consciousness of the #world)

2. **प्राण** - जिससे हम अपने आप को जानते हैं, जरूरतों को पहचानते हैं। जैसे इच्छा, भाव, निर्णय, (consciousness of self & will, emotion, decisions)

3. **आत्मा** - जिससे परमेश्वर से रिश्ता होता है। जाना जाता है बातचीत, संगत, और प्रार्थना की जा सकती है। उसकी इच्छा जानी जा सकती है। (consciousness of #God)

तो अदन के बाग में शरीर नहीं मरा था, प्राण नहीं मरा था। लेकिन आत्मा का मरण हुआ था। (परमेश्वर ने कहा था जब तुम इस फल को खाओगे तो निश्चय मर जाओगे)

आत्मा हमारा वो भाग (अंग) था, जिससे हमारी संगति, बातचीत, सृष्टिकर्ता परमेश्वर से होती थी। परमेश्वर की इच्छा जानकर हम जीवन जी सकते थे।

आदम और हवा के साथ हम भी मर गए और परमेश्वर से टूटा जीवन जो मात्र शरीर और प्राण का था। पाप में जीते रहे।

''उसने तुम्हें भी जिलाया जो अपने पापों और अपराधों के कारण मरे हुए थे।'' इफिसियों 2:1

अपनी मुक्ति के लिए जब हम अपना भरोसा प्रभु यीशु पर लाते हैं तो वो अदन की मौत की घटना को पलट देता है।

अपनी आत्मा हमें देता है और हमारी आत्मा को जीवित करता है।

ताकि हम अब नया जीवन, परमेश्वर की आत्मा के द्वारा चलाये चलें। यूहन्ना 3

अच्छे और बुरे के शारीरिक ज्ञान से जीवन न चलाएं। यही बात उसने निकोदीमुस से कही। यूहन्ना 3:8

उसने कहा जो शरीर से जन्मा है वो शरीर (शरीर+प्राण) है। और जो आत्मा से जन्मा है वो आत्मा (शरीर + प्राण + आत्मा) है। यूहन्ना 3:6

कहने का मतलब यह है कि अपनी शक्ति से नया जीवन नहीं मिलेगा। परमेश्वर की आत्मा ही हमारी आत्मा को जीवित करेगा।

यही नया जन्म है। अपनी इच्छा नहीं पर हर समय परमेश्वर की इच्छा पर चलना। तो ये इच्छा कैसे मालूम होती है?

परमेश्वर के वचन की ज्योति, प्रभु यीशु के जीवन की ज्योति और घुटनों में प्रार्थना के समय पवित्र आत्मा का हमारे हृदय में राह दिखाने के द्वारा। हमारे विवेक के नये हो जाने के द्वारा।

उदाहरण के लिए, जब किसी का बड़ा एक्सीडेंट होता है और जब वो बाल बाल बच जाता है तो कहता है मुझे नई जिंदगी मिली है।

बिल्कुल यही अर्थ 'नए जन्म' का है।

क्या आप की गवाही ये है कि आप पापों में मरे हुए थे और नर्क के अग्निकुंड में दफनाए जाने के लिए ले जाए जा रहे थे, उस वक्त प्रभु यीशु ठीक समय पर आए और उन्होंने एक नई जिंदगी दान में दी है।

यदि ये गवाही आप भरोसे के साथ अपने अंदर रखते हैं। तो आप को मुक्ति प्राप्त हो गयी है।

मुक्ति प्रार्थना आप अभी कर सकते हैं।

''हे प्रभु यीशु हम विश्वास करते हैं कि आप का पवित्र लहू मुझ पापी की मुक्ति के लिए बहा था। मुझे पापों की क्षमा दो, अपनी आत्मा दो, नया जीवन दान करो। सच्चे ओर जीवित परमेश्वर बस आप ही हैं। आमीन''

आज सवाल है–

क्या आपका 'नया जन्म' हुआ है? या मात्र धार्मिक ईसाई जीवन है?

26. नहीं चाहिए ऐसी-आराधना

परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया था कि वेदी किस तरह बनानी चाहिए।
''और यदि तुम मेरे लिए पत्थरों की वेदी बनाओ, तो तराशे हुए पत्थरों से न बनाना; क्योंकि जहां तुम ने उस पर हथियार लगाया वहां तू उसे अशुद्ध कर देगा''-निर्गमन 20:25
वेदी क्या है - वेदी का अर्थ उस समय था ऐसा स्थान जहाँ पर पहुंच कर परमेश्वर से संबंध बनाया जाता था, आराधना की जाती थी, चाहे वहां बलिदान ही चढ़ाया जाए। (आज की तरह सब विश्वासियों के पास पवित्र आत्मा का दान नहीं था) या तो साधारण मिट्टी का ढेर हो या पत्थरों का चबूतरा (Platform) इसकी बनावट पर परमेश्वर ने सख्त निर्देश क्यों दिया।
क्यों कहा कि चाहे पत्थर किसी भी आकार के हों उन पर अपनी छेनी या हथौड़े का इस्तेमाल करके खूबसूरत बनाने का प्रयास न किया जाए।
आज वेदी कोई भवन, चर्च, या क्रूस लगा चबूतरा नहीं है, पर हमारा ''हृदय'' है।
परमेश्वर उसमें नकली सजावट, कपट, धोखा, और झूठ नहीं देखना चाहता है।
वो हमारी सच्चाई चाहता है, पारदर्शिता (Transparent) चाहता है।
या
कथनी और करनी में फर्क है। गीत तो गाते हैं, पर अपनी गायिकी और संगीत का प्रदर्शन अधिक है।
प्रभु यीशु से अधिक अपनी योग्यता ऊपर दिखाते हैं।
अपनी सेवा (Ministry) के द्वारा अपना नाम करते हैं अपनी संस्था (Organization) को ऊपर उठाते हैं।
यदि तुम अपने दिखावे, बुद्धि और काबिलियत (छेनी, हथौड़े) से आराधना करोगे तो तुम्हारी आराधना अस्वीकार होगी।
आज सवाल है-
क्या उसे आपकी आराधना स्वीकार्य है?

27. पान वाला

तो बस दौड़ता ही रह गया।
किस्सा 1953 का है, मेरे पिताजी ट्रेन में सफर कर रहे थे। (उनकी लिखी एक किताब में ये जिक्र है) भीड़ बहुत थी।
एक छोटा सा स्टेशन आया, छोटा सा प्लेटफार्म था।

चाय, समोसे वाले, मूंगफली, और पानवाले खिड़की से ग्राहकों को खोज रहे थे, चंद पैसे अपने परिवार के पेट पालन के लिए पाने के प्रयास में थे।
पिताजी के साथ बैठे लोगों में से एक साधूजी थे। उन्होंने एक पान खरीदा, लेकिन साधूजी पैसे निकालने में जानकर ढील करते रहे।
गाड़ी धीरे-धीरे रफ्तार पकड़ने लगी, लेकिन साधूजी के पैसे निकले नहीं, पान वाला बच्चा हाँफता, दौड़ता चिल्लाता ही पीछे छूट गया।
पिताजी ने साधूजी से सवाल किया—साधूजी आप कहाँ-कहाँ तीर्थ यात्रा पर जाकर आये हो?
बड़े उत्साह से साधूजी ने एक दर्जन से अधिक तीर्थ गिना दिये।
ट्रेन के डिब्बे में बैठे सभी यात्रियों के सुनते पिताजी ने कहा—महाराज जी, आपकी सारी तीर्थ यात्राएं आज बेकार हो गईं, क्योंकि आपके दिल में लालच और धोखा आया और आपने एक गरीब के पैसे लूट लिये।
सारे धरम-करम से आपका जीवन नहीं बदला।
(और वहां उस डिब्बे में बैठे सभी यात्रियों को पिताजी ने प्रभु यीशु में 'मुक्ति' और 'नये जीवन' का सुसमाचार सुनाया)
भगवाधारी साधू हो, सफेद चोगेधारी पादरी हो, हरी पगड़ी धारी मौलवी हो या आम आदमी हम सबकी यही कहानी है, बस जिक्र अभी तक नहीं हुआ है।
दूसरे यात्रियों ने हां में हां मिलाई।
''क्योंकि जो शरीर से जन्मा है वो शरीर है और जो आत्मा से जन्मा है वो आत्मा है'' यूहन्ना 3:6
आज सवाल है—
कहां कहां तक गए हो मुक्ति (पाप से) पाने के लिये?

28. परमेश्वर से व्यापारी रिश्ता (मरकुस 10:17-22)

एक धनी व्यक्ति, जो धार्मिक था और व्यवस्था को पूरा कर रहा था, लेकिन प्रभु यीशु के पास आकर निराश लौट जाता है
(क्योंकि प्रभु यीशु ने उससे कहा था, अपना सब कुछ बेच कर मेरे पीछे आ जाओ)
क्योंकि उसमें एक बात की कमी थी?
वह परमेश्वर से नहीं, धन से प्रेम करता था।
अपने धरम करम के बल पर मुक्ति पाना चाहता था।
प्रेम धन से था - और परमेश्वर से व्यापारी रिश्ता।

(क्योंकि उसका – धर्म व्यवस्था का पालन तो मात्र स्वार्थ था, बस नरक के कष्ट से बचने का उपाय था)
वह अपने कर्मों से मुक्ति खरीदना चाहता था।
(आप चर्च क्यों जाते हैं, अपने दिखावे के कर्म दिखाकर परमेश्वर से कुछ खरीदने तो नहीं जा रहे?)
उसके जीवन में परमेश्वर का रोल ही नहीं था।
'धन' था प्रेम नहीं था।
'क्रिया कर्म' था जीवन नहीं था।
प्रभु यीशु के पीछे चलने का मतलब है, उसके अलावा किसी और दिशा में नहीं चलना है, उसकी इच्छा पूरी करना है।
''हमारे कदमों को दिशा निर्देश – हमारा दिल देता है
जिस ओर हमारे कदम चलते हैं – वो हमारे दिल की चाहत को दिखाते हैं''
(परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया। अपने आप को कुर्बान कर दिया) प्रेम की कीमत धन, दौलत, जमीन, घर, सोना, चांदी, कपड़े या भोजन नहीं है।
प्रेम का जवाब प्रेम से ही दिया जा सकता है।
(ऐसा भी संभव है कि कोई व्यक्ति अपने माता-पिता से प्रेम न करे पर उनका हर खर्चा उठाता रहे)
बिना प्रेम का रिश्ता – व्यापार है।
इसी लिए प्रभु कहता है, ''तू प्रभु अपने परमेश्वर से, अपने सारे मन से, सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना''।
जिसका अर्थ है, परमेश्वर और हमारे प्रेम संबंध के बीच न हमारी स्वेच्छा की खाई हो, न ही हमारी अपनी समझ या शारीरिक, सामाजिक, भौतिक अवस्था की दीवार हो – मरकुस 12:30

आज सवाल है–

उसके प्रेम का जवाब, हमने कैसे दिया है?

29. परमेश्वर का राज्य धन और संपत्ति से नहीं बनेगा

मैं ऐसे भाई बहनों को उत्साहित करना चाहता हूँ जिन्हें न कोई जानें, न उन्हें पहचानें, न रास्ते में सलाम करें, न उन्हें अंग्रेजी आती है और न बड़े लोगों से मुलाकात है। और शायद वह निराश हो जाते हैं।
लेकिन स्वर्ग का पिता उन्हें प्रभु यीशु के द्वारा पहचानता है और उनके काम को सराहता

है। बाइबिल में परमेश्वर दुनिया के कमजोरों और निकम्मों को बहुतायत से इस्तेमाल करता है। परमेश्वर कमजोरों द्वारा शक्तिशाली को हराने में आनंदित होता है।

अतीत में प्रभु ने क्या कहा और किया -

• एक अकेले व्यक्ति और उसके परिवार का सारे संसार से सामना होता है। नूह का एक परिवार अकेले 100 साल तक बड़ी नाव बनाता है और परमेश्वर अपनी योजना पूरी करता है।

• अब्राहम बूढ़ा हो चुका था। जब परमेश्वर ने बुलाया तो नहीं जानता था किधर जाता है पर फिर भी निकल गया। (इब्रानियों 11:8)

• याकूब के घराने के 70 जन मिस्र पर छा गए।

• मूसा के हाथ में लकड़ी दिया और फिरोन के सामने भेजा। मूसा हकलाता था और बात करने के लिए हारून को इस्तेमाल करता था।

• गिदियन ने 300 लोगों के साथ एक लाख से बड़ी सेना को हराया।

• दाऊद के हाथ में पत्थर दिया और गोलियाथ और फिलीस्तिनी सेना को हराया।

• एलिय्याह नबी के सामने 450 झूँठे नबी हार गए। कौए को एलिय्याह नबी को रोटी देने के लिए इस्तेमाल किया और अकाल के समय विधवा का थोड़ा आटा और कुप्पी भर तेल कभी खत्म नहीं हुआ।

प्रभु यीशु ने कहा - हे छोटे झुण्ड मत डर -

• बस जहाँ 2 या 3 मेरे नाम से इकट्ठे हों वहाँ मैं मौजूद होता हूँ वो आ जाता है उसे बड़े संबंधों (कन्वेन्शन) या हजारों की जनता की मीटिंग का इंतजार नहीं होता।

• सिर्फ 12 चेलों से प्रभु यीशु ने अपना कार्य प्रारंभ किया।

• एक बच्चे की 5 रोटी और 2 मछली से उसने हजारों को खिलाया।

• यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जंगल में अकेला था। जिसे खाने पहिनने के लिए आम लोगों के सामान भी साधन नहीं थे।

• यूहन्ना चेला पटमोस के टापू में बुरे हाल में दुनिया से कटा हुआ था। काले पानी की सजा काट रहा था पर उसे ही यीशु द्वारा संसार और स्वर्ग के भविष्य को दिखने का जिम्मा दिया गया। यदि इंसान का बस चलता तो वो टी.वी., एडवरटाइजिंग और धन को इस्तेमाल करता।

परमेश्वर अपने आप को बच्चों पर प्रगट करता है क्योंकि वे आसानी से विश्वास कर लेते हैं। ज्ञानी इसलिए छूट जाते हैं क्योंकि वे विश्वास नहीं कर पाते लेकिन समझना चाहते हैं।

परमेश्वर ने कुचले, बंधुए, मूर्ख, नीच और चुंगी लेने वालों को चुन लिया और बाजारों व गलियों के टुंडे और लंगड़े, कंगालों और अंधों को चुन लिया। और जो अपनी सामर्थ

पर भरोसा रखते थे वे बाहर रह गए। (1 कुरिन्थियों 1:21)

आज सवाल है–

क्या आप कमजोर हैं? यदि हाँ तो अब आप प्रभु के लिए लायक हैं।

30. परमेश्वर का लंबा परिचय (introduction) दे रहे हो

या

उसकी महिमा कर रहे हो।

प्रभु यीशु की सम्पूर्ण जीवनी एक वाक्य में – ''मैं इसलिए आया हूँ कि पिता की इच्छा पूरी करूँ'' यूहन्ना 6:38

''मैं इसी कारण'' इस घड़ी (क्रूस की मौत) को पहुंचा हूँ, हे पिता अपने नाम की महिमा कर। यूहन्ना 12:27, 28

बाइबिल में कुछ ऐसे शब्द हैं जो रोजमर्रा के जीवन में लोग इस्तेमाल नहीं करते हैं जैसे महिमा, अनुग्रह, इत्यादि

महिमा का इस्तेमाल इंसान के लिए नहीं पर परमेश्वर के लिए होता है ।

हमें याद रखना है कि

- चर्च के कार्यक्रमों से परमेश्वर की महिमा नहीं होती है।
- हमारे जप करने से परमेश्वर की न तो महिमा होती है ना वो प्रसन्न होता है।
- उसकी महानता का बखान करते रहें, और लिस्ट बनाते रहें, इससे क्या होगा?
- और जो जीवन के छोटे बड़े काम वो चाहता है जो उसके पीछे हो लेने से होते हैं, क्या वो हम न करें?

क्या हम परमेश्वर के प्रशंसक (admirers) मात्र रह गए हैं?

परमेश्वर का जीवन जब हमारा भी जीवन बन जाता है, तब हमसे उसकी मर्जी पूरी होने लगती है।

पतरस के पास पहले शब्द थे बस नारे थे, पर जीवन नहीं था।

जब यूहन्ना 21 में उसने कहा मैं प्रेम करता हूँ तो उसका अर्थ था, जान देकर प्रभु की इच्छा पूरी करना।

- प्रेम का अर्थ है अपने आप (इच्छा) को अप्रिय जानना।
- अपनी इच्छा से जीने के अधिकार को छोड़ना।
- गेहूं के दाने की तरह मर जाना, और प्रभु की इच्छा पर चलकर बहुत फल लाना।

अपना इनकार करने के द्वारा अपना क्रूस उठाने के द्वारा हम अपनी स्वेच्छा का परित्याग करते हैं और परमेश्वर की मर्जी का जीवन अपनाते हैं। इसके द्वारा ही परमेश्वर प्रभु

कहलाता है।
प्रभु यीशु ने प्रार्थना की, हे पिता तू अपने नाम की महिमा कर, पिता ने जवाब दिया मैंने करी है और आगे भी करूँगा।
परमेश्वर को महिमा - ''मेरी नहीं पर तेरी इच्छा पूर्ण हो'' कहने से ही मिलती है।
आज सवाल है–
परमेश्वर की महिमा मुंह से हो रही है या जीवन से?

31. परमेश्वर हँसेगा

फ्रांस के प्रसिद्ध दार्शनिक और नास्तिक वोल्टेर ने - 1694-1778, में कहा था कि अगले 100 वर्षों में बाइबल का अस्तित्व खत्म हो जाएगा और कोई उसको नहीं पूछेगा।
लेकिन उसके मरने के 50 वर्ष के बाद जिनीवा बाइबल सोसायटी ने वोल्टेर का घर खरीदा और उसी के प्रिंटिंग प्रेस से हजारों बाइबल प्रिंट करना चालू कर दिया।
बाइबल का एक वचन मुझे याद आता है : ''वह जो स्वर्ग में विराजमान है, हँसेगा, प्रभु उनको ठट्ठों में उड़ाएगा'' भजन संहिता 2:4
जी हाँ इंसान की हर बगावत पर परमेश्वर को हँसी आती है।
एक और किस्सा है : रोमी साम्राज्य का निरंकुश महाराजा डाइयूक्लेशियन ने सन् 303 में सारे वचन-बाइबल, की प्रतियाँ जब्त करने का आदेश दिया था, लोगों के पास पूरी बाइबल तो नहीं रही होगी कुछ पृष्ठ या भाग मिला होगा। जिनके पास बाइबल के अंश मिले उन्हें भी यातनाएँ देकर मार डाला गया। हर जगह वचन को जलाया गया और इसके बाद उसने बाइबल की राख पर एक विजय का स्तंभ (पिलर) खड़ा किया, जिस पर लिखा था–मसीहियत का अस्तित्व मिटा दिया गया है।
परंतु इसके 20 वर्षों के बाद ही कॉन्स्टेंटीन राजा ने रोम का धर्म ही मसीहियत घोषित कर दिया और वचन फिर तैयार होने लगा और फैलने लगा।
उस समय के प्रभु यीशु के अनुयायियों ने कुछ बाइबल के अंशों के कारण अपनी जान गँवा दी थी और आज हमारे पास पूरी बाइबल होने पर भी हम उसकी कीमत नहीं समझते हैं। बाइबल के अलग-अलग वर्णन हैं, रंगीन पिक्चर बाइबल हैं, हर उम्र के लिए हैं परंतु जान देने की बात दूर है उसे पढ़ना भी नहीं चाहते।
परमेश्वर का वचन जीवित है, सत्य है और आत्मा है।
'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा'। मत्ती 4:12
'आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परंतु मेरी बातें कभी न टलेंगी'। मत्ती 24:35

'क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ-गांठ, और गूदे-गूदे को अलग करके, आर-पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है'।
इस वचन का अर्थ है–कोई बाइबल पढ़ने के बाद ये नहीं कह सकता है कि मुझे पाप और पवित्रता के बीच का अंतर नहीं मालूम पड़ रहा है।
आज सवाल है–
क्या परमेश्वर का वचन कीमती है?

32. पैसे जमा कर सकता हूँ

परमेश्वर के वचन सुना सुनाकर लोगों की जेब तक पहुंच सकता हूँ।
लेकिन चुप, इसलिए कि मुझे उस समय तक अधिकार नहीं है।
जब तक मैं अपना घर, अपनी जमीन, अपनी गाड़ी, अपने घर का सामान प्रभु यीशु के राज्य और जरूरतमंदों में खर्च न होने दूं।
हाँ लोग अक्सर पूछते हैं, कि मैं लोगों से प्रभु के कार्य के लिए पैसा, दान-दक्षिणा, दसवांश इत्यादि मुद्दों पर बात क्यों नहीं करता?
(''उनका ईश्वर पेट है। और पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं'' फिलिप्पियों 3:19)
आज सवाल है–
प्रभु यीशु का कार्य कहीं पैसे के इर्द गिर्द तो नहीं घूम रहा?

33. पीछे मुड़कर प्रभु यीशु ने क्या देखा (लूका 14:25-27)

एक बड़ी भीड़ चली आ रही है। प्रभु यीशु को बस देखना चाहते थे, उसके चमत्कार, इत्यादि (हेरोदेस भी देखना चाहता था कुछ चमत्कारों की झड़ी)।
पीछे आ रहे थे, अनुयायी नहीं थे। अनुयायी का अर्थ है, शिष्य, जो अपने गुरु की हर बात माने और उस पर चले। प्रभु यीशु भीड़ को देखकर उत्साहित या गर्व नहीं करने लगे।
आज की मसीहियत गिनती को अहमियत देती है। सभा में 50 आते हैं तो 100 बोल देते हैं, 200 आते हैं तो 500 बोल देते हैं, 1000 आते हैं तो हजारों बोल देते हैं। वो इसलिए कि इससे मीटिंग आयोजित करने वालों (organizers) और प्रचारक (speaker) का नाम होता है।

चलिये आगे देखते हैं। प्रभु यीशु ने भीड़ को निराश सा कर दिया। कहने लगे, यदि कोई मेरे पास आये, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चे और भाइयों और बहिनों को अप्रिय न जाने .....(यहां तक तो बात समझ में आती थी....)
पर वो आगे कहता गया, कि यही नहीं, पर ''अपने प्राण'' को भी ''अप्रिय'' न जाने तो मेरा चेला नहीं हो सकता (फिर वो कौन हो सकता है? मात्र एक ईसाई धर्म का रीति रिवाजों पर चलने वाला व्यक्ति... आत्मिक व्यक्ति नहीं)
उन्हें ''अप्रिय जानने'' का अर्थ है। उनकी ऐसी इच्छा जो परमेश्वर की इच्छा से मेल नहीं खाती है उसको नामंजूर करना, अप्रिय जानना।
शायद हम दूसरों की इच्छा को पहचानने में चतुर हैं। (दूसरों की आंख का तिनका हमें जल्दी दिखाई देता है, अपनी आंख का लट्ठा तो नजर ही नही आता।)
इच्छा करना = प्रेम करना (मोटे तौर पर आपको समझाने के लिए)
सबसे कठिन है 'अपनी इच्छा' को त्यागकर प्रभु यीशु की इच्छा जानना और उस पर चलना।
अपनी इच्छा को हमें क्रूसित करना है और अपने आप को हमेशा शून्य समझ कर नम्र बनकर जीना है।
इसीलिए उसने फिर कहा। 'अपना क्रूस'' उठाये और 'अपने अहं' का इनकार करे। मसीही जीवन क्रूस उठाकर प्रारम्भ होता है।

आज सवाल है–

किस को प्रिय जान रहे हो माता, पिता, पत्नी, बच्चे, भाई, बहिन या अपने आप को?

34. पवित्र आत्मा जीभ की शक्ल में आग बनकर क्यों उतरा?

कबूतर की तरह, दीपक की तरह, या फूल या फरिश्ते की शक्ल में आगमन क्यों नहीं हुआ। जीभ दिखने में कोई सुंदर अंग तो नहीं है।
सच तो ये है कि परमेश्वर मनुष्य के शारीरिक अंग का इस्तेमाल उस वक्त तक नहीं कर सकता है जब तक उसे आग में जलाकर शुद्ध न कर दे।
प्रभु यीशु के चेलों और अनुयायियों की भीड़ उसके स्वर्गारोहण के बाद 50वें दिन जिसे यूनानी भाषा में पेंटेकोस्ट कहते हैं। यरूशलेम के मंदिर में जमा थी।
साथ ही साथ हजारों तीर्थ यात्री भी सारे जगत से इकट्ठा थे। बहुत सी अलग-अलग भाषा बोलने वाले यरूशलेम में पेंटेकोस्ट का त्योहार मनाने आये थे।
प्रभु यीशु ने चेलों को उस समय तक प्रचार या सेवा करने से रोक रखा था जब तक उन्हें पवित्र आत्मा न मिले। प्रेरित 1:7 में लिखा है, ''जब पवित्र आत्मा तुम पर

आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे और पृथ्वी के छोर तक मेरे गवाह होंगे।''
पवित्र आत्मा के बिना हर कार्य नाकाम होता है। चाहे सांसारिक दृष्टि से कितना ही सफल दिखे।
यीशु के चेले, उसकी माता और कुल 120 जन उस अटारी में यरूशलेम में जमा थे। अचानक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, उससे सारा घर जहां वो बैठे थे गूंज गया।
और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं। और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। वे सब पवित्र आत्मा से भर गए।
बाइबिल में जीभ के बारे में इस प्रकार लिखा है।
जीभ एक छोटा सा अंग है। वह बड़ी बड़ी डींगें मारती है। जीभ भी एक आग है जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है। और सारी देह पर कलंक लगती है। और जीवन गति में आग लगा देती है और नरक कुंड की आग से जलती रहती है। जीभ को मनुष्यों में से कोई वश में नहीं कर सकता वह एक ऐसी बला है जो कभी रुकती ही नहीं, वह प्राण नाशक विष से भरी हुई है। याकूब 3:5, 6, 8
जो मुंह से निकलता है वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। मत्ती 15:11
यदि परमेश्वर का वचन सुनाना है, गवाही देना है और पवित्रता जीवन में पाना है तो हमारी शारीरिक जीभ को भस्म करना होगा।
प्रभु यीशु के हर विश्वासी का पवित्र जीवन उसके पवित्र बोल से प्रगट होता है।
यही कारण है कि पवित्र आत्मा सांकेतिक रूप में जीभ की शक्ल में, आग के रूप में प्रभु यीशु के चेलों और अनुयायियों के ऊपर उतरी ताकि वो शारीरिक जीभ को भस्म कर पवित्रता की जीभ से बातें करें।
प्रभु यीशु ने कहा जो मुंह से बाहर आता है वही मनुष्य की अशुद्ध करता है।

आज सवाल है–

हमारे शब्द या बोल से क्या ये लगता है कि पवित्र आत्मा की आग से शुद्ध किये हुए पवित्र वचन बोल रहे हैं?

35. प्रार्थना में घुटने टेकने का अर्थ

कई साल पहले की बात है मैं मुम्बई में रह रहा था। मेरे साथ मेरा एक मुस्लिम मित्र भी मेहमान था। कलीसिया के कुछ elders (वृद्ध) मुझे मिलने आये। जाते समय एक बुजुर्ग ने प्रार्थना की। सबने घुटने टेके और मैं और मेरा मुस्लिम मित्र

आंखें बंद कर खड़े हुए प्रार्थना में शामिल हुए।
प्रार्थना खत्म हुई। बुजुर्ग विश्वासी ने सबके सुनते हुए कहा कि हमें परमेश्वर के सामने घुटने टेकने में कभी शर्मिंदगी नहीं महसूस करनी चाहिए।
उस समय मैं एक सामान्य सा विश्वासी था और मुझे थोड़ा बुरा लगा। लेकिन पवित्र आत्मा ने मुझे बोझिल किया और बताया कि सच ही तो था मैं अपने मित्र का साथ दे रहा था। और घुटने टेकने में संकोच और शर्म महसूस कर रहा था।
परिणाम ये हुआ के इसके बाद जब भी घुटने टेक कर प्रार्थना करने का मौका होता है तो मैं प्रयास करता हूँ कि घुटने टेकूँ।
यहां मैं किसी की निंदा नहीं कर रहा। मैं एक बार शिमला के माल में स्थित 150 वर्ष पुराने चर्च (कलीसिया) में प्रचार कर रहा था। एक समय शिमला भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी (Summer Capital) अंग्रेजों के शासनकाल में हुआ करती थी। वहां चर्च में मैंने वाइसराय की आगे वाली बेंच देखी जो अधिक खूबसूरत और कीमती थी और घुटने टेकने के लिए महंगा मलमल का कपड़ा था।
सवाल है।
क्या हमारे कपड़े खराब होने कर डर है या घुटने में दर्द होने का भय, आखिर हम झुक किसके सामने रहे हैं?
क्या वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर नहीं जिसने अपने मुंह के वचन से सृष्टि रची?
बाइबिल में हर जगह प्रार्थना की मुद्रा घुटने पर दिखाई देती है। एक उदाहरण दानिय्येल का ही लें वो प्रधानमंत्री था।
बाबुल के 120 गवर्नर्स के ऊपर था। राजा दारा के बाद सारा साम्राज्य वही चलाता था। उसे फंसाने या दोषी साबित करने का किसी के पास कोई उपाय नहीं था। लेकिन दानिय्येल की पहचान उसके आत्मिक जीवन से थी।
वह दिन में 3 बार अपनी अटारी पर खिड़की का दरवाजा जो यरूशलेम की तरफ था उसे खोल कर रखता था और घुटने टेक कर प्रार्थना करता था। यही दानिय्येल की पहचान थी। इसीलिए उसे सिंहों की मांद में डाला गया। दानिय्येल 6।
सुलैमान राजा घुटने टेके और हाथ फैलाये परमेश्वर के सामने बैठता है। 1 राजा 8:54
आओ हम झुक कर दंडवत करें, और अपने कर्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें। भजन 95:6
प्रभु यीशु घुटने टेक कर प्रार्थना करते हैं। लूका 22:41
स्वर्ग में तो साष्टांग प्रणाम करते हुए सभी प्राणी प्रभु के सामने दंडवत करते हैं। प्रकाशितवाक्य 5:8-14
घुटने टेक कर प्रार्थना करने की मुद्रा क्या सिखाती है।

यही कि हम अपने आप को परमेश्वर की इच्छा के आधीन करते हैं।
फिलिप्पियों 2:10 में लिखा है कि स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल में सब यीशु के नाम पर घुटना टेकेंगे।
आज सवाल है–
क्या आज हम घुटने टेकेंगे?

36. प्रभु यीशु उद्घाटन में

प्रभु यीशु को अपने कार्यक्रमों के उद्घाटन के लिए बुलाना बंद करें।
आज मसीही जगत के बुरे हाल हैं। मसीहियत मात्र एक सामाजिक गतिविधि बन रही है। मसीह के नाम पर प्रोजेक्ट (योजना) बनाये जाते हैं, फिर मसीह यीशु को रिबन काट कर उद्घाटन के लिए बुलाया जाता है और आशीर्वाद माँगा जाता है।
यूहन्ना 5:30 का वचन याद आता है। यहाँ प्रभु यीशु कहते हैं ''मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता''
इसका अर्थ है, प्रभु यीशु इस संसार में जब मनुष्य रूप धारण करते हैं तो कोई भी काम या प्रोजेक्ट की योजना या शुरुआत खुद नहीं करते। जब तक पिता नहीं चाहें।
प्रभु यीशु ने कोई काम इसलिए नहीं किया क्योंकि उन्हें अच्छा लगा पर इसलिए कि पिता ने चाहा कि वह किया जाये।
वह आगे कहता है, ''मैं अपनी इच्छा नहीं परंतु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूँ।''
आज मसीही कार्य हमारे आर्गेनाइजेशन (संगठन) या चर्च के पैसे या बजट पर आधारित होता है।
काम प्रारम्भ करने से पहले हम परमेश्वर की योजना नहीं जानना चाहते हैं। शायद हम ये देखते हैं कि इसके लिए लोग पैसा देंगे या नहीं, हमारा नाम होगा या नहीं, या ये कि इससे हमारी इमेज या छवि बढ़ेगी अथवा नहीं।
हमारे पास कोई बोझ नहीं है बस सांसारिक सफलता चाहते हैं। प्रभु यीशु के सामने जब सारा शहर उमड़ आया था और उसके नाम की चर्चा और महिमा हो रही थी तो भी वो उसके बीच में ही उठकर पिता से प्रार्थना के लिए जंगल में चला जाता है। लूका 5:15–16 फिर लिखा है, उसने सारी रात पहाड़ पर प्रार्थना में बिताई। ताकि सुबह को अपने 12 चेले चुनने में पिता की अगुवाई मिले। लूका 6:12–13
अगर परमेश्वर के पुत्र को निर्णय लेने में इतनी अगुवाई और प्रार्थना की आवश्यकता है तो हमें कितनी है?

आज मसीही कार्य और योजनाओं (प्रोजेक्ट्स) के निर्णय घुटनों पर नहीं लिए जाते पर बोर्ड मीटिंग्स में और समर्थन (सपोर्ट) जुटाने के लिए देश विदेश में घूमते फिरते किये जाते हैं।

आज सवाल है–

कहीं आप प्रभु यीशु को अपने प्रोजेक्ट के उद्घाटन में तो नहीं बुला रहे?

37. प्रभु यीशु ''दो टुकड़े'' करता है

'जगत' जिसकी सृष्टि उस ही ने की।
सारे संसार से उसने अपार प्रेम भी किया।
लेकिन
'जब वो आया, तो इंसानों के बीच में जन्म तक नहीं लेने पाया, तब जानवरों के गौशाले में आया'।
उसने संसार के इतिहास के ''दो टुकड़े'' करे।
उसके आने के पहले BC (ईसा पूर्व) और जन्म लेने के बाद AD (आज 2017 साल हुए) पुराने और नए के बीच प्रभु यीशु दीवार खड़ी कर देते हैं।
इसी तरह अपना लहू बहाकर उसने हमारे 'पुराने पापी जीवन' और 'नए पवित्र जीवन' के बीच भी दीवार खड़ी कर दी है।

आज सवाल है–

क्या ये दीवार आपको अपने जीवन में दिखाई देती है?

38. बारह चेले कैसे चुने प्रभु यीशु ने?

''और उनसे कहा मेरे पीछे चले आओ तो मैं तुम को (मनुष्यों के पकड़नेवाले) बनाऊंगा'' मत्ती 4:19
जितना बड़ा गुरु होगा उसी के हिसाब से उसके चेले भी होते हैं। (सांसारिक दृष्टिकोण)
सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु इस संसार में आते हैं और उन्हें 12 शिष्यों की जरूरत है तो कैसे चुनाव किया जाए?
आजकल सुना है एक छोटी सी नौकरी के लिए भी 3 इंटरव्यू होते हैं। यदि मनुष्य की बुद्धि, सांसारिक ज्ञान और तौर तरीके देखे जायें तो प्रभु यीशु का एक शिष्य

शायद हारवर्ड (USA) का पढ़ा लिखा वैज्ञानिक होता, कोई शायद किसी नामी आश्रम का महंत होता, कोई बहुत सी किताबें लिखने वाला ज्ञानी होता, तो कोई नोबल शांति पुरस्कार पाया हुआ व्यक्ति होता।

कुछेक अमेरिका से तो कुछ यूरोप से तो कोई भारत या चीन से होता। वो इसलिए कि प्रभु यीशु जो सृष्टिकर्ता हैं उनके शिष्य बनने के लिए तो बहुत बड़ी योग्यता होनी चाहिए।

उन्हें कई भाषाओं में लिखना पड़ना भी आना चाहिए। बोलने की योग्यता, और प्रार्थनाओं में आगे, और मंदिर में आध्यात्मिक स्तर तो होना ही चाहिये।

पर यहां तो नजारा कुछ और ही है।

गांव के कुछ अनपढ़ से लोग जिनकी भाषा भी संवरी हुई नहीं थी। पढ़े लिखों के बीच बोलने लायक भाषा नहीं थी।

तो कौन थे वो? छोटे रोजगार में थे। कुछ मछुआरे थे। आत्मिक योग्यता तो दूर की बात, उन्हें तो छोटी सी प्रार्थना करना भी नहीं आता था। शिष्यों का चुनाव कैसे हुआ? प्रभु यीशु झील के किनारे चल रहे थे और कुछ शिष्य उन्हें वहीं मिल गए। आसपास चंद घंटों के अंदर ही उसके बारह शिष्यों का चयन हो गया।

तो सवाल ये है कि उसने इन गंवार से लगने वाले लोगों को अपना शिष्य बनाया क्यों?

क्या वे उसके, इस निर्देश का पालन बखूबी निभा सकेंगे जो उसने उन्हें दिया था कि सारे जगत में जाकर लोगों को मुक्ति और प्रेम का शुभ सन्देश सुनाओ?

क्या काबिलियत प्रभु यीशु ने इन शिष्यों में देखी थी?

सच तो ये है कि प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों का चयन उनकी योग्यता पर नहीं किया पर उनके जीवन को जीवित, और पवित्र आत्मा से भरने की अपनी सामर्थ के कारण किया।

कोई भी काबिलियत इन में नहीं थी। फिर हुआ क्या था ?

प्रभु यीशु ने उन्हें बुलाया था और एक वादा (आफर) दिया था।

वो ये कि, मेरे पीछे आओ और 'मैं' तुम्हें 'बनाऊंगा'। मत्ती 4:19

चुनते समय भले ही वे निकम्मे ओर नालायक रहे होंगे। पर प्रभु यीशु के पीछे आये तो उसने उन्हें अपनी पवित्र आत्मा का दान दिया और ऐसा बना दिया कि उन्होंने संसार को उथल-पुथल कर दिया और प्रभु यीशु कि गवाही देते-देते वे सब शहीद भी हो गए।

ये प्रभु यीशु द्वारा पढ़ाये सिखाये जाने से शिष्य नहीं बने। पर प्रभु यीशु के पीछे

चलकर उसकी आज्ञा मानकर लायक और सामर्थी बने। यूहन्ना 12:26

आज सवाल है–

क्या प्रभु यीशु ने आपको अपने पास बुलाकर, आपको बनाया है?

39. बुरा लगता है न ?

जब प्रभु यीशु कहते हैं। मेरा लहू पीना पड़ेगा। और मेरा बदन खाना पड़ेगा। तभी तुम्हारे पास जीवन होगा।

सही है।

फरीसियों और भीड़ को भी बुरा लगा था।

फरीसियों के साथ एक बहुत बड़ी भीड़ प्रभु यीशु के पीछे आ रही थी। उसकी बातों से प्रभावित थी। खुश थी। चमत्कार उन्हें अच्छे लग रहे थे।

बीमारों की चंगाई अच्छी लग रही थी। पांच रोटी और दो मछली से हजारों ने खाया था। अच्छा लग रहा था। गर्मजोशी का माहौल था।

इस बीच प्रभु यीशु ने एलान किया कि ''जीवन की रोटी में हूँ'' यूहन्ना 5:35

इसके बाद कुछ ऐसा लगा कि प्रभु यीशु ने माहौल बिगाड़ सा दिया। उसने जब कह दिया कि ''जब तक तुम मेरा लहू नहीं पीओगे ओर मेरा मांस नही खाओगे तब तक तुम्हारे पास जीवन नहीं है'' यूहन्ना 6:51-57

सभा के बाद में चेले प्रभु यीशु के पास अकेले में आये और अपनी असहमति दिखाई। बोले गुरुजी आपकी बातें कुछ सही नहीं लगीं, शब्दों का चुनाव ठीक नहीं था। आपकी बातें कुछ पसंद नहीं आई लोगों को क्या जरूरी था ऐसे शब्दों का प्रयोग? अब बहुत लोगों ने हमारे साथ जुड़ने का इरादा बदल दिया है। (मैंने भाग को समझने के लिए सरल करके लिखा है)

ये मांस और लहू के खाने पीने की बातें सही नहीं लगीं। ये लोग तो हम से खुश थे। हमारे साथ मिलने वाले थे। हमारी संख्या और सहयोग बढ़ जाता लेकिन आज की इस सभा ने सब बिगाड़ दिया है।

चेलों की नजर में संख्या महत्वपूर्ण थी।

फरीसियों और शहर के बड़े लोगों और भीड़ का जुड़ना उनके लिए महत्वपूर्ण था।

प्रभु यीशु की प्रतिक्रिया क्या थी?

उसने चेलों को नजदीक बुलाकर कहा। यदि तुम भी मुझे छोड़कर जाना चाहते हो तो जा सकते हो।

यूहन्ना 6 अध्याय के प्रारंभ में एक बड़ी भीड़ साथ थी जो अंत में घटकर बस दर्जन भर रह गयी। वास्तव में उसके बोलने का अर्थ ये था कि तुम्हें मेरी आज्ञाओं को मानना पड़ेगा और परमेश्वर की इच्छा पूरी करनी होगी। जिस तरह भोजन शरीर का अंग हो जाता है उसी तरह परमेश्वर की इच्छा हम करते हैं तो हम परमेश्वर का जीवन रखते हैं। यूहन्ना 4:34, में प्रभु यीशु ने यही तो कहा था, ''मेरा भोजन ये है कि मैं अपने भेजने वाले की इच्छा के अनुसार चलूं। और उसका काम पूरा करूँ।''
आज कलीसियाओं में भीड़ बढ़ाने के तरीके ढूँढे जाते हैं भले ही इसके लिए कटु सत्य को ही क्यों न शहीद करना पड़े।

आज सवाल है–

क्या यीशु का मांस खा रहे हैं और उसका लहू पी रहे हैं?
या आपको भी बुरा लगा?

40. बिना कान के मनुष्य

कान है पर सुनाई नहीं दे रहा
आंख है पर दिखाई नहीं दे रहा
ज्ञान है पर समझ नहीं आ रहा

प्रभु यीशु अक्सर कहा करते थे। जिसके कान हों वो सुन ले। (क्या बिना कान के मनुष्य वहां थे?)

परमेश्वर बहिरों को बहिरा नहीं कहता है। पर उनको जो सुनते हैं, पर अनसुनी कर देते हैं। परमेश्वर अंधों को अंधा नहीं कहता है, पर उनको जो देखते हैं पर अनदेखी कर देते हैं। परमेश्वर ज्ञानियों को ज्ञानी नहीं कहता है। जो ज्ञान से परमेश्वर को पाना चाहते हैं पर मूर्ख कहलाते हैं।

परमेश्वर उन मूर्खों को बुद्धिमान कहता है, जो परमेश्वर को बातों पर भरोसा कर, उसे जान गए हैं।

यूहन्ना 9:39, मरकुस 8:17-18, 1 कुरिन्थिओं 1:18-25

हमारी आंख, कान, व ज्ञान परमेश्वर का वचन है। यदि हम वचन के अनुसार नहीं जी रहे हैं तो परमेश्वर से हमारा रिश्ता टूटा हुआ है।

आज सवाल है–

क्या कान हैं? आंख है? ज्ञान है?

41. भूखे

'भूखे', कमजोर, कंगाल और फटेहाल कुछ लोगों की भीड़ जमीन पर सिर झुकाए एक छोटे से रेस्टोरेंट के सामने एक तंग गली में बैठी थी।
हम अपनी प्रार्थना यात्रा के दौरान तुर्कमान गेट के पास जो पुरानी दिल्ली के दक्षिण में है, जा रहे थे। हम चांदनी चौक की गलियों से गुजरते इंडिया गेट की ओर बढ़ रहे थे। अचानक रास्ते में इन लोगों की भीड़ को देखा। इनके चेहरे दुखी, निराश और किसी दयालु व्यक्ति को ढूंढ रहे थे, जो इनकी भूख मिटा सके।
देखने से लगता था, ये जिंदगी के ऐसे मकाम पर पहुंच गए थे जहाँ इस बड़े शहर में आकर सब खो बैठे।
शायद जब अपने परिवार को छोड़कर आये थे तो कुछ उम्मीदें थीं।
हम रुके इन्हें देखकर दिल दुखा, और हमने प्रेम से भरकर प्रभु यीशु के नाम का आशीर्वाद दिया और भोजन खिलाया।
क्या हमें याद नहीं कि एक समय हम भी दुखी, निराश, और रोते हुए बैठे थे, जीवन से हार चुके थे और किसी ऐसे मुक्तिदाता की आस देख रहे थे जो हमारे पाप की कीमत अदा करे? हमें नई जिंदगी का मौका दे?
''दाम देकर मोल लिए गए हो'' 1 कुरिन्थियों 6:20
''यीशु मसीह जो हम से प्रेम रखता है, और जिसने हमें अपने लहू के द्वारा छुड़ाया है'' - प्रकाशिवाक्य 1:5
आज सवाल है–
क्या हमारे व्यक्तिगत मुक्ति की कीमत अदा हो चुकी है?

42. मजदूर नहीं मैनेजर हैं

मैं अक्सर मसीही कार्यकर्ताओं और पास्टरों से मिलता हूँ जो शिकायत करते हैं कि सेवकाई तो हम कर रहे हैं पर फल नहीं आ रहा है।
नीचे प्रभु यीशु द्वारा कही गयी बात स्मरण करें।
''उसने अपने चेलों से कहा, पके खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं।
इसलिये खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिये मजदूर भेज दे।'' मत्ती 9:37-38
- पके खेत वो हैं जहाँ कटाई बस होना है।

- सब खेत पके नहीं होते हैं।
- पर बहुत से खेत हैं जो पके हैं।
- इन खेतों की खबर खेत के मालिक (परमेश्वर) को है।

आज बहुत से लोग खेत काटने तो पहुंचे हैं पर वो मजदूर नहीं है मैनेजर हैं।
और हाँ आज बहुत से मजदूर बिना मालिक के जाने ऐसे खेतों में कटाई के लिए पहुंचे हुए हैं जो न तैयार हैं और न जहाँ फसल ही है। बस मन की मर्जी चल रही है।
क्या धान को काटने रेगिस्तान या पहाड़ पर जाएंगे या नारियल हिमालय या बर्फीले इलाके में लगेंगे?
तो फिर प्रभु का काम (कटाई) अपनी मर्जी और पसंद से ऐसी जगहों में क्यों करते हैं जिसे फसल के स्वामी ने काटने को नहीं भेजा है?
योना का खेत तरशीष था, परमेश्वर का खेत नीनवे था।
तो फिर उपाय क्या है?
बस प्रार्थना करें और पूछें स्वामी से फसल और कटाई के बारे में। घुटनों पर जवाब मिलता है।

आज का सवाल है–

कहीं किसी खेत को प्रभु का (पका हुआ) समझ कर हम अपनी अकल लगाते हुए अपने प्रयास से मेहनत तो नहीं कर रहे?
गलत समय, गलत जगह और गलत तरीका। काम न आये।

43. मुँह में यीशु, बगल में छुरी

मेरे इस मुहावरे को सुनकर आपके मुँह में कुछ और आ रहा होगा, लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप हिंदी के इस नए मुहावरे को सीख लें।
आज मसीही जीवन की बोल और चाल में दुनिया को अंतर दिखता है।
बाइबल में लिखा है, अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे। क्योंकि मनुष्य भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना। - 2 तीमुथियुस 3:5
प्रभु यीशु अपने आप को मसीही कहने वालों से कहते हैं, जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, क्यों कहते हो? - लूका 6:46
प्रेरितों के काम में लिखा है, परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।

तुम पवित्र आत्मा पाओगे तो सामर्थ पाओगे और जगत के छोर तक मेरे गवाह ठहरोगे। प्रभु यीशु के जीवन और सामर्थ के गवाह - सभाओं (मीटिंगों) में चिल्लाने के द्वारा गवाह नहीं बनते हैं पर प्रभु यीशु अपनी आत्मा की मौजूदगी के द्वारा उनके जीवन में हर समय प्रगट होते हैं।

सच तो कहा था प्रभु यीशु ने, जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी। यूहन्ना 7:38

आज सवाल है–

कहीं मुँह में यीशु और बगल में छुरी का नया मुहावरा हमारे जीवन की ओर इशारा तो नहीं करता है?

44. मैं उसे नहीं जानता - लूका 22:57

उस काली रात को जब गतसमने के बाग में डरे और थके हुए चेलों के साथ प्रभु यीशु अपनी अंतिम रात परमेश्वर पिता के साथ विनती और प्रार्थना में और पिता की इच्छा में अपने जीवन समर्पण कर रहे थे। तो उसके चेले सो रहे थे, 3 बार वो उनके पास आया प्रार्थना और जागते रहने का आग्रह किया लेकिन वे सोये रहे। मत्ती 26:36-46

कारण क्या था? समय की गंभीरता और प्रभु यीशु की मुक्ति योजना को समझ नहीं पा रहे थे। लेकिन जब फरीसी और उनके रोमी सैनिक लाठी, खंजर, भाले और भीड़ लेकर पहुंचे तो तलवारें चल गयीं।

तलवार चला कर और अंधेरे में पीछे-पीछे कैफा महायाजक के भवन तक पहुंच कर शायद पतरस सोच रहा था कि मसीह के पीछे चलना यही है।

उस समय सवाल पूछा गया क्या तू भी उनमें से एक है?

जवाब - मैं उस आदमी को नहीं जानता।

लेकिन प्रभु यीशु की आंखों ने मुड़कर कहा कि तीन बार मुझे न जानने की कसम खाने के बावजूद मैं तुझे जानता हूँ। और जगत की उत्पत्ति से पहले जानता हूँ।

आज लाखों विश्वासी हारा हुआ मसीही जीवन, डर और शर्म संकोच का जीवन जी रहे हैं। सांसारिक गतिविधियां, सामाजिक कार्य, व्यवसाय और अपनी व्यस्तता के पर्दे के पीछे छिपे रहते हैं।

आज भारत उस यीशु मसीह को ढूंढ़ रहा है जो जमीन पर बैठकर अपने शिष्यों के पांव धोता है।

कोढ़ियों को गले लगाता है। नीच जाति मानी जाने वाले सामरिओं के घर में रहता है। वह

जो कंगाल बनकर कुचले, बंधुओं और अंधों के पास आया है।
जिसने दुश्मनों के लिए अपने प्राण दिए। शत्रुओं से प्रेम रखने का आदेश दिया। कहा जो श्राप दे उनको आशीष दो, जो सताएं उनके लिए प्रार्थना करो।
लोग हमसे जानना चाहते हैं और हम अपनी कथनी और करनी और मौन से दिखाते हैं कि हम उसे जानते ही नहीं।
यदि भारत में जीवित यीशु की खुशखबरी घर-घर तक लाना है तो शर्म और डर को दूर करना होगा। और ये हमारी ताकत से नहीं पर पवित्र आत्मा की भरपूरी से होगा।
''जब पवित्र आत्मा आएगा तो तुम सामर्थ पाओगे और मेरे गवाह ठहरोगे।'' - प्रेरित 1:8
आज सवाल है-
क्या तुम भी यीशु के साथ रहने वालों में से एक हो?
या यीशु को बस हम चर्च (कलीसिया) के अंदर, अपने घर में, चमत्कारी महासभाओं में ही जानते हो?

45. मैं नही हूँ

कभी लोग मेरे बारे में भी जानना चाहते हैं, कि आखिर मैं हूँ कौन?
बिशप हो? पास्टर हो? प्रचारक हो? किस संस्था से जुड़े हो?
क्या मसीही शिक्षा (doctrine) को मानते हो? किस मसीही संप्रदाय (denomination) के हो? या फिर बेरोजगार हो?
सुनिये, मेरी मसीही शिक्षा (doctrine) ये है कि मैं बाइबिल में लिखी हर बात पर विश्वास करता हूँ और मेरा भरोसा परमेश्वर पर है।
साधारण सी बात मुझे समझ में आती है जो प्रभु यीशु ने कही, ''यदि कोई मेरे पीछे आये तो अपने आप का इनकार करे, और अपनी सलीब हर दिन उठाये।'' लूका 9:23
वह शून्य बन गया था। फिलिप्पियों 2:7
यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का जवाब तो सही था।
यूहन्ना 1:19-23
यहूदी धार्मिक के लोग उनके पास आये और पूछने लगे। आप हो कौन?
क्या मसीह हो? उसने कहा, मैं नहीं हूँ।
क्या एलिय्याह हो? उसने कहा, मैं नहीं हूँ।
तो क्या वो भविष्यद्वक्ता हो? उसने कहा, मैं नहीं हूं।
तो फिर आप हो कौन?

आसानी से लोग यूहन्ना का पीछा छोड़ने को तैयार नहीं थे।
वो चाहते थे कि एक आजाद व्यक्ति को किसी न किसी तरह चार दीवारी में वर्गीकृत करें और फिर उसका विरोध करें और सताएं।
तब यूहन्ना का जवाब आता है। बस मैं एक 'आवाज' (voice) हूँ।
आज यदि हम शून्य बनकर बस एक आवाज रह जायें तो कैसा होगा?
आज संसार में 'मैं कुछ भी नही हूँ' बोलना एक कमजोरी माना जाता है लेकिन प्रभु यीशु की यूहन्ना के बारे में गवाही थी, कि 'स्त्रियों से जन्मे लोगों में यूहन्ना से बड़ा कोई नहीं था।'
आज सवाल है–
आप हैं कौन?

46. मैं भी रोया

हजरतबल (श्रीनगर कश्मीर) के बाहर मैं खड़ा हुआ था।
रास्ते के पास के द्वार (गेट) की सलाखों को पकड़े एक महिला जोर से चिल्लाकर रोने लगी, और अपने दर्द की दास्तान बोलती रही।
उसका दर्द, दुख क्या था, उसके परिवार का कोई बच्चा हिंसा में मारा गया, शायद विधवा थी, उसके ऊपर गरीबी, असहाय अकेली उसके आंसुओं के पीछे की सब तस्वीरें मेरी आँखों के सामने आयीं।
मुझे याद आया, वो मौका जब लाजर कब्र में दफन था, मार्था और मरियम ने आंसुओं के साथ शिकायत की थी, कि "यदि तू यहां होता तो मेरा भाई ने मरता।" सच ही तो कहा था उन्होंने, लेकिन सब लोग जब रो रहे थे, और उनके सामने छाती पीट कर मातम कर रहे थे तो, प्रभु यीशु के शब्द किसी को सुनाई न दिए हों?
जब उसने कहा,
"पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा, और जो कोई जीवित है, और मुझ पर विश्वास करता है वो अनंतकाल तक न मरेगा।" यूहन्ना 11:25, 26
उस समय यीशु क्यों रोया?
उसे तो मालूम था कि चंद मिनटों में लाजर को वो जीवित करेगा। लेकिन यहां प्रभु यीशु लोगों की असहाय स्थिति, अंधापन, निर्बलता, अज्ञान, दुख, दर्द और परमेश्वर से संबंध रहित जीवन को देखकर रोये थे।

'जीवनदाता सृष्टिकर्ता' उनके सामने खड़ा था, फिर भी वे उसे देख नहीं पा रहे थे। (कितने दुख की बात है)
मनुष्य की इस दर्दनाक अवस्था को देख प्रभु यीशु रो पड़े।
(बिन चरवाहे की भेड़ें, मत्ती 9:36)
'मैं इसलिए रोया' क्योंकि मैं जानता था, प्रभु यीशु ने कहा ''द्वार मैं हूँ'' पर ये महिला उस द्वार तक नहीं पहुंच पाई थी। काश ...
आज सवाल है–
आप कब रोते हैं?

47. मार खाते खाते मर गए

नये नियम में विश्वासी अपनी रक्षा या बचाव की प्रार्थना करता हुआ नजर नहीं आता है। (उन्होंने अपना छुटकारा न चाहा। इब्रानियों 11:35–39)
(जैसा कि पुराने नियम में हर जगह दिखाई देता है)
जो पुराने नियम की ''रक्षा या बचाव'' की प्रार्थनाएं हैं वो नये नियम के ''पाप, संसार, व शरीर'' पर विजय की प्रार्थना की - आत्मिक तस्वीर है।
प्रभु यीशु ने पतरस के भविष्य के बारे में कहा था कि ''शैतान ने तुम लोगों को मांग लिया है ताकि गेहूं की तरह फटके (सताव लाये), पर मैंने तुम्हारे लिए विनती की है कि तुम्हारा 'विश्वास' जाता न रहे'' लूका 22:31–32.
पतरस के 'शरीर' को नहीं बचाना है, पर उसके 'विश्वास' को बचाना है।
'शरीर' की अब कीमत नहीं है, हमारी 'आत्मा' की कीमत है। यूहन्ना 6:63
पुराने नियम में अधिकतर देखा जाता था कि शारीरिक शक्ति, धन और बल द्वारा परमेश्वर की आशीषें नापी जाती थीं। लेकिन नये नियम में आशीषें ''आत्मिक जीवन की उन्नति'' हैं। ''धन्य है वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी न ठहराए।'' रोमियों 4:8
पौलुस कहता है, मैं संसार के लिए क्रूसित हुआ और संसार मेरे लिए क्रूसित है। गलातियों 6:14
इब्रानियों की किताब 11 अध्याय में परमेश्वर पर विश्वास (भरोसा) करने वालों की लिस्ट है।
पहले पद 1–34 तक पुराने नियम के उन संतों की लिस्ट है। जिन्होंने परमेश्वर पर भरोसा रखकर संसार में, युद्ध विजय, संतान प्राप्ति, अग्नि विजय, सिंहों के मुंह बंद किये, इत्यादि।

लेकिन पद 35 से 39 तक हम एक दूसरी लिस्ट देखते हैं जहां किसी का नाम नहीं लिखा है (ये नये नियम के विश्वासियों की लिस्ट है) पर उनकी खासियत ये है कि इन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया, और सताव स्वीकार करके और अपनी जान गंवाकर विजय प्राप्त करी।
कोड़े खाये, कैद हुए, पत्थरवाह किये गए, आरे से चीरे गए, जंगलों में भेड़ बकरियों के खालें पहने भटके। मार खाते खाते मर गये। और छुटकारा न चाहा।
पुराने नियम का व्यक्ति जान बचाना चाहता था। लेकिन नये नियम का व्यक्ति क्रूस उठाकर चलता है। और अपने प्राण खोकर जीवन प्राप्त करता है। यही अंतर है पुराने नियम के जीवन में ओर नये नियम के जीवन में।
प्रभु यीशु कहते हैं, संसार में तुम्हें दुख संकट आएंगे, व्याकुल न हो मैंने जगत को जीत लिया है। यूहन्ना 16:33
कैसे जीता? जान बचाकर नहीं, जान देकर।
लिखा है संसार उनके लायक नहीं था (इसका अर्थ है, संसार की किसी भी चीज की उन्हें चाहत नहीं थी) यही मसीही जीवन होना चाहिए।
यदि आज हमें प्रभु यीशु की महिमा दिखाई देगी, तो संसार की हर वस्तु नाचीज लगेगी।
शारीरिक दुख निवारण ही हमारा पहला उद्देश्य नहीं है।
शैतान पर विजय और परमेश्वर की इच्छा पूरा करना हमारे जीवन का मकसद है।
आज सवाल है–
क्या आपके नजरिये में संसार क्रूसित है?

48. मौत से मुनाफा

दो विपरीत (opposite) सोच
फरीसी धर्मगुरुओं की सोच
प्रभु यीशु के साथ-साथ लाजर को भी कत्ल करेंगे। नहीं तो सारा जगत उसके पीछे चल पड़ा है, और उस पर विश्वास कर रहा है। (उसके पंथ का नाश करेंगे)-यूहन्ना 12:10, 11,1 9
इसके विपरीत (opposite view)
'प्रभु यीशु की सोच, जब गेहूँ का दाना (यीशु, विश्वासी) मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।

मैं ऊंचे पर चढ़ाया (क्रूस की मौत) जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींचूंगा (बहुत विश्वास लाएँगे) - यूहन्ना 12:24, 32

आज सवाल है–

क्या 'जान देने' के मुनाफे को समझ रहे हैं?

(धर्म परिवर्तन का सवाल?)

49. मुक्ति चाहिये है, धर्म नहीं

क्या मुझे धर्म परिवर्तन करना होगा?

किसी ने मुझ से सवाल किया था

मैं मोक्ष पाना चाहता हूँ मुझे क्या ईसाई बनना पड़ेगा?

मेरा जवाब

हमें क्या चाहिए धर्म या मुक्ति (मोक्ष)?

यदि धर्म चाहिए तो वो प्रभु यीशु के पास नहीं है।

यदि मुक्ति चाहिए तो प्रभु यीशु बुलाते हैं

प्रभु यीशु ने कहा–मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूँ यूहन्ना 14:6

ये धर्म का चुनाव नहीं है। ये मोक्ष मार्ग का चुनाव है, सत्य का चुनाव है, मृत्युंजयी जीवन का चुनाव है।

प्रभु यीशु ने मत्ती 23:15 में यहूदी धर्म गुरुओं से कहा, तुम समुन्दर पार एक व्यक्ति का धर्म परिवर्तन कराने जाते हो और उसे अपने आप से दो गुना अधिक नारकीय बना देते हो. मोक्ष तो दूर है उसकी आत्मा भी नष्ट हो जाती है।

इसका अर्थ है प्रभु यीशु ने धर्म परिवर्तन का काम नहीं सिखाया

ऐसा क्यों?

वो इसलिए की धर्म, मनुष्य द्वारा मुक्ति पाने का असफल प्रयास है।

लेकिन यदि परमेश्वर स्वयं हमारे बीच में मुक्ति देने आ जाते हैं तो हमें धर्म नहीं चाहिए, मार्ग, सत्य और जीवन चाहिए

धर्म के पहले परमेश्वर है, और धर्म व संसार के अंत हो जाने पर भी परमेश्वर अस्तित्व में रहेंगे।

ईसाई धर्म प्रभु यीशु ने प्रारंभ नहीं किया

प्रभु यीशु के बलिदान और स्वर्गारोहण के 300 साल बाद ये महाराजा कोंस्तांतिने ने बनाया।

बाइबिल में धर्म शब्द नहीं है न ही प्रभु यीशु ने इस शब्द का प्रयोग किया है।

बाइबिल धर्म शास्त्र नहीं है पवित्र शास्त्र है।
प्रभु यीशु आप को धर्म में नहीं बुलाते हैं पर मुक्ति दान देने के लिए अपने पास बुलाते हैं और कहते हैं - मोक्षमार्ग, सम्पूर्ण सत्य और मृत्युंजयी जीवन में हूँ।
धर्म के ठेकेदारों को उन्होंने कपटी कहा
ये जो शिक्षा देते हैं उस पर खुद अमल नहीं करते
रीतिरिवाज और त्योहारों पर जोर देते हैं लेकिन सत्य को लोगों से छिपा कर रखते हैं धर्म ग्रन्थ का पाठ और रटीरटाई प्रार्थना, शारीरिक प्रयासों से आत्मिक मुक्ति दिलाने का झूठा वादा करते हैं।
प्रभु यीशु ने कहा मुक्ति के लिए परिश्रम करने वालो और पाप के बोझ से दबे हुए लोग मेरे पास आओ में तुम्हें मोक्ष दूंगा।
धर्म परिवर्तन नहीं करिये, लेकिन मोक्ष अवश्य प्राप्त करिये
धर्म अनेक हैं पर मोक्षदाता बस एक हैं–प्रभु यीशु।
आज सवाल है–
धर्म चाहते हो या मुक्ति?

50. मनुष्य का पुत्र

प्रभु यीशु ने अपना क्या 'नाम' पसंद किया?
क्या आपने इस बात पर गौर किया है कि प्रभु यीशु अपने आपको कैसे संबोधित करते थे।
जी हां - ''मनुष्य का पुत्र''
''मनुष्य का पुत्र'' - 69 बार सुसमाचार में आया है।
आखिर इसका मतलब क्या है। सर्वशक्तिमान सनातन परमेश्वर का पुत्र जिसने अपने वचन की सामर्थ से सारी सृष्टि/ब्रह्मांड की रचना करी और अपने वचन की सामर्थ से उसे थामे हुए है। इस संसार में आते हैं और छोटे से छोटे मनुष्य से संगत चाहते हैं। (जैसा मसीह यीशु के स्वभाव था। वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। उसने अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया और दास का स्वरूप धारण किया। और मनुष्य की समानता में हो गया। फिली. 2:5, 7)
यही कारण था कि वो:
- गांव व छोटी बस्तियों में रहा।
- दुखी, बीमारों, लाचारों के पास गया।

- गरीबों की शादियों में गया।
- गांव में टेबल और कुर्सियां बनाईं।
- धूल भरे रास्तों में पैदल चला।
- उनके साथ रोया।
- कंगालों, अंधों, बंधुओं, और कुचले हुओं को खुशखबरी लाया।

एक आम आदमी बना, अच्छा लगता था उसे अपना ये नाम –मनुष्य का पुत्र मुझे भी अच्छा लगता है। मेरे पास आया, मेरा हमशक्ल बना, मेरा नाम लिया, मेरे साथ रोया। यहां तक साधारण दिखा कि पुनरुत्थान के बाद गतसमने के बाग में मरियम को वो एक साधारण सा बाग का 'माली' नजर आया।

आज सवाल है–

क्या आज हम आम आदमी बनकर दुनिया में दुखी निराश कमजोरों के पास जाकर उनसे प्रभु # यीशु सा प्रेम करेंगे।

51. मौत है?

विश्वास की आखिरी कीमत 'मौत' है – प्रकाशितवाक्य 2:10
आज्ञाकारिता की आखिरी कीमत 'मौत' है – फिलिप्पियों 2:8
प्रेम की आखिरी कीमती 'मौत' है – यूहन्ना 3:16
इसी कारण प्रभु यीशु ने कहा है
यदि कोई मेरे पास आये और अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता – लूका 14:26

आज सवाल है–

हम क्या कीमत अदा कर सकते हैं?

52. लज्जा

पहला आदम पाप के कारण नंगा था।
दूसरा आदम धार्मिकता का उज्ज्वल वस्त्र धरे था।
लेकिन पहले आदम को वस्त्र पहनाने के लिए क्रूस पर नग्न किया गया।
गहरे खूनी जख्म, हृदय वेदना, निंदा, अपमान उठाता हुआ क्रूसित मुक्तिदाता यीशु।

आज सवाल है–

क्या इस यीशु को क्रूस पर देखा है? और फिर भी विचलित नहीं हुए?
यशायाह 53, यूहन्ना, फिलिप्पियों 2

53. सत्याग्रह नहीं किया था मूसा ने

(इस्राएली लोग मिस्र में पर्यटक (टूरिस्ट) बनकर नहीं गए थे पर रोटी, कपड़ा और मकान की मजबूरी उन्हें मिस्र ले आयी थी। लेकिन समय चलते मिस्रिओं ने उन्हें अपना गुलाम बना लिया था।)
तो वे आजाद (Independent) कैसे हुए?
क्या मूसा ने कोई आंदोलन छेड़ा? क्या मूसा ने कोई चुनाव जीता? क्या मूसा में नेता के कोई गुण थे? क्या मूसा के पास धन या राजनीतिक शक्ति थी?
जी नहीं।
मूसा समाज और कानून से भागा हुआ एक कातिल था जिसे परमेश्वर ने बदल दिया। 40 साल से जंगल में अपने ससुर की भेड़ चराता था और जब परमेश्वर ने उसे आजादी का नेतृत्व करने के लिए बुलाया, तब वह 80 वर्ष का वृद्ध था। लोगों की बगावत का सामना करने की ताकत उसके पास नहीं थी। भाषण बाजी नहीं कर पाता था। तो फिर कैसे आजादी मिली ?
लिखा है, ''मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ। जो तुझे दासत्व के घर अर्थात मिस्र देश से निकाल लाया हूँ।'' निर्गमन 20:2
दूसरे शब्दों में, मिस्रियों के और फिरौन के पहिलौठों को उस रात मैंने मारा था।
लाल समुंदर को दो टुकड़े कर मैंने पार लगाया था। फिरौन की सेना और उनके रथ, घोड़ों को लाल समुंदर में मैंने डुबोया था। आसमान से हर रोज 40 साल तक रोटी मैनें गिराई थी। मरुस्थल में चट्टान से पानी निकाल कर मैंने प्यास बुझाई थी। तुम्हारे सारे दुश्मनों को तुम्हारे सामने मैंने मारा था। तुम्हारी सारी लड़ाइयां मैंने लड़ी थीं। लेकिन ये सारे काम करने के बाद भी उन 40 सालों के दौरान वह उनसे नाराज था। इब्रानियों 3:17
क्योंकि सच तो ये था कि वे आजाद होना ही नहीं चाहते थे। कई बार उन्होंने वापस लौट जाना चाहा। तो निष्कर्ष क्या है।
पाप और उसके परिणाम का एक ऐसा चक्रव्यूह है जिसमें पड़कर हम, हमारा परिवार, समाज और देश बंधुआ बन जाता है।
प्रभु यीशु ने कभी भी रोमी सरकार या किसी सरकार के बारे में राजनीतिक विचार नहीं दिया। क्योंकि हमारी समस्या सरकार नहीं, कानून नहीं, परन्तु पाप है।
#प्रभु #यीशु (#Jesus #Christ) ने कहा, जो कोई पाप करता है वो पाप का गुलाम है। - यूहन्ना 8:34

ये भी कहता है, तुम सत्य (प्रभु यीशु) को जानोगे और सत्य (प्रभु यीशु) तुम्हें स्वतंत्र करेगा। - यूहन्ना 8:32
जी हाँ, धर्मों के जाल से, संसार के मायामोह से, शैतान के बहकावे से, और मौत के खौफ से आजाद करके वो हमें परमेश्वर के राज्य में ले आता है।
आज सवाल है–
किस गुलामी से मुक्त हुए हैं?

54. साइमन वाईसंथाल (Simon Weisanthal)
खामोश क्यों?

जर्मन नाजी कॉन्सन्ट्रेशन कैम्प (Nazi concentration camp) की उस घटना के बारे में वे लिखते हैं (in his book 'The Sunflower') – हिटलर की नाजी जर्मनी का एक सैनिक अस्पताल में मर रहा था। अंतिम मौके पर उसने एक अपनी इच्छा जाहिर की। एक यहूदी से मिलने की इच्छा।
तब साइमन वाईसंथाल को सैनिक के पास लाया गया। नाजी सैनिक ने 'यहूदी साइमन' से मिलने का कारण बताया।
उसने कहा कि मैंने बंद कमरों में रखे गए 300 यहूदियों के आवास में आग लगा दी थी, और जब कुछ लोग खिड़कियों से कूदकर भागने लगे, तो मैंने उन्हें गोलियों से भून दिया था। मैं इस नरसंहार के लिए किसी यहूदी से मरने के पहले माफी चाहता हूं।
क्या आप मुझे माफ करोगे?
थोड़ी देर कमरे में खामोश रहने के बाद साइमन वाईसंथाल कमरे से निकल गया?
(काश उस सैनिक ने प्रभु यीशु को बुलाया होता)
उस किताब के नई एडिशन में दुनिया के बहुत से नामी लोगों से सवाल किया गया है कि क्या साइमन वाईसंथाल को माफ कर देना था?
जिसमें से अधिकांश ने कहा है–माफ नहीं करना चाहिये।
घटना पुरानी है लेकिन, मनुष्य की असहाय स्थिति को देखकर आज भी रुला देती है। यदि साइमन वाईसंथाल माफ कर देता तो अच्छा होता, वह सारे मारे गए यहूदियों की माफी तो उसे नहीं दे सकता था, पर अपने जख्म और पीड़ा के लिए व्यक्तिगत माफी दे सकता था।
प्रभु यीशु ने इस जग में रहते हुए जब लोगों से कहा, जाओ 'तुम्हारे पाप माफ हुए' तो ये कैसे किया?

हर पाप परमेश्वर के खिलाफ होता है। और यदि प्रभु यीशु हमारे हर पाप क्षमा करते हैं तो यही साबित करते हैं कि वो परमेश्वर हैं।
''जिसने मुझे देखा है उसने परमेश्वर को देखा है'' यूहन्ना 14:9
''ताकि तुम यह जान लो की मनुष्य के पुत्र को इस संसार में पाप क्षमा करने का भी अधिकार है'' मरकुस 2:10

आज सवाल है–

कहीं आप खामोश रहकर कमरे के बाहर तो नहीं जा रहे?

55. सवाल बदल गया है

पहले चेलों से सवाल कुछ और था। उसने पूछा था।
'तुम मेरे बारे में क्या कहते हो, कौन हूँ?'
उनका जवाब था–तू जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है। मत्ती 16:16
(दुष्टात्माएं भी जानती हैं और थरथराती हैं। याकूब 2:9)
जवाब सही है–लेकिन बस 'ज्ञान' से आया है।
ज्ञान और जीवन में संबंध आवश्यक नहीं होता है।
प्रभु यीशु के पुनरुत्थान के बाद उसने अपना नया सवाल दर्ज किया यूहन्ना 21:15
'क्या तुम मुझ से प्रेम करते हो?'
(इसका जवाब आसान नहीं था, क्योंकि जवाब के पीछे पतरस की मौत छिपी थी। यूहन्ना 21:19)
ये सवाल ज्ञान का नहीं है। प्रेम का है।
सवाल 'रिश्ते' का है।
इस सवाल का जवाब 'दिमाग' से नहीं 'दिल' से देना है।
चेले यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद फिर से मछली पकड़ने के लिए चले जाते हैं।
'पुराने जीवन' में लौट जाते हैं।
क्या हुआ, जान देने के वादों का? प्रभु यीशु कहते हैं–
'यदि तुम प्यार करते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे
'यदि तुम प्यार करते हो, तो अपनी खुदी का इनकार करोगे
'यदि तुम प्यार करते हो, तो अपना क्रूस उठाओगे
'यदि तुम प्यार करते हो, तो मेरे पीछे आओगे
यदि नहीं–

तो प्रेम नहीं है, बस ज्ञान है।
जीवन नहीं है, बस धर्म है।
मुक्ति नहीं है, बस क्रिया कर्म है।
ज्ञान हमें कहीं नहीं पहुंचाएगा।
(ईसाई परिवार में पैदा होना या मात्र ईसाईयत की धर्म विधि पालन करना ज्ञान है)
प्रभु यीशु से रिश्ता बनाइये।
आज सवाल है–
क्या प्रभु यीशु से प्रेम करते हैं?

56. वह धूल में क्या लिख रहा था

(रहस्य?)

फरीसी धर्मगुरु एक स्त्री को यीशु के पास लेकर आते हैं जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी। मंदिर के मैदान में प्रभु यीशु धूल पर बैठे कुछ लोग जो वहां एकत्र हुए थे उनको उपदेश दे रहे थे।
(याद रहे कि प्रभु यीशु धर्मगुरुओं और लोगों के बीच इतने बड़े नहीं माने जाते थे, कि उन्हें मंदिर के अंदर किसी कोंस हॉल या कमरे में बैठकर उपदेश देने की इजाजत दी जाती) यूहन्ना 8
मूसा का कानून कहता है (व्यवस्था) कि ऐसी स्त्री को पत्थरवाह करके मार देना चाहिये, इसमें आपकी क्या राय है?
उनके सवालों को नजर अंदाज करते हुए प्रभु यीशु, जमीन पर बैठे हुए धूल पर अपनी उंगलियों से कुछ लिखने लगे, तब बार–बार पूछने पर वे उनकी ओर देखकर बोले, ''तुममें जो निष्पाप हो वही पहले उसको पत्थर मारे।''
और फिर से झुककर वे लिखने लगे।
''सवाल ये है कि वह अपनी उंगलियों से क्या लिख रहे थे?''
किसी को नहीं मालूम न मुझे मालूम है लेकिन मैं वचन में लिखे कुछ हादसों से उन लिखे शब्दों को ढूंढने की कोशिश करता हूँ।
इस हादसे में प्रभु यीशु जज भी बने और साथ–साथ वकील भी
उंगलियां??
जब भी परमेश्वर की उंगलियां लिखती हैं, तो वो मनुष्य के खिलाफ एक फैसला (verdict) होता है वो मनुष्य को अपराधी और अधर्मी घोषित करता है। और मनुष्य भागने

लगता है। कुलुस्सियों 2:14
चलिए ये 3 मौकों में क्या हुआ।

1. सीनाई के पहाड़ पर 40 दिन तक मूसा रहा। वहां परमेश्वर ने अपने उंगलियों से 10 आज्ञाएँ लिखकर दे दी। निर्गमन 31:18

और ये कैसी विडम्बना है कि जब वह आज्ञा मूसा के हाथ में आयी थी उसी वक्त इस्राएली पहाड़ के नीचे सोने के बछड़े को बनाकर उसको अपना ईश्वर पुकार रहे थे। कह रहे थे कि यही उन्हें मिस्र से निकालकर लाया है। मूर्ति पूजा कर रहे थे, साथ ही सेक्स के पाप में भी सारी भीड़ उलझ गयी थी।

परमेश्वर ने मूसा से कहा नीचे जा और देख तेरे लोग क्या कर रहे हैं।

नीचे जाकर मूसा ने क्रोध में आकर दस आज्ञाओं की पट्टियां तोड़ दी।

मनुष्य की बगावत की तस्वीर है, आज्ञा तोड़ने की तस्वीर है। और ये लिखी आज्ञाएँ उन्हें दोषी ठहरा चुकी, अधर्मी ठहरा चुकी।

2. बेल्शेजर बेबीलोन का राजा था, नबुकद्नेसर का बेटा था। यरुशलम को तबाह करके, मंदिर के सारे सोने और चांदी के बहुमूल्य बर्तन लेकर नबुकद्नेसर बेबीलोन आ गया। बेल्शेजर ने बड़ी जेवनार की 1000 बड़े अधिकारियों को बुलाया और इन पवित्र बर्तनों में शराब पी और अपने देवताएँ को महिमा दी।

अचानक महल की दीवार में उंगलियां दिखीं और लिखने लगी। बेल्शेजर के अपराध का फैसला

''मने मने तकेल उपर्सीन'' दानिएल 5:7

किसी को समझ न आया, बेल्शेजर भयभीत हुआ उसके पाँव कांपने लगे। दानिएल को बुलाया गया जिसने अर्थ बताया।

मने - तू गिना गया और गिनती कम निकली।

तकेल - तू तौला गया है और हल्का निकला।

उसी रात बेल्शेजर का कत्ल हुआ और फारसी राजा दारा ने साम्राज्य जीत लिया।

3. फैसला व्यभिचारिनी के खिलाफ या धर्म गुरुओं के खिलाफ तो अब प्रभु यीशु की उंगलियों ने क्या लिखा?

शायद वही लिखा जो बाबुल की महल की दीवार पर लिखा, उनके धूल के विवेक पर लिखा जो थोड़ी हवा चलने पर मिट जाता है।

''मने मने तकेल''

फरीसी पहचान गए और सीधा होकर यही कहा—तुम में जो वजनदार (धर्मी) हो वो उसे पहले पत्थर मारे।

मने मने तकेल–याने तुम सब भी अपराधी और अधर्मी पाए गए हो
अंजाम–पत्थर छोड़कर वे भाग गए।
परमेश्वर की उंगलियां जब लिखती हैं तो कौन खड़ा रह सकता है?
आज सवाल है–
उसकी उंगलियां आपके दिल में कुछ लिख रही हैं?

57. परमेश्वर और धन में समानता है

(आगे पढ़ें 'धन' की परिभाषा और परिणाम)

वह ये कि भरोसा दोनों में से बस एक पर ही किया जा सकता है।
प्रभु यीशु कहते हैं–"तुम परमेश्वर के साथ-साथ धन की भी सेवा नहीं कर सकते" मत्ती 6:24
भरोसे के मामले में मुकाबला परमेश्वर और शैतान के बीच नहीं है, पर परमेश्वर और धन के बीच है।
इसका अर्थ है आपके जीवन में जिस तख्त पर परमेश्वर को बैठना चाहिए वहां पर आप धन को बैठा सकते हैं।
एक जीवित है तो दूसरा बेजान (मूरत समान)
तो आखिर "धन" की परिभाषा क्या है?
धन वह 'शक्ति' है जो हमें हर स्थिति का सामना करने और संसार में सफल होने का 'झूठा' भरोसा दिलाती है।
धन = पैसा + संपत्ति + ज्ञान + शिक्षा + परिवार + धर्म + कर्म + तंत्र + सामाजिक पहुंच + राजनीतिक पहुंच।
परमेश्वर का वचन कहता है 'धन' के पंख होते हैं और वह पक्षी की तरह हमारे पास से उड़ जाता है। नीतिवचन 23:5, हमारा भरोसा भी हवा में उड़ जाएगा।
तो परिणाम क्या होता है?
धन हमें कबर तक तो सही सलामत पहुंचा देगा, ऊपर शायद मकबरा भी बनवा दे।
या हमारी चिता की लकड़ियां सजवा दे।
या ईसाई कब्रिस्तान में हमारे लिये संगमरमर का क्रूस लगवा दे।
लेकिन उसके आगे धन की पहुंच नहीं है।
धन शक्ति है, मनुष्य का प्रयास है, सामर्थ है, मनुष्य द्वारा उपजाया हुआ फल है। जिसे कीड़े खा लेते हैं।

धन हमारे शरीर और स्वार्थ को खड़ा करता है।
धन पर भरोसा हमें पाप से मन फिराने या मुक्ति दिलाने में काम नहीं आता है।
प्रभु यीशु क्या दावा करते हैं?
''मैं ही पुनरुत्थान और जीवन हूँ जो कोई मुझ पर भरोसा करता है वो मृत्यु वश नहीं होता पर शाश्वत जीवन पाता है।''

आज सवाल है–

भरोसा किस पर है?

58. जलता हुआ दीपक

(क्या मतलब है)

प्रभु यीशु यूहन्ना के बारे में कहते हैं, वह तो 'जलता' और 'चमकता' हुआ दीपक था। यूहन्ना 5:35

A lamp that burned and gave light - John 5:35

बहुत साल पहले जब मैं पहली बार नेपाल गया, उस वक्त मैं वहां किसी से परिचित नहीं था। मुम्बई से दिल्ली पहुंचा, और निराश होकर मैं वापस मुम्बई जाने की सोच ही रहा था, तो अचानक एक भाई का फोन आया, बोले आप नेपाल अवश्य जाईये।
खैर मैं काठमांडू पहुंचा, मैं एक वरिष्ठ मसीही व्यक्ति से मिला। उन्होंने ज्ञान सुनाया, और एक खास बात भी कही, कि किसी विदेशी को लेकर यदि हम गांव में जाते हैं तो गांव का कुत्ता भी उसे पहचान जाता है, और उसी पर भौंकता है।
उनका इशारा शायद गोरे लोगों से था, पर मैं भी कुछ सहम गया, क्योंकि मेरे पहनावे और शक्ल से अक्सर सड़कों और गांवों के कुत्ते नाराज रहते हैं।
बहरहाल उन्होंने मुझ से पूछा, आप का क्या कार्यक्रम है नेपाल में? मैंने जवाब दिया, कुछ भी नहीं, मुझे किसी ने निमंत्रण नहीं दिया है।
तब एक बार फिर मुझे ऊपर से नीचे तक देखने के बाद बोले, हम लोग ईस्ट नेपाल जा रहे हैं यूथ मीटिंग के लिए क्या आप चलोगे? मैं बहुत उत्साहित हो गया और कुर्सी से उठ बैठा, भाई मेरे पास तो टाइम ही टाइम है, मैं चलूंगा।
विराटनगर से आगे एक छोटे कस्बे में हम पहुंचे।
3 दिन की मीटिंग होगी। मेरे साथी किसी के घर में रहने चले गए। मैं भी चाहता था पर उन्होंने मना कर दिया। मेरी व्यवस्था बस स्टैंड के पास एक गंदगी भरे छोटे से होटल में हो गई थी।

सारी रात नींद नहीं आयी, कई कारण थे, भयंकर गर्मी, ऊंची छत पर धीमी गति से चलता पंखा। मच्छरदानी के अंदर मैं, और बाहर मच्छरों का आतंक, कई घंटों तक बिजली गुल, मैं पसीने में नहाता हुआ।

कमरे से बाहर देर रात को निकला तो अनैतिक धंधों में लगे कुछ लोगों ने घूर कर देखा, तो मैं वापस अंदर आ गया।

शौचालय में न पानी था, न कोई साधन।

फिर भी मैं खुश था। क्यों?

इसलिए कि मैंने प्रभु से वादा किया था, चाहे कुछ भी हो जाये, कुछ भी मुश्किलात आयें, मैं शिकायत नहीं करूंगा।

(मुझे लगा, सारी रात मेरी परीक्षा हो रही थी)

इस बस्ती में आने के पहले, काठमांडू में रात को बाजार में घूमते समय में एक बुक स्टोर में गया था, वहां मुझे 'मदर टेरेसा' की एक किताब मिली। शीर्षक "Love of Christ" उसी रात मैंने वो किताब, पूरी पढ़ ली थी। उनका एक 'quote' था।

"Without our own suffering, any work would just be social work, very good and helpful but it would not be the work of Jesus Christ"

(बिना हमारे स्वयं कष्ट उठाये, हमारी कोई भी सेवा अच्छी समाज सेवा तो हो सकती है, लेकिन वो प्रभु यीशु की सेवा नही कहलाएगी)

उस छोटी बस्ती में बहुत जवानों ने प्रभु को जाना और मैं लौट आया।

प्रभु यीशु की गवाही यूहन्ना के बारे में यह थी कि वो खुद जलकर प्रकाश दे रहा था, सिर्फ एक दर्पण (mirror) की तरह प्रकाश रिफ्लेक्ट नहीं कर रहा था।

सच है, आखिर उसका सिर भी काट दिया गया।

इसीलिए प्रभु यीशु कहते हैं, "जगत की ज्योति मैं हूँ"

और साथ ही "तुम जगत की ज्योति हो"

यूहन्ना 8:12, मत्ती 5:14

प्रभु यीशु का जीवन कुर्बानी का था और उसके अनुयाइयों का जीवन भी कुर्बानी का ही होगा।

हमारी कुर्बानी के अंदर दुनिया को प्रभु यीशु नजर आयेंगे।

मत्ती 5:16 "उसी प्रकार तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें।।"

मैं सबसे अधिक सम्मान उन प्रचारकों का करता हूँ जो सड़कों और गलियों में गवाही देते हैं। दुख उठाते हैं, जिन्हें भूख प्यास और गरीबी से वाकफियत है। जिन्हें शायद उनके

शहर के बाहर कोई न जाने, उन्हें न अंग्रेजी आये, न ही कोई प्रचार करने किसी कन्वेंशन में बुलाये।
वे खुद जलते हैं और प्रकाश भी देते हैं।
आज सवाल है–
जल भी रहे हैं, या बस प्रकाश (ज्ञान) दे रहे हैं?

59. यदि नाश हो गई, तो हो गई

महारानी लक्ष्मीबाई, झांसी की रानी के नहीं....ये बोल...
महारानी एस्तेर बाई, फारस की रानी के हैं
तो ऐसी क्या बात हुई कि उस वक्त की सबसे खूबसूरत स्त्री, सबसे शक्तिशाली स्त्री और सबसे धनी स्त्री अपनी जान देने, खोने और मरने पर उतारू हो गई।
ये आज से 2500 साल पहले एक 20-22 साल उम्र की एक महारानी, जो उस समय के संसार की सबसे खूबसूरत स्त्री थी, जिसके महाराजा क्षयर्ष का साम्राज्य हिंदुस्तान से लेकर अफ्रीका के उत्तर तक 127 प्रान्तों में फैला हुआ था। एस्तेर 1
घटना आप को मालूम है, संक्षेप में
फारस के शहंशाह ने अपनी पहली रानी वशती को इसलिए क्रोध में आकर त्याग दिया था, क्योंकि उसने बड़े-बड़े अधिकारियों की दावत में आकर अपनी खूबसूरती का प्रदर्शन करने से इनकार कर दिया था।
तब खोज की गई, नई रानी के पद के लिए किसी योग्य और सुंदर स्त्री की, और तब एक अनाथ लड़की जिसकी देखभाल उसका चचेरा भाई करता था और जो यहूदी थे, और बहुत साल पहले बंधुए होकर यरूशलेम से लाये गए थे।
उसका असली नाम तो हदस्सा था, पर थोपा हुआ नाम एस्तेर था।
हामान जो राजा के बाद दूसरे नंबर का शासक था, उसने यहूदियों का नामोनिशान मिटाने का प्लान बनाया।
उसने शिकायत की, ''तेरे राज्य के सब प्रान्तों में रहने वाले देश देश के लोगों के मध्य में तितर-बितर और छिटकी हुई एक जाति है, जिसके नियम और सब लोगों के नियमों से भिन्न हैं; और वे राजा के कानून पर नहीं चलते, इसलिये उन्हें रहने देना राजा को लाभदायक नहीं है'' एस्तेर 3:8
राजा सहमत हुआ, तब मोर्दकै ने एस्तेर से कहा कि राजा के पास जाकर इस आज्ञा को रद्द करने को कहा जाए।

एस्तेर ने कहा, ''कि क्या पुरुष क्या स्त्री कोई क्यों न हो, जो आज्ञा बिना पाए भीतरी आंगन में राजा के पास जाएगा उसके मार डालने ही की आज्ञा है'' (एस्तेर 4:11)
तब मोर्दकै ने एस्तेर को जवाब दिया, ''कि तू मन ही मन यह विचार न कर, कि मैं ही राजभवन में रहने के कारण और सब यहूदियों में से बची रहूंगी।''
''क्योंकि जो तू इस समय चुपचाप रहे, तो और किसी न किसी उपाय से यहूदियों का छुटकारा और उद्धार हो जाएगा, परन्तु तू अपने पिता के घराने समेत नाश होगी।
''फिर क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिये राजपद मिल गया हो?
एस्तेर ने जवाब दिया
जा कर शूशन के सब यहूदियों को इकट्ठा करो, और तुम सब मिलकर मेरे निमित्त उपवास करो, तीन दिन रात न तो कुछ खाओ, और न कुछ पीओ। और मैं भी अपनी सहेलियों सहित उसी रीति उपवास करूंगी। और ऐसी ही दशा में मैं नियम के विरुद्ध राजा के पास भीतर जाऊंगी।
''और यदि नाश हो गई तो हो गई''
-क्या किसी स्त्री के मुँह से आज तक इतने क्रांतिकारी व शक्तिशाली वचन सुने हैं?
सारी दुनिया अपनी जान बचाने की कोशिश में लगी है।
आज परमेश्वर हमारे मुंह से इस तरह के वचन सुनने की उम्मीद रखता है?
हमारा जीना महत्वपूर्ण नहीं है, दूसरों की जान बचाना जरूरी है (मुक्ति)
और यदि इस प्रयास में हम नाश हुए तो हो जाएं, वही कहें जो एस्तेर ने कहा।
और हाँ
''इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे'' यूहन्ना 15:13

आज सवाल है–

क्या अपना जीवन दांव पर लगाने के लिए तैयार हैं?

60. घी तो वो था जो...

बड़े शहर के एक छोटे रेस्टॉरेन्ट में, दोपहर को मैं रोटी खा रहा था।
मेरे बाजू की एक टेबल पर एक देहाती सा व्यक्ति आकर बैठा। एक वेटर स्टील का गिलास खनखनाते हुए आया और टेप रिकॉर्डर की तरह बहुत तेजी से एक दर्जन सब्जियों के विभिन्न कॉम्बिनेशन्स सुना दिये।
उस व्यक्ति ने बड़ी धीमी आवाज से कहा, ''भैया में कुछ समझ नहीं पाया हूँ। बस रोटी

और हाफ दाल चलेगी, छिलके वाली भी चलेगी।''
वेटर ने कहा, ''मैं आपको अभी घी लगाकर रोटी खिलाऊंगा, बस 5 मिनट में।''
दाल रोटी खाने के बाद उस व्यक्ति से वेटर ने उत्साहपूर्वक सवाल किया, ''कैसी लगी हमारी घी की रोटियां?''
कुछ क्षण खामोश रहने के बाद जवाब आया, भैया, घी तो वो था जो मैंने गांव में खाया था, ये तो डालडा था।''
मेरे मन में विचार दौड़ गया।
आज कितने चर्च और लोग हैं जो नाम प्रभु यीशु का लेते हैं, पर माल नकली बेचते हैं।
''एक बार घी चखे व्यक्ति को कोई भी, कहीं भी, कभी भी, डालडे का धोखा नहीं दे सकता।''
''वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उस की शक्ति को न मानेंगे।'' 2 तीमुथियुस 3:5
आज सवाल है–
क्या आपका यीशु 'असली' वाला है?

61. पटेल जी का सवाल

'तुम लोग यीशु को भगवान बोलते हो पर अगर वो भगवान होते तो अपने आप को क्रूस पर चढ़ने से क्यों नही बचा पाए?' वो तुम्हें क्या बचाएंगे जो अपने आप को नहीं बचा पाए।
(यह सवाल आज से 2000 साल पहले भी उठा था, फेसबुक पर नहीं, पर क्रूस पर कीलों से जकड़े, लहूलुहान मरते प्रभु यीशु के सामने खड़े, जन समूह ने उठाया था–देखें आगे)
'लोग और सरदार भी ठट्ठा करके कहते थे, कि इसने औरों को बचाया, यदि यह परमेश्वर का मसीह है, और उसका चुना हुआ है, तो अपने आप को बचा ले।'
सिपाही भी ठट्ठा करके कहते थे, 'यदि तू यहूदियों का राजा है, तो अपने आप को बचा।'
'जो कुकर्मी लटकाए गए थे, उनमें से एक ने उस की निन्दा करके कहा, क्या तू मसीह नहीं तो फिर अपने आप को और हमें बचा।' (लूका 23:35-39)
पटेल भाई, हम भी आपके समान प्रभु यीशु को मात्र एक आम 'इंसान' या एक 'गुरु' या उस समय के धार्मिक ठेकेदारों की तरह 'धोखेबाज, ही मान लेते। यदि प्रभु यीशु मरने के बाद जीवित नहीं होते, और तब आप का कहना भी सच होता जो स्वयं कब्र में है वह किसी को कैसे बचाये वो कैसे परमेश्वर कहलाते।
और सवाल ये भी है, कि क्या किसी 'झूठ' (प्रभु यीशु) के लिए भी कोई मरने को तैयार

होता है।
रोमी सरकार और यहूदियों की धार्मिक सरकार ने मिलकर हज़ारों को आग में जलाया, जंगली जानवरों से रोम के कॉलोसिअम्स में मरवाया, घरों से शहरों से बेदखल किया, जेलों में भूखों मारा।
यदि प्रभु यीशु वो नहीं थे, जो उन्होंने दावा किया तो कौन अपनी जान देता। धन-संपत्ति, परिवार, मान-सम्मान खोता? आज भी प्रभु यीशु से मुक्ति पाए हज़ारों लोग इस संसार में जान देकर यीशु के पीछे चलने को तैयार हैं। और अपने शत्रुओं और सतानेवालों से प्रेम करते हैं।
(प्रभु यीशु के जीवन की हर भविष्यवाणी उनके आने के सैंकड़ों साल पहले बाइबिल में लिखी हुई थीं।)
प्रभु यीशु परमेश्वर का 'उपाय' हैं और आये ही इसलिए थे कि मनुष्य के पाप के लिए स्वयं बलिदान हों, और पवित्र लहू बहाकर मनुष्य की मुक्ति की कीमत अदा करें। क्योंकि परमेश्वर का वचन कहता है, 'पाप की मजदूरी (परिणाम) मृत्यु है।'
पाप कर्म में ही नहीं हमारे विचारों में भी बीज की तरह होता है। हत्या और क्रोध बराबर है, चोरी और लालच बराबर है, व्यभिचार और वासना बराबर है। (मत्ती 5, 6, 7)

> ''पाप न कर्म से मिट सकते हैं, और न ही मुक्ति सोने, चांदी या धन से खरीदी जा सकती है। न ही जीवन किसी तीर्थयात्रा से बदलता है।''

इस कारण, ये आवश्यक हो गया कि परमेश्वर स्वयं उपाय निकाले, और हमारी मुक्ति की कीमत जो भी हो अदा करे। प्रभु यीशु का मनुष्य का रूप लेकर आना और परमेश्वर की सामर्थ और पवित्रता भी साथ रखने के कारण उन्हें एक और नाम ''इम्मानुएल'' दिया गया था जिसका अर्थ है 'परमेश्वर हमारे साथ'।
प्रभु यीशु का प्रेम इस हद तक था कि वो हमारे पापों का दंड खुद उठाते हैं और उस पर विश्वास करने वाले को मुक्ति देते हैं।
किसी धर्म में मुक्तिदाता नहीं है, पापियों का नाश करने ईश्वर आते हैं। पैसा, दान-दक्षिणा और तीर्थयात्रा मांगते हैं,
''प्रभु यीशु ने कोई धर्म की स्थापना नहीं करी, उसने इस संसार में 'परमेश्वर के राज्य' की स्थापना की।''

> परमेश्वर ने मनुष्य से प्रेम किया इसी कारण प्रभु यीशु ने क्रूस की मृत्यु को कबूल किया। (यूहन्ना 3:16)

लेकिन बात यहां खत्म नहीं हुई, तीसरे दिन मृत्यु से वे स्वयं जीवित हो गए और 40 दिन लोगों के बीच आत्मिक बातें सिखाते रहे और लोगों के देखते-देखते स्वर्ग पर उठा लिए

गए।
आज आप यरुशलम शहर में जाकर उसकी खाली कब्र देख सकते हैं।
प्रभु यीशु ने अनेकों चमत्कार किये, और मरे हुओं को भी जीवित किया था, लेकिन इन सबसे बढ़कर वो हमें मृत्यु पर जय, यानि आत्मा की मुक्ति और शाश्वत जीवन देने आए थे। आज लाखों लोग हैं जिनके पाप से भरे, गंदे, शराबी, जुआरी, हत्यारे और क्रिमनल जीवन को बदलकर प्रभु यीशु ने अपना जीवन दिया है।
ये सभी प्रभु यीशु के ईश्वरत्व के गवाह हैं।

> प्रभु यीशु ने दावे से कहा, ''मार्ग, सत्य और जीवन में ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता परमेश्वर (मुक्ति) के पास नहीं पहुंच सकता।'' (यूहन्ना 14:6)

हमारी प्रार्थना है कि प्रभु यीशु आप को भी नया जीवन और मुक्ति दान दें।
आज सवाल है–
या तो प्रभु यीशु सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पुत्र, सृष्टिकर्ता, जीवनदाता, मुक्तिदाता, तारणहार हैं जो अपने वचन की सामर्थ से सारे ब्रह्मांड को थामे हुए हैं
या
झूठे इंसानों, गुरुओं, ईश्वरों की कड़ी में एक और ...हैं।

62. प्याले में आखिर था क्या?
प्याले में से पीने का अर्थ?
प्याला पहले से क्यों देखा गया?

उस अंधेरी रात को, फसह का पर्व मनाकर वो अपने 11 चेलों के साथ गत्समने को गया (यहूदा पहले ही बाहर चला गया था) और उनसे कहा यहां जागते रहो, और प्रार्थना करो। उनसे कहा मेरा मन व्याकुल है.... मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरे प्राण निकला चाहते हैं। मत्ती 26:38
हजारों उसके अनुयायी अपने प्रभु के लिए आनेवाले दिनों में जान देंगे, और खून बहाएंगे, तो क्या उनका प्रभु यीशु स्वयं क्रूस की मृत्यु से डर रहा था?
हरगिज नहीं,
क्रूस की मृत्यु का डर नहीं था।
पर दर्द, पीड़ा और ह्दय वेदना थी, संसार का सबसे बड़ा शारीरिक, भौतिक और आत्मिक युद्ध अकेले लड़ना है और यातनाएं सहकर और खून बहाकर पाप, मृत्यु और

शैतान पर विजय प्राप्त करना है।

ऐसा युद्ध जो शारीरिक शक्ति से नहीं पर आत्मिक बल से ही जीता जाएगा।

वह सम्पूर्ण मनुष्य बनकर अपने ईश्वरीय अधिकारों को छोड़कर आया था

और अब

* सारा संसार उसका दुश्मन हो जाएगा
* शैतान का सरदार और उसकी सेना उससे लड़ेगी
* परमेश्वर भी उसे बलिवेदी पर छोड़ देगा।
* सारे संसार के पाप का दोष और दंड उसके ऊपर डाला जाएगा।

(यशायाह 53)

फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर (3 बार प्रार्थना)

* मुंह के बल गिरा

1 - और यह प्रार्थना करने लगा, कि हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह प्याला (कटोरा) मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।

- फिर चेलों के पास आकर उन्हें सोते पाया,

पहली प्रार्थना और दूसरी प्रार्थना के बीच एक स्वर्गदूत भेजा गया, जिसने उसे सामर्थ दिया,

जो जवाब भी लेकर आया? कि पिता चाहता है कि ये प्याला पिया जाए,

लूका 22:43

कैसी सामर्थ?

अवश्य ही पवित्र शास्त्र के वचन द्वारा उसे शक्ति दी गई होगी।

और इस कारण

2. प्रभु यीशु की दूसरी प्रार्थना बदल गयी,

यदि जैसा तू चाहता है कि मुझे ये प्याला पीना ही चाहिए तो मैं तेरी मर्जी करने के लिए तैयार हूं।

चेले फिर भी सोते रहे

3. तीसरी प्रार्थना भी दूसरी प्रार्थना की तरह थी।

प्याले (Cup) के पेय मिश्रण को पीना एक भयानक अनुभव है, चखना है, जिसका परिणाम मृत्यु है।

प्याले में आखिर था क्या? (A)

* उसका पीटा जाना, मुंह पर थप्पड़, मुंह पर थूका जाना, कोड़े पड़ना, बैंजनी वस्त्र, काँटों का ताज, क्रूस को ढोना, हाथों और पांवों में कीलों का ठोकना,

* आने जाने वाली जनता का घोर अपमान और गालियां

* और सबसे बड़ी बात पिता परमेश्वर से उसका जो रिश्ता था वो कुछ देर के लिए मानो टूट जाना और संसार में अंधकार का अधिकार

* और उस बीच उसके अपने चेलों का उसे छोड़कर भाग जाना और इनकार करना

* मनुष्य का अन्याय, क्रोध, झूठ, स्वार्थ और धोखा

* और पाप के विरुद्ध परमेश्वर का आक्रोश व क्रोध

प्याला पीने का अर्थ? (B)

यही कि, पिता मैं तैयार हूँ, परमेश्वर की मर्जी करने के लिए

प्याला पहले से क्यों देखा गया? (C)

1. इसलिए कि सब ये जानें कि प्रभु यीशु को धोखे से मृत्यु नहीं मिली, उसने पूरी जानकारी के साथ, सम्पूर्ण मन से पिता की मर्जी मनुष्यमात्र की मुक्ति के लिए करी।

2. उसने बचने का उपाय नहीं ढूंढ़ा, यदि वो चाहता तो गत्समने से भाग सकता था, अंधेरा था, और बाग शहर के बाहर था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया

(Most important)

3. यदि बिना प्याले को देखे, बिना स्वेच्छा के, बिना कीमत को जाने प्रभु यीशु मृत्युदंड उठाते, तो उनकी कुर्बानी सिद्ध (perfect) नहीं होती और हमारी मुक्ति की कीमत नहीं होती।

- मैं अपना प्राण देता हूं।

कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन् मैं उसे आप ही देता हूं। यूहन्ना 10:17, 18

- हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? तू मेरी पुकार से और मेरी सहायता करने से क्यों दूर रहता है? मेरा उद्धार कहां है? भजन संहिता 22:1

- जिस ने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। इब्रानियों 12:2

आज सवाल है–

उसने तो प्याले को पिया,

पर आपका 'अपने प्याले' के विषय, क्या निर्णय है?

63. ज्ञान-कर्म या विश्वास

हाँ,

'सवालों का जवाब' आप को न मुक्ति दिलाएगा, न ईश्वर से मिलाएगा, और न ही स्वर्ग ले जाएगा।

- हमारे ऋषि, मुनि, जंगलों में पहाड़ों पर, तपस्या करके ईश्वर की खोज करते रहे हैं।
- कुछ लोग इंटरनेट पर ईश्वर को खोज रहे हैं।

दोनों में कोई अंतर नहीं है, क्योंकि दोनों परमेश्वर से नहीं मिल पायेंगे। बस शरीर का प्रयास है।

* 'ज्ञान-कर्म' - द्वारा - मनुष्य की शक्ति पर भरोसा किया जाता है।
* 'विश्वास' - द्वारा - परमेश्वर के वचन की शक्ति पर भरोसा किया जाता है।

बाइबिल में विश्वास की मांग क्यों है?

''और विश्वास बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है'' इब्रानियों 11:6

(Important - ध्यान से पढ़िए, कारण बताया गया है)

क्योंकि परमेश्वर अपने मुंह के ''वचन'' से सृष्टि और ब्रह्मांड को बनाता है और चलाता, संभालता है। हमेशा ''वचन'' का ही प्रयोग करता है।

1. वचन - पर विश्वास ही किया जा सकता है, क्योंकि ये वस्तु-कर्म नहीं, वचन हैं। वचन को देखा नहीं जाता है, वचन पर विश्वास किया जाता है।

2. वस्तु-कर्म - यदि परमेश्वर हमें वचन न देकर ''वस्तु-कर्म'' यानि कोई मूर्तियां, कोई ताबीज, कोई तीर्थयात्राएं, कोई कर्म कांड, कोई विधि विधान देता, तो अवश्य वह फिर विश्वास नहीं पर ''ज्ञान-कर्म'' का रास्ता बन जाता।

यही कारण है,

''जीवित परमेश्वर का मुक्ति मार्ग विश्वास का मार्ग है, ज्ञान-कर्म का नहीं''

उदाहरण के लिए -

यदि साइकिल (ज्ञान, कर्म) जमीन पर चलती है तो उसका इस्तेमाल चाँद पर पहुंचने के लिए नहीं किया जा सकता है। रॉकेट (विश्वास) की आवश्यकता होगी।

जो काम केवल विश्वास से होता है, तो विश्वास करना ही पड़ेगा।

जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। यूहन्ना 3:16

आज सवाल है–

आपने विश्वास किया है या ज्ञान-कर्म में भटके हैं?

64. बंदर → बंदुष्य → मनुष्य

बंदर → बंदुष्य → मनुष्य
बंदर से ही तो निकला है मनुष्य ... हां...
(ये बंदरों का विश्वास है)
और
यहां पढ़िये ये क्यों शैतान का झूठ हैं
A. मानव इतिहास
B. गायब कड़ी (Missing link)
C. 'भाषा' का रहस्य

चार्ल्स डार्विन ने वर्ष 1859 में अपनी पुस्तक 'Origin of species by means of natural selection / preservation of favoured races' प्राकृतिक चयन द्वारा जातियों की उत्पत्ति में सृष्टि के नियम को समझाया है। जिसके द्वारा परमेश्वर को सृष्टि से बेदखल किया गया है।
बाइबल में हमें बताया गया है कि मनुष्य जानवरों से भिन्न है। परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है। अपने शोध के बाद डार्विन ने एक Theory बताई जिसे Theory of Evolution कहते हैं, जिसमें यह साबित करने की कोशिश की गई है, कि मनुष्य बंदर से evolve हुआ है।
बहुत से नास्तिक, वैज्ञानिक और आम लोग कुछ ऐसा ही समझते हैं, खासकर पश्चिमी देशों में, बड़े कॉलेज, यूनिवर्सिटीज में

A. मानव इतिहास

बाइबिल में मनुष्य की रचना से लेकर आज की तारीख तक का पूरा हिसाब है जो कुल मिलाकर 6000 साल का है।
यीशु मसीह से पूर्व करीब 4000 साल और प्रभु यीशु के जन्म के बाद करीब 2000 साल। कुल 6000 + वर्ष। आज तक किसी भी मनुष्य का 6000 साल से पुराना fossils या skeleton (शरीर अवशेष) नहीं मिला है, चाहे कितनी खुदाई ही कर ली गयी।
मनुष्य का इस धरती का इतिहास लाखो वर्षों का नहीं है कुछ हजार साल का है।
(में पृथ्वी की सृष्टि की बात नहीं कर रहा हूँ)

B. गायब कड़ी (Missing link)

बंदर .... (बंदुष्य) .... मनुष्य

याने, एक प्राणी से दूसरे प्राणी में पूरी तरह बदलने के बीच के कुछ आकार या form मौजूद नहीं है। (जैसे 3 और 5 के बीच का मिसिंग लिंक 4 होगा)

Suppose कर सकते हैं कि बंदर और मनुष्य के बीच का मिसिंग लिंक या कड़ी में एक ऐसा प्राणी (बंदुष्य) होगा, जो शायद 2 पैरों पर चलता होगा। कम से कम 50 से 100 शब्द बोल ही सकता होगा, हंस सकता होगा, रो सकता होगा, परिवार में रहता होगा (this is just example)।

मनुष्य और बंदर के बीच इस तरह का कोई भी missing link (बंदुष्य) नहीं मिला है। एक बात लगातार याद रखें कि शैतान का जो मुख्य हथियार है वो धोखा और झूठ है। अदन के बाग में झूठ बोलकर ही उसने मनुष्य को पाप में गिराया था और परमेश्वर से संबंध टूट गया था।

आज भी वो झूठ को सच के रूप में पेश करता है।

''झूठ को सच के चोगे में दिखाना धोखा कहलाता है। ये धोखे की परिभाषा है।

एक और मेरा तर्क है

C. भाषा का रहस्य

करीब 6500 भाषाएं संसार में हैं। इनमें बोलियां (dilects) भी शामिल हैं। यदि लिपि (scrip) को लिया जाये तो 36 एकदम फर्क लिपियाँ हैं, जैसे देवनागरी, अंग्रेजी, चीनी, इब्रानी, एथिओपीअन इत्यादि।

(करीब 2500 भाषाओं में बाइबिल/भाग का अनुवाद हो चुका है)

बंदर का Evolution = भाषा का evolution

6000 साल के अंदर इतनी सारी भाषायें कहां से आई। सब भाषायें अपने आप में सिद्ध (perfect) हैं।

तो यदि बंदर से मनुष्य बना तो बंदर बात नहीं कर सकता, मनुष्य हर भाषा बोलता है तो बीच की अधूरी, बनती हुई, बढ़ती हुई, develop होती हुई (missing link languages) भाषायें कहां हैं। संसार में कहीं तो पायी जानी चाहिये तो ऐसे अधूरे इंसान और अधूरी भाषाएँ कहां हैं?

आदि में वचन था, वचन परमेश्वर के साथ था, बाइबिल में इसका पूरा सत्य बताया गया है।

''सारी पृथ्वी पर एक ही भाषा, और एक ही बोली थी। ....क्योंकि सारी पृथ्वी की भाषा में जो गड़बड़ी है, सो यहोवा ने वहीं डाली, और वहीं से यहोवा ने मनुष्यों को सारी पृथ्वी के ऊपर फैला दिया।''

उत्पत्ति 11:1-9

Evolution की नींव पर शैतान द्वारा नरसंहार
Social Darwinism ने किस तरह इसके बड़वार इंसान की बराबरी (equality) को खत्म किया इर जुल्म और अन्याय किया।
अडोल्फ हिटलर ने 1925 में अपनी किताब Mein Kampf (मीन कैम्फ - मेरा संघर्ष) में लिखा... विज्ञान और आर्ट टेक्नॉलिजी और खोज का काम सिर्फ एक जाति या कौम के द्वारा ही हुआ है इसलिए इस नस्ल को ही आगे बढ़ना है, ताकि संसार की खूबसूरती और संस्कृति सभ्यता को बचाया जा सके।
नाजी पार्टी और हिटलर ने लाखों यहूदियों, जिप्सियों, और बीमारों, अपाहिजों, कमजोरों, बुजुर्गो को मौत के घाट उतार दिया।
ये था डार्विन के Evolution एंड नेचुरल selection ऑफ species का परिणाम।
इसके विपरीत परमेश्वर का selection कैसा है।
(न ..बहुत ज्ञानवान,..न बहुत सामर्थी, और न बहुत कुलीन बुलाए गए।
...परमेश्वर ने जगत के मूर्खों को.. निर्बलों को..जगत के नीचों और तुच्छों को, वरन जो हैं भी नहीं उन को भी चुन लिया, कि उन्हें जो हैं, व्यर्थ ठहराए।
1 कुरिन्थियों 1:26-28)
''जब मनुष्य को मात्र एक जानवर समझा जाता है, तो मनुष्य फिर जानवर की तरह व्यवहार भी करने लगता है।''
आज सवाल है-
परमेश्वर का वचन सत्य है या संसार का ज्ञान?

65.'वक्त तो उसके पास' था....लेकिन बिजी (Busy) तो हम हैं!

कभी सोचा था कि वो पैदल गांव गांव क्यों गया, लोगों से सड़कों, मैदानों, घरों में क्यों मिला। उनके साथ रोटी क्यों खाई, उनके बच्चों को एक झुंड में नहीं, एक-एक को गोद में लेकर सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद क्यों दिया? घंटों तक पैदल क्यों चलता था? क्या सिर्फ इसलिए कि वो लोगों को समाचार सुनाये और चमत्कार दिखाये?
नहीं !
वो इसलिए भी घूमता फिरा, क्योंकि ऐसे भी बहुत लोग गांवों में, बस्तियों में, तंग गलियों में, गरीबी में, बीमारियों में और समाज के बंधनों में थे, इनमें औरतें थीं, बच्चे थे, बुजुर्ग थे, थके हारे थे, किसान थे मजदूर थे, जो उसको सुनने और आशीष पाने के लिए उसके घर, उसके शहर (या उसके सेन्टर, यदि होता भी) तक नहीं पहुंच सकते थे,

''तो वो उनके पास ही पहुंच गया''
(आओ, हम और कहीं आस पास की बस्तियों में जाएं, कि मैं वहां भी प्रचार करूं, क्योंकि मैं इसी लिये निकला हूं।...वह सारे गलील में उनकी सभाओं में जा जाकर प्रचार करता और दुष्टात्माओं को निकालता रहा।
मरकुस 1:38, 39)
कैसी अजीब बात है? स्वर्ग से सीढ़ियों से उतरता हुआ वो तो हमारे दरवाजे तक पहुंच गया।
और आज आलम ये है कि हमारे पास वक्त ही नहीं है, बिजी हैं!
कैसे भेजा था प्रभु ने?
''यीशु ने कहा.. जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं'' यूहन्ना 20:21

आज सवाल है–
बिजी हो क्या?

66. ऋषिकेश

गंगा किनारे की वह अंधेरी रात 'यीशु कथा' सुनाने गया था, उस दौरान 'प्रभु यीशु' के सर्वशक्तिमान नाम से भूत प्रेतों पर विजय का एक बड़ा अनुभव मिला जिसने मुझे यीशु नाम को घर-गलियों तक पहुंचाने के लिए बोझिल कर दिया।
''उस ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिये मेरा अभिषेक किया है, और मुझे इसलिये भेजा है, कि बन्धुओं को छुटकारे का और अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं'' - लूका 4:18
आज सवाल है–
क्या 'पीड़ितों' को मुक्ति दिलाने के लिए' प्रभु यीशु के पास ला रहे हैं?

67. 33% अंक लेकर पास होना चाहते हो?

(कुछ इसी तरह की सोच है, आज विश्वासियों की)
टिकट खरीदने का प्रयास है (स्वर्ग जाने के लिए)
बाकी बहुत तो रोटी, कपड़ा और मकान, या आज की भाषा में, health, wealth, security की तलाश में प्रभु यीशु को ढूंढ रहे हैं।

(Mega Church में जाकर जरा लोगों से पूछिए की वो क्यों आये हैं, और उनके नामी पास्टर की खूबी क्या है?)
तो प्रभु यीशु न तो टिकट बेच रहे हैं, न वो investment consultant हैं न वो हमें 33 नंबर दिलाकर स्वर्ग ले जाने वाले हैं।
वो तो ''परमेश्वर का राज्य'' लेकर आये हैं, आपको उस राज्य में दाख़िल होना ज़रूरी है।
''या तो यीशु आपके 'प्रभु' हैं या कुछ भी नहीं''
प्रभु यीशु ने सिखाया–
इस रीति से प्रार्थना किया करो, तेरा ''राज्य आए''
तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो।
मत्ती 6:9,10
कब आये तेरा राज्य?
कब हो तेरी इच्छा पूरी?
कहां हो तेरी इच्छा पूरी?
लिखा है–
''जो ..पृथ्वी पर ..हैं वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और ...हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही 'प्रभु' है।
फिलिप्पियों 2:10,11
(कुछ वर्ष पहले मैंने जहां तक हो सके 'यीशु' बोलने के बजाय 'प्रभु यीशु' बोलना शुरू किया)
आज सवाल है–
है क्या यीशु आपका प्रभु?

68. तलवार ले लो प्रभु यीशु के मुंह से...?

अजीब बात है, समझ नहीं आता, क्या सचमुच उसने ऐसा कहा था?
क्यों कहा प्रभु यीशु ने?

जिसने कहा था,
दुश्मन से प्रेम करो, कोई एक गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा फेर दो।

कोई एक मील बेगार में ले जाये तो दो मील चले जाओ।
और खुद ही कहा था
''मनुष्य के पुत्र के लिये अवश्य है, कि वह बहुत दुख उठाए, और पुरिनए और महायाजक और शास्त्री उसे तुच्छ समझकर मार डालें, और वह तीसरे दिन जी उठे। लूका 9:22
तो फिर ये बदलाव, कैसे?
क्या प्रभु यीशु गतसमने के बाग में तलवार कि दम पर लड़ाई जीतना चाहता था?
क्या वो जान बचाना चाहता था, क्या डर गया था?
'कभी नहीं, बिल्कुल नहीं'
प्रभु यीशु, प्रयोग (experiment) के लिए एक साधन (instrument) चाहते थे, ताकि एक आखिर पाठ (Lesson) चेलों को सिखाया जा सके।
''तलवार लेने को कहने के पहले प्रभु यीशु ने अपने चेलों से एक सवाल किया था। जो तलवार से जुड़ा था, किसी बात की घटी तुम्हें नहीं थी जब तुम खाली हाथ थे, लेकिन अब तलवार हाथ ले लो और इसका परिणाम तुम देख पाओगे आगे बाग में ..
एकदम उल्टी बात...यहीं तो पाठ (Lesson) है।''
''जब मैं ने तुम्हें बटुए, और झोली, और जूते बिना भेजा था, तो क्या तुम को किसी वस्तु की घटी हुई थी? उन्होंने कहा, किसी वस्तु की नहीं ...(मुझ पर भरोसा) परन्तु अब कहता है
जिस के पास तलवार न हो वह अपने कपड़े बेचकर एक मोल ले। (तलवार/शक्ति पर भरोसा)
उन्होंने कहा, हे प्रभु, देख, यहां दो तलवारें हैं: उस ने उन से कहा, बहुत हैं।''
लूका 22:36-38
प्रभु यीशु को पाठ ये सिखाना था, की अपनी रक्षा तुम अपनी शक्ति/साधन से नहीं कर सकते हो, मुझ पर भरोसा रखकर ही बच सकोगे जी सकोगे।
चेलों ने दो तलवारें ले ली (उनके जीवन की हार को साबित करने के लिये ये काफी थीं)
गतसमने के बाग में चेले प्रार्थना करने के बजाय सोते रहे, और जब लाठी तलवारें लेकर फरीसी और सिपाही आये, तो उस भगदड़ में उन्हें बचने का एक ही तरीका सूझा- तलवार चलाओ और दुश्मन से जीतो।
(उन्होंने चिल्लाकर पूछा प्रभु, क्या हम तलवार चलायें और इससे पहले की प्रभु का जवाब आता, तलवारें चल गयीं, लूका 22:49)

भूल गए?
प्रभु ने कहा था, अच्छा चरवाहा मैं हूं, अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है। यूहन्ना 10:11
जब पतरस ने गला काटने के प्रयास में कान उड़ा दिया तो प्रभु यीशु ने उसे रोका और एक बहुत बड़ा पाठ सिखाया
''जो तलवार उठाएगा वो तलवार से मारा जाएगा'' मत्ती 26:52
इसका अर्थ है
तुम जिस 'शक्ति/साधन/बल' से अपना जीवन बचाना/सुरक्षित करना चाहोगे उसी से तुम मिट जाओगे।
सुरक्षा देने के साधन क्या होते हैं?
पैसा, शिक्षा, हेल्थ, खूबसूरती, बिजनेस, नौकरी, राजनीति, सरकार, हथियार, परिवार, जमीन
'जो भी आप की शक्ति है, वही आप को बर्बाद करेगी'
उसकी सीधी शिक्षा ये है, (सच, सिद्धान्त)
परमेश्वर के सिवाय किसी और पर भरोसा रखोगे तो मिट जाओगे, तुम्हें कुछ भी नहीं बचा पाएगा।
अदन के बाग में सर्प सबसे चतुर था इसीलिए शैतान ने उसे इस्तेमाल किया (चातुर्य)
शिमशोन कि 'शक्ति' ने ही उसे मिटा दिया।
दाऊद राजा ने अपने 'अधिकार' के दम पर हत्या और व्यभिचार किया। उसे गिराया
बाइबिल उदाहरणों से भरी पड़ी है।
गतसमने के बाग में प्रभु यीशु का आखिरी चमत्कार
अपने दुश्मन की जान बचाना था, उसने कान बहाल किया।
पतरस 'जान लेकर' बचना चाहता था।
प्रभु यीशु 'जान देकर' बचाना चाहता था।
आज सवाल है–
कहीं आप की 'शक्ति' (strength) ही आप को मिटा तो नहीं रही?

69. मैंने ये गीत क्यों लिखा?

मैं दिल्ली में अपने शिष्याश्रम पहुंचा। कुछ गांव के देहाती भाई लंबा ट्रेन का सफर करके आश्रम पहुंचे थे।
पर, रोटी बनाने वाली एक बहिन नहीं आयी, चिंतित होकर मैंने फोन लगाया, तो बोली,

भैया जी मैं बहुत परेशान हूँ।
मेरी बहू (उम्र करीब 20 वर्ष) को भूत लग गए है। उसके अंदर से आदमी की आवाज में बात कर रहे हैं। और वो मार पीट कर रही है, गालियां दे रही है, कोई उसको काबू में नहीं कर पा रहा है। पड़ोसी और आसपास के लोग घर के बाहर जमा हो रहे हैं।
मैंने उससे कहा, इसका उपाय तो आसान है, मैंने तुम्हें प्रभु यीशु के बारे में, और उसके नाम की शक्ति के बारे में बताया था।
तुम अपनी बहू के पास जाकर प्रभु यीशु के नाम से भूत प्रेत को आदेश दो की वो निकल जाएं।
लेकिन, दोपहर को वो फिर नहीं आयी, और हमने रोटी खुद ही बना ली।
बहरहाल, मैंने फोन लगाकर पूछा, क्या हुआ बहन, क्या प्रार्थना करी थी?
उसने जवाब दिया, हाँ।
जब प्रार्थना करी तो भूत तो नहीं भागे, लेकिन बहू घर से निकलकर भागने लगी, और लोग बड़ी मुश्किल से उसे पकड़कर वापस लाये हैं।
उसी दिन शाम को हम भाई मिलकर इंडिया गेट के पास राजपथ पर चल रहे थे।
एक देहात से आये भाई ने सवाल किया - शिष्य जी, आप ने पहले बताया था कि इन सास और बहू के बीच में बहुत झगड़ा हुआ करता था, और इस लड़की ने हमारे आश्रम में सेवा करने वाली बहिन को बहुत सताया था, गालियां दी थीं, तो क्या इसने अपनी सास से माफी मांग ली है?
मैंने जवाब दिया, इस लड़की ने अभी तक अपनी सास से माफी नहीं मांगी है।
इस पर भाई ने कहा, तो आओ फिर हम लोग ही उस लड़की की तरफ से परमेश्वर से क्षमा मांग लेते हैं।
तब हम पांचों भाइयों ने रास्ते के किनारे खड़े होकर प्रभु से प्रार्थना करी, और कहा–'हे प्रभु इस लड़की के गुनाह हम पर डाल दीजिए, उसकी तरफ से उसके बदले हम पापों की क्षमा मांगते हैं, उस पर दया करो, क्षमा करो, मुक्त करो।'
दूसरे दिन जब सुबह बहन खुशी से आश्रम आ गयी तो मैंने सवाल किया, क्या है तुम्हारी बहू का हाल?
उसने जवाब दिया, अचानक कल शाम को उसके अंदर से भूत प्रेत बोले, ''हम निकल कर जा रहे हैं।''
करीब शाम के 6 बजे (ये वही समय था, जब हम मिलकर प्रभु से प्रार्थना कर रहे थे, उसके पापों को अपने ऊपर लेकर क्षमा याचना कर रहे थे।)
मैंने उसी दिन ये गीत लिखा -

''सबसे ऊंचा सबसे प्यारा यीशु का वो नाम रे,
स्वर्ग लोक संसार में, अधोलोक पाताल में''
''भीड़ के कारण उसे खाट समेत बीच में यीशु के सामने उतार दिया।
उसने उनका विश्वास देखकर उससे कहा, हे मनुष्य, तेरे पाप क्षमा हुए।'' लूका 5:19-21

आज सवाल है–

दूसरों के बदले, उनकी मुक्ति के लिए क्या आप प्रभु के सामने प्रार्थना में घुटनों पर आने को तैयार हैं?

70. मसीहियत में Celebrity (मशहूरी, ख्याति)

''हाय, तुम पर, जब सब मनुष्य तुम्हें भला कहें, क्योंकि उनके बाप-दादे झूठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी ऐसा ही किया करते थे।'' लूका 6:26
(जब मनुष्य दिखता है, आदर पाता है, और प्रभु यीशु नहीं नजर आता है)
आखिर क्यों?
टिकेगा हर घुटना, करेगी हर जुबान अंगीकार की
''यीशु ही प्रभु है'' फिलि. 2:5-11
वो इसलिये की प्रभु यीशु ने

- अपने अधिकारों को त्यागा
- स्वयं शून्य बने
- मनुष्य बने
- दास बने
- दीन बने
- आज्ञाकारी बने
- क्रूस की मृत्यु भी सह ली

क्योंकि वो शून्य बने,
- इसलिए उन्होंने कोढ़ियों को गले लगाया,
- चुंगी लेनेवालों, वेश्याओं, गुनाहगारों के साथ बैठकर मुक्ति की बातें की,
- पांच पति करने वाली सामरी स्त्री के साथ कुएं पर बैठकर जीवन जल की बातें करी।
- अपने चेलों के पांव धोये।
- जब उसके मुंह पर थूका, मारा पीटा, कोड़े मारे, सिर पर काँटों का ताज रखा, उसने शिकायत नहीं करी, वह चुप रहा।

(इसके विपरीत आज सारे गुरु, धर्म, धनी, अपने आप को बड़ा बनाते हैं, सोने के तख्त पर बैठते हैं, भक्तों से अपने पांव धुलाते हैं। धनदौलत से घिरे रहते हैं।)
मसीही जगत में भी आज सेलिब्रिटी (celebrity) मसीही छाए हुए हैं।
भीड़भाड़ की मीटिंगों, धनदौलत, नाम, सम्मान और दिखावे का बोलबाला है।
आज सवाल है–
क्या हमारा स्वभाव प्रभु यीशु जैसा है?

71. पर मैं, पहचान ही न पाया उस पड़ोसी को

एक पंडित प्रभु यीशु के पास आया,
एक सवाल पूछता है (परीक्षा लेने के लिए)।
अनंत जीवन का वारिस होने के लिए मैं क्या करूँ? (वैसे सवाल भी गलत है क्योंकि मनुष्य ऐसा कोई कर्म नहीं कर सकता जिससे वह मुक्ति हासिल करे।)
प्रभु यीशु ने सवाल पर सवाल किया कि लिखा क्या है?
उसने कहा–
''परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख''
(लूका 10:27)
आगे पंडित ने फिर सवाल किया -
ये मेरा पड़ोसी कौन है?
प्रभ यीशु ने जवाब में एक सामरी राहगीर का जिक्र किया जिसने एक यहूदी, जिसे डाकुओं ने लूटकर अधामरा छोड़ दिया था, उसकी मदद करी थी।
उसने
- जख्मों की मरहम पट्टी की
- अपने गधे पर बैठाया
- सराय में लेकर गया
- देखभाल करने के लिए दो दीनार एडवांस देकर गया

कहा मैं लौटकर आऊंगा, और जो पैसा बनेगा, मैं वो भी चुकाऊंगा, बस इसका ख्याल करना।
इस कहानी का सार– ''परमेश्वर जीवन चाहता है, ज्ञान नहीं''

72. मेरा नाम शिष्य है, और मैं 'प्रभु यीशु' का भक्त हूँ।

(इस तरह का परिचय (introduction) यदि आप किसी को देंगे तो शायद वे आपको 'अजीब' समझें)
पिछले दिनों, मैं प्रार्थना यात्रा (prayer journey) पर निकला था, उत्तर भारत में कश्मीर और नेपाल गया था,
प्रभु यीशु की गवाही देने के कई अवसर मिले। कुछ उदाहरण (example) आपके सामने रखता हूँ।
''यीशु नाम'' बांटने का मौका मिला।
(आप भी कर सकते हैं)
चाय की दुकान में, रास्ते में खड़े लोगों से, गांधी संग्रहालय में एक जापानी व्यक्ति से, मुस्लिम व्यवसायी से, ऑटो ड्राइवर से, सफाई करनेवालों से, साधुओं से और भी अनेक लोगों से मिल सका।

• एक मित्र को लेकर मैं दिल्ली के गांधी संग्रहालय में गया। वहां पास खड़े एक जापानी व्यक्ति के उत्साह को देख मैंने उसके पास जाकर बातचीत प्रारम्भ की। उन्हें बताया कि गांधी जी ने प्रभु यीशु के पहाड़ी उपदेश का गहन अध्ययन किया था जो मत्ती 5-7 में है। अहिंसा की सीख उन्हें यीशु के उपदेश और जीवन से मिली। प्रभु यीशु मानुष के जीवन को बदलता है। वही मुक्तिदाता है।

• आगरा शहर के बाहर किसी सस्ते रेस्टोरेंट की खोज करते हुए मैं और मेरे साथी एक ढाबे पर पहुंचे। टूटी सी कुर्सियां, लड़खड़ाता टेबल और कच्चा खुदा हुआ फर्श, जब हम असमंजस में पड़े थे तो मालिक बोला, पीछे बाहर घास में टेबल लगा देते हैं, तो जब वहां खाने का इंतजार कर रहे थे, तो थोड़ी दूर, रस्सी की खाट पर एक व्यक्ति जिसके पांव में पट्टी बंधी थी बैठा दिखा।
मैं उठकर उसके पास गया और साथ बैठा।
साईकल से गिर गया था, सड़क में कुत्ते से टकराकर, पास के गांव का था। मुस्लिम था, अपनी मां और बीबी, बच्चों को वही संभाले था। साफ सफाई का उसका काम था। दवाई करवाने के भी पैसे उसके पास नहीं थे। मैंने उसे प्रभु यीशु का प्रेम संदेश सुनाया, उसके जख्म और गरीबी हालात के लिए प्रार्थना करी। उसने मेरे साथ भी प्रार्थना करी, और मैं उसकी कुछ मदद भी कर सका।

• दिल्ली में एक चाय की दुकान में वेटर से मैं नेपाली में बात करने लगा, जब मुझे मालूम

पड़ा कि वो नेपाली है, साधारण बातचीत के बाद मैंने सवाल किया, कि क्या वो प्रभु यीशु को जानता है। पहले तो उसने इनकार किया पर जब मैंने अपने हाथ के इशारे से क्रूस पर लटकने वाले के बारे में पूछा, तो उसे याद आया ईसा मसीह के बारे में, हाँ उसने फिल्म देखी थी, और उसके गांव में कुछ लोग आए थे यीशु कथा सुनाने। हमने भी उसे सुसमाचार सुनाया।

• श्रीनगर में एक कश्मीरी से दिली बातचीत हुई। उसने बताया कि किस तरह उसकी माँ को दिमागी बीमारी पकड़े है। सालों से बस बैठी रहती है ना करे बात और न ही करे कोई काम। उसका एक भाई दिनभर सोता है और रात को बस निकलता है, और बस बिलकुल निकम्मा।

दूसरे एक भाई ने पिछले 6 महीनों में बस एक बार नहाया था, और आत्महत्या करने के लिए हाथ में रेजर चला चुका था।

इनकी पत्नी को भी भूत प्रेत सताते थे ।इन जनाब का बिजनेस भी ठप्प हुआ जा रहा था। मुझे उसने अपने घर बुलाया। मैंने सारे परिवार को इकट्ठा किया और पूरा सुसमाचार सुनाया। उनके कुरान के भी कुछ हवाले दिए, और प्रार्थना करी और कुछ उर्दू का साहित्य उनको दे दिया। उनके लिए प्रार्थना जारी है।

• सूर्योदय के पहले मैं नगरकोट नेपाल में पहाड़ पर प्रार्थना के लिये गया, वहां पर मेरी मुलाकात अचानक एक बौद्ध साधु से हुई। मैंने अपना परिचय दिया कि प्रभु यीशु भक्त हूँ, तब उन्होंने और जानकारी चाही। मैंने उन्हें बताया कि सब लोग सत्य, मार्ग और मुक्ति के खोजी हैं, (गौतम बुद्ध भी) लेकिन प्रभु यीशु ही है जो स्वर्ग से उतर आये हमारे बीच में और प्रभु यीशु के दावा सही था कि मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ। साधु सोच में पड़ गया।

• एक बहाई मत का विदेशी पर्यटक मिला, जिससे लंबी बात हुई। मैंने उसको पूरा सुसमाचार सुनाया। वो प्रभु यीशु की कब्र कश्मीर में खोजता हुआ आया था, और उस पर रिसर्च कर रहा था।

मैंने बाइबिल से समझाया कि प्रभु यीशु कब्र में नहीं है, जीवित हुए और स्वर्ग में विराजमान हैं, उनकी खाली कब्र यरुशलम में है। पुनरुत्थान और जीवन प्रभु यीशु ही हैं। वहां और भी कई लोगों को मैंने प्रभु यीशु का नाम सुनाया।

आज सवाल है–

क्या आप ''प्रभु यीशु नाम'' बांट रहे हैं?

73. इर्द गिर्द

वेश्या, चुंगी लेनेवाले पापी, और समाज के गिरे, कुचले, कंगाल, और ऐसे ही लोग दिखाई देते थे,
प्रभु यीशु के....
मैंने सवाल किया था प्रभु से
'आप के साथ ऐसे लोग.....क्यों? जबकि आज हम अपने चारों ओर, पास्टरों, एल्डरों, बाइबिल टीचरों, रेवेरेन्ड्स, बिशप्स, या इस तरह के लोगों के साथ ही क्यों दिखाई देते हैं, और इनसे घिरे रहते है?'
तब प्रभु ने मुझे बताया, शिष्य तुमने जो कुछ दीवारें अपने चारों ओर बनाई हैं, उन्हें तोड़ दो। तब तुम भी समाज के पापी-पीड़ित लोगों के साथ उठ बैठ सकोगे और तुम्हारे इर्द गिर्द भी इस तरह के लोग नजर आयेंगे, और उनकी मुक्ति का कारण तुम बन सकोगे जिनका उद्धार करने में इस संसार में आया था।
हाँ
''रंग, भाषा, संस्कृति, धन, संपत्ति, हमारी डॉक्ट्रिन, हमारा चर्च, हमारी मीटिंग, मैं, हम, हमारा, तुम्हारा, उनका, इनका की दीवारें तोड़ दो।''
तो
तुम भी घूमने फिरने के लिए आजाद हो जाओगे
और तब भारत के लोगों को
प्रभु यीशु दिखाई देंगे।
''मेरा आज न कोई denomination है,
न दिखाई देता है मुझे कोई धर्म,
प्रभु यीशु की मुक्ति,
और परमेश्वर का राज्य मैंने पाया है
और आनंदित हूँ, इस बात से कि मेरा नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ है।''
''और चुंगी लेने वालों की और औरों की जो उसके साथ भोजन करने बैठे थे एक बड़ी भीड़ थी।
और फरीसी और उनके शास्त्री उसके चेलों से यह कहकर कुड़कुड़ाने लगे, कि तुम चुंगी लेने वालों और पापियों के साथ क्यों खाते-पीते हो?
यीशु ने उनको उत्तर दिया, कि वैद्य भले चंगों के लिये नहीं, परन्तु बीमारों के लिये अवश्य है।

मैं धर्मियों को नहीं, परन्तु पापियों को मन फिराने के लिये बुलाने आया हूं।''
लूका 5:29-32

आज सवाल है–

क्या दीवारें बना रहे हो?

74. 2 + 2 = 5

(जैसी लगती हैं, क्रूस की कथा)
समझा जाये या विश्वास किया जाये
हाँ
''क्रूस की कथा मूर्खता है''
(नाश होने वालों कर लिये)
इसीलिए विश्वास करने को कहा गया है
''ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो परंतु अनंत जीवन पाये। यूहन्ना 3:16
तो क्या, क्यों, कब, कहाँ, कैसे, कौन, किसका, कितना किसलिए????
इत्यादि सवालों का जवाब न मिले
तौभी बस विश्वास करो,
हाँ, इसलिए
क्योंकि सर्वशक्तिमान, सृष्टिकर्ता, परमेश्वर ने हमसे विश्वास करने को कहा है।
विश्वास इसलिए करने को कहा गया है क्योंकि विश्वास आसानी से होता नहीं है, और सब बकवास लगता है।
परिभाषा :
विश्वास, उस पर किया जाता है, जो न दिखे, न हाथ लगे, न समझ ही आये,
लेकिन उस पर बस आशा ही होती है।
और उस 'आशा' का कारण परमेश्वर होता है।
('परमेश्वर का वचन' उसका आधार और प्रमाण होता है)
''मुक्ति पाने के लिए न चाहिए धन, न तीर्थयात्रा, न चढ़ावा, बस विश्वास जिसका मुफ्त इस्तेमाल हर इंसान कर सकता है और मुक्ति प्राप्त कर सकता है।''
शब्दों के ज्ञान के अनुसार नहीं
क्योंकि क्रूस की कथा नाश होने वालों के निकट मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पाने के

निकट परमेश्वर की सामर्थ है।
लिखा है, कि मैं ज्ञानवानों के ज्ञान को नाश करूंगा, और समझदारों की समझ को तुच्छ कर दूंगा।
कहां रहा ज्ञानवान? कहां रहा शास्त्री? कहां इस संसार का विवादी? क्या परमेश्वर ने संसार के ज्ञान को मूर्खता नहीं ठहराया?
परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दे।
यहूदी तो चिन्ह चाहते हैं, और यूनानी ज्ञान की खोज में हैं।
परन्तु हम तो उस क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह का प्रचार करते हैं जो अन्यजातियों के निकट मूर्खता है। 1 कुरिन्थियों 1:17-23
अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है। इब्रानियों 11:1
आज सवाल है-
क्या क्रूस की कथा की मूर्खता पर विश्वास किया है?

75. मुक्तिदाता बस वो ही है

मृत्यु के बाद प्रभु यीशु को एक कब्र में दफनाया गया, लेकिन तीसरे दिन सारी दुनिया के देखते वे कब्र से जीवित होकर बाहर निकले, उनकी खाली कब्र आज भी यरूशलेम में है।
जीवित होने के 40 दिन के बाद वे एक पहाड़ पर अपने चेलों और अनुयाइयों की भीड़ लेकर गए। और उनकी आँखों के सामने उनका स्वर्गारोहण हुआ।
आज प्रभु यीशु जीवित है, आपकी प्रार्थना का जवाब दे सकते हैं और आपके पापों को क्षमा करके आपको मुक्तिदान देने के लिए तैयार है।
आपकी जाति, धर्म, भाषा कोई भी क्यों न हो। प्रभु यीशु आप से प्रेम करते हैं।
आपकी जिंदगी कितनी ही बर्बाद हुई हो, प्रभु यीशु आपको एक नई जिंदगी की शुरुआत देंगे और मुक्तिदान देंगे।
ये सच बात है कि प्रभु यीशु में प्रेम, न्याय, दंड, क्षमा और नए जीवन का मेल हो गया है, और मनुष्य के लिए मोक्ष प्राप्ति का उपाय निकल आया है।
आप की शांति के लिए पवित्र बाइबिल के कुछ जीवित और सत्य वचन यहाँ पर नीचे लिखे हैं।

मत्ती 11:28 हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।
यूहन्ना 14:26 प्रभु यीशु ने कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता परमेश्वर के पास नहीं पहुँच सकता।
यूहन्ना 14:27 मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता; तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।
यूहन्ना 16:33 मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले; संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैंने संसार को जीत लिया है।
लूका 19:10 क्योंकि मनुष्य का पुत्र (प्रभु यीशु) खोए हुओं को ढूंढने और उनका उद्धार (मोक्ष) करने आया है।

76. जंतर मंतर से...

गिरजाघरों से, धर्म स्थलों, समाज या संगठनों से यदि भ्रष्टाचार मिटाना है तो प्रभु यीशु और उसके 'वचन' की सामर्थ्य को लाना होगा।
व्यापार बाजार में हो तो समस्या नहीं है। पर जब चर्च में हो तो प्रभु ऐसे भवनों को मिटा सकता है
भ्रष्टाचार (curruption) यदि मनुष्य में है तो उसे अंदर से बदलना होगा।
पत्ते छांटने से फल मीठा नहीं होगा, जड़ से उखाड़कर नया बीज लगाना होगा।
प्रभु यीशु पवित्र आत्मा द्वारा हमें नया जन्म देते हैं।
यदि प्रेम शांति और भाईचारा समाज में लाना है, तो प्रभु यीशु की शिक्षाओं को जीवन में उतारना होगा।
''क्योंकि जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है, और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है। अचम्भा न कर, कि मैं ने तुझ से कहा, कि तुम्हें नये सिरे से जन्म लेना अवश्य है।''
यूहन्ना 3:6,7
आज सवाल है–
क्या आत्मा से जन्मे हो?

77. इमानुएल
यानी परमेश्वर हमारे संग

(कुछ दिनों पहले मैं भारत के पश्चिम (north) में स्थित देश की यात्रा पर था, जहां प्रभु

यीशु का प्रचार करना मना था।)
मैंने प्रार्थना में कुछ आंसू वहां के लोगों के लिए बहाये
आज 2000 साल प्रभु यीशु को संसार में हो गए
(और वो इमानुएल - परमेश्वर हमारे संग है)
और फिर भी उस देश में इस बात की कोई चर्चा नहीं...
(डेरा - पापियों, कंगालों, अंधों, बंधुओं, और कुचले हुओं के संग)
''और वचन देहधारी हुआ, और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी'' यूहन्ना 1:14

78. बहाने बहुत हैं

सुसमाचार न सुनाने, और
प्रभु यीशु की गवाही
गैर मसीहियों को न देने के
पिछले दिनों में कई शहरों में, गांवों में गया, कहीं पैदल तो कहीं रोड ट्रांसपोर्ट, या ट्रेन या प्लेन से भी गया।
जहां कहीं भी मौका मिला मैंने व्यक्तिगत रूप से अंजान लोगों से बातें करी।
मेरी बातचीत 1 मिनट से 1 घंटे तक की होती थी।
मैं बात छेड़ देता था, फिर कहता था कि मैं प्रभु यीशु का भक्त हूँ,
और उनसे सवाल करता था कि क्या आप उसे जानते हैं?
यदि कोई नहीं जानता था तो मैं क्रूस पर लटके व्यक्ति का एक्शन करके दिखाता था तब कुछ लोग प्रभु यीशु को कुछ पहचान लेते थे।
मेरे वाक्य (sentence) कुछ इस तरह के रहते थे।
- प्रभु यीशु परमेश्वर के पुत्र मनुष्य को पाप से मुक्ति देने आए
- सब लोगों के लिए आये, कोई एक धर्म के लिए नहीं, वो हमें धर्म में नहीं बुलाते हैं, परमेश्वर के राज्य याने मुक्ति देने के लिए बुलाते हैं
- क्रूस पर मृत्यु के तीसरे दिन वो जी उठते हैं, और आज उनकी खाली कब्र यरूशलेम में देखी जा सकती है
- वो लोगों के देखते स्वर्ग गए, दोबारा आएंगे
- प्रभु यीशु के नाम से हर प्रार्थना का जवाब मिलेगा, और चाहे भूत प्रेत, झगड़े, बीमारी और कोई भी मुश्किल क्यों न हो, विश्वास से प्रार्थना करने पर जवाब अवश्य मिल

जाएगा। मत्ती 21:22
- यीशु का नाम लेकर प्रार्थना करिये।
यीशु नाम एक ऐसा दान है, जो आप लोगों को दे सकते हैं। ये नाम परमेश्वर पिता ने दिया है। इस नाम में सामर्थ है। इस नाम में पापी को खींचने की शक्ति है।
आपकी मेहनत में नहीं, यीशु नाम में सामर्थ है।
यीशु बस नाम नहीं है,
जीवित परमेश्वर का पुत्र है,
आप बस लोगों में प्रभु यीशु नाम बाँटिये।

''मैं ने लगाया, अपुल्लोस ने सींचा, परन्तु परमेश्वर ने बढ़ाया।
इसलिये न तो लगाने वाला कुछ है, और न सींचने वाला, परन्तु परमेश्वर जो बढ़ाने वाला है। लगाने वाला और सींचने वाला दोनों एक हैं, परन्तु हर एक व्यक्ति अपने ही परिश्रम के अनुसार अपनी ही मजदूरी पाएगा।'' 1 कुरिन्थियों 3:6,7,8
एक व्यक्ति की मुक्ति में यदि 100 जनों का हाथ है, तो आपका हाथ 1 कड़ी है।
जिसकी ज़रूरत है, और परमेश्वर आप को इसका प्रतिफल देगा।
आज सवाल है–
क्या सुसमाचार की गवाही में आप की भी कड़ी (जंजीर, link in the chain) है, या आप बाहर हैं?

79. बाइबिल में ''सूर्य नमस्कार'' पाप है
(Many people ask me about 'Yoga')

''योग'' Yoga
सबसे पहले 'योग' का अर्थ है क्या? योग का अर्थ जोड़ना (addition) है।
'योग' संस्कृत का शब्द है और इसका लक्ष्य शरीर और आत्मा को किसी बाहरी शक्ति, या आत्मा से जोड़ना है, ताकि मनुष्य की सीमित शक्ति (limited personality and power be increased) को बढ़ाया जा सके ।
''ऋषि मुनियों'' द्वारा प्राचीन समय से सिखाया गया 'योग' आपको किसी योगासन की मुद्रा (posture) में किसी 'मंत्र' उच्चारण के साथ किसी से जुड़ने (योग) में सहायता करता है।
(अधिकतर लोगों को इसका पता ही नहीं है)

''आप अपने शरीर के द्वार (doors) बाहरी शक्तियों के लिए कहीं अनजाने में exercise के नाम पर खोल तो नहीं रहे?

तो आप किस से जुड़ जाते हैं

1. कुछ योग मुद्रा किसी जानवर की शक्ल की ओर संकेत करते हैं।

2. कुछ योग पूजा-उपासना के आसन लेते हैं।

जैसे सूर्य की पूजा ('सूर्य नमस्कार' इसमें 12 योग मुद्राएं होती हैं, जिसमें प्रणामासन जो प्रार्थना की मुद्रा है और भुजंगासन जो सर्प की मुद्रा है, शामिल हैं। इन आसनों के द्वारा सूर्य की उपासना की जाती है जिसे हर जीवन का स्रोत माना जाता है।)

3. अदृश्य 'प्रेत शक्तियों' से आप का योग करा देती हैं। जिससे आपके जीवन में प्रेत आत्माओं के लिए द्वार खुल जाता है।

''कुंडलिनी योग'' (सर्प शक्ति/ Serpant, snake power)

ये ऐसा योग है जिसके द्वारा शरीर के अंदर एक चमत्कारिक आत्मिक शक्ति को जगाया जाता है, जिसके कारण, आंखें दूसरा संसार देख सकती हैं, अलग आवाजें सुनाई देने लगती हैं, दूसरे शब्दों में एक दूसरे संसार में आत्माओं से योग हो जाता है।

हर प्रकार का योग कुंडलिनी योग की तरह आत्मिक लक्ष्य की ओर बढ़ता है। हर योग शरीर के किसी दरवाजे को किसी सूत्र (formala) द्वारा खोलने का प्रयास है, जिससे प्रेत आत्माओं (spirits) से योग (entry) हो सके।

कुण्डलिनी शक्ति को सांप के प्रतीक से जाना जाता है और इसका कारण ये माना जाता है कि कुंडली मारकर बैठा हुआ सांप जब तक अपनी जगह से हिलता-डुलता नहीं है तब तक उसे देखना मुश्किल होता है। हर योग कुंडलिनी जागरण की मंजिल की ओर एक कदम है।

''अब परमेश्वर के मंदिर यरूशलेम में सूर्य नमस्कार''

''तब उसने मुझ से कहा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू देखता है कि ये लोग क्या कर रहे हैं?

तब वह मुझे यहोवा के भवन के भीतरी आंगन में ले गया; और वहां यहोवा के भवन के द्वार के पास ओसारे और वेदी के बीच कोई पच्चीस पुरुष अपनी पीठ यहोवा के भवन की ओर और अपने मुख पूर्व की ओर किए हुए थे; और वे पूर्व दिशा की ओर सूर्य को दण्डवत कर रहे थे।''

इसलिये मैं भी जलजलाहट के साथ काम करूंगा, न मैं दया करूंगा और न मैं कोमलता करूंगा; और चाहे वे मेरे कानों में ऊंचे शब्द से पुकारें, तौभी मैं उनकी बात न सुनूंगा। यहेजकेल 8:6,16,18

आज सवाल है–
क्या आप योग के बारे में पूर्ण जानकारी रखते हैं?
योग के स्थान पर एक मसीही विश्वासी क्या कर सकता है?
घुटनों पर प्रार्थना
'सम्पूर्ण समर्पण की मुद्रा' अपनाएं
परमेश्वर की इच्छा को जानना और उसे स्वीकार करना प्रार्थना है।
परमेश्वर से पवित्र आत्मा में मिलन होना, और प्रेम में बने रहने की यह मुद्रा है।
प्रार्थना में विश्वासी और परमेश्वर की इच्छा का योग होता है।

80. मोक्ष प्राप्ति की प्रार्थना आप विश्वास से करिए

"हे प्रभु यीशु परमेश्वर के पुत्र"
आप पापों की क्षमा और अनंत जीवन देने के लिए इस संसार में आए।
आपने अपना पवित्र खून हमारे अपराधों और पाप मुक्ति के लिए बहाया।
आप ही सत्य, मार्ग और जीवन हैं।
मेरे पाप आप क्षमा करें।
मुझे अपनी पवित्र आत्मा दीजिए, और नया जीवन दीजिए।
मेरा पूरा विश्वास और भरोसा बस आप पर है।

81. वो क्षमा, तो क्षमा थी ही नहीं

क्षमा = प्रेम - बदला (प्रतिशोध)
"क्षमा मांगे जाने से पहले दी जानी चाहिये, और उस समय दी जानी चाहिए जब व्यक्ति उसे पाने के योग्य भी न हो।"
प्रेम और क्षमा जुड़े हुए हैं।
दुश्मन से प्रेम करो, का पहला कदम है उसके हर अपराध को क्षमा करो।
हमने शायद इस शर्त पर एक बार क्षमा किया होगा कि सामने वाले ने पश्चाताप किया है, और फिर वो यह नहीं दोहराएगा?
(तो ये प्रभु यीशु द्वारा सिखाई क्षमा नहीं कहलाई)
क्षमा का अर्थ, आम जीवन में प्रभु यीशु के जैसी जीवन शैली से जीना है।
किसी और को जब आप क्षमा करते हैं, तो आप अपना जीवन शुद्ध करते हैं।

दूसरे को प्रेम दिखा रहे हैं, प्रभु यीशु का जीवन जी रहे हैं।
क्षमा करना प्रेम का जीवित रूप है। चेलों ने प्रभु यीशु से पूछा था-क्या सात बार क्षमा करना काफी है।
उन्होंने शायद सोचा था कि प्रभु उन्हें शाबाशी देंगे, लेकिन प्रभु ने कहा, ''मैं तुझ से यह नहीं कहता, कि सात बार, वरन सात बार के सत्तर गुने तक।'' मत्ती 18:22
याने हमेशा बिना गिने क्षमा करो
एक मसीही के जीवन में क्रोध, हिंसा और शत्रुता के लिए कोई स्थान नहीं है,
''और जिस प्रकार हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे ही तू भी हमारे अपराधों को क्षमा कर।'' मत्ती 6:12
यदि आप के दिल में किसी व्यक्ति के प्रति प्रेम नहीं है, तो उसका सीधा कारण ये है कि आपके दिल में उसके लिए प्रेम नहीं है।

आज सवाल है-
क्या दिल से किसी को क्षमा किया है, जिसने आप को जख्म दिए हैं?

82. कौन सा है, आपका चर्च?

प्रभु यीशु ने कुछ कहा है।
प्रभु यीशु के स्वर्ग जाने के बाद 'चर्च युग' चालू होता है।
इसके पहले, हमारे व्यक्तिगत जीवन, मुक्ति और गवाही के बारे में तो उसने धरती पर रहते हुए हमें सब बता ही दिया था।
तो चर्च के बारे में वो हमसे बाइबिल की आखिरी किताब प्रकाशितवाक्य में क्या कहता है?
सुनिए
सात चर्च हैं?
सब अलग-अलग स्वरूप के कुछ समानता कुछ विभिन्नता
(इफिसुस, स्मुरना, पिर्गमुन, थुआतीरा, सरदीस, फिल्दिल्फिया, लौदीकिया)
ये सात चर्च 'हर युग' में मौजूद रहते हैं।
''और इसमें से एक चर्च आपका है''
सातों चर्च से प्रभु ने 'एक ही जैसी' (common) बात क्या कही?
1. यदि कान हैं तो सुन लो,

सातों से कहा (याने - मेरे कहे को पूरा करो)
2. जय पाना होगा
सातों से कहा (किस पर? हमारे शरीर, झूठ, लालच, घमंड, स्वार्थ, धन, और शैतान की परीक्षाओं पर)
3. सातों चर्च में से एक से भी उसने सांसारिक आशीषों का न वादा किया न जिक्र किया (तो फिर सांसारिक आशीषें तो नहीं ढूंढ रहे?)
आज सवाल है–
आपका चर्च कौन सा है?

नीचे reference दिए हैं
* कान हैं?
प्रका. 2:7/2:11/2:17/2:29/3:6/3:13/3:22 (सातों से)
* जय पाना होगा?
प्रका. 2:7/2:11/2:17/2:26/3:5/3:12/3:21 (सातों से)
* सांसारिक आशीषें देना का वादा नहीं किया?
प्रका. 2:7/2:11/2:17/2:28/3:5/3:12/3:21 (सातों से)
#Church

83. 'क्रूस और प्रेम' का रिश्ता

'ऐसा प्रेम'
तो सवाल है कि प्रभु यीशु ने कैसा प्रेम किया?
'ऐसा प्रेम' किया की क्रूस पर चढ़कर जान भी दे दी इस संसार के हर पापी को बचाने के लिए। यूहन्ना 3:16
''क्रूस प्रेम करने का एक साधन है''
और प्रभु यीशु ने हमसे भी कहा–
ऐसा प्रेम करो जैसा मैंने तुम से किया, प्रेम करने के द्वारा ही तुम मेरे चेले कहलाओगे (गवाह ठहरोगे)
यूहन्ना 13:34
कैसे करें?
''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस

उठाए हुए मेरे पीछे हो ले'' - लूका 9:23
क्रूस उठाना और अपने आप का इन्कार करना ही;
1. हमारी गवाही है, और
2. हमारे जीवन का निचोड़ है,
तो 'इनकार करो' और 'क्रूस उठाओ' का अर्थ क्या है?
'अपना इन्कार' का अर्थ है, जीवन के हर निर्णय में।
''मैं महत्वपूर्ण नहीं हूँ''
जीवन में दूसरों को प्राथमिकता है।
मैं न पहला हूँ न दूसरा, न तीसरा, मैं कतार में हमेशा अंतिम हूँ। और साथ में 'क्रूस उठाने' का अर्थ है:
मैं उस हद तक प्रेम करूँगा की जान भी देना पड़े तो दे सकूँ
(ये मसीही जीवन की परिभाषा है, A mission statement of a Christian life)
कि मैं दूसरों के लिए प्रेम की कीमत, अपनी जान तक देकर अदा कर सकता हूँ।
ऐसा प्रेम - जो लोगों को दिखेगा भी, और अनुभव भी होगा। प्रेम की आग दिखती भी है और अनुभव भी होती है, प्रेम की खुशबू आकर्षित करती है।
जब हम प्रेम करते हैं तो प्रभु यीशु के हमशक्ल दिखने लगते हैं।
पहाड़ी उपदेश में एक प्रेम पूर्ण 'जीवन शैली' है
जिसे हम इस संसार में जी सकते हैं। मत्ती 5, 6, 7
अपना इन्कार करके और क्रूस उठाकर अनुभव कर सकते हैं।
प्रभु यीशु के प्रेम का अनुभव कंगालों को, अँधों को, बंधुओं को और कुचले हुओं को होता है, उसने कहा मैं ऐसों के लिए आया हूँ। लूका 4:18
और हम जब ऐसा जीवन जीते हैं, तो प्रभु कहते हैं, ''मैं भूखा था, और तुम ने मुझे खाने को दिया; मैं प्यासा था, और तुम ने मुझे पानी पिलाया, मैं परदेशी था, तुम ने मुझे अपने घर में ठहराया। मैं नंगा था, तुम ने मुझे कपड़े पहिनाए; मैं बीमार था, तुम ने मेरी सुधि ली, मैं बन्दीगृह में था, तुम मुझ से मिलने आए'' - मत्ती 25:35,36
आज सवाल है–
क्या अपने आप का इन्कार करके क्रूस उठा लिया है?

84. दीवार के पीछे

- धर्म के अंधकार में

- सामाजिक बंधनों में
- अधिकारों के दुरुपयोग में
- सरकार की निरंकुशता में

पड़े पीड़ित लोग भी किसी दीवार के उस तरफ ही तो रहते हैं

मैं, मेरा, हम, हमारा, और अपना, अपनों की सीमाओं को लांघना होगा, उन तक पहुंचने के लिए

1. दूरी की दीवार के पीछे

रोटी से भरी बारह टोकरियाँ थीं, बारहों चेलों के पास, (बस्ती के भूखों के लिये)

यूहन्ना 6:12-13

जी हां दीवार के उस तरफ भी तो कोई होगा जो भूखे तो थे पर उसके पास न आ सके थे, प्रभु यीशु की नजर उन बाहरी लोगों पर भी थी,

2. गरीबी की दीवार के पीछे

जिन्हें निमंत्रण मिला ही नहीं,

उन्हें बुलाओ अपने घर रोटी खाने, जो आप के घर न कभी आये थे, न उनकी गरीबी और कंगाली उन्हें आपके दरवाजे तक आने की हिम्मत दे सकती थी। लूका 14

3. बदनामी की दीवार के पीछे

- वो उस बदनाम औरत के साथ भी खड़े हुए, जो बिन बुलाए दावत के कमरे में उस से मिलने आ गयी थी।
- और उस औरत के साथ भी जिसे धर्म गुरु, समाज और भीड़ पत्थरवाह करने को तैयार थी। लूका 7, यूहन्ना 8

4. जातिवाद की दीवार के पीछे

प्रभु यीशु ने हमें बताया था, कि हमारा पड़ोसी वो है जो जरूरतमंद है, चाहे वो किसी भी भाषा, जाति, धर्म का क्यों न हो।

सामरी लोगों के गांव वे गए, उनके घर रहे और उनके घर में उसने रोटी खाई। ऐसे लोग जिसे समाज ने दरकिनार किया था, प्रभु यीशु उनके पास खुशखबरी लाये।

लूका 10, यूहन्ना 4

5. बीमारियों की दीवार के पीछे

धर्म के नाम पर लोगों को अशुद्ध ठहराया गया था।

कोढ़ियों को जो अशुद्ध माने जाते थे प्रभु यीशु ने उनपर हाथ बढ़ाया अपने स्पर्श से प्रेम

प्रगट किया, चंगा किया। लूका 5
केवल चमत्कार ही नहीं किया पर उनसे प्रेम किया।

6. दुश्मनी की दीवार के पीछे

प्रभु यीशु ने हमें सिखाया था, अपने दुश्मनों से प्यार करो, जो तुम्हें सताते हैं उनके लिए दुआ करो, जो तुम्हें श्राप देते हैं उनको आशीर्वाद दो।
अपने सतानेवालों ओर दुश्मनों से भी उसने प्रेम किया
चाहे वो विदेशी रोमी सरकार ही क्यों न थी। मत्ती 6
सारी दीवारों को तोड़ने ही तो प्रभु यीशु आये थे
जरूरत ये है कि हम उनके साथ खड़े हों, जिनके साथ न भीड़ है, न सरकार, न समाज कंगाल, कुचले, अंधे, और बंधुओं के पास ही प्रभु यीशु सुसमाचार लाये हैं।
प्रभु यीशु व्यभिचारी औरत के साथ खड़े हुए, वृद्ध औरत के साथ, विधवाओं के साथ, बदनाम स्त्रियों के साथ, चुंगी लेनेवालों के साथ वे थे। देहातियों के साथ, कमजोरों के साथ वो थे।
प्रभु यीशु ने नाम, जाति, भाषा और धर्म से नहीं पर ''हर मनुष्य को उसकी 'जरूरत' से पहचाना''।
इफिसियों 2:14 क्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने दोनों को एक कर लिया: और अलग करने वाली दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया।
भजन संहिता 113:7 वह कंगाल को मिट्टी पर से, और दरिद्र को घूरे पर से उठा कर ऊंचा करता है।

आज सवाल है–

क्या उन लोगों का भी खयाल आता है जो किसी दीवार के उस पार हैं?

85. अंधे नहीं हैं वो...

''प्रभु यीशु अंधों को अंधा नहीं कहते।
पर उन्हें कहते हैं, जो देखते तो हैं पर उन्हें दिखाई नहीं देता''
मैं इस जगत में न्याय के लिये आया हूं,
ताकि जो नहीं देखते वे देखें, और जो देखते हैं वे अन्धे हो जाएं।
यूहन्ना 9:39

आज सवाल है–

कहीं अंधे तो नहीं?

86. मैं संत नहीं हूं
(बस पाप नजर आने लगा है)

एक बार की बात है, मैं एक मेले में गया जहां दूर-दूर से लोगों ने आकर दुकानें (stall) लगाई थी।
मुझे एक जैकेट अच्छी लगी, लेकिन खरीदने के पहले bargain करके मैंने उसकी कीमत कम करवा ली।
बैग मेरे हाथ में देते हुए उसने कहा, जी यहां आकर मेरा बहुत नुकसान हुआ, कारोबार कम है, मेला अच्छा नहीं चल रहा है।
मेरे घर पहुंचने के बाद पवित्र आत्मा ने मेरे दिल से बात की और कहा, तुमने उस दुकानदार को लूट लिया, वो नुकसान उठा रहा था पर तुम फायदा उठाने से नहीं चूके। मैं तुरंत वापस मेले में गया और उसी दुकान में पहुंचा, मैंने उससे माफी मांगी और कहा कि मैं आपको और भी पैसे देने आया हूँ, मुझे discount नहीं चाहिए।
दुकानदार चकित हो गया। कहने लगा, पहली बार इस तरह किसी ने पैसे लौटाये हैं। मैंने उससे कहा, ये प्रभु यीशु का जीवन है और अपनी एक किताब भी उसे भेंट करी।
मुझे आदर न दो
बस गुनाह नजर आने लगा है

एक दूसरा किस्सा (बाइबिल का)
प्रभु यीशु ने सुनाया
दिहाड़ी (dailywage) के लिए सुबह से कुछ मजदूर खड़े थे बाजार के चौराहे पर। किसी के हाथ में खेती के औजार थे, तो किसी के पास मिस्त्री का सामान। साथ ही कुछ कमजोर से मजदूर भी थे, खाली हाथ थे दिहाड़ी की ताक में वो भी खड़े थे।
कुछ इसी तरह की तस्वीर पर प्रभु यीशु एक कहानी सुनाते हैं। ये बताने के लिए कि स्वर्ग के परमेश्वर का क्या नजरिया है।
स्वर्ग का राज्य (परमेश्वर) किसी गृहस्थ के समान है, (यहां परमेश्वर के काम का तरीका दिखाया गया है)
जो सबेरे निकला, कि अपने दाख की बारी में मजदूरों को लगाए।
एक दीनार की दिहाड़ी ठहराकर, उन्हें अपने दाख की बारी में भेजा।
फिर दोपहर को औरों को भी बाजार में बेकार खड़े देखकर, उनसे कहा, तुम भी दाख की बारी में जाओ, और जो कुछ ठीक है, तुम्हें दूंगा; सो वे भी गए। फिर उसने दूसरे

और तीसरे पहर के निकट निकलकर वैसा ही किया।
और फिर सूरज डूबने के पहले जब सिर्फ एक घंटा दिन का बाकी रहा तो वह फिर निकलकर औरों को खड़े पाया, और उनसे कहा; तुम क्यों यहां दिन भर बेकार खड़े रहे?
उन्होंने उससे कहा, इसलिये, कि किसी ने हमें मजदूरी पर नहीं लगाया।
उसने उनसे कहा, तुम भी दाख की बारी में जाओ। मत्ती 20:1-7
यहां पर मैं एक तस्वीर रखता हूँ।
ये आखिरी घंटे में जो मजदूर थे उन्होंने क्या कहा था-''किसी ने हमें मजदूरी में नहीं लगाया''
तो सवाल है, क्यों नहीं लगाया होगा
ये कमजोर रहे होंगे, और शायद बीमार से लगते थे, औजार भी नहीं थे, इनके पास, शायद कोई भी हुनर या काबिलियत नहीं थी।
तो जब किसी ने काम पर नहीं लगाया तो घर वापस क्यों नहीं गए, शाम तक क्यों रुके रहे?
मैं सोचता हूँ उनके घर में न पैसा था, न चूल्हा जल रहा था, बच्चे भूखे होंगे और शायद घर में बुजूर्ग भी थे। घर भी लौटते तो क्या करते।
आज दुनिया ऐसे पीड़ितों से भरी है जिन्हें कोई काम पर लगाने को तैयार नहीं है। बेरोजगार, कमजोर, बीमार, गरीब और अयोग्य हैं। हमारे प्रभु यीशु की खुशखबरी इन्हीं के लिए है।
हमारा परमेश्वर कंगाल, बंधुए, कुचले हुओं के पास आया है। लूका 4:18
...परमेश्वर ने जगत के मूर्खों को.. निर्बलों को..जगत के नीचों और तुच्छों को, वरन जो हैं भी नहीं उन को भी चुन लिया, (1 कुरिन्थियों 1:27-28)
परमेश्वर
बस 'मजदूरी' ही नही देता है पर साथ में 'प्रेम' भी करता है
आज सवाल है-
'मजदूरी' ही देते हो या मजदूरी के साथ 'प्रेम' भी देते हो?

87. 'हर सरकार परमेश्वर की है'

(मैं किसी राजनीतिक पार्टी में नहीं हूँ)

''जो जीवित हैं वे जान लें कि परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है, और उसको जिसे चाहे उसे दे देता है, और वह छोटे से छोटे मनुष्य को भी उस पर नियुक्त कर देता है'' दानिय्येल 4:17

* वो अपने उद्देश्य पूर्ण करने के लिए काम करता है।
चाहे वो मिस्र में फिरौन था, या बेबीलोन में नबूकद्नेसर या भारत में आज नरेंद्र मोदी और BJP सरकार।
* यदि कोई (सरकार) परमेश्वर से बगावत करेगा तो लिखा है, ''यहोवा के और उसके अभिषिक्त के विरुद्ध पृथ्वी के राजा मिलकर, और हाकिम आपस में सम्मति करेंगे तो वह जो स्वर्ग में विराजमान है, हंसेगा, प्रभु उनको ठट्ठों में उड़ाएगा।''
भजन संहिता 2:2,4

झूठी भविष्यवाणियां

साथ ही मैं आगाह करना चाहता हूं, कि मसीहियत में उन prophets से सावधान रहें, जो झूठी भविष्यवाणी करते हैं, ''धन, दौलत, नाम और लाभ के लिए सांसारिक मसलों की भविष्यवाणी करते हैं जो झूठी निकलती हैं''
(इस election के दौरान भी कुछ भविष्यवाणियां सुनने को मिलीं)
* नीचे कुछ आयतें हैं समझने के लिए
परमेश्वर का वचन कहता है
''झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान रहो, उनके फलों से तुम उन्हें पहचान लोगे''
मत्ती 7:15,16
''तुम संसार के नहीं, वरन मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है'' यूहन्ना 15:19
''परन्तु जो नबी अभिमान करके मेरे नाम से कोई ऐसा वचन कहे जिसकी आज्ञा मैं ने उसे न दी हो, उसको हम किस रीति से पहिचानें?
तो पहिचान यह है कि जब कोई नबी यहोवा के नाम से कुछ कहे; तब यदि वह वचन न घटे और पूरा न हो जाए, तो वह वचन यहोवा का कहा हुआ नहीं; परन्तु उस नबी ने वह बात अभिमान करके कही है'' व्यवस्थाविवरण 18:19, 20, 22
यदि परमेश्वर ये सरकार लाई है, तो प्रार्थना करें कि लोगों का भला हो, और प्रभु यीशु की महिमा हो।

आज सवाल है–

आप का भरोसा सरकार पर है या परमेश्वर पर?

88. स्वर्ग का राज्य 'ईसाई धर्म' नहीं है

स्वर्ग का राज्य उन जगहों में मौजूद है जहां प्रभु यीशु के वचन का पालन होता है परमेश्वर की इच्छा पूर्ण होती है। चाहे वो किसी मनुष्य का अंत:करण का जीवन ही क्यों न हो।

धर्म धरती के हैं (सारे धर्म)
परमेश्वर से मुलाकात के लिये धर्म से ऊपर उठना होगा।
प्रभु यीशु ने कहा, तुम संसार के नहीं, मैं ने तुम्हें संसार में से चुन लिया है। यूहन्ना 15:19
प्रभु यीशु हमें धरती से उठाकर स्वर्ग राज्य में ले आते हैं।
''प्रभु यीशु का प्रचार था, ''स्वर्ग का राज्य निकट आया है''–मत्ती 4:17
धर्मों के चक्रव्यूह में प्रभु यीशु हमें नहीं फंसाते हैं, एक धर्म से दूसरे धर्म में लाने ले जाने का काम वे नहीं करते हैं।
प्रभु यीशु ने लोगों को अपने पास बुलाया है, थके और बोझ से दबे हुए लोगों मेरे पास आओ।
प्रभु यीशु को एक धर्म संस्थापक समझना धोखा है।
प्रभु यीशु हमें धर्म के बंधन से मुक्त करने आये थे।
उन्होंने कहा है सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। यूहन्ना 8:32
वे संसार में आये ताकि कंगालों को खुशखबरी, अंधों को आँखें, बंधुओं को मुक्ति, और कुचले हुओं को उत्थान प्रदान करें। और परमेश्वर के प्रेम का शुभ समाचार सारे संसार को दें।
तो इसमें धर्म कहां है?
प्रभु यीशु के स्वर्ग उठाये जाने के 300 साल बाद एक राजा ने प्रभु यीशु के मुक्ति मार्ग को एक धर्म के नाम से आगे किया। इसी कारण धर्म को मानने वाले ईसाइयों में और प्रभु यीशु द्वारा मुक्त हुए विश्वासियों में अंतर है।
एक के पास बस धर्म है पर दूसरे के पास मुक्ति और अनंत जीवन।
आज सवाल है–
आपके पास ईसाई धर्म है या मुक्ति?

89. तुम में से एक

उस रात, सबको एक कर दिया था उसने, और गुनाहगार को छिपा दिया था। सबने पूछा था, कहीं मैं तो नहीं...
यहां तक कि यहूदा को भी यकीन हो गया था, कि प्रभु यीशु सब जानते करते तो हैं पर पकड़वाने का ये षड्यंत्र, अभी तक वे भांप नहीं पाये हैं।
उसने पांव भी धुलवा लिए, रोटी भी साथ खा ली, मासूमियत का सवाल भी दाग दिया

"कहीं मैं तो नहीं?"
रात के अंधेरे में उसकी खैरियत पूछने आ जाता है...कहता है, रब्बी नमस्कार...और उसे बहुत चूमता है, और प्रभु यीशु उसे फिर भी 'मित्र' कहते हैं। सच ही तो कहा था उसने, प्यार करो जैसे मैंने किया...यूहन्ना 13:34

आज सवाल है–

क्या पापी से प्रेम किया जा सकता है?

90. डाकुओं की खोह

प्रभु यीशु कुछ देहातियों के साथ यरूशलेम के बड़े शहर में प्रवेश करते हैं जो एक तीर्थनगर भी था। पहाड़ से उतरते हुए वे गधे पर सवार हो जाते हैं।
गाँव वाले अपने कपड़े रास्ते में बिछाते हैं, कुछ खजूर की डालियां तोड़ कर रास्ते में बिछाते हैं, और नारे लगते रहते हैं, जयजयकार के, उस राजा के लिए जो परमेश्वर की तरफ से आया है, जिस रास्ते से घोड़े और रथ दौड़ते थे उसमें गधे पर सवार मसीह पर कौन ध्यान देगा कौन डरेगा।
वो नम्र बनकर आया। आधे रास्ते में प्रभु यीशु चिल्लाकर रोने लगे, कहा, क्या ही भला होता, कि तू; हां, तू ही, इसी दिन में कुशल की बातें जानता, परन्तु अब वे तेरी आंखों से छिप गई हैं। लूका 19:42
लोग जयजयकार कर रहे थे और प्रभु रो रहे थे।
इसलिए नहीं की सरकार विदेशी थी, इसलिए नहीं कि गरीबी थी, इसलिए नहीं कि मकान नहीं थे, पीने का पानी नहीं था।
पर इसलिए कि जब मुक्तिदाता बनकर वह अपने घर आया है, तो उन्होंने उसे नहीं पहचाना और तिरस्कार किया।
सीधे वे मंदिर पहुंचते हैं और वहां के व्यापारियों को निकालते हैं, और कहा, तुमने डाकुओं की खोह बना रखी है। लूका 19:28-44,
आज यदि प्रभु हमारे चर्चों में और हमारे धार्मिक व्यापार को देखेंगे तो क्या कहेंगे।

आज सवाल है–

क्या प्रभु यीशु आज फिर से रोएंगे?

91. 'न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी'

कुछ ऐसा ही सोचकर फरीसियों ने योजना बनाई थी, कहा, यीशु को और लाजरस को

जिसे प्रभु यीशु ने जीवित किया था, दोनों ही का कत्ल कर देना होगा - यूहन्ना 12:10 ताकि इस नये पंथ को मिटाया जा सके।
उसके तुरंत बाद प्रभु यीशु एक चुनौती भरी घोषणा करते हैं।
''तुम मुझे क्रूस पर चढ़ा कर मार डालो, तब मैं सब मनुष्यों को अपनी ओर आकर्षित करूँगा'' - यूहन्ना 12:32
(पंथ का खात्मा नहीं होगा बल्कि और फैल जाएगा)
क्यों?
क्रूस के पीछे छिपा हुआ आकर्षण - प्रेम है।
प्रभु यीशु के अनुसार क्रूस का 'खून' वो प्रेम का बीज है जिससे सुसमाचार फैलता है मिटता नहीं है। क्रूस में हर किसी को बस एक बात दिखाई देती है।
प्रेम:
- पापियों को मुक्ति दिलाने वाला प्रेम
- दुश्मनों को क्षमा करने वाला प्रेम
यही 'क्रूस और प्रेम' का रिश्ता है, जो करोड़ों लोगों को आकर्षित करता है। मुक्ति मार्ग में लाता है।
प्रेम दिखता भी है और उसका अनुभव भी किया जा सकता है।
आग दूर से दिखती भी है, पर नजदीक जाने से उसका अनुभव भी हो जाता है।
आज सवाल है–
क्या प्रभु यीशु के प्रेम का अनुभव आपको हुआ है ?

92. समझ नहीं पाया था

1 कुरिन्थिओं 13:13 में छिपे अर्थ को - जब परमेश्वर कहता है
''अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, पर इन में सब से बड़ा प्रेम है''
तीनों में सबसे बड़ा प्रेम क्यों है?
पवित्र आत्मा ने मुझे समझाया, वो इसलिए कि, आशा तुम्हारे अंदर है, विश्वास तुम्हारे अंदर है, जो बाहर किसी और को दिखाई नहीं देता है लेकिन
1. प्रेम बाहर दिखाई भी देता है, और
2. दूसरे लोग तुम्हारे प्रेम का अनुभव भी कर सकते हैं।
इसलिए प्रेम सबसे बड़ा है
आज सवाल है–

क्या दूसरे लोग आप के प्रेम को देखते हैं और अनुभव कर पाते हैं?
किस्सा पुराना है, लेकिन वो जिसने मेरी आँखें खोली।
इन सज्जन की पत्नी नहीं थीं बस एक 12 वर्ष का बेटा था। मैं इनके घर आया था, और बातचीत कर रहा था और इस दौरान उनके हाथ में जो पेपर था, उसे उनके बेटे ने फाड़ दिया। मुझे थोड़ा अजीब लगा। उन्होंने अपने बेटे को बड़े सरल रूप में समझाया, 'बेटा ऐसा नहीं करते, ये अच्छी बात नहीं है। और दूसरा पेपर ले आये।'
थोड़ी देर बाद बेटा फिर से कमरे में आता है और एक गिलास पानी फर्श पर डाल देता है।
मैं हैरान था। फिर भी वो सज्जन शांत रहे। उन्होंने बेटे से फिर गुजारिश की और बैठाकर समझाया और बोले, 'ये ठीक नहीं है देखो तुमने कमरा खराब कर दिया है।'
खैर मेरी बातचीत चल रही थी अचानक उनका बेटा बाहर से दरवाजे पर पत्थर मारने लगता है, और मेरी साईकल भी गिरा देता है।
मैंने सोचा अब तो बेटा अवश्य मार खायेगा। लेकिन नहीं।
अब तो मैं अपने चेहरे के भाव को भी छिपा नहीं रहा था, मुझे लगा बच्चा बिगड़ चुका है, और पिता का भी इसमें दोष है। मेरे मित्र ने ये भांप लिया।
पिता उसका हाथ पकड़ कर अंदर लाये और खाट पर बैठा कर प्रेम से समझाने लगे, कि ये सब बुरे काम हैं और हमें कभी नहीं करना चाहिए, नुकसान होता है।
मेरी हैरानगी को देखकर क्षमा मांगते गए धीमे से मुझ से बोले, 'मेरा बेटा थोड़ा मानसिक रोगी है, आप क्षमा करें।'
मेरी आँखें भर आईं। मैं खामोश हो गया। मुझे लगा मैं अंधा था, पर अब देखता हूँ। मेरे, और मेरे मित्र की प्रतिक्रिया में इतना फर्क क्यों?
एक तरफ क्रोध तो दूसरी तरफ प्रेम था। एक दंड चाहता था तो दूसरा क्षमा कर रहा था। फिर अचानक मेरी प्रतिक्रिया बदल गयी, क्योंकि मैंने एक बच्चे को बीमार पाया, असहाय पाया।
सच यही है, हम जब एक इंसान को कमजोर, कंगाल, कुचला, बीमार, अंधा, और बंधुआ पाएंगे। तब ही उस पर दया करेंगे, उससे प्रेम करेंगे, क्षमा करेंगे। चाहे वो हमारा दुश्मन ही क्यों न हो?
इसी कारण प्रभु यीशु ने हम से प्रेम किया और जब हम पापी ही थे हमें बचाने के लिए अपनी जान भी दे गया।

आज सवाल है–

क्या हर मनुष्य पाप का बीमार नहीं है?

93. डर या शांति?

(गरीबी, बेरोजगारी, बीमारी, शिक्षा, असफलता - मनुष्य के अंदर डर ले आती है।)
डर क्या है?
अपने वर्तमान या भविष्य में खतरे की संभावना का अनुभव - 'डर' पैदा करता है।
'डर' एक मानसिक अनुभव है। निराशा 'डर' को जन्म देती है।
डरा हुआ (भयभीत) व्यक्ति वो है जिसके पास उपाय नहीं है, सहायता नहीं है।
उपाय क्या है। जिसने अपने 'जीवन की कुंजी' परमेश्वर के हाथ दे दी है, उसके अंदर से 'डर' निकल जाता है, क्योंकि उसका हर पल परमेश्वर द्वारा नियोजित होता है जिसने अपनी ताकत से अपने आप को बचाना बंद कर दिया है वह 'डर' पर जीत हासिल करता है।
तो फिर शांति क्या है?
यदि जीवन से 'डर' निकल जाता है। तो बाकी जो बचता है उसे 'शांति' कहते हैं।
प्रभु यीशु ने कहा था।
"तुम्हें मुझ में (उसकी सामर्थ में) शांति मिले। संसार में तुम्हें क्लेश होता है। पर ढाढ़स बांधो। मैंने संसार को जीत लिया है।" यूहन्ना 16:33
जो संसार और शैतान की शर्तों के सामने नहीं झुकता है, उसने संसार को जीत लिया है।
"इस संसार का सरदार आता है, और मुझ में उसका कुछ नहीं।" यूहन्ना 14:30
आगे प्रभु यीशु कहते हैं जान देने तक धीरज रखो,
याने संसार (शैतान, शरीर, पाप) के आगे न झुको।
"जो दु:ख तुझ को झेलने होंगे, उन से नहीं डरो, प्राण देने तक विश्वासी (अडिग) रहो" प्रकाशितवाक्य 2:10
क्या करें?
हर पल हर सांस परमेश्वर के हवाले कर दो,
"और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है; अर्थात् उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं।" रोमियों 8:28
'कुर्बानी देने के लिए तैयार होने के कारण' प्रभु यीशु ने शैतान के किसी भी अधिकार को विजयी नहीं होने दिया।
यही सूत्र प्रभु यीशु अपने अनुयायियों को देते हैं।
अपना क्रूस हर दिन उठा कर मेरे पीछे आओ,

इसका अर्थ है मरने की कीमत देने के लिए भी, मन को तैयार कर लो।
भय मिट जाएगा, शांति से भर जाएगा।
आज सवाल है–
डर है या शांति है?

94. कुतुबुद्दीन ऐबक की हार

मैं कुछ साथियों के साथ (वे देखना चाहते थे) दिल्ली में कुतुब मीनार गया। करीब 900 साल पुराना, खंडहर सा मीनार, मस्जिद, मकबरा और बाग।
मुझे लगा की 'कुतुबुद्दीन ऐबक' कब्र से बाहर निकलकर कह रहा था–"सब कुछ मिट जाएगा।"
अपनी हार की दास्तां, उसकी सल्तनत के पत्थरों के ढेर का इतिहास।
मुझे याद आया हर वस्तु जो दुनिया में है मिट जाएगी।
"परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाईं आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जाएंगे।" 2 पतरस 3:10
एक जो सनातन बना रहेगा वो है परमेश्वर का वचन।
"आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी" मत्ती 24:35
आज सवाल है–
क्या खंडहर बनती दुनिया नजर आती है?

95. जीना जरूरी नहीं है

मर जाओ यदि इससे परमेश्वर की महिमा होती है।
"प्रेम 'किया' जाता है, प्रेम 'बोला' नहीं जाता"
प्रेम 'कर्म' में है 'शब्द' में नहीं।
दूसरे शब्दों में–क्या तुम मुझ से प्रेम करते हो? मेरे पीछे आओगे? मेरी आज्ञा मानोगे? मेरे लिये मरोगे?
यदि हाँ, तभी तुम मेरी महिमा कर पाओगे।
"अपने स्वार्थ को मारना, अपना इनकार करना, अपना क्रूस उठाना, वही एक महिमामय मृत्युमार्ग है जिस के द्वारा दुनिया को हमारे अंत:करण से प्रभु यीशु दिखाई देने लगते हैं।"
पतरस से सवाल – तीन बार प्रभु यीशु ने पतरस से एक ही सवाल किया था ताकि

पतरस को सवाल की 'गंभीरता' का पता लगे।
क्या तुम मुझ से प्रेम करते हो?
यदि प्रेम करते हो... तो करो (मेमनों को चराओ)
यदि प्रेम करते हो... तो करो (भेड़ों की रखवाली करो)
यदि प्रेम करते हो... तो करो (भेड़ों को चराओ)
और फिर मर जाओ, मेरे पीछे चलते चलते, ताकि परमेश्वर की महिमा हो। यूहन्ना 21:15
प्रभु यीशु ने पतरस को यही बताया और उसने प्रेम का मापदंड (स्केल) भी दिया। यूहन्ना 21:15-19

'सिद्ध प्रेम' (Perfect love) जीवित रहकर नहीं दिखाया जा सकता है, उसके लिए मरना पड़ेगा। समझने के लिये यदि perfect प्रेम 100% है, तो शायद पति पत्नी का प्रेम 70% हो सकता है। मां बाप और बच्चे के बीच का प्रेम शायद 90% होगा।

लेकिन 100% प्रेम वो perfect प्रेम है जो मौत के द्वारा प्रगट किया जाता है और नापा जा सकता है।

- प्रेम मृत्यु के तुल्य सामर्थी है,
- पानी की बाढ़ से भी प्रेम नहीं बुझ सकता,
- प्रेम न महानदों से डूब सकता है।
- प्रेम की कीमत यदि कोई अपने घर की सारी सम्पत्ति से दे तो वह प्रेम का अपमान माना जायेगा।

श्रेष्ठगीत 8:6,7

- इसलिए प्रभु यीशु ने कहा इससे बड़ा प्रेम और कोई नहीं कि एक मनुष्य अपने मित्र के लिए जान दे। यूहन्ना 15:13
- प्रभु यीशु कहता है, मरने तक धीरज रखना है, विश्वास नहीं खोना है। प्रकाशित 2:10
- परमेश्वर का प्रेम तो इस बात से प्रगट हुआ कि जब हम पापी/शत्रु ही थे, तब प्रभु यीशु हमें बचाने के लिए मर गया। रोमियों 5:8

आज सवाल है–

हम किस तरह का प्रेम कर रहे हैं?

96. सम्मेलन/कांफ्रेंस (Conference)

हेरोदेस राजा के महल में मत्ती 2:1-16 / लूका 2:8-20

विदेशी ज्ञानी ज्योतिष शास्त्री (scientist) यरूशलेम आ गए थे। राजा ने उनका स्वागत

किया। ये विदेशी ज्योतिषी ज्ञानी यरूशलेम की शान शौकत, भीड़-भाड़ और बाजार से काफी प्रभावित हुए थे। उन्हें लगा कि उनकी यात्रा, मेहनत सफल हुई, अच्छा लग रहा था। उन्होंने ऊपर से निर्देशित सितारे की दिशा त्याग दी थी, और अब बुद्धि, ज्ञान और किताबों का सहारा लेना था।

राजा पैदा तो राजा के घर ही होता है, इस सोच में कोई मुश्किल उन्हें नहीं लगी।

हेरोदेस राजा ने महल में कांफ्रेंस (conference) बुलाई।

एक तरफ ज्योतिषियों का सांसारिक ज्ञान अनुसंधान तो दूसरी तरफ यहूदी गुरुओं का बाइबिल का धार्मिक ज्ञान, एक तरफ ज्योतिष शास्त्र तो दूसरी तरफ धर्म शास्त्र। ज्योतिषियों ने राजा या मसीह के पैदा होने की बात कही, तो धार्मिक शास्त्रियों ने बाइबिल पढ़के उसके पैदा होने वाले शहर का नाम बताया।

दोनों ज्ञानों की सहायता से हेरोदेस ने अपने कत्लेआम के मनसूबे को अंजाम दिया। और सैंकड़ों बच्चों का खून बैतलहम की गरीब गलियों में बहाया जिसकी क्रूरता की आवाज आज भी हमारे कानों में गूंज रही है।

दूसरी ओर

* अनपढ़ चरवाहे

- कंगाली, अंधापन, बन्धुआई और लाचारी के प्रतीक थे।
- घर में सो नहीं रहे थे पर मैदान में अंधेरे में बैठे थे।
- उन पर प्रकाश ऊपर से चमका।
- बड़े आनंद का संदेश ऊपर से आया।
- मुक्तिदाता के जन्म स्थान का पता ऊपर से आया।
- जाओ, मिलो और आराधना करो का संदेश ऊपर से आया।
- बिना भेंट लिए खाली हाथ जाकर दंडवत करो का संदेश ऊपर से आया।

उनकी नजर और कान ऊपर आसमान की ओर लगे थे।

(आपने ये भी देखा है–

हाथ में बाइबिल है और इस्तेमाल बच्चों के कत्लेआम के लिये?

हाथ में बाइबिल है और एक स्त्री को पत्थरवाह करने के लिये?

हाथ में बाइबिल है, और आज धन दौलत इकट्ठा करने के लिये?

हाथ में बाइबिल है, और आज उद्देश्य नाम कमाने के लिये, बड़े बनने के लिये?

हाथ में बाइबिल है, और आज इस्तेमाल झूठी भविष्यवाणियां करने के लिये?)

आज सवाल है

किस कांफ्रेंस में बैठे हैं आप?

97. कत्ल हुआ था

सैकड़ों बच्चों का, उसके जन्म के साथ
चीत्कार, आंसू, खून खराबा, अत्याचार और नफरत
रोमी तानाशाहों का खूनी कानून
पर ये सब वो नहीं साथ लाया था,
बल्कि उसके ज्योति बनकर आने से अंधकार के बुरे काम प्रगट हो गये।
यूहन्ना 3:20, 21

उसके आने की खबर,
अनपढ़, गंवारों, निकम्मों, बंधुओं और कंगालों को मिली
आखिर वे ही तो 'शांति' ढूंढ रहे थे
बाकी पढ़े लिखे, धनी, सभ्य लोग तो धर्म और सरकार पर आस लगाए थे
"मत डरो" (यही है वो शब्द जो हमें भरोसा दिलाता है)
मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिये होगा।
आज एक उद्धारकर्ता जन्मा है,
और यही मसीह प्रभु है।
लूका 2:10,11

एक ऐसी भी नाव है जो
तूफानी हवाओं, और भयानक लहरों के बीच समुंदर में नहीं डूबती है
एक ऐसा भी प्रभु है जो
अशांत, खूनी, अत्याचारी, पापी दुनिया के बीच खड़ा है, कहता है मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूंगा, अपनी शांति तुम्हें दूंगा।
संसार की झूठी शांति नहीं, सच्ची शांति।
आज सवाल है–
क्या प्रभु यीशु की 'शांति' पर भरोसा किया जा सकता है?

98. CAA, NRC - प्रभु यीशु पर भी

.... हर दिन सवाल आए
कहां का है, कौन है, किसका बेटा है

किस शहर का है
नागरिकता - प्रभु यीशु की क्या विदेशी है
... वो शरणार्थी भी बना.. मिस्र में,
उस समय जब खून खराबा, सत्ता और धर्म के नाम पर हो रहा था।
राष्ट्रवाद, नस्लवाद, जातिवाद से पीड़ित रहा
(Nationalism, racism, casteism)
निंदा, अपमान, और हिंसा से पीड़ित था
उसे बेतलहम - की जन्मभूमि छोड़कर शरणार्थी बनना पड़ा,
नासरत - की अपनी बस्ती से उसे बाहर खदेड़ा गया, और मार डालने की कोशिश हुई,
कफरनहूम - के लोगों ने उसे अस्वीकार किया
गिरासेनियों - के लोगों ने उसे अपने इलाके से निकल जाने को कहा
सामरियों - के एक गांव ने उसका रास्ता रोका, प्रवेश करने से रोका
यरूशलेम - शहर में धार्मिक नेताओं ने उसे पकड़ा, शहर में दंगा कराया, और उसे क्रूस पर मृत्युदंड दिया।
तो ये सब किसलिए
इसलिए कि हम परमेश्वर के राज्य के नागरिक बनें, संसार से बाहर आएं मुक्ति पाएं।
हां, वो शूद्र था, दलित था,
ब्राह्मण और भारतीय, शरणार्थी और विदेशी
ताकि अपने आप में सब को एक कर ले
अपने बलिदान द्वारा सबको मुक्ति लाये
''और उसके क्रूस पर बहे हुए लोहू के द्वारा मेल मिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की।''
कुलुस्सियों 1:20
प्रेम संदेश लाया
मार्ग, सत्य और जीवन बनकर आया
''उसने हमारे बीच डेरा किया और हम सबसे प्रेम किया'' यूहन्ना 3:16
आज सवाल है–
कि सवाल है क्या?

99. अच्छा हुआ कि आप नहीं थे उधर...

आग लगाओगे बसों में

... और धर्मरक्षा करोगे,
पथराव करोगे पुलिस पर
... और प्रभु यीशु के नाम की इज्जत बचाओगे,
तोड़फोड़ करोगे सड़कों पर
... और गिरजाघरों की तोड़फोड़ रोकोगे,
अच्छा हुआ कि आप नहीं थे उधर ....
जब प्रभु यीशु पापियों को बचाने आए थे, मार खाए, अपमान सहे, कोड़े खाए, थप्पड़ खाए, थूके गए, गालियां सुने, कांटों का ताज पहिने, और क्रूस की मौत उठाए। और क्रूस पर से सारी मानव जाति को क्षमा किये।
फिर भी खामोश रहे....
अच्छा हुआ कि आप नहीं थे उधर ....

नहीं तो आप तो उसे मुझ पापी को मुक्ति देने के लिए मृत्युदंड उठाने ही नहीं देते।
अच्छा हुआ कि आप नहीं थे उधर....
हां तो
रक्षा उस धर्म की करनी होती है जो मनुष्य का बनाया हुआ होता है
रक्षा उस ईश्वर की करनी होती है जो अपने आप को नहीं बचा सकता है
(अपने दुश्मनों से प्यार करो, जो तुम्हें सताएं उनके लिए प्रार्थना करो, मत्ती 5:44)

आज सवाल है–
कर क्या रहे हो?

100. कुर्सी

कौन लगाता है, आपके चर्च में
दरी कौन बिछाता है, सफाई कौन करता है?
हां
तो वही व्यक्ति ये काम क्यों करता है?
किस्सा है–एक बार
प्रभु यीशु गुरु और प्रभु होने के बावजूद
अपने शिष्यों के पांव धोते हैं

इस काम के पहले उनका शिष्य
पतरस कहता है, ''तू मेरे पांव कभी न धोने पाएगा'' यूहन्ना 13:8

ऐसा क्यों कहा उसने?
इसलिए कि उसकी मानसिकता/सोच भेदभाव की थी।
जो कि गर्व, घमंड, स्वाभिमान, और झूठी अस्मिता पर आधारित थी।

एक ओर सर्वशक्तिमान प्रभु,
संसार का सबसे छोटा समझा जाने वाला काम कर रहे थे
जो गुलाम का था

दूसरी तरफ पतरस की मानसिकता ये थी
कि कुछ कार्य समाज के छोटे लोगों का ही होता है,
जो बड़े समझे जाने वाले लोगों के लिए अपमानजनक होता है
(उदाहरण, दलितों का काम दलित करें, और जो काम ऊंचा समझा जाता है वो दूसरे वर्ग के लोग कर सकते हैं)

प्रभु यीशु दीवारें तोड़ने आए थे,
ऊंच-नीच के बीच की,
छोटे-बड़े काम के बीच की

समाज में मनुष्य को उसके काम/पेशे
के आधार पर बांटना, विभाजित करना,
अन्याय है
परमेश्वर की योजना के विपरीत है

प्रभु यीशु ने ये बात उजागर करने के लिए ही अपना उदाहरण पेश किया था।
''और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का सेवक बने'' मरकुस 10:44

इस सामाजिक बुराई को हम....
कर्मवाद (की मानसिकता) कह सकते हैं

हिंदी भाषा का शब्द नहीं है कर्मवाद
लेकिन मुझे बात आपके सामने रखने के लिए इसे लाना पड़ेगा
जैसे जातिवाद - शब्द से जातियों के बीच भेदभाव समझा जाता है
वर्गवाद, वर्णवाद इत्यादि शब्द से समाज का अन्याय पूर्ण विभाजन समझा जाता है या नस्लवाद (racism) जो कि रंग, भाषा, देश, जाति के नाम पर भेदभाव करता है।
आज सवाल है–
सफाई कौन कर रहा है?

101. क्या मैं हिन्दू हूं?

आज सवाल है–
किसी ने कहा है कि भारत के सभी नागरिक हिन्दू हैं
ठीक है तो क्या मैं तिलक लगाकर, भगवा पहनकर हिन्दू कहला सकता हूं? या जय श्री राम कहने से बन जाऊंगा।
मैं टोपी (skull cap) पहनकर हरे रंग धारण करके मुस्लिम कहला सकता हूं?
या बस
अल्लाहो अकबर का नारा काफी होगा।
या पगड़ी (turban) पहनकर सिख बन सकता हूं?
लेकिन सच तो ये है कि
आप चर्च जाकर, ईसाई घर में पैदा होकर,
ईसाई धर्म के तो शायद कहला सकते हैं,
पर
चर्च में बैठकर प्रभु प्रभु के जप करने वाले सब लोग भी
पवित्र बाइबिल के वचन के अनुसार परमेश्वर के राज्य (मुक्ति) को नहीं पा सकते हैं (मत्ती 7:21 जो मुझ से, हे प्रभु, हे प्रभु कहता है, उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।)
आपने धर्म तो पा लिया है
पर मुक्ति नहीं पाई है
क्रिया कर्म तो पा लिया है
पर पाप के बंधन से मुक्ति नहीं पाई है
आप को धर्म तो मिल गया है

पर उसमें कोई मुक्तिदाता नहीं मिला है
इसलिए यूहन्ना 14:6 में लिखा है
''मार्ग सत्य और जीवन मैं हूं। बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता''
सच तो ये है
धर्म अनेक हैं पर मुक्तिदाता एक है

प्रभु यीशु मार्ग हैं
प्रभु यीशु सत्य हैं
प्रभु यीशु ही जीवन हैं

प्रभु यीशु परमेश्वर का राज्य स्थापित करने आए हैं।
परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर के आत्मिक कानून चलते हैं।
जो रीति रिवाज पर आधारित नहीं है, पर पवित्र जीवन पर आधारित है।

प्रभु यीशु की क्रूस की मृत्यु, उसके द्वारा हमारे पापों का दण्ड उठाना है।
ताकि हमें पापों कि क्षमा मिल सके
और उसके तीसरे दिन मृत्यु पर जय पाने के द्वारा
हमें भी मृत्यु पर जय (आत्मा की मुक्ति) मिल सके।

तो इन सब के बीच धर्म कहां आता है?

मुद्दा तो पाप से मुक्ति का है
प्रभु यीशु मनुष्य को अपने पास बुलाते हैं
तो
क्या मैं ईसाई हूं?
आज सवाल है–

102. उम्र 2019 साल नहीं है, प्रभु यीशु की

प्रभु यीशु संसार में आए तो परमेश्वर पिता ने उनका नाम यीशु दिया जिसका अर्थ है

वह जो पापों से उद्धार करता है। मत्ती 1:21
और प्रभु यीशु का दूसरा नाम 'इमानुएल' भी है। जिसका अर्थ है परमेश्वर हमारे साथ, मत्ती 1:23
और एक नाम जो अनादिकाल से प्रभु यीशु का है, वो है 'वचन' यूहन्ना 1:14
वे सनातन हैं
उनका आदि और अंत नहीं है इसलिए उनका नाम जो इस संसार में आने के पहले हमारे लिए दिया गया है वो है वचन
वचन कोई अर्थहीन शब्द (sound) नहीं है पर अर्थपूर्ण है जो उसकी सामर्थ, शक्ति, कार्य और सनातन स्वरूप को प्रगट करता है।
उसका वचन सृष्टि/रचना करता है, और सारी सृष्टि ब्रह्मांड को थामे रहता है।
वो स्वयं वचन है।
प्रभु यीशु को 'नाम' की सीमा के अंदर नहीं लाया जा सकता है इसलिए उन्हें 'वचन' से संबोधित किया गया है।
आज सवाल है–
क्या वचन ने हमारे अंदर नई सृष्टि रची है?

103. नाम

क्या उन्हें बदलना जरूरी नहीं?
तो प्रभु यीशु के जीवन को अपनाने वाले - अपना नाम क्यों नहीं बदलते?

क्या सरकार से अपनी जाति विशेष रियायतें और फायदे जारी रखना चाहते हैं?
ये सवाल मुझ से किया गया था।
बात ये है कि
इंसान की कीमत - नाम से नहीं आंकी जाती है।
नाम के लिए नहीं बना है इंसान।
पर इंसान के लिए बना है नाम।
(अर्थ ये है कि कीमत इंसान की है)
बाइबल में दानिय्येल की किताब में तीन जन थे जो परमेश्वर के उपासक थे।
राजा नबूकदनेजार ने उनका नाम अपने बेबीलोन के देवताओं के नाम पर, शद्रक, मेशक, और अबेदनेगो रखे। उनके विश्वास पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। बल्कि जब वे आग

की भट्टी में डाले गए तब स्वयं परमेश्वर के पुत्र उनके मध्य आये और तीनों को आंच तक नहीं लगी।
नाम में ताकत नहीं है, विश्वास में ताकत है।
आज सवाल है–
आपकी पहचान आपके नये जीवन से है, या नाम से?

104. बपतिस्मा क्यों लिया प्रभु यीशु ने?

प्रभु यीशु जब शून्य बनकर आए,
तो उन्होंने अपना स्वर्गीय सिंहासन छोड़ा, अपने अधिकारों को अलग रखा,
फिलिप्पियों 2:6, 7 जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी ...अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया,....
और ये भी सच है कि उसने अपनी स्वेच्छा को भी शून्य कर दिया और इस संसार में आकर अपने आप को मनुष्य का पुत्र कहा, यह कहकर उसने ये भी घोषणा की कि मैं परमेश्वर का पुत्र अवश्य हूं लेकिन
क्योंकि मैं मनुष्य पुत्र बनकर आया हूं मैंने अपनी स्वेच्छा का भी परित्याग किया है इसका अर्थ ये नहीं है कि उसकी स्वेच्छा बुरी थी, या परमेश्वर की इच्छा के विपरीत थी।
कहने का सरल अर्थ ये है कि मैं भी यूहन्ना से पानी का बपतिस्मा लेकर ये गवाही दे रहा हूं, कि मैं शरीर की शक्ति और इच्छा से जीवन नहीं जीऊंगा, परन्तु परमेश्वर पिता की इच्छा इस संसार में करूंगा।
यूहन्ना 6:38 क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, वरन् अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिये स्वर्ग से उतरा हूं।
कभी आपने सोचा कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पुत्र को रात-रात जंगलों में पहाड़ों पर, और जगह-जगह प्रार्थना करते हुए हमने क्यों देखा। वह इसलिए कि परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए घुटने पर होना पड़ता है।
1.
मत्ती 3:1, 2, 8 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला.. यह प्रचार करने लगा कि मन फिराओ; क्योंकि स्वर्ग का राज्य निकट आ गया है।
..सो मन फिराव के योग्य फल लाओ।
अर्थ - मन फिराओ का ये मतलब है कि अभी तक अपने मन मर्जी का जीवन और

पापमय जीवन जी रहे थे, लेकिन अब परमेश्वर की आज्ञा का नया जीवन जीएंगे।

2.

मत्ती 3:9 और अपने अपने मन में यह न सोचो, कि हमारा पिता इब्राहीम है;
अर्थ – अपनी जाति, धर्म, कर्म पर भरोसा मत रखो

3.

मत्ती 3:11 मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं,
अर्थ – तुम्हारे मन फिराव की जो शारीरिक गवाही है, पानी के बपतिस्मे द्वारा मैं दिलवाता हूं लेकिन जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से शक्तिशाली है; वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।
वह अंदर से तुम्हें अपनी आत्मा द्वारा नया पवित्र जीवन दिखाएगा और चलाएगा, जीवन से पाप की गंदगी को आग की तरह साफ करेगा। इस प्रकार तुम परमेश्वर की इच्छा जीवन में पूरी कर सकोगे।

4.

मत्ती 3:15 यीशु ने उसको यह उत्तर दिया... हमें इसी रीति से सब धामिर्कता को पूरा करना उचित है,
अर्थ – हमें दुनिया के सामने भी गवाही देनी है, और परमेश्वर के सामने भी दृश्य और अदृश्य जीवन में परमेश्वर की इच्छा को पूर्ण करना है।

5.

मत्ती 3:17 और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं।
अर्थ – परमेश्वर गवाही प्रभु यीशु के बारे में देता है कि वह इसलिए प्रसन्न है क्योंकि वह हर समय पिता की इच्छा इस संसार में पूरा करता रहा है, और उसने अपनी स्वेच्छा का परित्याग किया है।

आज सवाल है–

क्या आपने भी बपतिस्मा लेने के साथ परमेश्वर की इच्छा पूर्ण करने की गवाही दी है?

105. मेरे पीछे आओ

इसका मतलब है क्या?
(4 सुसमाचार में ये 20 बार आया है)
आखिर वो कहां ले जाना चाहता है।

प्रभु यीशु हमेशा बुलाते हैं।
'मैं पीछे आऊंगा' और 'मेरे पीछे आओ' में अंतर –
एक व्यक्ति प्रभु के पास आकर बोला में आपके पीछे आऊंगा।
प्रभु ने उससे कहा मुझे सिर रखने की जगह नहीं है।
लूका 9:57, 58
हम अपनी मर्जी से उसके पीछे चल नहीं सकते ये असंभव है, क्योंकि इसका अर्थ होगा एक आत्मिक रूप से मरा व्यक्ति अपनी मर्जी व शक्ति से परमेश्वर के पीछे आ रहा है।
प्रभु यीशु कहते हैं
मैंने तुम्हें चुना, मैंने तुम्हें इस संसार से निकाल लिया है, मेरे पीछे आओ, इत्यादि
1.
उस ने गलील की झील के किनारे फिरते हुए दो भाइयों अर्थात् शमौन को जो पतरस कहलाता है
कहा, मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़ने वाले बनाऊंगा।
मत्ती 4:18,19
एक तरफ मछली और दूसरी तरफ मनुष्य की तुलना का अर्थ है।
एक तरफ तो दुनियादारी, धन-दौलत, संसार और दूसरी तरफ जीवन या मनुष्य।
वह हमारे जीवन की प्राथमिकता (priority) को बदल देता है।
नाशवान धन सम्पत्ति से हमें जीवन की तरफ मोड़ता है।
2.
लूका 9:23
"उस ने सब से कहा, यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप से इन्कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।"
मेरे पीछे हो लेने की आवश्यक शर्त है, अपनी इच्छा को हर दिन क्रूसित करना और परमेश्वर की इच्छा जानकर उसके पीछे चलना।
3.
यूहन्ना 12:26 यदि कोई मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले; और जहां मैं हूं वहां मेरा सेवक भी होगा; यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा।
"जहां मैं हूं वहां मेरा सेवक भी होगा"
इसका अर्थ है जैसा मेरा जीवन है वैसे ही तुम्हारा जीवन भी होगा।
4.

रोमियों 8:28, 29
जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। (मेरे पीछे आओ)
उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे।
इसका अर्थ ये है कि इकलौता पुत्र तो मर गया लेकिन जो जी उठा वो पहिलौठा है, और हमें उसके जीवन के स्वरूप में बढ़ना होगा।

5.

यूहन्ना 10:27, 28
"मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं, और मैं उन्हें जानता हूं, और वे मेरे पीछे पीछे चलती हैं। और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूं।"
यहां साफ है, पीछे चलने का लक्ष्य, जीवन को पाना है।

लेकिन चेलों का पीछे आने के बजाय वापस मुड़ना।
यूहन्ना 21, में हम एक उल्टा काम होते देखते हैं, जिस झील के किनारे से प्रभु यीशु ने अपने चेलों को मछली छोड़कर जीवन की ओर मोड़ा था, अब उसका उल्टा हो रहा है।
मनुष्य और जीवन को छोड़कर - वापस मछलियों की ओर दृष्टि है (प्रेम है)।
प्रभु यीशु आते हैं और पूछते हैं पतरस से क्या तू मुझ से प्रेम करता है, या इन मछलियों (धन) से अधिक प्रेम करता है। ये पूछना इसलिए आवश्यक हो गया था, क्योंकि पतरस और प्रभु के बीच मछलियां आ गई थीं।
फिर से प्रभु कहता है मेरी पीछे आओ।
यानी मेरी इच्छा जानो, उस पर अमल करो ओर मेरे समान जीवन जिओ, और इसके अंत में मृत्यु भी आएगी लेकिन उससे भी परमेश्वर की महिमा होगी।

आज सवाल है–

आपके प्रभु के पीछे चलने में क्या रुकावट हैं?

106. धर्मों का अंधापन क्या है

(परिभाषा - धर्मों का अंधापन ये है कि वो अपने अनुयाइयों को इस भ्रम में डाल देते हैं, की बुद्धि, कर्म और खोज द्वारा परमेश्वर को जाना जा सकता है) लेकिन

न मिले ईश्वर और न ही मिले मुक्ति।
(नीचे लिखे वचन को सही तरह से समझें)
...हे पिता...तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर 'प्रगट' किया है। मत्ती 11:25
प्रभु, स्वर्ग का राज्य, या आत्मिक संसार
प्रगटीकरण है (कोई दिखाता है, दिलाता है)
बुद्धि, ज्ञान, समझ नहीं है (मनुष्य की शक्ति नहीं है)
अंधे कौन हैं?
सही कहा जाए तो अंधे तो हम सब ही हैं। जब तक हमारी आंखें खोली ना जाएं, किसी के द्वारा यानी छिपे हुए राज को दिखाए। क्योंकि हम स्वयं योग्य नहीं हैं।
प्रगट किया है -
* परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, पुत्र ..ने उसे 'प्रगट' किया। यूहन्ना 1:18
* जिनके मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे। मत्ती 5:8
* जिस पर पुत्र उसे 'प्रगट' करना चाहे। मत्ती 11:27
* मांस और लोहू ने नहीं, (मनुष्य की सामर्थ से नहीं) परन्तु पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर 'प्रगट' की है। मत्ती 16:17

A

धर्म को ज्ञान, बुद्धि और शिक्षा द्वारा जाना जाता है।
(ये मनुष्य की शक्ति है)
परमेश्वर धर्म के अंदर नहीं है धर्म से पहले है और धर्म के बाहर है।
धर्म का प्रारंभ है उत्पत्ति है धर्म एक मत है पंथ है।

B

प्रगटीकरण परमेश्वर की ओर से - बुद्धि ज्ञान, शिक्षा को पार (bypass) करता है और परमेश्वर से मिलाता है।
जब

1. हम नम्र और दीन बन जाते हैं,
   याने अपनी शक्ति त्यागते हैं,
2. मन फिराते हैं
   गंदे मन की शुद्धि चाहते हैं,
3. परमेश्वर हम पर प्रगट होता है।
4. हम विश्वास करते हैं

आज सवाल है–
भ्रमित तो नहीं हैं हम भी?
I mean confused

107. वो बातें करने आया था, उसने भाषण नहीं दिए

''वह अपने घर आया'' यूहन्ना 1:11
प्रभु यीशु गांव गांव और बस्तियों में सुसमाचार सुनाते फिरे।
उनके बीमारों को चंगाई दी और भूतग्रसितों को आजाद किया।
वो अपना आश्रम बनाकर यरूशलेम की तीर्थ नगरी में क्यों नहीं रुक गए?
वो इसलिए कि कंगाल, अंधे, बंधुए, बीमार कुचले और बुजुर्ग चल नहीं सकते थे।
इसलिए वो उनके घर गलियों और गांवों तक खुद ही पहुंच गये
सही तो कहा था न।
मैं सेवा करवाने नहीं आया हूं, सेवा करने आया हूं, खोए हुओं को ढूंढने और बचाने आया हूं।
प्रभु यीशु ने कहा, ''आओ हम और कहीं आस पास की बस्तियों में जाएं, कि मैं वहां भी प्रचार करूं, क्योंकि मैं इसी लिये निकला हूं। सो वह उन की सभाओं में जा जाकर प्रचार करता रहा।'' मरकुस 1:38,39
प्रभु यीशु ने लोगों से बातें करी, भाषण नहीं दिए। वो ज्ञान नहीं बांट रहा था, जीवन की बातें कर रहा था।
बातचीत के दौरान कभी लोग उसे टोक देते थे, कभी रोकते थे, कभी धमकी देते थे, कभी उल्टे सवाल करते थे। उसकी बातों मैं कोई शब्द को पकड़ने की कोशिश करते थे। लेकिन वो नाराज नहीं होते थे, क्योंकि वो हमसे बात करने आए थे और वो हमारी भी सुनते हैं।
फरीसियों के बोलने में और प्रभु यीशु के बोलने में यही तो फर्क था।
प्रभु जीवन से संबंधित बातें करते थे, और फरीसी भाषणबाजी।
प्रभु यीशु ने लोगों के साथ रोटी खाई, उनके घर रहे, उनकी शादी की दावत में गए, उनकी बीमारियों को दूर किया, और कभी उनके साथ वे रोए भी।
लिखा है, ''वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया। और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया'' यूहन्ना 1:11,14

आज सवाल है–
भाषण चल रहा है या बातें हो रही हैं?

2
मिट्टी, पत्थर काफी है परमेश्वर के लिए
ऐसी जगह जहां परमेश्वर और उसके आराधक मिलें, हम उसे वेदी कह सकते हैं (चर्च)
मूसा को परमेश्वर ने वेदी निर्माण का तरीका बताया (और हमें आराधना करने का)
मेरे लिये
मिट्टी की एक वेदी बनाना, और अपनी भेड़-बकरियों और गाय-बैलों के होमबलि और मेलबलि को उस पर चढ़ाना;
मिट्टी?
(कहां है सोना चांदी और धन की दिखावटी भक्ति?)
और यदि पत्थरों की वेदी बनाओ, तो तराशे हुए पत्थरों से न बनाना;
क्योंकि जहां तुम ने उस पर अपना हथियार लगाया वहां तू उसे अशुद्ध कर देगा। (भक्ति ऊपरी दिखावे या मनुष्य की काबिलियत (talent) से प्रभावित ना करी जाए)
निर्गमन 20:24, 25
आराधना जीवन से होती है। शब्दों की सुंदरता और वस्तुओं की कीमत से नहीं।
यानी
1. आराधना में न तो धन दौलत की बू आनी चाहिए और
2. ना आराधक के दिखावटी कपट, झूठ से भरे शब्दों की।
आज सवाल है–
आपकी आराधना सही तो हो रही है न?

108. विश्वास - सरल शब्दों में

कोई पत्थर पर विश्वास करता है, कोई अपने ज्ञान या बुद्धि पर - तो दूसरी ओर - दुष्टात्मा भी विश्वास रखते, और थरथराते हैं। याकूब 2:19
तो हमारा विश्वास अलग क्यों है, वो इसलिए कि किसी मूर्ति के मुंह से कोई वचन नहीं निकला है, जिस पर हम विश्वास करें।
आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यूहन्ना 1:1
1. परमेश्वर = वचन

याने
2. परमेश्वर पर विश्वास करना = वचन पर विश्वास करना
एक बार की बात है। कुछ लोग प्रभु की बातें सुनकर भावुक हो गए और बोले कि हम परमेश्वर के कार्य करना चाहते हैं यूहन्ना 6:28
प्रभु यीशु ने कहा
परमेश्वर का (कार्य) यह है, कि तुम उस पर (विश्वास) करो। यूहन्ना 6:29
3. विश्वास = कार्य
क्योंकि पहले विश्वास आएगा और उसके द्वारा हमारा नया चालचलन होगा। और कर्म पैदा होंगे।
(पवित्र आत्मा के साथ)
इसका अर्थ ये है कि विश्वास, कर्म में दिखाई देता है।
विश्वास का अनुभव किया जाना चाहिए। जैसे तुम सत्य को जानोगे (विश्वास करोगे) और स्वतंत्र हो जाओगे। यूहन्ना 8:32
4. विश्वास = अनुभव
एक योग है–विश्वास और कर्म का।
मैं तीन वचन लेकर समझाता हूं।
जिनका सार है–
विश्वास से कर्म करना चाहिए (याकूब 2:20)
विश्वास से चलना चाहिए (2 कुरि. 5:7)
विश्वास से देखना चाहिए (2 कुरि 4:18)
याकूब 2:20 ..क्या तू यह भी नहीं जानता, कि कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है?
2 कुरि 5:7 क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।
2 कुरि 4:18 ...अनदेखी वस्तुओं को देखते रहते हैं।
विश्वास हमारी आंखे हैं या कहा जाए जीने के लिए विश्वास आवश्यक है।
मत्ती 4:4 .. मनुष्य हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।
5. वचन को खाकर = वचन पर विश्वास कर।
हमारे विश्वास के जीवन का मार्गदर्शन पवित्र आत्मा एक सहायक के रूप में करता है।
'विश्वास के पिता'
इब्राहीम ने परमेश्वर के वचन पर विश्वास किया, और उस समय जब उसकी संतान ही नहीं थी, वह बूढ़ा हो रहा था परमेश्वर के वचन को माना जब उसने कहा था कि तेरी संतान आकाश के सितारों की तरह अनगिनत होगी।

विश्वास ने इब्राहीम का चालचलन और सांसारिक नजरिया ही बदल दिया।
इब्रानियों 11:8-10 विश्वास ही से इब्राहीम ..ऐसी जगह निकल गया ... और यह न जानता था, कि मैं किधर जाता हूं; तौभी निकल गया। और तम्बूओं में वास किया।
क्योंकि वह उस स्थिर नेव वाले नगर की बाट जोहता था, जिस का रचने वाला और बनाने वाला परमेश्वर है।
रोमियो 1:17 .. 'विश्वास' से धर्मी जन 'जीवित' रहेगा।
6. विश्वास = जीवन
आज सवाल है–
विश्वास की आपकी आंखें क्या देख रही हैं?

109. गली नुक्कड़-संगती
The street fellowships

शिष्य आश्रम का अभियान
आज मैं आप सबको प्रोत्साहित करता हूं, कि गवाही और सुसमाचार को लेकर सड़कों पर उतर आइए (चर्च भी चलता रहे लेकिन संगती...)
घर और चर्च की दीवारों के बाहर निकलिए।
चौराहों और नुक्कड़ पर मिलिये।
प्रभु के जीवन की बातें करिए मिलकर प्रार्थना करिए।
बातें और जीवन-
प्रभु यीशु भाषण नहीं देते थे बात करते थे, कभी उन्हें बीच में कोई रोकता था, कोई टोकता था, तो कोई चिल्लाता था, कोई अपमान करता था तो कोई आधी बात के बीच कोई आग्रह करता था।
वो नाराज नहीं हुए। सीढ़ियों से उतरकर वो इसीलिए तो आए थे।
"वह अपने घर आया" कव में सुसमाचार सुनाते फिरे। उनके बीमारों को चंगाई दी और भूतग्रसितों को आजाद किया।
वो अपना आश्रम बनाकर यरूशलेम की तीर्थ नगरी में क्यों नहीं रुक गए? वो इसलिए कि कंगाल, अंधे, बंधुए, बीमार कुचले और बुजुर्ग चल नहीं सकते थे। इसलिए वो उनके घर गलियों और गांवों तक खुद ही पहुंच गये।
सही तो कहा था न। मैं सेवा करवाने नहीं आया हूं, सेवा करने आया हूं, खोए हुओं को

ढूंढने और बचाने आया हूं।
प्रभु यीशु ने कहा, ''आओ हम और कहीं आस पास की बस्तियों में जाएं, कि मैं वहां भी प्रचार करूं, क्योंकि मैं इसी लिये निकला हूं।'' मरकुस 1:38,39
वो ज्ञान नहीं बांट रहे थे, जीवन की बातें कर रहे थे। उनसे जिनसे कोई बात नहीं कर रहा था।
प्रभु यीशु ने लोगों के साथ रोटी खाई, उनके घर रहे, उनकी शादी की दावत में गए, उनकी बीमारियों को दूर किया, और कभी उनके साथ वे रोए भी।
लिखा है, ''उसने अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया।'' यूहन्ना 1:14
आज सवाल है–
क्या आप - गली नुक्कड़ की संगति को आगे बढ़ाएंगे।

110. नुक्कड़ संगति की लघु कथा
(Short story)

वो चप्पल (bathroom slippers) पहने था।
खादी का कुर्ता, हल्की दाढ़ी, और ...
उनके बस स्टैंड के बाहर एक छोटी सी चाय की दुकान पर बैठा था।
बीच बीच में वो किसी से नाम पूछ लेता था, हां उनसे जिनसे शायद किसी ने कभी नाम पूछा ही नहीं था।
वो कभी कुछ गाता नजर आता था, तो कभी कोई किताब के पन्ने पलटता हुआ और कभी बंद आंखों से कुछ ध्यान में।
कौन हो सकता है ये?
कोई गली नुक्कड़ विश्वासी...होगा। ठीक कहा..

111. यहां आंख बंद हुई और वहां आंख खुल गई

आज के लिए दवा हैं (प्रभु यीशु)
कल के लिए आशा हैं (प्रभु यीशु)
जो मसीह में हैं -
एक विश्वासी की बीमारी या मृत्यु परमेश्वर की योजना के अन्तर्गत (planned) होती है,

उसे उस दिन को आते देख घबराना नहीं चाहिए। शांति पाना चाहिए।
विश्वासी अकस्मात, अचानक, अनिश्चित हालात में नहीं मरता है, जगत की उत्पत्ति से पहले उसके पैदा होने और इस संसार से कूच करने का दिन निश्चित होता है।
लाजर भिखारी को लेने भी स्वर्गदूत आए थे।
''और ऐसा हुआ कि वह कंगाल मर गया, और स्वर्गदूतों ने उसे लेकर इब्राहीम की गोद में पहुंचाया।'' लूका 16:22
जो मसीह में नहीं हैं - जिन्हें कल के बारे में कोई आशा नहीं है, जो अपनी सामर्थ और योग्यता और चतुराई से अपनी जान बचाते हुए संसार के अधिक से अधिक भोग विलास की लालसा लिए जी रहे हैं।
वे बहुत घबराएं हुए हैं। क्यों? वो इसलिए कि कहीं उनका इस संसार में जीवनकाल के निर्धारित समय का अंत, असमय ही न आ जाए।
इसके विपरीत एक प्रभु यीशु का विश्वासी जानता है कि यहां आंख बंद हुई और वहां आंख खुल गई।
इसलिए नहीं कि किसी, गुरु ने, किसी संत ने, किसी धर्म ने उनसे भविष्य के जीवन का वादा किया है।
पर इसलिए कि हमारे प्रभु हमारी आंखों के सामने कब्र से बाहर निकलकर, हमारे लिए जगह तैयार करने स्वर्गलोक गए हुए हैं। और ये वही प्रभु यीशु हैं जो संसार और ब्रह्मांड को अपने मुख के शब्दों से अस्तित्व में लाए हैं और प्रभु यीशु ने अपने शब्दों में ही कहा है।
'पुनरुत्थान और जीवन मैं हूं'
जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा। और जो कोई जीवता है, और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा।''
इसका अर्थ है–
विश्वास है * मर जाए * जीएगा
जीवित है * विश्वास है * नहीं मरेगा
यूहन्ना 11:25, 26
मनुष्य को ''अनंत जीवन'' की आशा का भरोसा प्रभु यीशु के वचन पर है।
आज सवाल है–
आंख यहां बंद होगी, तो कहां खुलेगी?

112. शांति बस घुटनों पर आती है

हमारे अपने प्रयास चिंताएं - बस डर पैदा करते हैं तो

भरोसा किस पर है?
अपने आप पर, समाज पर, या सरकार पर
डर जो हमारे दिल और दिमाग में बैठा है
चाहे बीमारी का डर, बेरोजगारी का डर, समाज का डर, दंगों का डर, परीक्षा का डर, परिवार टूटने का डर और या फिर मौत का डर ही क्यों न हो?
उस डर को निकालने के लिए हम चिंता (उपाय ढूंढ़ना) करते हैं।
ये हमारी बुद्धि और शक्ति से निकलने वाले प्रयास हैं।
लेकिन जब प्रभु यीशु ने कहा, ''कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, क्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा, वो एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा; 'तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते'।'' मत्ती 6:24
उसका अर्थ था–भरोसा या तो परमेश्वर पर रखोगे या धन पर।
धन का अर्थ है सारे सांसारिक प्रयास।
''डर जब दूर होता है, तो बाकी जो बचता है उसे शांति कहते हैं।''
आज सवाल है–
आप को डर लग रहा है?
मत्ती 6
तुम में कौन है, जो चिन्ता करके अपनी अवस्था में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है।
तुम चिन्ता करके यह न कहना, कि हम क्या खाएंगे, या क्या पीएंगे, या क्या पहिनेंगे?
सो कल के लिये चिन्ता न करो,

113. चिल्ला रही थी वो ... हां

कोई तो मुझे बचा लो, मुझे छुड़ा लो,
बस एक बार एक मौका दे दो, माफ कर दो. अब ऐसा कभी नहीं होगा..
लेकिन सुनेगा कौन ...
चारों तरफ तो दुश्मन थे, नफरत थी, नारेबाजी थी
पत्थरवाह करो पत्थरवाह करो.. खतम करो,
काम तमाम करो.. इसका।

प्रभु यीशु जमीन पर बैठ गए, हां वहीं धूल पर अपनी उंगलियों से फैसला (Verdict) लिखने लगे।

“ठीक है मारो। जो तुम में बेगुनाह हो वो पहला पत्थर मारे।”
सब भाग गए,
प्रभु यीशु ने कहा, जाओ मैं भी तुम्हें दण्ड नहीं देता। फिर पाप न करना।
और ऐलान किया
जगत को ज्योति मैं हूं। जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा। यूहन्ना 8:12
याने
मैं मापदंड हूं, मैं न्याय हूं, मैं प्रेम हूं,
और क्षमा और जीवन दान देने का अधिकार बस मेरे ही पास है।
आज सवाल है–
क्या आपको प्रभु यीशु ने क्षमा और जीवन दान दिया है?

114. परमेश्वर दान नहीं, बलि(दान) चाहता है

दान या बलि(दान) ...... Sacrifice
प्रभु यीशु की सेवा/दान का सिद्धांत...
“इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला है। क्योंकि उन सबने ‘अपनी बढ़ती में से दान में’ कुछ डाला है, परन्तु इसने ‘अपनी घटी में से अपनी सारी जीविका डाल दी है।’ लूका 21:3,4
अपनी बढ़ती - से कुछ
अपनी घटी से - सारी जीविका
लोगों ने अपनी बहुतायत से दिया।
इस विधवा ने अपनी घटी से दिया।
परमेश्वर दान देने की मात्र (quantity) नहीं देखता है।
वो दान देने के पीछे के मन और बलिदान (love and sacrifice) को देखता है।
परमेश्वर चाहता है कि देनेवाला खुद कम हो जाए, दूसरे की मदद करते हुए
दूसरे के दुख दर्द को अपने दान के द्वारा महसूस करे, अनुभव करे।
“प्रभु यीशु ने जब भी किसी दुखियारे बीमार को देखा तो पहले तरस खाया (याने उनके साथ उनके दर्द को समझा - empathy)
(हिंदी भाषा की व्याकरण (Grammer) में देखने मिलता है, संधि और ‘संधि विच्छेद’ दो शब्द के जुड़ने से नया शब्द बनता है)

जैसे – विद्या + आलय = विद्यालय
इसी तरह
बलि + दान = बलिदान (Sacrifice)
एक मसीही का हर दान एक बलिदान होना चाहिए।
मैं इसलिए आया हूं कि सेवा करूं - प्रभु यीशु
सेवा का सही अर्थ है - कुछ देना।
सेवा कैसे की प्रभु यीशु ने उनकी।
वो लोगों की गांव बस्ती में पैदल चलकर गया, उसके खाने-पीने की व्यवस्था नहीं थी वो थक कर कुएं पर बैठता है, बिना रोटी खाए चल पड़ता था, और उसके चेले भी, कभी वे गेहूं की बाले तोड़कर खाते हैं, तो कभी अंजीर के पेड़ के फल से पेट भरना चाहते है।
उसके पास यरूशलेम की धार्मिक नगरी में रात बिताने का तक इंतजाम नहीं रहता था।
परमेश्वर दान नहीं बलि(दान) चाहता है।
आज बहुत से लोग और मसीही मिशन, या चर्च एक हाथ से लेकर दूसरे हाथ से आगे पहुंचाने का काम करते हैं, Transporter हैं, या courier कंपनी की तरह काम करते हैं। और शायद बीच में commision अलग काट लेते हैं।
इसको सरकारी या प्राइवेट समाज सेवा कह सकते हैं। लेकिन ये प्रभु यीशु की सेवा सिद्धांत नहीं है।
ये प्रभु यीशु की बताई सेवा नहीं है, न दान है।
प्रभु यीशु सेवक बनकर आए, और स्वयं दान यानी बलि (दान) बन गए। वो दाता भी थे, और दान भी थे।
हमारी कोई भी सेवा जो बलि(दान) नहीं कहलाई जा सकती है जिसमें हमारा, समय, पसीना, परिश्रम और धन या भोजन में से कुछ भी न लगे, और वो परमेश्वर के सामने आदर के योग्य नहीं होता है।

आज सवाल है–

लोगों की सेवा/दान करते हुए कहीं अपनी ही सेवा तो नहीं करने लगे?

115. प्रार्थना और प्रार्थनाएं

परमेश्वर के पास क्यों पहुंच जाती हैं?
''हे कुरनेलियुस। तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान - स्मरण के लिये परमेश्वर के सामने पहुंचे हैं'' प्रेरित 10:4

तो क्यों परमेश्वर ने याद किया
1. प्रार्थना और
2. दान
वो इसलिए कि प्रार्थना (कमजोरी से निकलती है)
हमारी कमजोरी हालात से निकल कर आती है, हमारी निर्भरता प्रभु के ऊपर है इसे प्रगट करती है, परमेश्वर की इच्छा जानना चाहती है, अनुग्रह चाहती है।
वचन कहता है हमारी आहें भी शब्द बनकर परमेश्वर के सामने पहुंच जाती हैं। बाकी सब बातें (हमारी शक्ति से निकलती हैं) चाहे वो हमारा गाना बजाना हो, हमारे बाइबिल का ज्ञान हो, भाषण देना हो, कन्वेंशन में हजारों के सामने बोलना हो, (सच्चे-झूठे) चमत्कार हों, भूत प्रेत से मुकाबले हों, और मनुष्य की वाहवाही हो।
परमेश्वर हमसे हमेशा प्रार्थना के समय बात करता है, हमारे मन से, या वचन याद दिलाकर, और हमारे साथ संगति करता है।
जब हम प्रार्थना पर घुटनों में आते हैं तो हम अपना घर चर्च और शहर छोड़कर परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के सामने आ जाते हैं।
घुटनों पर प्रार्थना करिये।
दर्द आने दीजिए काले पड़ने दीजिए।
प्रभु ने तो खून बहाया था न।
आज सवाल है–
कितना समय हर दिन प्रार्थना में प्रभु के साथ रहते हैं?

116. एक मसीही शहीद हो जाए

क्या एक मसीही की शहादत से प्रभु की महिमा हो सकती है?
सच तो ये है कि यदि हमने कातिलों को क्षमा कर दिया है तो अवश्य इससे प्रभु की महिमा हुई है।
प्रभु यीशु ने अपने कातिलों को क्रूस पर से माफ कर दिया था, उसने न्याय की दोहाई नहीं दी।
प्रभु यीशु ने कह दिया था, यदि मैं ऊंचे पर याने क्रूस पर चढ़ाया जाऊंगा तो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करूंगा। यूहन्ना 12:32
सरकार या समाज माफ करे या न करे
क्या हमने क्षमा किया है?

यदि हां

तब भारत के लोगों को प्रभु यीशु दिखाई देंगे। हमारे जीवन में और प्रभु यीशु के जीवन में समानता होनी चाहिए। असमानता नहीं

जैसा मैंने प्यार किया है तुम भी करो, मैंने तुम्हें इस संसार से बाहर निकाल लिया है। बाइबिल में हमें उदाहरण मिलते हैं।

यूहन्ना 21 में प्रभु यीशु 3 बार पतरस से पूछते हैं, क्या तू मुझ से प्यार करता है? उसका जवाब था, हां मैं करता हूं, तो पतरस के प्रेम का प्रतिफल क्या मिला? मौत? प्रभु यीशु ने बताया कि किस तरह की मृत्यु से वो महिमा करेगा।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला भी मारा गया, और भी बहुत से मरे,

- स्टीफन को पथरवाह किया गया। और उसी दिन प्रभु यीशु के जो हजारों अनुयायी जो बने थे उन पर भयंकर सताव चालू हो गया उन्हें शहर छोड़कर जाना पड़ा।

क्या वो कैसर की सरकार और पीलतुस गवर्नर से न्याय मांग रहे थे। लेकिन लिखा है वे तितर बितर हो गए और जहां कहीं भी वे गए वहां भी सुसमाचार सुनाते फिरे।

तो क्या सुना रहे होंगे—बस क्षमा, प्रेम और शांति का सुसमाचार।

आज हमारा रवैया भी पहली शताब्दी के मसीहियों की तरह होना चाहिए।

उनकी प्रार्थना परमेश्वर से बस यही थी कि हमें निडर बनाओ और भय को निकाल दो। उन्होंने ये प्रार्थना नहीं की कि है प्रभु हमारी रक्षा कर।

लाजरस की मौत से परमेश्वर की महिमा होगी।

आज भारत में हमें पास्टर सुल्तान मसीह की तरह लोग चाहिए, जो अपना क्रूस हर दिन उठाएंगे, याने मृत्यु तक धीरज रखेंगे। आज भी हजारों लोग प्रभु यीशु के लिए अपनी जान देने को तैयार हैं।

सवाल न्याय का नहीं है प्रेम का है। ऐसा प्रेम जो दुश्मन से प्रेम करे, ऐसा प्रेम जो अपराधी को क्षमा करे। ऐसा प्रेम जो जो दूसरे के कर्ज को खुद अदा करे।

प्रेम दिखाई देता है, मरने के बाद भी दिखाई देता है। प्रेम मरता नहीं है।

1 कुरिन्थियों 13:13 पर अब विश्वास, आशा, प्रेम थे तीनों स्थाई है, पर इन में सब से बड़ा प्रेम है।

आज सवाल है—

क्या हम दुश्मन से प्रेम कर सकते हैं?

शिष्य आश्रम/शिष्य थॉमसन का - मन फिराओ प्रचार
शिष्याश्रम का - 7 Step - बाइबिल अध्ययन Formula

1. प्रार्थना (घुटनों पर) / अध्याय का चुनाव
2. एक बार पढ़कर उद्देश्य और संदर्भ को समझना
3. जो नाम आए हैं, उनके बारे में जानना
4. विषय, घटना या कहानी को अपने शब्दों में दोहराना
5. प्रमुख पदों को रंगीन पेन से मार्क कर लेना
6. सरल शब्दों में संदेश मेरे/कलीसिया के लिए देखना
7. खामियों से शर्मिंदा नहीं होना, हम प्रभु के स्टूडेंट्स हैं

15 मिनट का एक आशीषमय संदेश मिल जाएगा

आज सवाल है–
क्या देहधारी प्रभु यीशु का दूसरा नाम 'वचन' नहीं है?

117. 4 क्रूस की मृत्यु के रहस्य

क्रूस की मृत्यु के रहस्य

मेमना जो उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक दिखता है वो प्रभु यीशु की तस्वीर है, उसकी कुर्बानी प्रभु यीशु का लहू बहाना है।
यूहन्ना 1:29 दूसरे दिन उस ने यीशु को अपनी ओर आते देखकर कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है, जो जगत के पाप उठा ले जाता है।
प्रभु यीशु ने कहा था
यूहन्ना 5:46 क्योंकि यदि तुम मूसा की प्रतीति करते, तो मेरी भी प्रतीति करते, इसलिये कि उस ने मेरे विषय में लिखा है।
बाइबिल में उत्पत्ति से लेकर प्रकाशितवाक्य तक कई बार क्रूसित प्रभु यीशु की तस्वीर दिखाई देती है। कुछ उदाहरण है जिन्हें हम देखेंगे

1. अदम के बाग में आदम और हव्वा के नंगेपन को ढांपने के लिए खून बहाया जाना
2. हाबिल द्वारा परमेश्वर के सामने मेमने का बलिदान
3. मेल्किसेडेक की इब्राहीम से भेंट

4. इब्राहीम की परमेश्वर से वाचा, बलिदान के द्वारा
5. मंदिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक फट जाना
6. मिस्र की गुलामी से फसह के दिन इस्राइलियों का बाहर आना
7. यशायाह 53 में मृत्यु उठाता हुआ मेमना
8. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का मेमना
9. क्रूस पर खून बहाते प्रभु यीशु
10. स्वर्ग सिंहासन के बीच मानो एक वध किया हुआ मेमना खड़ा है।

1. मेल्किसेडेक की इब्राहीम से भेंट (इब्रानियों 7:1-3)

प्रभु यीशु के क्रूस पर चढ़ने के 2000 साल पहले उत्पत्ति 14:18 में एक अजीब सी बात होती है, एक युद्ध जीतकर आते हुए इब्राहीम से एक पुरुष मिलता है जिसका नाम मेल्किसेडेक है। जिसका अर्थ है धार्मिकता का राजा या शांति का राजा।

इसे सालेम (यरूशलेम) का राजा कहा गया है, और ना इसके आदि के बारे में या उम्र का ही कोई जिक्र है, ये व्यक्ति सनातन है।

ये इब्राहीम को आशीर्वाद देता है, और उसको रोटी और दाखरस देता है। ये परमेश्वर का महायाजक है जो प्रभु यीशु की तस्वीर है, जैसे प्रभु यीशु तोड़कर रोटी देता है अपना शरीर और दाखरस जो उसका लहू है पीने को देता है। ये प्रभु भोज की तस्वीर है। इब्राहीम उसको दसवांश देता है जो कि परमेश्वर को दिया जाता है।

2. इब्राहीम की परमेश्वर से वाचा -बलिदान द्वारा

उत्पत्ति 15 में परमेश्वर इब्राहीम को आकाश की ओर देखने को कहता है तारे अनगिनत हैं और उतनी ही बड़ी संख्या में इब्राहीम की संतान होगी ये आशीर्वाद देता है। और इब्राहीम इस पर जब विश्वास करता है, तो परमेश्वर उसे इब्राहीम की धार्मिकता मान लेता है। (उस समय जब इब्राहीम की कोई संतान ही नहीं थी)

इब्राहीम भी विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरा, कर्मो के द्वारा नहीं।

अब परमेश्वर इब्राहीम के साथ एक वाचा या करार (covenant) करना चाहता है, कि वह अपने वादे का पक्का होगा।

2A. इसके लिए एक बलिदान करना होगा खून बहाना होगा। एक मेमने को लेना पड़ेगा।
- और उसके बीच से दो टुकड़े करके अलग वेदी पर रखना होगा, इब्राहीम ने ये किया
- तब अचानक कुछ मांसाहारी पक्षी, बलिदान का मांस खाने को झपटे, लेकिन इब्राहीम ने उन्हें उड़ा दिया।

– बहुत भयानक अंधकार छा गया। इब्राहीम घबरा उठा।
– और तब कुर्बानी के दो टुकड़े के बीच से होती हुई परमेश्वर की आग गुजर गई याने वाचा बांध गई।
अब ये तस्वीर क्रूस पर मरते हुए प्रभु यीशु के बलिदान से कैसे मिलती है। नीचे पढ़िए– 2B.
– प्रभु यीशु क्रूस पर हैं, कहते हैं ये मेरा बदन है, जो तुम्हारे लिए तोड़ा गया है (इब्राहीम के मेमने की तरह)
– मांसाहारी पक्षी और तीन घंटे का सूर्य का अंधकार हो जाना (इब्राहीम के बलिदान के समय घोर अंधकार का छा जाना, ये प्रभु यीशु के क्रूस पर लटकते समय दुष्ट मनुष्य और अंधकार की दुष्टात्माएं का भयानक आक्रमण था इसलिए कि किसी भी तरह क्रूस पर भी प्रभु को परीक्षा में हरा दें, झुका दें, हार मनवा लें, लोग चिल्ला रहे थे उतर आ यदि तू मसीह है तूने औरों को बचाया।
प्रभु यीशु को अकेले ये परीक्षा पर विजय पाना है वो खुद ही कहता है, हे परमेश्वर हे परमेश्वर तूने मुझे क्यों छोड़ दिया है।
पिता की मदद से नहीं अकेले जीत हासिल करनी होगी।
भजन 22 – मेरी सहायता करने से क्यों दूर रहता है, संकट निकट है, और कोई सहायक नहीं है। (जैसे विद्यार्थी की परीक्षा में शिक्षक मदद नहीं कर सकता है)
बाशान के बलवंत सांड मुझे घेरे हुए हैं, फाड़ने और गरजने वाले सिंह अपना मुंह पसारे हुए हैं कुत्तों ने मुझे घेर लिया है, कुकर्मियों की मंडली मेरे चारों ओर मुझे घेरे हुए है। वो मेरे हाथ और पैर छेदते हैं, मेरे वस्त्र आपस में बांटते हैं और मेरे पहिरावे पर चिट्ठी डालते हैं। (मत्ती 27:35) मेरे प्राण को कुत्ते के पंजे से बचा ले, मुझे सिंह के मुंह से बचा।
– इसके बाद परमेश्वर की आग मेमने के दो टुकड़े के बीच से गुजरती है, और वाचा बंधा जाती है,
– प्रभु यीशु चिल्लाकर कहते हैं, पूरा हुआ, और अपनी आत्मा पिता के हाथ सौंप देते हैं।
– इब्रानियों 10:19,20 सो हे भाइयो, जब कि हमें यीशु के लोहू के द्वारा उस नए और जीवते मार्ग से पवित्र स्थान में प्रवेश करने का हियाव हो गया है।
जो उसने परदे अर्थात् अपने शरीर में से होकर, हमारे लिये अभिषेक किया है,
– यहां पर मेमने के दो टुकड़े कर रखना,
– मसीह के शरीर से होकर जीवित मार्ग का बनना और

- मंदिर के पर्दे का दो भागों में फट जाना, प्रभु यीशु के
- क्रूस की मृत्यु की घटना की तस्वीर है।

2C. मंदिर का पर्दा ऊपर से नीचे तक फट जाना

प्रभु यीशु का शरीर और यरूशलेम के मंदिर के पर्दे का संबंध है। दोपहर के तीन बजे हर दिन मंदिर में कुर्बानी दी जाती थी, लेकिन उस दिन परमेश्वर का मेमना हमारा प्रभु यीशु क्रूस पर कुर्बान होता है, और अति पवित्र स्थान जहां परमेश्वर की उपस्थिति रहती है, उसको अलग करने वाला पर्दा ऊपर से नीचे तक फटकर दो टुकड़े हो जाता है। पर्दे की ऊंचाई करीब 60 फीट थी, चौड़ाई 30 फीट और मोटाई 4 इंच थी। ये मजबूत पर्दा मनुष्य द्वारा फाड़ा नहीं जा सकता था, पर ये ऊपर से नीचे तक फट जाता है, इसका अर्थ ये है कि काम ऊपर से या परमेश्वर की तरु से हुआ है, मेल मिलाप का काम परमेश्वर की तरफ से हुआ है, मनुष्य का इसमें कोई हाथ नहीं है, और न ही उससे हो सकता था। मंदिर के पर्दे के फटने के साथ ही मंदिर की कुर्बानियां भी खत्म हो गईं।

3. अब इस मेमने के कहानी को आगे लेकर जाते हैं।

उत्पत्ति 22 में परमेश्वर इब्राहीम से कहते हैं, अपने इकलौते पुत्र को जिससे तू प्रेम करता है, ले जाकर मोरिया पहाड़ पर बलिदान के रूप में चढ़ा दे।

इब्राहीम इस आदेश को पूरा करने जाता है, ये मोरिया पहाड़ वही है जहा सैकड़ों साल के बाद प्रभु यीशु अपनी कुर्बानी देते हैं, जिसे हम कलवरी और गोलगोथा कहते हैं। इसहाक के बदले वहां भी एक मेमना बलि होता है।

4. अब आगे चलें यहां से करीब 430 साल आगे, और प्रभु यीशु के क्रूस के करीब 1700 साल पहले मिस्र की गुलामी से छुड़ाने के लिए हर घर में मेमना बलि होता है, और उसका खून दरवाजों की चौखट पर लगाया जाता है, जिसके कारण इस्राइली स्वर्गदूत की तलवार से बच जाते हैं, और उस दिन वो मिस्र से बाहर निकलते हैं, जिसे फसह का दिन कहते हैं और हर साल उसे मनाया जाता है।

प्रभु यीशु इसी दिन को क्रूस पर अपनी कुर्बानी देते हैं।

5. आगे हम यशायाह 53 में भी इस मेमने के बारे में, प्रभु यीशु के क्रूस के करीब 400 साल पहले भविष्यवाणी के रूप में पढ़ते हैं।

वह तुच्छ जाना गया, हमने उसका मूल्य न जाना, उसे मारा कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा, वह हमारे अपराधों के कारण घायल किया गया, कुचला गया और कोड़े खाए,

हमारे अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया गया, वह सताया गया, पर उसने अपना मुंह न खोला, उसने बहुतों के पापों का बोझ उठा लिया और वो अपराधियों के लिए विनती करता है।

6. अब हम आज से 2000 साल पहले आते हैं, यहां यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला चिल्लाकर कहता है, देखो परमेश्वर का मेमना जो जगत के पाप उठा ले जाता है। बहुत से लोग मेमने को मेमना या भेड़ ही समझ बैठे थे।

7. लेकिन वो एक मनुष्य था, परमेश्वर का पुत्र प्रभु यीशु था, हमारा उद्धारकर्ता था, क्रूस पर अपनी कुर्बानी देकर रक्त बहाकर सारे संसार के पापों को अपने ऊपर उठा रहा था।

8. खुशखबरी ये है कि ये मेमना जी उठा है और आज स्वर्ग में विराजमान है।

''और मैं ने उस सिंहासन और चारों प्राणियों और उन प्राचीनों के बीच में, मानों एक वध किया हुआ मेम्ना खड़ा देखा:'' प्रकाशितवाक्य 5:6

''वह उस की महिमा का प्रकाश, और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ के वचन से संभालता है: वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन के दाहिने जा बैठा'' इब्रानियों 1:3

आज सवाल है–

क्या उस मेमने को आप अपने जीवन में भी देखते हो?

118. जनाजे (Funeral) में उसके...दो जन थे...बस...

छोटे से गांव में उसका जन्म हुआ था, उसकी माँ एक गरीब किसान की बेटी थी, पिता बढ़ई थे।

स्कूल वो कभी गया नहीं, विदेश में सेवा करने वो गया नहीं, पैदल धूल भरे रास्तों में चला, उसकी बातें सुनने, गरीब, मजदूर किसान और आम लोग आए।

धर्म के अगुओं ने उसका अपमान किया, उसको मंदिरों से खदेड़ा, कभी पत्थरवाह करना चाहा, उसे गालियां दी, पापी, पियकड़, भूतग्रस्त कहा।

उसने अपने चेले चुने, जो अधिकतर मछुआरे और अज्ञानी थे।

वो शहर के उन लोगों से भी मिल लेता था, जिन्हें लोग पापी और असामाजिक समझते थे। उनके साथ रोटी भी खा लेता था।

उसने भूखों पर तरस खाया, अँधों को दृष्टिदान दिया, बीमारों, लाचारों, और कोढ़ ग्रस्त लोगों के गले लगा वो गलियों में, मैदानों में और वृक्ष तले परमेश्वर के प्रेम और राज्य

की बातें करता था। उसके अपने ही चेले ने चांदी के 30 सिक्कों के बदले उस रात गतसमने में उसे पकड़वा दिया। जो सैनिक उसे पकड़ रहे थे उनमें से एक के जख्मी कटे कान को छूकर उसने बहाल किया। ये उसका आखिरी चमत्कार दुश्मन को चंगाई देना था।
उसने अपने आप को स्वेच्छा से सैनिकों और फरीसी धर्मगुरुओं के सामने पेश किया, और अपने चेलों को वहां से जाने दिया। वे उसे ले गए, उस पर अत्याचार किया, उसे मंदिर, महायाजक, राजा और गवर्नर के सामने घसीटते रहे, हर जगह उसे अन्याय मिला उन्होंने उसे गालियां दीं, थप्पड़ मारे, उसके मुँह पर थूका और कोड़े मारे।
वह चुप रहा। वे उस पर जुल्म करते रहे, उसका अपमान किया, उसके सिर पर कांटों का ताज जड़ दिया, और कांधे पर भारी लकड़ी का क्रूस रखा।
वो क्रूस खींचते हुए पहाड़ चढ़ा, वहां उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ाया। उसके कपड़े लूट लिये फिर भी उसने अपने कातिलों से प्रेम किया उन्हें माफ कर दिया। वह मारा गया।
अंधियारा भयानक आ पड़ा था। अचानक बड़ा भूकंप भी आया। और सब भाग चले थे और तब दो जन आये। जो, वैसे कहा जाए तो उसके नजदीकी नहीं थे।
उन्होंने उसके शव को लेकर नजदीक की एक पत्थर की कब्र में रख दिया।
उसके जनाजे में भीड़ नहीं थी, मातम करने वाले और आंसू बहाने, छाती पीटने वाले लोग नहीं थे। जिस कंगाली में वो पैदा हुआ था। कुछ उसी कंगाली में उसका जनाजा दो जनों के साथ निकला, हालांकि कुछ औरतें दूर से सब देखती रहीं।
शहर के धर्म गुरुओं ने उसे धोखेबाज कहा था। कब्र पर भी पहरा लगवाया था। लेकिन तीसरे दिन वो जी उठा।
और फिर स्वर्ग जाने के पहले उसने कहा, स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।
आज 2000 साल बीत गए हैं, उसका अधिकार और शक्ति दुनिया के हर पटल पर दिखाई देती है।
सच ही तो लिखा है,
हर घुटना टिक जाएगा, और हर जुबां अंगीकार करेगी कि वो ही प्रभु है।
आज सवाल है–
क्या वो व्यक्ति आप का प्रभु है ?

119. धर्म और धन का जाल

(प्रभु यीशु ने किया क्या था उस दिन झूठे धर्म और धन के चंगुल से प्रधान याजकों और

शास्त्री फरीसियो के हाथ से प्रार्थना भवन को लेकर कंगालों, कमजोरों, अनपढ़ों और बच्चों के हाथ कर दिया) मत्ती 21:1-18

प्रभु यीशु क्रूस की मृत्यु के कुछ दिन पहले इतवार के दिन यरूशलेम में प्रवेश करते हैं जैतून के पहाड़ पर रुकते हैं और दो चेलों को आगे गांव भेजते हैं एक गदहे कि जरूरत है। (महल, घोड़े, रथ, पैसा, सोना चांदी नहीं)

उस पर बैठकर यरूशलेम में प्रवेश करते हैं। उसकी ग्रामीण भीड़ के साथ बच्चे भी थे जो अपने कपड़े और खजूर की डालियों को रास्ते में बिछा रहे थे।

होशाना

जिसका अर्थ है, उद्धारकर्ता या छुड़ानेवाला जो स्वर्ग से आया है उसकी जय हो।

यरूशलेम में हलचल मच गई। ये कौन है। जिस रास्ते पर राजा-महाराजा, गवर्नर, और सैनिक, घोड़े और रथ पर आते थे, वहां नासरात का कोई आम आदमी गधे पर विजय प्रवेश कर रहा है।

प्रभु सीधे मंदिर में पहुंचते हैं और व्यापारियों को और पैसे के लेन देन करने वालों को बाहर निकालते हैं।

प्रभु यीशु ने रास्ते में बाजार में दुकानों और व्यापारियों के साथ यह नहीं किया पर मंदिर के अंदर किया। कहा, "मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा, परन्तु तुम उसे डाकुओं की खोह बनाते हो"

धर्मगुरु और फरीसी आए और बोले कि ये भीड़ को चुप कराओ।

प्रभु यीशु कहते हैं, दूध पीते बच्चों के मुंह से प्रशंसा परमेश्वर को भाती है। अपने ज्ञान, कला और शक्ति से करी गई दिखावें की भक्ति नहीं। कमजोरों, कंगालों, अनपढ़ों और बच्चों के साफ दिल से निकली भक्ति कबूल है।

आज सवाल है–

कहीं धर्म और धन के चंगुल में तो नहीं फंसे?

120. भविष्यवाणी - जो जल्द पूरी होगी

रहस्य नहीं रहा ......

Corona Virus - बस एक चेतावनी। इसके आगे की होने वाली अद्‌भुत घटना पर ध्यान दीजिए।

एक ऐसी महामारी जिसने दुनिया के हर देश को बंद कर दिया हर बिजनेस, हर स्पोर्ट्स

हर बाजार बर्बाद किया। ये साधारण घटना नहीं है, ये एक आत्मिक चिन्ह है।
लूका 21:11 में लिखा है
और बड़े बड़े भूईडोल होंगे, और जगह जगह अकाल और मरियां (बीमारियां) पड़ेंगी, और आकाश में भयंकर बातें और बड़े बड़े चिन्ह प्रगट होंगे।
स्वर्ग के परमेश्वर की ओर से एक चेतावनी है, आने वाले संसार की महानतम घटना होने के पहले की घंटी है।
आसान शब्दों में, सार आपको बताता हूं।
शिष्य प्रभु यीशु से पूछते हैं, एक नहीं पर दो घटनाओं के - समय के चिन्ह।
''हम से कह कि ये बातें कब होंगी
1. और तेरे आने का, 2. और जगत के अन्त का क्या चिन्ह होगा''
मत्ती 24:3

आने का चिन्ह (Rapture का चिन्ह)
आज प्रभु यीशु के आकाश में हमें लेने आने के सारे चिन्ह दिखाई दे रहे हैं। याने Rapture - आकाश में विश्वासियों के उठाए जाने के चिन्ह
प्रभु आकाश में आएगा (Rapture)
- क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा;
उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, -और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ ''बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें'' 1 थिस्सलुनीकियों 4:16,17
प्रभु यीशु का आना एक चोर के आने के समान खामोशी के समय होगा।
''क्योंकि जैसा रात को चोर आता है, वैसा ही प्रभु का दिन आने वाला है। जब लोग कहते होंगे, कि कुशल है, और कुछ भय नहीं।''
1 थिस्सलुनीकियों 5:2,3
●
प्रभु के आने के समय के हालात
नूह के जमाने के समय जैसे होंगे जहां - खाना पीना, शादी ब्याह, सांसारिकता मौज मस्ती चल रही होगी और आकाश में (Rapture) उठाए जाने की तस्वीर हमें, नूह के जहाज के धरती पर से पानी के ऊपर ㅤ लोगों के साथ ऊपर उठने में भी दिखाई देती है उसी प्रकार विश्वासी जन Antichrist के कहर से पहले ऊपर उठा लिए जाएंगे।

•

10 कुंवारियों के दृष्टांत की तरह –
चर्च में लोग इस बात से आज अनजान है कि प्रभु यीशु बहुत जल्द आ रहे हैं। सांसारिकता में डूब गए हैं, संसार शरीर और पाप के मारे लग रहे हैं। झूठे नबी चर्च में घुस गए हैं।
– बाहरी दिखावा है लेकिन प्रभु यीशु का जीवन नहीं है।
प्रभु यीशु के आने के 3 परिणाम
1. जो उसकी बाट जोह रहे हैं, उसकी आत्मा से भरे और पापों से मुक्ति पाएं हैं स्वर्ग में उठाए जाएंगे
2. वो ईसाई जो चर्च में तो आते हैं लेकिन बस नाम के हैं ना मुक्ति पाए हैं न ही नया जीवन जीवन वे धारती पर रह जाएंगे।
3. ऐसे दुनिया के बाकी लोग जो जीवित परमेश्वर को तिरस्कार करते हैं यहीं धरती पर antichrist के राज्य में रहेंगे।

AD 70 में यहूदियों का मंदिर यरूशलेम में तबाह हो गया, और सांकेतिक रूप में चर्च युग / या अनुग्रह का युग प्रारंभ हुआ।
यहूदी तितर बितर हुए क्योंकि उन्होंने प्रभु यीशु की मृत्यु की जिम्मेदारी अपने और अपने वंश पर ले ली थी। और अंजाम लगातार दिखाई दिया और करीब साठ लाख यहूदियों को हिटलर ने भी मार डाला था।

* AntiChrist या विरोधी मसीह कब आयेगा, उसके 7 वर्ष का शैतानी युग कब आएगा? आगे पढ़िए ...
प्रकाशितवाक्य (Revelation) के ङ्क्ष वां अध्याय
बहुत खतरनाक है। तीन का जिक्र है
1. अजगर या शैतान
2. अजगर की शक्ति से आया विरोधी मसीह (Antichrist)
3. भविष्यवक्ता (prophet) विरोधी मसीह की पूजा करवाता है, मूर्ति बनवाता है, मूर्ति में जान डालता है, चमत्कार करता है।
AntiChrist के आने के पहले rapture के द्वारा विश्वासी आकाश में उठा लिए जाते हैं, इसका आभास इस बात से भी मिलता है कि Antichrist
.... स्वर्ग के रहने वालों की निन्दा करता है, प्रकाशितवाक्य 13:6

(निंदा ये उन लोगों की कर रहा था जो उसके प्रगट होने के पहले आकाश में प्रभु यीशु के पास उठा लिए गए थे, उनसे Antichrist नफरत करता है।
प्रभु यीशु के लोगों के स्वर्ग में उठाए जाने के बाद विरोधी मसीह अपने आप को सच्चा मसीह बताएगा और यहूदियों और सारी दुनिया को धोखा देगा।
विरोधी मसीह नाम इसलिए है क्योंकि वो अपने आप को मसीह कहलाना चाहता है लेकिन हमारे सच्छे मसीह के विपरीत काम वो करता है।
प्रभु यीशु ने यहूदियों द्वारा अपने तिरस्कार पर कहा था,
एक अपने नाम से आएगा तुम उसे कबूल करोगे, में अपने पिता के नाम से आया और तुम विश्वास नहीं करते। यूहन्ना 5:43
1948 में इस्राएल वापस एक देश बन गया है, इसलिए Antichrist को भरमाने के लिए लोग और देश अब तैयार मिल गया है।
आखिर परमेश्वर हमें उस महाक्लेश के 7 साल इस धरती पर क्यों नहीं रखेगा। वो इसलिए कि प्रभु यीशु हमारा उद्धार करता है, केवल पाप ही से नहीं परन्तु हर संकट से निकास करता है।
प्रभु यीशु हमारा Emmanuel बन कर आया था। हमारे साथ सदा रहने के लिए, वो हमें Antichrist के हाथ में नहीं छोड़ेगा।
Antichrist के 7 साल के राज्य के कहर से पहले Prabhu Yeeshu अपने बचाए हुए लोगों को उठा लेता है।
प्रभु यीशु हमें परमेश्वर के राज्य में ला चुके हैं इसलिए हमें शैतान के राज्य में से गुजरने की आवश्यकता नहीं है।
AntiChrist के 7 वर्ष के शासनकाल में करोड़ों लोग अलग अलग तरह से मारे जाएंगे, इसका जिक्र बाईबल में है। लेकिन इन सात वर्ष के प्रारंभ में हम विश्वासी इस संसार से उठा लिए जाएंगे।
प्रभु यीशु के आसमान पर हमको लेने आने से पहले के क्या चिन्ह हैं।
भूकंप - आज हर देश में आ रहे हैं।
भुखमरी और अकाल - बहुत है।
झूठे नबी - चर्च के अंदर धान और संपत्ति की बातें कर रहे हैं, और झूठे चमत्कार के द्वारा लोगों को गुमराह कर रहे हैं। इब्राहीम उस नगर की ओर आंख लगाए था जिसकी नींव परमेश्वर ने रखी है, झूठे नबी बड़ा घर बनाने की बात कर रहे हैं।
लड़ाइयां और अफवाहें - बड़े युद्ध से लेकर आतंकवादी की लड़ाई सभी लड़ रहे हैं।
बीमारियां - आज कोरोना वायरस को ही ले लीजिए, कैंसर, एड्स और तरह तरह की

बीमारियां।

ज्ञान - टेक्नोलॉजी, आज हम निर्जीव मशीनों से बात कर रहे हैं, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के द्वारा हम मशीनी इंसान बना रहे हैं।

ट्रैवल, communication बहुत बढ़ गया है, सोशल मीडिया के द्वारा आप सारे संसार से बात कर सकते हैं।

दानिएल 12:4

मुक्ति की प्रार्थना...

यदि आप प्रभु यीशु के पास जाने के लिए तैयार नहीं हैं तो ये प्रार्थना सारी ईमानदारी से करिये।

''हे प्रभु यीशु मैं पापी हूं, आपने मेरे पापों की कीमत अपने पवित्र खून से दी है, में विश्वास करता/करती हूं, मेरे पापों को धो दो।

मुझे क्षमा करो, मुझे अपनी पवित्र आत्मा के द्वारा नए जन्म का अनुभव दो। आज से बस तेरी आराधना करेंगे, तेरी इच्छा पर चलेंगे।'' आमीन

आज सवाल है–

यदि आज प्रभु यीशु आएंगे तो आपका क्या होगा?

5. न इस पहाड़ पर, न यरूशलेम में

1. ''न इस पहाड़ पर, न यरूशलेम में''

2. E=mc2

3. ''490 साल की रहस्यमय पहेली''

4. 'बस वो रोती रही ... उसने एक शब्द भी न कहा,

''इसलिये मैं तुझ से कहता हूं; कि इस के पाप जो बहुत थे, क्षमा हुए, क्योंकि इसने बहुत प्रेम किया'' लूका 7:36-50

प्रभु यीशु ने कभी भी किसी से ये नहीं कहा कि 'मेरे पास टाइम नहीं है'।

छोटे से छोटा भिखारी ही क्यों न हो, और फरीसिओं, चुंगी लेनेवालों व सामरियों के घर भी वो गया, और दुखियारों के पास भी जाता रहा।

बच्चों को अपने पास बुलाता था।

वो कंगालों, अंधों, बंधुओं, ओर कुचले हुओं के लिए आया था।

ये किस्सा उस दिन का है जब प्रभु यीशु को एक फरीसी ने अपने घर में दावत पर बुलाया था।

उस नगर की एक पापिनी स्त्री यह जानकर कि वह फरीसी के घर में भोजन करने बैठा है, उससे मिलने आयी।
वो बिन बुलाए प्रभु से मिलने पहुंच गई।
उसका वहां पहुंचना बहुत कठिन प्रयास था, जब दूर-दूर से भी प्रभु यीशु की आत्मिक बातों से उसका संबंध भी नहीं था।
लगता है उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था या प्रभु यीशु के चालचलन से परिचित नहीं थी, इसलिए संगमरमर के पात्र में इत्र भी लेती आई।
यदि इस इत्र को आज हम एक आराधना के साधन के रूप में चित्रित करें तो वो दावत का कमरा एक मंदिर में के रूप में समझा जा सकता है
- जिस मंदिर में कुछ लोग हैं, एक फरीसी है और एक बदनाम स्त्री और उनके बीच प्रभु यीशु परमेश्वर के साक्षात् स्वरूप
- ये तस्वीर उस दिन की भी याद दिलाती है जब इसी तरह का माहौल था पर मंदिर के दालान में एक स्त्री थी जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी, और साथ में सामने हैं पत्थर लिए फरीसी और बीच में प्रभु यीशु।
सवाल उठता है कि,
आखिर वो उस फरीसी के घर आ कैसे गई?
क्या डर नहीं लगा होगा उसे
कहीं प्रभु नाराज हो उसे बाहर निकाल दें तब क्या
अपमान निंदा का भय था
धार्मिक लोगों के विरोध की संभावना थी
भीड़ के तंज और फरीसी के घरवालों के बिना अनुमति घर में प्रवेश करना था।
शायद हिम्मत का कारण यह हो कि उसने प्रभु यीशु के पहाड़ी उपदेश में दया, क्षमा, अनुग्रह और प्रेम के वचन सुने हों, जैसे
मैं पापों से उद्धार करने आया हूं ...
हे थके ओर बोझ से दबे लोगो मेरे पास आओ ...
एक दूसरे को अपराधों को क्षमा करो ...
दुश्मन से प्रेम करो ...
धन्य हैं जो शोक करते हैं ...
लेकिन सोचने की बात तो ये है उस स्त्री ने अपने मुंह से एक शब्द भी नहीं कहा सच तो ये है कि उसने अपने आंसुओं से बात रखी और प्रभु जो दिल को जानने और परखने वाला है उसने आंसुओं और आहों में पश्चाताप और मुक्ति की पुकार सुनी।

लेकिन शमौन फरीसी के दिल में संदेह यहां तक था कि उसने सोचा, शायद प्रभु यीशु भविष्यवक्ता ही नहीं है और कारण ये कि इसे मालूम नहीं की ये एक पापिनी स्त्री है, और उसे छू रही है, प्रभु ने शमौन के दिल की बात जानी और तब वो बोला,

बात प्रेम की है, और प्रेम के पहले क्षमा की है।

इस स्त्री को आज तक किसी ने क्षमा नहीं किया था।

सबको उसके पाप तो दिखते थे लेकिन उसका दुखियारी दिल नहीं दिखता था, उसके आंसू जो अकेले में उसने बहाये थे, वो नजर नहीं आए थे।

पर आज उसकी बस्ती में कोई आया है, जिसकी आंखें ऊंची दीवारों के पार, बंद दरवाजों के पीछे और अंधियारे के बीच पड़े लोगों के दिलों तक पहुंच जाती थी।

प्रभु यीशु का प्रेम उसे खींच लाया था। लगता है शमौन ने प्रभु यीशु और उसके देहाती चेलों को अच्छा भोजन करा कर कोई एहसान कर दिया था क्योंकि उसने खातिरदारी में कमी कर दी थी, जो औरों के साथ होता था वो नहीं किया।

प्रभु यीशु ने शमौन से कहा, तुमने पांव धोने के लिए पानी नहीं दिया (शायद आम मजदूरों का सम्मान ही दिया) गले नहीं लगाया (जिससे प्रेम जाहिर होता) सूखे बालों पर थोड़ा खुशबूदार तेल अच्छा रहता, पर नहीं दिया क्यों ?

शायद प्रभु यीशु और उसके चेलों का मूल्य इतना नहीं था शमौन की नजर में उसका बर्ताव कैसा होता।

यदि उसके घर में महायाजक या गवर्नर आये होते?

बहरहाल प्रभु यीशु के कहने का अर्थ यह था कि प्रेम की उत्पत्ति क्षमा से हुई है और उस क्षमा की उत्पत्ति इस स्त्री के प्रभु के जीवन और वचन पर गहरे विश्वास से आई है।

न शमौन और न ही वो स्त्री अपने पाप का कर्जा उतार सकते थे लेकिन प्रभु यीशु क्षमा कर सकते हैं जो में फिराता है उसको नया जीवन दान देता है।

''प्रायश्चित करने के लिए या क्षमा चाहने के लिए या प्रेम दिखाने के लिए शब्द की आवश्यकता नहीं है''

उसका वचन काम करता है

वचन * विश्वास * क्षमा * प्रेम

शमौन के घर का ये कमरा वास्तव में एक आराधना स्थल बन गया था।

आज सवाल है–

आपका पाप कितना क्षमा हुआ है क्या बस उतना जितना आप प्रभु यीशु से प्रेम करते हैं?

121. न इस पहाड़ पर, न यरूशलेम में

ना ही बड़े आलीशान चर्चों में
न ही हजारों लोगों की भीड़ के बीच में, या
जादूगरों के साथ गायकों की सुरीली आवाजों के मिलन में
न ही कलाकारों के सुरसाज के शोर में
और हां
न ही उन झूठी गवाहियों के बीच
और फिर
न ही Body guards की सुरक्षा से घिरे पास्टरों के बहकावे के मध्य में ही सच्चे जीवित परम प्रभु की आराधना होती है।
''तुम न तो इस पहाड़ पर पिता का भजन करोगे न यरूशलेम में, सच्चे भक्त पिता का भजन आत्मा और सच्चाई से करेंगे, पिता ऐसे ही भजन करने वालों को ढूंढ़ता है।'' यूहन्ना 4:21-24
तो फिर आज परमेश्वर को आराधक ढूंढ़ने क्यों पड़ रहे हैं?
क्या आराधक उसे उन बड़े-बड़े stadium, या मैदानों में भरे नहीं दिख रहे?
क्या halleluyah के नारे उसके कान तक नहीं पहुंच रहे?
सच तो ये है कि नम्रता चाहिए
टूटा हुआ ह्दय चाहिए
मन फिराव की आत्मा चाहिए
सच्चाई चाहिए
विश्वास चाहिए
प्रभु यीशु के प्रेम का अनुभव चाहिए
प्रभु की उपस्थिति चाहिए
तब सच्ची आराधना हो जायेगी
आज सवाल है-
आपकी आराधना - कहां, क्यों और किसकी हो रही है?

122. E=mc2 (Theory of relativety & Albert Einstein)

एक मनुष्य को इस संसार में बड़ा - बनने के लिए

शक्ति, जन-धन और साधन जोड़ने पड़ते हैं
(मैं)
लेकिन उसे छोटा - बनने के लिए
अपनी शक्ति (तन मन धन) को घटाना या खर्च - करना पड़ता है,
(मैं)
और जो इस - छोटा बनने की प्रक्रिया (process) से हाथ में बच जाता है, उसे जरूरतमंदों की सेवा करने में लगाया जा सकता है।
इसी कारण तो प्रभु यीशु कहते हैं, "मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया, कि उस की सेवा की जाए, पर इसलिये आया, कि आप सेवा करे" मरकुस 10:45
"मसीह यीशु ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी
अपने आप को = शून्य कर दिया = दास का स्वरूप धारण किया = दीन किया, और यहां तक = आज्ञाकारी रहा, कि
क्रूस की = मृत्यु भी सह ली" फिलिप्पियों 2:5-8
और इसी कारण वो इस संसार के सबसे निचले स्तर में उतरकर कंगाल, अंधे, बंधुवे और कुचले हुओं के साथ संगति कर सका, और उनका उद्धार कर सका।
शून्य बनने की तुलना, यदि मैं
Physics के एक फॉर्मूला से करूं तो शायद समझना आसान होगा।

E=mc2

Albert Einstein द्वारा दिए गए, theory of relatively के इस फॉर्मूला में ये बताया गया है कि छोटे से छोटा परमाणु यदि अपने अस्तित्व (वजन) को खत्म कर दे तो उसका mass (otu) energy (ऊर्जा) में convert हो जाता है, जिसका इस्तेमाल हम लोगों के घरों तक बिजली पहुंचा कर कर सकते हैं। या Atom Bomb भी Nuclear reactor में बना सकते हैं, "खुद कुर्बान होकर दूसरों की सेवा की जा सकती है" तो
आज सवाल है–
ऊपर चढ़ रहे हो या उतर रहे हो - सेवा करने के लिए?

123. 490 साल की रहस्यमय पहेली

भविष्यवाणी
दानियेल के 70 सप्ताह की भविष्यवाणी
(Seventy weeks in Daniel's Prophesy)

दानियेल की किताब में प्रभु यीशु के आने और क्रूस पर मरने के वर्ष के बारे में पहले से बताया गया है।
दानियेल और उसके साथ व बहुत से यहूदी बाबुल में बंधक बनकर जाते हैं।
नबुकदनेजार राजा यरूशलेम के मंदिर को फूंक देता है और सोने चांदी के मंदिर के पात्र लूटकर ले जाता है। शहर और उसके दीवारें तोड़ दी जाती है।
यरूशलेम से बंधक लोग करीब 70 साल के लिए बंधुवाई में ले जाए जाते हैं, उनमें से एक दानियेल भी है।
उस दौरान परमेश्वर दानियेल को एक रहस्यमय पहेली, भविष्यवाणी के रूप में बताते हैं। ये भेद प्रभु यीशु के संसार में आने के बाद क्रूस पर मरने के वर्ष के बारे में भेद खोलता है।
एक पहेली - में छिपा भेद
Sequence of the Prophesy
यहूदियों के इतिहास के 490 वर्ष की पहेली
(दानियेल के 70 सप्ताह)
जिसके 483 वर्ष (69 सप्ताह) का रहस्य सामने आ चुका है।
पर बाकी - 7 वर्ष (1 सप्ताह) का रहस्य भी बहुत जल्द ही सामने आ जाएगा (Antichrist)
दानियेल को भविष्यवाणी एक पहेली के रूप में दी गई
लिखा है, फारस के राजा द्वारा -
''यरूशलेम के खंडहर को फिर से बसाने की आज्ञा के दिए जाने वाले वर्ष - से लेकर अभिषिक्त प्रधान (मसीह) के काटे जाने के बीच का कुल 483 वर्ष (69 सप्ताह) होगा।'' दानिय्येल 9:25-26 (पहेली)
अब इतिहास को देखें ये कैसे पूरा होता है।
एज्रा 1:1,2 फारस के राजा कुस्रू के पहिले वर्ष में यहोवा ने फारस के राजा कुस्रू का मन उभारा, और आज्ञा दी, कि यहूदा के यरूशलेम में मेरा एक भवन बनवा।
नहेमायाह 2:1
पहेली सुलझाने का क्रम / Sequence of events
(Appro)
1. यरूशलेम को बसाने का आदेश - 450 BC
2. आदेश के 483 वर्ष (सन् 450 BC से सन् 33 AD)
3. सन् 33 AD में प्रभु क्रूस पर मरे (उम्र 33 yrs)

4. आज प्रभु यीशु को आए 2000 वर्ष से अधिक हो गया है - अनुग्रह का युग है, प्रभु यीशु को हम अन्य जाति स्वीकार कर रहे हैं, (और ये यहूदियों के इतिहास का अनजाना समय है - Gap in History).

5. यहूदियों के बाकी 7 वर्ष (1 सप्ताह) का भविष्य कब सामने आयेगा, उसमें क्या होगा। दानिय्येल 9:27

6. प्रभु यीशु बहुत जल्द बादलों पर जब आयेंगे, सारे विश्वासी, जो मरे हैं वो भी जीवित होकर प्रभु के पास ऊपर उठा लिए जाएंगे - Rapture

1 Thessalonians 4:15-17

- वो दिन यहूदियों के बाकी 7 वर्ष के भविष्य का पहला दिन होगा

और

- वो दिन विरोधी मसीह या Antichrist के 7 वर्ष के महाक्लेश और उपद्रव का पहला दिन होगा।

- इन 7 वर्षों के दौरान Antichrist यहूदियों को भर्माएगा की वही सच्चा मसीह है, कुछ उस पर विश्वास करेंगे लेकिन जब वह अपनी मूर्ति यरूशलेम के मन्दिर में स्थापित करके उसकी पूजा करवाना चाहेगा, तब बहुत उसे नहीं मानेंगे। वो भारी नरसंहार करेगा। और बहुत चमत्कार भी करेगा, यहां तक कि मूरत में जान भी डाल सकेगा।

7. जब 7 वर्ष पूरे होंगे तो प्रभु यीशु अपने विश्वासी जनों के साथ आकर Antichrist को नष्ट करेंगे और अपना 1000 वर्ष का राज्य का प्रारंभ करेंगे।

दानिय्येल 9:27

8. ये युग आगे स्वर्ग के ...अनंत जीवन की ओर बढ़ जाएगा।

आज सवाल है–

क्या आप अनंत जीवन में प्रवेश करने के लिए तैयार हैं?

मैं आपको बताना चाहता हूं कि

इस समय संसार में परमेश्वर के अपने लोग दो समूहों में हैं

1. इब्राहीम की शारीरिक संतान - जो यहूदी कहलाते हैं, ये इस समय तक प्रभु यीशु को ठुकराते रहे हैं।

2. इब्राहीम की आत्मिक संतान - जो विश्वास करने के द्वारा मुक्ति पाये हुए विश्वासी मसीही हैं।

बाइबिल की भविष्यवाणियों को समझने के लिए हमें ये ध्यान रखना है, कि कुछ

1. भविष्यवाणियां सिर्फ यहूदियों के भविष्य की बातें करती हैं, और कुछ

2. भविष्यवाणियां केवल गैर यहूदी नए जन्मे विश्वासियों की बात करती हैं
3. कुछ सारे संसार के जानने के लिए हैं
(बहुत से बाइबिल के विद्वान सबको एक समझकर, अंतर न जानकर confusion पैदा कर देते हैं)
दानियेल की किताब में भविष्यवाणी का भेद
- केवल यहूदियों के इतिहास और भविष्य से जुड़ा है।
- और आने वाले मसीह और उसके राज्य को प्रगट करता है
प्रमुख रूप से दानियेल की किताब में क्या है?
1. यीशु मसीह किस वर्ष में बलिदान होंगे - चर्चा है
2. यहूदियों और इस संसार के भविष्य के जो आखिरी 7 वर्ष हैं - जो AntiChrist के महा संकट और क्लेश के साथ पूरे होंगे - उनकी चर्चा है
कुल वर्ष 490 (70X7 = 490)
1) 69 सप्ताह = 483 years - पूरा हुआ (प्रभु यीशु के क्रूस पर चढ़ने से पूरा हुआ)
2) 1 सप्ताह = 7 years - अभी होना बाकी है
भविष्यवाणी और उसका पूरा होना
तो यहूदियों के एक सप्ताह (7 साल) का जो भविष्य बाकी है उसमें क्या होगा। लिखा है
दानिय्येल 9:27
और वह प्रधान (anti Christ) एक सप्ताह (7 साल) के लिये बहुतों के संग (यहूदियों) दृढ़ वाचा बान्धेगा, परन्तु आधे सप्ताह (3.5 साल) के बीतने पर वह मेलबलि और अन्नबलि को बन्द करेगा; और कंगूरे पर उजाड़ने वाली घृणित वस्तुएं दिखाई देंगी (यरूशलेम के मंदिर में अपनी मूर्ति स्थापित करके पूजा करने को कहेगा।)
इस सात साल के अंत में
प्रभु यीशु स्वर्ग से अपने लोगों के साथ धरती पर उतरेंगे और Antichrist का नाश करेंगे ओर अपना राज्य स्थापित करेंगे।

124. उपवास प्रार्थना ऊपर सुनाई नहीं देती है?

जैसा उपवास् तुम आजकल रखते हो, उससे तुम्हारी प्रार्थना ऊपर सुनाई नही देगी।
यशायाह 58:04
जिस उपवास से मैं प्रसन्न होता हूं, वह यह,

1. अन्धेर सहने वालों का जुआ तोड़कर उनको छुड़ा लेना, (मजदूरों को न्याय देना)
2. सब जुओं को टुकड़े टुकड़े कर देना? (पक्षपात समाप्त करना)
3. अपनी रोटी भूखों को बांट देना, (अपनी रोटी देना - और लोगों की रोटी नहीं बांटना)
4. अनाथ और मारे मारे फिरते हुओं को अपने घर ले आना, किसी को नंगा देखकर वस्त्र पहिनाना,
5. और अपने जाति भाइयों से अपने को न छिपाना? (अपने पड़ोसी की मदद करना)

परिणाम

- तब तू शीघ्र चंगा हो जाएगा;
- तब तू पुकारेगा और यहोवा उत्तर देगा;
- तू दोहाई देगा और वह कहेगा, मैं यहां हूं।

यशायाह 58:5-9

आज सवाल है-

उपवास कर रहे हो क्या ?

125. वो एकलौता बनकर आया लेकिन पहिलौठा बनकर लौटा

मनुष्य को उसने परमेश्वर की संतान बनाया, अपना भाई बनाया मृत्यु पर जय पाने के बाद उसका नाम बदल गया, वह एकलौता नहीं रहा पर पहिलौठा कहलाया।

''उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए'' यूहन्ना 3:16

''क्योंकि जिन्हें उस ने पहिले से जान लिया है उन्हें पहिले से ठहराया भी है कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों ताकि वह बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे।''

रोमियों 8:29

आज सवाल है-

क्या प्रभु यीशु की मृत्यु पर जय ने, आप को उसका भाई बना दिया है?

प्रभु यीशु ने उस से कहा, पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं,
जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा।

यूहन्ना 11:25

''पुनरुत्थान और जीवन'' क्या है। ये दोनों बातें मनुष्य की आवश्यकता है।

जीवन - हमारा वर्तमान है और पुनरुत्थान - हमारा भविष्य है

और प्रभु यीशु इन दोनों को संभाल सकता है। इसके बिना हम डर और चिंता में डूबे रहेंगे।
प्रभु यीशु को जीवित होने के एक भी प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं थी।
ना कपड़े कब्र में मिलने की,
ना पत्थर हटाने की आवश्यकता थी,
ना ही जीवित होने के बाद किसी को दिखाई देने की ही आवश्यकता थी
ना ही स्वर्गदूत को आना था
ना ही चेलों के साथ रोटी और मछली खाने की आवश्यकता थी
और ना ही अपने जख्म दिखाने की।
उसके कहे गए ''शब्द पर विश्वास'' करना काफी था।
इसीलिए तो उसने थोमा से कहा था धन्य वो है जो बिना देखे विश्वास करता है (वचनों पर विश्वास करता है)
परमेश्वर का हर वचन एक आशा (याने परिणाम) से जुड़ा होता है।
विश्वास वचन पर आशा रखना है।
जिसने अपने वचन की सामर्थ से ब्रह्मांड की सृष्टि की ओर जो अपने वचन की सामर्थ से इस ब्रह्मांड को थामे हुए है, उसे मनुष्य को किसी भी जी उठने के प्रमाण को देने की आवश्यकता नहीं थी।
बिना प्रमाण के इब्राहीम ने जब उसकी कोई संतान नहीं थी परमेश्वर के कहने पर आकाश की ओर देखकर अनगिनत तारागणों की संख्या के समान संतान देने का आशीर्वाद पाया और विश्वास किया।
ये उसकी धार्मिकता गिना गया, इब्राहीम के कर्म नहीं, उसका परमेश्वर के वचन पर विश्वास धार्मिकता माना गया।
इसलिए तो प्रभु यीशु ने भी कहा था कि परमेश्वर का कार्य यही है कि जिसे उसने भेजा है उस पर विश्वास करो।
3. पुनरुत्थान के समय की कई घटनाएं हैं।
मैं इनमें से एक घटना को लेता हूं
लूका 24:13-34
ये दो चेले बिल्कुल आम अनुयायी थे। दुखी ओर निराश थे, यरूशलेम छोड़कर अपने गांव इम्माऊस को जा रहे थे।
प्रभु यीशु उनके दुख को जानकर उनके साथ पैदल शामिल हो जाते हैं।
वे कहते हैं हमें आशा थी कि वो इस्राएल के लिए आशा और उम्मीद लेकर आएगा

लेकिन वो मारा गया आज तीन दिन हो गए हैं। और कुछ स्त्रियों का कहना है कि उन्होंने उसे जीवित देखा है।
प्रभु यीशु पूरे धर्मशास्त्र के वचनों को लेकर उन्हें समझाते हैं कि मसीह को दुख उठाना होगा और फिर तीसरे दिन वो जीवित हो जाएगा।
उनकी बुद्धि खोल दी गई ताकि वो समझ सकें। इसके बाद दोनों चेलों ने उसे उस रात में उनके घर में ही उस रुक जाने के लिए कहा। रात को भोजन की टेबल पर एक अजीब घटना घटी।
प्रभु यीशु ने रोटी लेकर धन्यवाद दिया और तोड़कर उनको खाने को दिया।
उसी वक्त उनकी आंखें खुल गईं और उन्होंने प्रभु यीशु को पहचान लिया, ये पहचान तो वो रास्ते में भी कर सकता था, लेकिन नहीं किया। क्यों?
वो इसलिए को रोटी तोड़ते हुए वे उसकी हथेलियों को देख सकें, और उसमें कीलों के घाव के निशान भी देख सकें। ताकि उसी रात जब वे चेलों को उसके जीवित होने की खबर दें, तो कीलों के निशान का प्रमाण भी दे सकें।
...वो जी उठा है
आज सवाल है–
उसके जीवित होने से आप के आपके जीवन में क्या हुआ?

126. मेरा मांस - वास्तव में खाने की वस्तु है

और मेरा लहू - वास्तव में पीने की वस्तु है
(घबरा गये?)
प्रभु यीशु ने कहा, जो मेरा मांस खाता, और मेरा लोहू पीता है, अनन्त जीवन उसी का है, और मैं अंतिम दिन फिर उसे जिला उठाऊंगा। यूहन्ना 6:54,55
मतलब है क्या?
यूहन्ना 6 अध्याय का शीर्षक मैंने दिया है
''रोटी''
जब 5000 से अधिक लोगों ने रोटी खाई थी चमत्कार द्वारा बस 5 रोटी और 2 मछली से, तो अब उन लोगों को ना चमत्कारों से मतलब था न उसके संदेश से बस रोटी..रोटी. बाद में वे उसे ढूंढ़ने लगे क्योंकि उन्होंने निर्णय लिया था कि उसे राजा बनाएंगे
(अगली सरकार प्रभु यीशु की सरकार - नारे लगे होंगे)
लेकिन

प्रभु यीशु को इनसे कोई मतलब नहीं था और वे वहां से दूर एकांत स्थल चले गए जब भीड़ उनसे मिली तो उनसे सवाल किया आप यहां कब, कैसे?
प्रभु यीशु ने जवाब दिया
"नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो, परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है, जिसे मनुष्य का पुत्र तुम्हें देगा। .. जीवन की रोटी मैं हूं: जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी प्यासा न होगा।" यूहन्ना 6:27,35
तो दो तरह के भोजन हैं
1) नाशमान भोजन (रोटी)
2) अनंत जीवन का भोजन (रोटी)

1) नाशमान रोटी जो चूल्हे पर पकती है वो हमारी भूख अधिक कहें तो 8 घंटे तक मिटाती है हम तोड़कर खाते हैं। साथ पानी पीते है। जीवित रहते है कुछ साल।
2) जीवन की रोटी, क्रूस पर तैयार हुई।
ये हमें जीवन देती है कुछ घंटों का नहीं, परन्तु अनंत जीवन का।
रोटी की तरह प्रभु यीशु का बदन क्रूस पर तोड़ा गया, पानी की तरह उसका लहू बह गया।
उसके इस बलिदान पर विश्वास करने से हमको अनंत जीवन मिलता है
नाशमान जीवन, और अनंत जीवन को इस के द्वारा समझाया गया है।
(अब नाराज होने की बात तो नहीं रही)
आज हम खुशी से पौलुस द्वारा लिखी बात कबूल करते हैं, जब उसने भी लिखा, जो प्रभु यीशु ने कहा।
"यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिये है:
यह मेरे लोहू है: जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिये यही किया करो।"
1 कुरिन्थियों 11:24,25
आज सवाल है–
क्या अनंत जीवन की रोटी आपने खाई है?

127. बगावत

मनुष्य और परमेश्वर के बीच का तीन प्रकार का रिश्ता है

1. मनुष्य सत्य से अनजान होने के कारण, अंधाकार में भटकता फिरता है - नरक के दण्ड का भागी होता है
2. मनुष्य परमेश्वर को जानकर भी उससे बगावत करता है - इस संसार में भी दण्ड, और अनंत नरक का दण्ड भागी होता है।
3. मनुष्य सच्चे परमेश्वर के प्रेम को स्वीकार करके में फिराकर मुक्ति पाता है - इस संसार में परमेश्वर के अनुग्रह से और उस पर भरोसा करके शांति का जीवन जीता है और फिर अनंत स्वर्गीय जीवन।
तो बगावत?
परमेश्वर के खिलाफ
(परमेश्वर का न्याय इस संसार में हर समय चलता रहता है, शायद हम देखते नहीं हैं) देखें
बाबुल की बगावत - करीब आज से 4100 साल से पहले और उन्होंने इरादा क्या किया ''उत्पत्ति 11:4 फिर उन्होंने कहा, आओ, हम एक नगर और एक गुम्मट बना लें, जिसकी चोटी आकाश से बातें करे, इस प्रकार से हम अपना नाम करें। परमेश्वर के प्रभुत्व को समाप्त करें, उससे आजाद होकर अपने आप को बनाएं, अपनी बुद्धि और शक्ति का इस्तेमाल करें।
याने स्वर्ग के परमेश्वर से हम अपनी शक्ति और बुद्धि से मुकाबला करेंगे।
(आदम और हवा ने भी फल खाकर अपने आप को परमेश्वर की मर्जी से आजाद किया था)
फिर मिस्र के महाराजा फिरौन की बगावत ये थी कि वो परमेश्वर से ही लड़ रहा था, करीब आज से 3500 पहले, अपनी शक्ति से परमेश्वर की आज्ञा का विरोध कर रहा था। फिर देखें बेबीलोन के महाराजा नबुकदनेजार को करीब आज से 2600 साल पहले, वो तो खुद ही ईश्वर बन बैठा, अपनी मूरत बनाकर लोगों से उसकी पूजा करवाने लगा। फिर करीब 2000 साल पहले हेरोदेस राजा को ही लें।
परमेश्वर के भेजे मसीह का कत्ल करने निकालता है। और फिर आज का आलम क्या है। समाज और संस्कृति ने बगावत कर दी है। Homosexual revolution चल रहा है। परिवार की इकाई जिसे परमेश्वर ने बनाया था उस तोड़ा जा रहा है। आदमी आदमी से और स्त्री भी स्त्री से शादी कर रही है, बच्चों को गोद ले रहे है और उन्हें सरकार और कोर्ट का पूरा समर्थन है।
Transgender हर देश में बढ़ रहे हैं। अमरीका में transgender किसी भी स्त्री या पुरुष शौचालय का इस्तेमाल कर सकते हैं, यदि अस्पताल के काउंटर में जॉन आता है, तू आप

पूछिए आप जॉन या जीना कहलाना पसंद करेंगे?
Human Genome अच्छे से समझने के बाद scientist कहने लगे कि हम genome के sequence में फेर बदल करके बीमारी को मिटा देंगे, उस समय के अमरीकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने कहा था अब 300 साल का व्यक्ति बच्चा कहलाएगा। क्या ये बगावत नहीं?
रोमियों 1:23-32
रोमियों 1:24 इस कारण परमेश्वर ने उन्हें उनके मन के अभिलाषाओं के अुनसार अशुद्धता के लिये छोड़ दिया, कि वे आपस में अपने शरीरों का अनादर करें।
रोमियों 1:25 क्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला....
रोमियों 1:26 इसलिये परमेश्वर ने उन्हें नीच कामनाओं के वश में छोड़ दिया....
रोमियों 1:27 वैसे ही पुरुष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक व्यवहार छोड़कर आपस में कामातुर होकर जलने लगे ....
रोमियों 1:28 और जब उन्होंने परमेश्वर को पहिचानना न चाहा, ...
Science / विज्ञान को लें
प्रगति और आविष्कारों के द्वारा परमेश्वर की महिमा करने के बजाय वो कहने लगे परमेश्वर है ही नहीं।
Charles Darwin ने Evolution को आगे बढ़ाया कहा मनुष्य को बनाने वाला कोई ईश्वर नहीं है, बंदर से मनुष्य बना है।
Albert Einstein जो कि संसार के सबसे बड़े वैज्ञानिक माने जाते हैं, उन्होंने कहा परमेश्वर नहीं है।
Stephen Hawkins आज की सबसे प्रसिद्ध साइंटिस्ट जो पिछले दिनों मर गए, उन्होंने कहा, कोई परमेश्वर नहीं है, कोई हमें चलाने वाला ईश्वर नहीं है। मनुष्य की बगावत जारी है।
लेकिन सावधान (Corona Virus?)
परमेश्वर मनुष्य को सारे संसार के हर देश में एक साथ भयभीत करके घरों में बंद कर सकता है।
अदृश्य दुश्मन भेज कर हमको खत्म कर सकता है।
दुनिया की ताकत यदि पेट्रोल है तो उसकी कीमत शून्य से भी नीचे कर सकता है जो पिछले दिनों हमने दुनिया के बाजार में देख लिया।
आज मनुष्य को घुटनों पर आने की आवश्यकता है। पापों के लिए क्षमा मांगना है, मन फिराना है। परमेश्वर के पास लौटना है।

लिखा है–''जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।'' फिलिप्पियों 2:10,11

आज सवाल है–

कहीं आप इस बगावत में शामिल तो नहीं हो?

128. दूसरे की जरूरत का सामान तो घर नहीं ले आये

मैं एक ऐसे शहर में था। जहां भय छाया हुआ था, दुश्मन की फौज शहर के नजदीक आ रही थी, लोगों ने अपने पैसे से मार्केट खाली करना शुरू किया। हमने अपनी जरूरत से अधिक कुछ भी न खरीदने का निर्णय लिया।

क्यों?

मेरे साथ और शहर में गरीब, मजदूर, विधवाएं और बेरोजगार थे। उनका साथ दूं या उनकी रोटी भी लेकर अपने घर में रख लूं।

आज कोरोना अपने, का भी हाल कुछ इसी तरह का है। लोग सुपर मार्केट और किराने की दुकानों से सामान उठा रहे हैं। प्रभु चाहता है कि यदि एक पैकेट रह गया है, तो शेल्फ में छोड़ दीजिए। यदि अधिक हैं तो एक ले लीजिए।

प्रभु ने सिखाया था

''हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे'' मत्ती 6:11

आज सवाल है–

दूसरे की जरूरत का सामान तो घर नहीं ले आये?

129. नरक से सुसमाचार प्रचार

चारों तरफ भय की स्थिति है। आंखों से न दिखनेवाला एक छोटा सा जीवाणु कोरोना वायरस (Corona virus), संसार पर विजय पाता नजर आ रहा है।

इस संसार की हर शक्ति, चाहे वो राजनीतिक हो, धार्मिक हो, सैनिक हो, धन की हो, या विज्ञान की हो। उसे भयभीत किए हुए है और आक्रमण करता हुआ मनुष्य को घुटनों पर लाता नजर आ रहा है।

इस भय के बीच - नरक से एक व्यक्ति इस संसार को एक जरूरी चेतावनी दे रहा है। कहता है–परमेश्वर के वचन (बाइबिल) पर विश्वास करो, उसमें लिखी हर बात सच

है और जो नहीं मानेगा वो... अग्नि की ज्वाला में यहां जहां पर मैं तड़प रहा हूं आ जाएगा ये सत्य कथा प्रभु यीशु ने सुनाई थी।
एक धनी मनुष्य जो परमेश्वर के वचन को नहीं मानता था और उसके पड़ोसी गरीब, बीमार भिखारी लाजरस की। लूका 16:19 -31
"यदि प्रभु यीशु द्वारा मुक्ति आप को मिल गई है तो डर नहीं है"
... नाशमान अविनाश को पहिन लेगा... और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा,.. और पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया।
... हे मृत्यु तेरी जय कहां रही?
... हे मृत्यु तेरा डंक कहां रहा? मृत्यु का डंक पाप है;
... परन्तु परमेश्वर का धान्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है। 1 कुरिन्थियों 15:54-57
आज सवाल है-
अग्नि ज्वाला में पड़े मनुष्य की बात मानोगे?

130. हां बाजार ही तो है

...घी के नाम पर दे क्या रहे हो ...
(ये दुनिया बाजार है, हर मुंह में व्यापार है - गीत)
बड़े शहर के एक छोटे रेस्टोरेन्ट में, दोपहर को मैं रोटी खा रहा था। मेरे बाजू की एक टेबल पर एक देहाती सा व्यक्ति आकर बैठा। एक वेटर स्टील का गिलास खनखनाते हुए आया और टेप रिकॉर्डर की तरह बहुत तेजी से एक दर्जन सब्जियों के विभिन्न कॉम्बिनेशन्स सुना दिये।
उस व्यक्ति ने बड़ी धीमी आवाज से कहा, भैया मैं कुछ समझ नहीं पाया हूँ। बस रोटी और हाफ दाल चलेगी, छिलके वाली भी चलेगी।
वेटर ने कहा मैं आपको अभी घी लगाकर रोटी खिलाऊंगा, बस 5 मिनट में। दाल रोटी खाने के बाद उस व्यक्ति से वेटर ने उत्साह पूर्वक सवाल किया।
कैसी लगी हमारी घी की रोटियां?
कुछ क्षण खामोश रहने के बाद धीमी आवाज में जवाब आया।
भैया "घी तो वो था जो मैंने गांव में खाया था, ये तो डालडा था।"
आज कितने चर्च और लोग हैं जो नाम प्रभु यीशु का लेते हैं, पर माल नकली बेचते हैं।
"वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उस की शक्ति को न मानेंगे; छ्व तीमुथियुस ड्ड:क्क

आज सवाल है–
सामने वाले को दे क्या रहे हो?

131. दो रास्ते हैं, और आप एक पर हैं

पहला रास्ता - यहोवा का - नाम
दूसरा रास्ता - धनी का - धन
(दोनों रास्ते - नीति 18:10, 11 में)
1. पहला रास्ता : नीतिवचन 18:10
यहोवा का - नाम - दृढ़ गढ़ है; धर्मी उस में भाग कर सब दुर्घटनाओं से बचता है। याद है न प्रभु यीशु ने कहा, मेरे - नाम से कुछ भी मांगो।
यूहन्ना 14:14
उस नाम की ओर भागने का अर्थ है, भरोसा रखना, उसके नाम का अधिकार इस्तेमाल करना।
2. दूसरा रास्ता : नीतिवचन 18:11
धनी का -धन - उसकी दृष्टि में गढ़ वाला नगर, और ऊंचे पर बनी हुई शहरपनाह है। धन - के बल पर संसार में जीना
याद है न
नीतिवचन 16:25
ऐसा भी रास्ता है, जो मनुष्य को सीधा देख पड़ता है, परन्तु उसके अन्त में मृत्यु ही मिलती है। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।
लूका 16:13
आज सवाल है–
किस रास्ते में हैं आप?

132. चरवाहा और भेड़ एक हो गए

कैसे ?

1. पहले चरवाहा था - भजन 23
2. फिर भेड़ बन गया - यशायाह 53
3. इसके बाद अच्छा चरवाहा बना - यूहन्ना 10
3. और फिर महान् चरवाहा बना - इब्रानियों 13:20
4. आखिर भेड़ और चरवाहा भी बन गया - प्रका. 7:17

1.

चरवाहा

भजन संहिता : 23

भेड़ को क्या मिला इसका हिसाब है, भेड़ का focus खुद अपने पर है।

यहां 14 बार बस मैं, मेरा, मेरे, मेरी, मुझे आया है।

यहोवा

मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी। मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता है; वह मुझे सुखदाई जल के झरने के पास ले चलता है; मेरे जी में जी ले आता है। मेरी अगुवाई करता है। मैं हानि से न डरूंगा, मेरे साथ तू रहता है; मुझे शान्ति मिलती है मेरे लिये मेज बिछाता है; मेरे सिर पर तेल मला है, मेरा कटोरा उमण्ड रहा है। मेरे साथ-साथ भलाई और करुणा बनी रहेगी, मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा।

2.

भेड़

यशायाह 53:67 में चरवाहे का जिक्र ही नहीं है अब भेड़ की महिमा की जा रही है। मनुष्य भी भेड़ हैं और परमेश्वर के पुत्र भी भेड़ बने हैं।

''हम तो सब के सब भेड़ों की नाई भटक गए थे''

''जिस प्रकार भेड़ वध होने के समय वा भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला।''

3.

अच्छा चरवाहा

अब हम यूहन्ना के 10वें अध्याय में आते हैं, जहां बस चरवाहे की महिमा होती है। Focus चरवाहे पर है, जो हमारे प्रभु यीशु हैं।

अच्छा चरवाहा में हूं, मैं भेड़ों के लिए प्राण देता हूं, मैं अपनी भेड़ों को पहचानता हूं, मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं, मेरा शब्द सुनती है मैं उनके आगे आगे चलता हूं और वे पीछे पीछे आती हैं।

4.

महान् चरवाहा

''अब शान्तिदाता परमेश्वर जो हमारे प्रभु यीशु को जो भेड़ों का महान् रखवाला है सनातन वाचा के लोहू के गुण से मरे हुओं में से जिला कर ले आया।'' इब्रानियों 13:20

जब चरवाहा भेड़ों के लिए अपने प्राण दे देता है, और फिर दोबारा जीवित होकर आ जाता है तो फिर उसका नाम बदल जाता है, वो महान् चरवाहा कहलाता है।

5.

भेड़ का चरवाहा बन जाना

''क्योंकि मेम्ना (भेड़) जो सिंहासन के बीच में है, उन की रखवाली (चरवाहा) करेगा; और उन्हें जीवन रूपी जल के सोतों के पास ले जाया करेगा,'' प्रकाशितवाक्य 7:17

आज सवाल है–

प्रभु यीशु और मैं क्या एक हो गया हूं?

133. सब प्रभु यीशु को छूना चाहते थे, आखिर क्यों?

खबर फैल गई थी

की प्रभु यीशु बीमारों को छूते हैं, उनपर अपना हाथ रखते हैं उन्हें स्वस्थ कर देते हैं और प्रेम से मिलते हैं। इसलिए अब काम बन सकता था, या तो वो हमें छू लें, या हम उन्हें छू लें।

''बीमारियों में पड़े.. सब उनके पास आए.. और प्रभु यीशु ने एक एक पर हाथ रखकर उन्हें स्वस्थ किया।'' लूका 4:40

''जितने लोग रोग से ग्रसित थे, छूने के लिये गिरे पड़ते थे।'' मरकुस 3:10

प्रभु यीशु के लिए क्या छूना जरूरी था?

उन्होंने अपने वचन की सामर्थ से सारी सृष्टि रची थी,

छूना जरूरी नहीं था, लेकिन ये दिखाने के लिए की वो चमत्कार करने ही नहीं, पर प्रेम के कारण इस जगत में आए हैं।

एक बार की बात है, एक स्त्री को लहू बहने का रोग था।

''प्रभु यीशु की चर्चा सुनकर, भीड़ में पीछे से आई, और उनके वस्त्र को छू लिया।

क्योंकि वह कहती थी, यदि मैं वस्त्र ही को छू लूंगी, तो बीमारी से छूट जाऊंगी। प्रभु यीशु ने कहा, पुत्री तेरे विश्वास ने तुझे स्वस्थ किया है। मरकुस 5:27-34
विश्वास प्रभु यीशु के वस्त्र पर नहीं था, प्रभु यीशु पर था।
प्रभु यीशु ने राह में बैठे एक कोढ़ी को छुआ। जबकि लोग इस बीमारी से पीड़ित को दूर से देखकर भागते थे, सोचते थे कि वे अशुद्ध हो जाएंगे। लेकिन प्रभु यीशु ने तरस खाकर हाथ बढ़ाया, और उसे छूकर कहा, मैं चाहता हूं कि तुम स्वस्थ हो जाओ। मरकुस 1:40-41

एक विधवा के बेटे की अर्थी शहर के बाहर निकल रही थी। प्रभु यीशु ने अर्थी रुकवाई और अर्थी को छुआ, और वो जीवित हो गया, लोग अर्थी को अशुद्ध मानते थे और नहीं छूते थे। प्रभु यीशु ने मनुष्य की बनाई शुद्ध-अशुद्ध की दीवार को तोड़ दिया।
एक बार लोग अपने बच्चों को प्रभु यीशु के पास लाए, कि उन पर हाथ रखे, और प्रभु यीशु ने उन्हें गोद में लिया, और उन पर हाथ रखकर उन्हें आशीर्वाद दिया। मरकुस 10:13,16

मंदिर का एक मुखिया आया और उसने विनती की, कि मेरी छोटी बेटी मरने पर है: आप आकर उस पर हाथ रख दें, कि वह स्वस्थ होकर जीवित रहे। प्रभु यीशु ने उसे जीवित किया। मरकुस 5:22-23
और सब उन्हें छूना चाहते थे, क्योंकि प्रभु यीशु से सामर्थ निकलकर सब को स्वस्थ करती थी। लूका 6:19
यदि आप आज प्रभु यीशु को छुएंगे, तो वो आप के जीवन की हर मुसीबत दूर करेंगे चाहे झगड़े हों, या भूत प्रेतों के आतंक हों, बीमारी हो, दुख दर्द के हालात हों।
प्रार्थना प्रभु यीशु से करिए वो मुक्ति, मोक्ष, और नया जीवन देंगे।
आज सवाल है-
क्या आप प्रभु यीशु को विश्वास के हाथ से छूएंगे?

134. कागजी विश्वास

1. विश्वास भी करना है साथ में ग्रहण भी करना है।
परन्तु जितनों ने उसे - ग्रहण किया, उसने उन्हें परमेश्वर के सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके नाम पर - विश्वास रखते हैं।

यहां दो बातें हैं, एक तो विश्वास करना है, और साथ में ग्रहण भी करना है, सिर्फ विश्वास है और उसके साथ कुछ पाना नहीं है तो वो कागजी विश्वास है। यूहन्ना 1:12
उदाहरण– यदि आप के पास बैंक में बहुत पैसा है (विश्वास) लेकिन आप भूखे हैं, पैसा निकालकर उपयोग नहीं करते है (ग्रहण) तो आप के पास कागजी पैसा है, ऐसा ही कागजी विश्वास होता है।

2.

परखा हुआ विश्वास

... तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है।
और तुम में किसी बात की घटी नहीं रहेगी। विश्वास से मांगे, और कुछ सन्देह न करे; नहीं तो प्रभु से उसे कुछ नहीं मिलेगा। याकूब 1:3–7

3.

अनुभव रहित कागजी विश्वास

''कर्म के बिना विश्वास व्यर्थ है?'' याकूब 2:20

4.

बहुमूल्य विश्वास

1 पतरस 1:7 और यह इसलिये है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं, अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा, और महिमा, और आदर का कारण ठहरे।

आज सवाल है–

कहीं कागजी विश्वास लिए तो नहीं जी रहे?

135. ''मार्टिन लूथर''

''पैसे से नहीं विश्वास से''
मार्टिन लूथर का जन्म सन् 1483 में जर्मनी में हुआ, वो ईसाई जगत में धर्मसुधार लाए जो एक धार्मिक क्रांति से कम नहीं था (Reformation)
लूथर जर्मनी में Theology के प्रोफेसर बन गए। चर्च के अन्धकार ने उन्हें विचलित कर दिया। उन्होंने बाइबिल में रोमियों की किताब में पढ़ा था कि 'विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा'।
रोमियो 1:17 क्योंकि उसमें परमेश्वर की धामिर्कता विश्वास से और विश्वास के लिये प्रगट होती है; जैसा लिखा है, कि विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।

समस्या क्या थी? उस समय के चर्च के पादरी, अधिकारी और पोप, लोगों को धोखा दे रहे थे। बाइबिल वो पढ़ने नहीं देते थे। और कहते थे कि यदि तुम चर्च को पैसा दोगे तो तुम्हारे पाप क्षमा हो सकते हैं।

वो परमिट बेचने लगे (Indulgances)

यदि कोई व्यक्ति मर जाता था तो उस स्वर्ग तक पहुंचाने के लिए वो परिवार जनों से पैसे लेते थे। ताकि वो स्वर्ग जाने का परमिट खरीद सकें। और नरक के कष्ट को कम कर सकें।

चर्च द्वारा बहुत सी वस्तुओं को पैसे में लोगों को बेचा जाता था, ताकि उसके द्वारा वे पुण्य कमाएं। और चर्च की तिजोरी भरती जाए।

मार्टिन लूथर ने बाइबिल पढ़कर तीन बातों को समझा–

1. मुक्ति सिर्फ विश्वास के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है
2. बाइबिल ही हर सत्य का आधार है
3. सभी विश्वासी जन एक याजकीय अधिकार रखते हैं।

1. Salvation by faith alone
2. The bible is the only authority
3. The priesthood of all believers

(मार्टिन लूथर ने आम भाषा में बाइबिल का translation भी किया)

अक्टूबर 1517 में मार्टिन लूथर ने अपने शोध लेखों (theses) को विटनबर्ग (Wittenberg) के बड़े चर्च के दरवाजे पर लगा दिया। यहां से ईसाई धर्म के भीतर से सुधार की क्रांति निकली।

इसे ईसाई जगत में Reformation कहते हैं। अब सवाल ये है कि 500 साल बाद आज हम कहां है?

क्या वही अन्धकार नहीं फैलाया जा रहा है। आज बहुत से ईसाई गुरु पास्टर और संगठन

- पानी बेच रहे हैं,
- तेल बेच रहे हैं,
- रुमाल, शॉल और अन्य वस्तुएं बेच रहे हैं।

इसलिए ताकि उनके द्वारा कमाई हो सके, और भोले भाले लोग धोखा खाएं।

आज

पैसे दो और प्रार्थना करवाओ का दौर है, और ये खुले आम हो रहा है।

- सिल्वर, गोल्ड, प्लेटिनम, और डायमंड मेंबरशिप मिल रही है।

जितना अधिक पैसा दोगे, उतना ही मौका मिलेगा नामी पास्टर के साथ साल में कम से

कम एक बार मिलने का।
आज
- बिजनेस प्लान, फैमिली प्लान बिक रहे हैं,
ताकि आप से पैसा वसूल किया जाए, आपको धोखा दिया जाए, पैसा दोगे बिजनेस बढ़ेगा।
हम इस संसार के नहीं हैं, परमेश्वर के राज्य में हैं उसका क्या बना?
500 साल में कोई खास तब्दीली नजर आई?
आज सवाल है
पैसे दोगे या विश्वास करोगे?

"क्योंकि तुम जानते हो, कि तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बाप दादों से चला आता है उस से तुम्हारा छुटकारा चान्दी सोने अर्थात् नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ।" 1 पतरस 1:18
"यीशु ने परमेश्वर के मन्दिर में जाकर, उन सब को, जो मन्दिर में लेन देन कर रहे थे, निकाल दिया; और सर्राफों के पीढ़े और कबूतरों के बेचने वालों की चौकियां उलट दीं। और उन से कहा, लिखा है, कि मेरा घर प्रार्थना का घर कहलाएगा; परन्तु तुम उसे डाकुओं की खोह बनाते हो।" मत्ती 21:12,13

136. किराए के भविष्यद्वक्ता

और असली भविष्यद्वक्ता के बीच पहचान
..."तू जो भविष्यद्वक्ताओं को मार डालता है, और जो तेरे पास भेजे गए, उन्हें पत्थरवाह करता है" मत्ती 23:37
भविष्यद्वक्ता की परिभाषा :
"परमेश्वर का ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर के राज्य से जुड़े या प्रभावित करने वाले रहस्यों को पवित्र आत्मा द्वारा सिखाये जाकर लोगों पर प्रगट करता है"
और बाइबिल की भाषा में उसे Prophet कहते हैं।
परमेश्वर का हर वचन एक रहस्य है, जो पवित्र आत्मा की प्रेरणा से प्रगट किया जाता है। इसे समझा नहीं जा सकता है।
सोचिए यदि
भविष्यवाणी के द्वारा पास्टर हमें निजतम बताता रहा, तो विश्वास के जीवन का क्या बना।
आज कई मसीही भविष्यद्वक्ता घूम रहे हैं, जो बताते हैं,

- आप विदेश जाएंगे कि नहीं
- आप की कार का रंग क्या होगा
- इलेक्शन में कौन सी पार्टी जीतेगी
- आप का नाम क्या है, या आप की जन्म तिथि क्या है।

बाइबिल में prophet का हुलिया कुछ इस प्रकार दिखाई देता है।

- निडर होता है
- अकेला होता है
- चापलूसी की बातें नही करता।
- धन दुनिया से दूर रहता है
- अपने लोगों के लिए चिंता करता है रोता है।
- उन्हीं से मार खाता है।
- न भीड़ उसके साथ है। ना नाम है ।
- और अक्सर मरने के बाद लोगों को याद आता है।

झूठे भविष्यद्वक्ता के उदाहरण -

1. साउथ अफ्रीका में एक बहुत प्रसिद्ध, अपने आप को भविष्यद्वक्ता कहने वाले एक पास्टर हैं। वो अपने चर्च में आते हैं। सबसे महंगी कार में जो रॉल्स रॉयस हैं आते हैं उनकी गाड़ी के आगे आगे घुड़सवार हैं।

उनकी गाड़ी के आगे पीछे बॉडीगार्ड मोटर साइकिलों पर रहते हैं। चर्च के अहाते में उनका रेड कार्पेट पर स्वागत होता है। और बहुत महंगे सूटबूट में ये भविष्यद्वक्ता प्रवेश करते हैं। अफ्रीका में बैठकर किसी सिंगापुर में बैठे व्यक्ति का भविष्य बताते हैं, और लोग ताली बजाते हैं। कुछ भीड़ के लोगों का जन्म दिन बताते है तो लोग िंससमसनरी के नारे लगाते हैं।

2. एक दूसरे प्रसिद्ध भविष्यद्वक्ता अमरीका में रहते हैं, वो अपने आप को अमरीका का official भविष्यद्वक्ता मानते हैं। उनकी संपत्ति एक बिलियन डॉलर है। उनके घर से जुड़ा हुआ उनका अपना प्राइवेट एयरपोर्ट है। अपने हवाई जहाज हैं। सबके सामने टीवी पर उन्होंने घोषणा की थी मार्च 2020 में की अप्रैल महीने में Covid 19 अमरीका से पूरी तरह खत्म हो जायेगा, साथ ही उन्होंने वायरस को नष्ट कर देने की प्रार्थना भी कर दी थी।

आज सवाल है–

क्या आप वचन को छोड़कर झूठे भविष्यद्वक्ताओं के इर्द गिर्द घूम रहे हैं?

मत्ती 23:34 इसलिये देखो, मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं को भेजता हूं; और तुम उनमें से कितनों को मार डालोगे, और क्रूस पर चढ़ाओगे; और कितनों को अपनी सभाओं में कोड़े मारोगे, और एक नगर से दूसरे नगर में खदेड़ते फिरोगे।
''क्योंकि भविष्यद्वक्ता और याजक दोनों भक्तिहीन हो गए हैं। अपने भवन में मैंने उनकी बुराई पाई है'' यिर्मयाह 23:11

137. प्रार्थना (कमजोरी से निकलती है)

हमारी कमजोरी हालात से निकल कर आती है, हमारी निर्भरता प्रभु के ऊपर है इसे प्रगट करती है, परमेश्वर की इच्छा जानना चाहती है, अनुग्रह चाहती है। वचन कहता है हमारी आहें भी शब्द बनकर परमेश्वर के सामने पहुंच जाती है।
बाकी सब बातें (हमारी शक्ति से निकलती हैं) चाहे वो हमारा गाना बजाना हो, हमारे बाइबिल का ज्ञान हो, भाषण देना हो, कन्वेंशन में हजारों के सामने बोलना हो, (सच्चे-झूठे) चमत्कार हों, भूत प्रेत से मुकाबले हों, और मनुष्य की वाहवाही हो।
परमेश्वर हमसे हमेशा प्रार्थना के समय बात करता है, हमारे मन से, या वचन याद दिलाकर, और हमारे साथ संगति करता है।
जब हम प्रार्थना पर घुटनों में आते हैं तो हम अपना घर चर्च और शहर छोड़कर परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के सामने आ जाते हैं। घुटनों पर प्रार्थना करिये। दर्द आने दीजिए, काले पड़ने दीजिए घुटनों को। प्रभु ने तो खून बहाया था न।
मत्ती 21:22 और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे वह सब तुम को मिलेगा।
आज सवाल है-
क्या आप प्रार्थना के द्वारा प्रभु पर निर्भर रहते हैं?

138. हत्यारा बना संसार का पहला जन्मा व्यक्ति

जन्म लेने वाला संसार का पहला इंसान हत्यारा निकला। उसका नाम कैन था। दूसरा व्यक्ति संत निकला जिसका नाम हाबिल था।
कैन 'भैंट' लेकर आया। हाबिल एक 'कुर्बानी' लेकर आया।
भेंट सामने वाले को खुश करने का साधन है, और देनेवाले कि हैसियत बताता है, काबिलियत दिखाता है।

1.

कैन खेत का फल अनाज लेकर परमेश्वर की वेदी पर लाया, ना उसमें लहू था, ना प्राण, ना पापों का प्रायश्चित ना अपनी मुक्ति की इच्छा।

2.

हाबिल भेड़ लेकर आता है, उसके प्राण और लहू को परमेश्वर के सामने वेदी पर कुर्बान करता है। चाहता है कि परमेश्वर उस बलिदान के द्वारा उस पापी को अपनी उपस्थिति में स्वीकार कर ले, और अपने प्रेम की छत्रछाया में जीने दे।

उत्पत्ति 3:15 तब यहोवा ने हाबिल और उसकी भेंट को तो ग्रहण किया, परन्तु कैन और उसकी भेंट को उसने ग्रहण न किया। तब कैन अति क्रोधित हुआ, और उसके मुंह पर उदासी छा गई। परमेश्वर ने कैन से सवाल करे, और उसको उपाय सुझाए।

उत्पत्ति 4:6 तू क्यों क्रोधित हुआ? और तेरे मुंह पर उदासी क्यों छा गई है?

मेरी इच्छा के मुताबिक यदि तू काम करे तो तेरी भेंट स्वीकार हो सकती है।

साथ में चेतावनी भी, और यदि तू भला न करे, तो पाप द्वार पर छिपा रहता है, और उसकी लालसा तेरी और होगी, और तू उस पर प्रभुता करेगा।

(मुझसे यदि तू दूर जाएगा तो पाप का गुलाम बन जाएगा, परन्तु मैं चाहता हूं कि तू पाप को अपने ऊपर प्रभुता न करने दे)

परमेश्वर सब जानता है, लेकिन वो मनुष्य से सवाल इसलिए करता है कि मनुष्य का सोता हुए विवेक जाग्रत हो जाए और वो अपनी गलती पहचान सके।

फिर उसने पूछा—तेरा भाई हाबिल कहां है? उसने कहा मालूम नहीं: क्या मैं अपने भाई का रखवाला हूं?

(ये दिखाता है कि कैन को परमेश्वर की शक्ति का अंदाजा नहीं था)

उसने कहा, तू ने क्या किया है? तेरे भाई का लोहू भूमि में से मेरी ओर चिल्ला कर मेरी दोहाई दे रहा है! (न्याय मांग रहा है)

इब्रानियों 4:14 हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहे। (परमेश्वर ने प्रभु यीशु के बलिदान, यानि वेदी पर लहू बहाने के द्वारा हमें स्वीकार किया है, क्योंकि उसने उस बलिदान को स्वीकार किया है।)

इब्रानियों 12:24 और नई वाचा के मध्यस्थ यीशु, और छिड़काव के उस लोहू के पास आए हो, जो हाबिल के लोहू से उत्तम बातें कहता है।

(हाबिल का लहू न्याय मांगता है, बदला चाहता है, लेकिन प्रभु यीशु का लहू प्रेम और मेल मिलाप लाया है)

इब्रानियों 12:25 सावधान रहो.. हम स्वर्ग पर से चितावनी करने वाले से मुंह मोड़ कर क्योंकर बच सकेंगे?

आज सवाल है—

क्या परमेश्वर ने आपको और आपकी भक्ति को स्वीकार किया है?

139. साधु सुंदर सिंह की जयंती

जन्म : 3 सितम्बर 1889
बाइबिल को जलाना : 16 दिसंबर 1904
15 वर्ष की आयु में आत्म हत्या का प्रयास।
उसी रात को लुधियाना के रामपुर गांव के घर में प्रभु यीशु का दर्शन।
बपतिस्मा शिमला में : 3 सितम्बर 1905
अक्टूबर 1906 : गेरुआ वस्त्र धारण - साधु जीवन प्रारंभ
1929 में आखिरी बार तिब्बत में सुसमाचार प्रचार के लिए जाना।
फिर कभी वे दिखाई नहीं दिए। शायद उस मसीह के लिए वो कुर्बान हो गए जिसने उनके लिए स्वयं अपनी जान दी थी।
आज सवाल है–
ऐसा भी क्या प्रेम है जो जान देने तक की कीमत अदा करने को तैयार हो जाए?

140. राई के दाने का सिद्धांत

'राई' और 'पहाड़' के बीच लड़ाई में राई के दाने की जीत होती है।
तो 'राई के दाने' की शक्ति (विश्वास) है क्या?
एक शून्य सा आकार, एक अदृश्य सा जीवन, एक निर्बल सा व्यक्तित्व, जिस व्यक्ति के पास ये 'राई के दाने' का धन होता है वो संसार में हंसी, निंदा, अपमान सहता है।
दुनिया में वो हारा हुआ और कमजोर जाना जाता है, उसके पास दिखने वाली कोई चल-अचल संपत्ति नहीं है। उनकी सहायता संसार से नहीं होती है।
उनके पास बस एक प्रभु यीशु हैं, जो कहते हैं, "विश्वास करने वाले के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।"
"यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर भी हो, तो...कोई बात तुम्हारे लिये असंभव नहीं होगी।" मत्ती 17:20
इस राई (विश्वास) की इतनी सामर्थ है, की मनुष्य को अनंत जीवन तक पहुंचा दे, और इस संसार में हर असंभव को संभव बना दे।
राई का स्वरूप, विश्वास के गुण (quality) को कम नहीं दिखा रहा है, पर इस संसार का, विश्वास के प्रति जो नजरिया है उसका बयान करता है।
वचन कहता है, राई का दाना जब वृक्ष के रूप में बाहर आता है, तो बहुत बड़ा हो जाता

है, जिसकी छाया में जीव प्राणी आराम पाते हैं।
...यदि तुम विश्वास रखो, और सन्देह न करो; तो... इस पहाड़ से भी कहोगे, कि उखड़ जाय और समुद्र में जा पड़, तो यह हो जाएगा।
और जो कुछ तुम प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे वह सब तुम को मिलेगा। मत्ती 21:21-22
आज सवाल है-
क्या आपके पास वो राई का दाना है जो असंभव को संभव बनाता है?

141. एक विश्वासी की जीवनशैली की प्रमुख बातें

1. संसार में अपना कुछ नहीं समझना है, इस कारण ना लाभ है ना है नुकसान
2. परमेश्वर की इच्छा पूरी करने के लिए जीना
3. प्रभु परमेश्वर के साथ, चलते, बैठते और घुटनों पर भी संगति करना
4. परमेश्वर पर निर्भर रहना
5. परमेश्वर की विश्वास योग्यता, अनुग्रह और प्रेम को याद रखना
6. अपना आदर नहीं चाहना
7. ऐसी सांसारिक सफलता नहीं चाहना, जिसमें आत्मिक जीवन का नुकसान हो
8. हमेशा परमेश्वर की महिमा चाहना
9. परमेश्वर के वचन पर विश्वास करना और जीवन जीना
10. पीड़ित लोगों के बीच प्रेम के साथ सेवा करना।

The 10 point lifestyle of a beleiver

1. Nothing is ours-- so no loss no gain
2. Do God's will
3. Fellowship with the Lord while walking, sitting, kneeling
4. Depending on God
5. Remembering God^s faithfulness, grace and love
6. Not seeking our own honour
7. Not loving earthly success at the cost of kingdom of God
8. Always seeking glory of God
9. Living and beleiving the word of God
10. Serving with compassion among those who are suffering

Shishyashramites....

आज सवाल है-

हमारी जीवनशैली कैसी है?

142. वचन पर विश्वास हो चिन्हों पर नहीं

परमेश्वर = वचन
वचन = परमेश्वर
परमेश्वर के वचन पर ही विश्वास को परमेश्वर स्वीकार करता है।
उत्पत्ति 15:6 उसने यहोवा (वचन) पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना।
2 कुरिन्थियों 5:7 क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं।
उदाहरण नीचे है–
यूहन्ना 2:22 सो जब वह मुर्दों में से जी उठा तो उसके चेलों को स्मरण आया, कि उस ने यह कहा था; और उन्होंने ''पवित्र शास्त्र और उस वचन'' (सही विश्वास) की जो यीशु ने कहा था, प्रतीति की।
यूहन्ना 2:23 जब वह यरूशलेम में फसह के समय पर्व में था, तो बहुतों ने उन ''चिन्हों'' (गलत विश्वास) को जो वह दिखाता था ''देखकर उसके नाम पर विश्वास किया।''
यूहन्ना 2:24 परन्तु यीशु ने अपने आप को उन के भरोसे पर नहीं छोड़ा, देखकर विश्वास करना प्रगटीकरण नहीं है, मनुष्य की सामर्थ है।
आज सवाल है–
विश्वास किस पर है?

143. कमजोरी में ताकत

हमारी कमजोरी हमारी ताकत उस वक्त बन जाती है जब हम उसे प्रभु के हाथ सौंप देते हैं।
युसूफः
वो अपने भाइयों के पास आया था
उनके लिए रोटी लाया था
पर उन्होंने उस पर जुल्म किया और
जख्मी भी कर दिया उसे एक सूखे
कुंए में डाल दिया
उसकी दया की भीख को और उसकी चीख पुकार को जैसे किसी ने सुना ही नहीं
और फिर उन्होंने उस जुल्म से पैसे कमाने की बात सोची
और तब

उसे गुलाम होने के लिए बेच दिया
वो बस चुप रहा।
और उसका कारवां दूर देश जा पहुंचा।

कुछ आंसू तो शायद गिरे थे।
अपने बूढ़े बाप को अपने घर गांव को फिर नहीं लौट पाएगा।
खैर जान तो बच गई थी
और फिर
ईमानदारी और कड़ी मेहनत ने उसे उस घर के गुलामों के ऊपर भी एक अच्छा नाम दे दिया था
शायद उम्मीद बंधने लगी थी
लेकिन उस पर भी पानी फिर गया

व्यभिचार
के खतरनाक पंजों से जब वो भागा, तो फिर बस
जेल की काल कोठारी के अंधेरे में उसकी आंख खुली
दिन, हफ्तों में बदला और, फिर महीनों में और साल लगता है करीब दस तो निकल ही गए होंगे।
लेकिन एक दिन सुबह कोठारी का दरवाजा बुरी तरह से खोला गया, दो सिपाहियों ने उसे घसीटा पर नए कपड़े पहनाए।
राजा के सामने पेश किया गया।
उसी रात वो प्रधानमंत्री बन गया।
इस व्यक्ति के पास किताबें नहीं थीं, सीखने के लिए पर जीवन था दिखाने के लिए।
''यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिये बुराई का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया।'' उत्पत्ति 50:20
आज सवाल है–
क्या आपकी कमजोरी आप की ताकत बनी है?

144. हारे हुए जीवन के खंडहर

मेरा कहना है आप आजकल चर्चों के जो खंडहर देख रहे हैं न, बिल्डिंगों के नहीं, पर

उन लोगों के, मसीहियों के, हारे हुए जीवन के खंडहर – जिनके बीच में, धन का लोभ, लड़ाई, धोखाधड़ी, तमाशे, सर्कस, व्यापार और कपट से भरा माहौल है।
ये सारी बातें यरूशलेम के भव्य मंदिर में भी थीं। बस खंडहर रह गया था। लेकिन वहां एक रोने वाला था।
यरूशलेम के खंडहर में पड़ा मंदिर और जले हुए शहर और गिरी पड़ी शहरपनाह के हाल सुनकर रोने वाला आदमी यरूशलेम में नहीं था।
वो था 1500 km दूर फारस में शूषणगढ़ में बंधुआ था और उसका नाम था नहेमिया। उसने अपने लोगों के गुनाह अपने ऊपर लिए और परमेश्वर के सम्मुख उपवास और आंसुओं के साथ प्रार्थना करी, क्षमा याचना करी।
नहेमायाह 1:4-6
''ये बातें सुनते ही मैं बैठकर रोने लगा और कितने दिन तक विलाप करता; उपवास करता और यह कह कर प्रार्थना करता रहा।
हे स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा, हे महान और भययोग्य ईश्वर! तू जो अपने प्रेम रखने वाले और आज्ञा मानने वाले के विषय अपनी वाचा पालता और उन पर करुणा करता है; मैं इस्राएलियों के पापों को जो हम लोगों ने तेरे विरुद्ध किए हैं, मान लेता हूँ। मैं और मेरे पिता के घराने दोनों ने पाप किया है।''
तब परमेश्वर ने रास्ता साफ किया और बहुत जल्द नहेमिया यरूशलेम के खंडहरों को मरम्मत करके वापस आबाद कर सका।
आज सवाल है–
कब रोए थे आप आखिरी बार?

145. मुन्नीबाई

मुन्नीबाई की आंखें जज साहब पर टिकी हुई थीं। अदालत के कटघरे में खड़े उसके बदन में कंपकंपी थी। बार-बार वह कमरे के कोने में खड़ी अपनी बूढ़ी मां की ओर देखती तो कभी अपनी पांच साल की बिटिया मुस्कान की तरफ।
आज जज साहब फैसला सुनाएंगे। पांच साल पहले सुल्तानपुर गांव का वो हादसा किसे समझ आएगा। उस रात भारी बारिश के दौरान तीन अज्ञात आदमी उसके झोपड़े के पिछले दरवाजे से अंदर घुस आए थे उसकी इज्जत लूटने। उसके बचाव के लिए उसका पति नहीं था, जो उसके कुछ महीने पहले बीमार हो अस्पताल में दम तोड़ गया था।
उसकी चीख पुकार किसी ने सुनी नहीं, हाथ में आए एक पत्थर से मुन्नी बाई ने जोर

से हमलावर के सिर पर मारा, और अंजाम ये कि मुन्नीबाई कोर्ट के कटघरे में, आज जज साहब के फैसले का बेसब्री से इंतजार करती हुई, उसके दिल में अपनी बेटी और मां से मिलने की तड़पन बढ़ती जा रही थी

और तभी कमरे के सन्नाटे में जज साब की आंखें मुन्नीदेवी की तरफ उठीं। कुछ लम्हे ख़ामोशी में गुजरे, और फिर फैसला आया।

पांच साल पहले सुल्तानपुर गांव में कत्ल के जुर्म में मुन्नीबाई को 'सजा ए मौत'। ये सुनते ही मुन्नीबाई की चीख निकली। रोते बिलखते गिड़गिड़ाते हुए हाथ जोड़कर उसने रहम की भीख मांगी।

जज साब मुझे माफ कर दो, माफ कर दो, ये सब क्या हो गया मेरे साथ, मुझे बचा लो, मेरी मां मेरी बेटी भूखों मर जाएंगे, ये सब क्यों हो गया, मुझे नहीं मालूम। मुझे बचा लो, मैं जीना चाहती हूं। मेरी लाज मुझे लौटा दो, जज साब जज साब...

मुन्नीबाई की चीखें बस अदालत में ही गूंजती रह गईं।

सवाल–

जज साब खामोश क्यों?

क्या दया करने का अधिकार उनके पास नहीं था?

146. मारो उसे पत्थरों से ...

चलिए एक ओर सच्ची घटना देखें।

तारीख में थोड़ी पुरानी लेकिन हमारे जमीर को हिला देने वाली है।

प्रभु यीशु मसीह एक बार अपने चेलों के साथ मंदिर के दालान में बातें कर रहे थे। आत्मिक जीवन, प्रेम सच्चाई और मुक्ति की बातें जमा हुए लोगों को सुना रहे थे।

अचानक ही उस समय के धार्मिक कट्टरपंथियों की एक भीड़ एक स्त्री को धकेलते, और खींचते हुए प्रभु यीशु के सामने ले आयी। वह व्यभिचार में पकड़ी गई थी, और उन्होंने उसे बीच में खड़ा करके प्रभु यीशु से कहा।

गुरुजी, ये स्त्री व्यभिचार (सेक्स के काम) करते ही पकड़ी गई है। हमारी धर्म कानून में लिखा है कि ऐसी स्त्रियों को पत्थरवाह कर मौत की सजा देना चाहिए।

भीड़ के लोगों के एक हाथ में तो पत्थर था और दूसरे हाथ में धरम पुस्तक।

प्रभु यीशु जमीन पर बैठ जाते हैं। धर्मगुरु इल्जाम लगाते रहते हैं।

और प्रभु यीशु से पूछते हैं–आप का इस बारे में क्या विचार है?

जब वे उनसे पूछते रहे, तब उन्होंने सीधे होकर उनसे कहा, ठीक है सो तुम लोगों में

जो निष्पाप हो, याने जिसने कभी भी पाप नहीं किया हो, वही इस स्त्री को पहला पत्थर मारे।
इस जवाब को सुनकर बड़ों से लेकर छोटों तक एक-एक करके सभी निकल गए, और प्रभु यीशु वहां उस स्त्री के साथ खड़े रह गए।
(परमेश्वर की नजर में पाप, कर्म हो या विचारों में हो पाप कहलाता है)
उस स्त्री पर रहम और दया दिखाते हुए प्रभु यीशु ने उससे पूछा–हे नारी, वे कहां गए? क्या किसी ने तुझ पर दंड की आज्ञा न दी।
उसने कहा, हे प्रभु, किसी ने नहीं:
यीशु ने कहा, मैं भी तुझ पर दंड की आज्ञा नहीं देता, चली जाओ और फिर पाप नहीं करना।
बाइबिल में लिखा है
''तुम सुन चुके हो कि कहा गया था, कि व्यभिचार (सेक्स के काम) नहीं करना। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि जो कोई किसी स्त्री को बुरी नजर से देखें तो वह व्यक्ति अपने मन में उसके साथ व्यभिचार कर चुका।''
(चाहे कर्म हो, या बुरी सोच ही हो, दोनों बराबर पाप हैं परमेश्वर की नजर में) मत्ती 5:27
आज सवाल है–
क्या 'प्रेम' गुनाहगार को माफ़ कर सकता है?

147. बिना मुंह खोले बात कह दी...

एक बार की बात है प्रभु यीशु किसी यहूदी धार्मिक (फरीसी) के घर भोजन के नेवते पर गए, और ऐसा हुआ कि उस शहर की एक स्त्री जो समाज की नजरों में गिर चुकी थी और वो बदनाम हो चुकी थी।
उसने जब सुना कि प्रभु यीशु उस घर के मेहमान हैं, और दावत में आए हैं तो वो उस घर में आ गई, और साथ में संगमरमर के पात्र में इत्र भी लेकर आई।
वो घबराती हुई आई थी। उसके पास ना धर्म था ना दिखावा, न ही नाम और न ज्ञान। आते हुए उसे डर इस बात का था, कि कोई उसे घर के अंदर आने से रोक न दे। फरीसी अपने आप को बहुत नेक और पवित्र समझता था, क्योंकि वो मंदिर में हमेशा जाता था। उपवास, प्रार्थना, दान-पुण्य करता था, और सारे धार्मिक कर्म काण्ड को ईमानदारी से निभाता था।
उसके पास बाहरी दिखावा तो था, पर अंदर से कपट, धोखा, और झूठ से भरपूर था।

(प्रभु यीशु धार्मिक अंधापन उसे कहते हैं, जो झूठा जीवन जीता है)
बहरहाल वो स्त्री किसी तरह वहां पहुंच ही गई, फरीसी ने उसे देखकर पहचान लिया और उसके कमरे में दाखिल होने से उसे बड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई। उसे लगा कि समाज में उसकी इज्जत पर दाग आ सकता था।
वो स्त्री प्रभु यीशु के पीछे पांवों के पास, खड़ी होकर, बस रोती रही, उनके पांवों को आंसुओं से भिगोने और अपने सिर के बालों से पोंछने लगी और उनके पांव बार-बार चूमकर उन पर इत्र डालती रही।
पर सवाल तो ये है कि वो आखिर आई क्यों थी?
शायद उसके उजड़े संसार की दास्तां सुनने वाला कोई उस शहर में आया था, जिसके दिल में न थी नफरत और न ही घृणा।
ये वही तो था जिसने सिखाया था
दुश्मन से प्रेम करो
अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो
जो तुम्हें श्राप दें उन्हें आशीर्वाद दो
दया करो, क्षमा करो, और प्रेम करो।
अपमान और डर उसके साथ था
क्या प्रभु यीशु उसकी ओर ध्यान देंगे जिसके अपने ही समाज के लोगों ने उसका शारीरिक शोषण किया था लज्जित किया था और अपने घरों और बाजारों से निकाल बाहर किया था।
वो क्या कहेंगे, जब मैं उनसे मिलूंगी, या मैं उनसे क्या कहूंगी।
जिससे कोई बात न करना चाहे, जिसे देखकर उसके अपने ही मुंह फेर लें,
तो क्या होगा उसकी इस पहली मुलाकात का नतीजा
फरीसी ने प्रभु यीशु के बारे में सोचा, कि यदि ये भविष्य जानने वाले दिव्य मनुष्य हैं तो जान जाते, कि ये जो उन्हें छू रही है, वह कौन है और कैसी स्त्री है? क्योंकि वह तो पापिनी है।
तो फिर प्रभु यीशु पापिनी स्त्री के छुए जाने से तो अशुद्ध हो रहे हैं फिर भी उसे अपने पांव क्यों छूने दे रहे हैं।
(बाइबिल कहती है हर मनुष्य पापी है, सबने पाप किया है और मुक्ति की जरूरत संसार में हर इंसान को है)
उसके दिल की बात जानकर प्रभु यीशु, फरीसी से बोले, मित्र मुझे तुझ से कुछ कहना है। फरीसी बोला, गुरू जी कहिये।

किसी महाजन के दो कर्जदार थे, एक पांच सौ, और दूसरा पांच हजार रुपए का। जब कि उनके पास कर्जा अदा करने के लिए कुछ भी नहीं था, तो उन पर तरस खाकर उसने उन दोनों के कर्ज को माफ कर दिया। अब तुम ही बताओ उन दोनों में से कौन उस से अधिक प्रेम रखेगा।

फरीसी ने उत्तर दिया, मेरी समझ में वह, जिसका उस ने अधिक कर्जा माफ कर दिया।

प्रभु यीशु ने उस से कहा, तुम ने सही विचार किया है।

दोनों कर्जदार हैं, इसी तरह हर मनुष्य पापी है, कोई बस बाहर से दिखाई देता है तो कोई बाहरी गंदगी छिपा लेता है पर अंदर से गंदा रहता है।

और प्रभु यीशु ने स्त्री की ओर मुड़कर उसने कहा, क्या तुम इस स्त्री को देखते हो, मैं तुम्हारे घर में आया हूं परन्तु तुम ने मेरे पांव धोने के लिये पानी तक नहीं दिया, पर इस ने मेरे पांव आंसुओं से भिगोए हैं, और अपने बालों से पोंछे हैं, तुम ने मुझे गले नहीं लगाया, न चूमा ही दिया, पर जब से मैं आया हूं तब से इस ने मेरे पांवों का चूमना नहीं छोड़ा है।

तुम ने मेरे सिर पर तेल नहीं लगाया, पर इस ने मेरे पांवों पर इत्र डाला है।

और तब, प्रभु यीशु ने उस स्त्री से कहा, जाओ मैंने तुम्हारे हर गुनाह माफ किए हैं।

इसके आंसू तौबा कर रहे हैं, अपने जीवन को सुधारने की दुआ मांग रहे हैं, ये स्त्री फिर से जीना चाह रही है, जो इस समाज में जीते जी मर चुकी है।

तब जो लोग प्रभु यीशु के साथ भोजन करने बैठे थे, वे अपने अपने मन में सोचने लगे, यह कौन है जो पापों को भी क्षमा करता है?

और उसने स्त्री से कहा, तेरे विश्वास ने तुझे बचा लिया है, कुशल से चली जा।

(विश्वास प्रभु यीशु पर लाना है, ये की वो परमेश्वर के पुत्र हैं, और मेरे अपने पापों की मुक्ति के लिए वे क्रूस पर कुर्बान होते हैं और प्रभु यीशु उनके जीवन को संवार सकते हैं) लूका 7:36-50

आखिर इस स्त्री के पास था क्या?

न पैसा था, और न ही था नाम, समाज में पीड़ित थी, परिवार, समाज से तिरस्कार की गई थी। उसके पास बोलने के लिए शब्द नहीं थे, वो जीवन से निराश हो चुकी थी इस जीवन से, और शायद आत्महत्या के कगार पर खड़ी थी।

बस अपने आंसुओं की भाषा बोल रही थी।

शायद सारी उम्मीद खो चुकी थी, बस प्रभु यीशु उसकी आखिरी उम्मीद थे, आखिरी मंजिल थे।

और आज

हर इंसान से प्रेम करने वाले मसीह उनकी बस्ती में आ गए थे।
वो अपने जीवन से परेशान थी, वो एक नया प्रारंभ चाहती थी, और आज वो उसे मिल गया।
प्रभु यीशु ने नफरत नहीं की,
बल्कि उस स्त्री को नया बना दिया,
उसके गुनाहों का न हिसाब लिया
न ही उन्हें याद किया।
प्रभु यीशु को पाप क्षमा करने का अधिकार था, और उसने क्षमा दान दिया।
प्रभु यीशु आप के मुंह के शब्द नहीं पर आपके दिल की आहें सुनते हैं।
प्रभु यीशु ने केवल क्षमा ही नहीं किया, पर साथ में प्रेम भी किया।
आज सवाल है–
क्या 'प्रेम' जिंदगी को एक नई शुरुआत दे सकता है?
क्या इस संसार में गुनहगारों से भी कोई प्रेम कर सकता है।

मरकुस 2:15 –17 (बाइबिल) और बहुत से भ्रष्ट लोग और अन्य पापी प्रभु यीशु और उनके चेलों के साथ भोजन करने बैठे, क्योंकि वे बहुत से थे, और उनके पीछे हो लिये थे।
और धर्म शास्त्रियों और फरीसियों ने यह देखकर, कि वह तो इस तरह के बुरे लोगों के साथ भोजन कर रहे हैं, उनके चेलों से शिकायत की और कहा कि वह तो भ्रष्ट लोगों और पापियों के साथ खाते पीते हैं।
तब प्रभु यीशु ने यह सुनकर, उनसे कहा, भले चंगों को डॉक्टर की आवश्यकता नहीं होती है, परन्तु बीमारों को होती है: मैं दिखावे के धमिर्यों को नहीं, परन्तु पापियों को बुलाने आया हूं।

148. पांच पति करने के बाद ....

एक बार की बात है। प्रभु यीशु सामरिया के इलाकों से होकर उनके एक नगर सूखार तक आए और याकूब का कूआं भी वहीं था, सो यीशु मार्ग के थके हुए, दोपहर के समय एक कूएं पर यों ही बैठ गए।
इतने में एक सामरी जाति की एक स्त्री जल भरने को आई। प्रभु यीशु ने उस से कहा, मुझे पानी पिला दो।

उस सामरी स्त्री ने उनसे कहा, आप यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगते हैं?
(क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते थे - ऊंच नीच और धार्मिक मामला था)
प्रभु यीशु ने उससे कहा, ''यदि तुम परमेश्वर के वरदान को जानती, और यह भी जानती कि वह कौन है जो तुझ से कह रहा है, मुझको पानी पिला दे, तो तुम उस से भी मांगती, और वह तुझे जीवन का जल देता।''
स्त्री ने उस से कहा, हे प्रभु, आपके पास जल भरने को तो कुछ है भी नहीं, और कूआं गहरा है: तो फिर वह जीवन का जल आपके पास कहां से आया है?
क्या आप हमारे पूर्वज याकूब से भी बड़े हैं, जिन्होंने हमें यह कूआं दिया था, और उन्होंने खुद भी अपनी संतानों और अपने जानवरों समेत उस में से पीया था?
प्रभु यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि जो कोई यह जल पीएगा वह फिर प्यासा होगा। परन्तु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा नहीं होगा: परंतु जो जल मैं उसको दूंगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन (इस जीवन के आगे) के लिये उमड़ता रहेगा।
स्त्री ने प्रभु यीशु से कहा, हे प्रभु, वह जल मुझे भी दीजिए, ताकि मुझे प्यास न लगे, और न ही जल भरने को इतनी दूर आना पड़े।
प्रभु यीशु ने उससे कहा, जाओ, अपने पति को यहां बुला लाओ। स्त्री ने उनसे कहा, कि मैं बिना पति की हूं: तब प्रभु यीशु ने उस से कहा, तुम वैसे ठीक ही कहती हो कि बिना पति की हो। क्योंकि तुम पहले पांच पति कर चुकी हो, और जिस आदमी के पास तुम अब राह रही हो, वह भी तुम्हारा पति नहीं है।
ये बात सुनकर उस स्त्री ने कहा, हे प्रभु, मुझे ऐसा लगता है कि आप कोई भविष्यद्वक्ता हैं।
कोई कहता है कि पहाड़ पर भजन करना चाहिए, और दूसरे कहते हैं कि वह जगह जहां भजन भक्ति करना चाहिए वो यरूशलेम का मंदिर जो की धर्म नगरी में है।
प्रभु यीशु ने उससे कहा, हे नारी, मेरी बात पर विश्वास करो कि वह समय आया है कि जिसमें सच्चे भक्त परमेश्वर पिता की भजन भक्ति आत्मा और सत्य से करेंगे, तुम लोग बिना जाने, और जो ईश्वर है ही नहीं उसका भजन भक्ति करते हो, मनुष्य के बनाए हुए ईश्वर नहीं होते हैं।
तब वो स्त्री प्रभु यीशु से कहने लगी, मैं जानती हूं कि मुक्तिदाता मसीह इस संसार में आनेवाले हैं, जब वे आएंगे, तो हमें सब बातें बता देंगे, हमें राह बताएंगे।

प्रभु यीशु ने उससे कहा, मैं तुम्हारे सामने ही हूं और जो तुझ से बातें कर रहा हूं, मैं ही मसीह हूं।
ये सुनते ही स्त्री भाग कर अपने गांव गई और सब लोगों से कहा, आओ, एक मनुष्य को देखो, जिस ने सब कुछ जो मैं ने अपने जीवन में किया है, मुझे बता दिया है, कहीं ये ही तो जगत के मुक्तिदाता मसीह नहीं हैं?
सारा गांव प्रभु यीशु से मिलने आ गया, और उनके वचन सुनकर और भी लोगों ने विश्वास किया। और कहा, हमने आप ही प्रभु को सुन लिया है, और जान गए हैं कि यही सचमुच में जगत के मुक्तिदाता हैं।
प्रभु यीशु ने छुआछूत की दीवारों को तोड़ दिया, और परमेश्वर के प्रेम को सब लोगों पर प्रगट किया।
प्रभु यीशु ने अपने मुक्तिदाता होने की खुले रूप से घोषणा सबसे पहले इस संसार में आकर एक पीड़ित स्त्री के सामने करी, यही बात उनके प्रेम को दिखाता है, वो आपके बिखरे जीवन को संवार सकता है।
आज सवाल है–
क्या एक स्त्री, अपने बुरे हालात के बीच आशा रख सकती है?

149. मोहब्बत जो गुनाह माफ कर दे

एक धनी व्यक्ति के दो बेटे थे। इनमें से छोटे ने अपने पिता से जायदाद का अपना हिस्सा मांग लिया, और इसके बाद उसने सब कुछ बेच दिया और सारे पैसे इकट्ठे करके वो एक दूर देश चला गया।
उसने अपनी सारी दौलत शराब, जुए और वेश्यालयों में उड़ा दी। इसके बाद उस देश में अकाल पड़ गया, उसके पास ना काम था ना खाने को रोटी, वो भूखों मरने की हालात पर पहुंच गया।
इस दुर्दशा में पड़े हुए एक दिन उसे अपने पिता का घर याद आया। जब वह अपने आपे में आया, तब कहने लगा, कि मेरे पिता के कितने ही मजदूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहां भूखा मर रहा हूं। और मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उनसे कहूंगा कि पिता जी मैं ने परमेश्वर के विरोध में और आप के भी खिलाफ पाप किया है। और अब मैं इस योग्य भी नहीं रहा कि आपका पुत्र कहलाऊं, मुझे अपने एक मजदूर की तरह ही रख लीजिए।
तब वह उठकर, अपने पिता के पास चल दिया, वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता

ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा।
बेटे ने उन से कहा, पिता जी मैं ने परमेश्वर के विरोध में और आप के सामने भी पाप किया है। और अब इस योग्य नहीं रहा, कि आपका बेटा कहलाऊं।
परन्तु पिता ने अपने नौकरों से कहा, जल्दी अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहनाओ, और उसके हाथ में अंगूठी, और पांवों में जूतियां पहिनाओ। और बड़ी दावत करो ताकि हम खाएं और आनन्द मनाएं।
क्योंकि मेरा यह पुत्र जो मर गया था, अब जीवित हुआ है, खो गया था, अब मिल गया है: और वे आनन्द करने लगे। लूका 15:7-24

आज सवाल है-

क्या टूटा हुआ रिश्ता भी 'प्रेम' द्वारा जोड़ा जा सकता है?

150. दुश्मन के लिए भी कोई जान देता है ....

एक और सच्ची घटना जिसने दुनिया में हलचल पैदा कर दी और इस संसार में मनुष्य को एक नए जीवन और मुक्ति की राह दिखाई। इसकी जानकारी हमें बाइबिल में मिलती है।
आज से 2000 साल पहले प्रभु यीशु मसीह का जन्म एक गरीब परिवार में और एक गौशाले में हुआ। वे परमेश्वर के पुत्र थे और उनका जन्म एक कुंवारी से हुआ जिसका नाम मरियम था।
प्रभु यीशु मनुष्य के लिए परमेश्वर का वरदान बनकर आए। फिर भी भटकते इंसान, मोक्ष या मुक्ति प्राप्त करने के लिए क्या नहीं करते हैं, तीर्थ यात्राएं करते हैं, और दर दर भटकते हैं।
लेकिन प्रभु यीशु हमारे पापों की कीमत देने आए थे।
उन्होंने ये कार्य अपना स्वयं का बलिदान उस क्रूस पर मृत्युदंड उठाकर पूरा किया, हमारी सजा और मृत्युदण्ड स्वयं उठाकर उन्होंने हमारी मुक्ति के कर्ज को खुद अदा किया। इस संसार मैं रहते उन्होंने बहुत चमत्कार किये।
लोगों की सेवा की। उन्होंने कहा मैं सेवा करवाने नहीं आया हूं, मैं सेवा करने आया हूं। बीमारी से पीड़ित लोगों की भीड़ उनके पास आती थी और उन्होंने सबको हर बीमारी से स्वस्थ किया।
एक बार जब भूखे लोगों की भीड़ उनके पास वचन सुनने के लिए इकट्ठी थी तो उन्होंने पांच रोटी ओर दो मछलियों से 5000 से अधिक लोगों को भरपेट खिलाया।

उन्होंने झील में आई आंधी और तूफान को अपने मुंह के वचन से शांत किया। वे पानी के ऊपर चले थे और सारी प्रकृति पर उनका अधिकार था।
उन्होंने भूत प्रेतों से पीड़ित लोगों को छुटकारा दिया, मरे हुए लोग भी उनके द्वारा जीवित किए गए।
एक बार प्रभु यीशु ने अपने 12 चेलों के पैर धोए, और उनसे कहा कि मैंने तुम्हारे गुरु होकर भी तुम्हारे पांव धोकर एक नमूना दिखाया है।
जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है वैसे ही तुम भी सेवा करो।
धार्मिक लोगों ने और समय की सरकार ने मिलकर उन्हें यातनाएं दीं, उन्हें कोड़े मारे, उनके मुंह पर थूका गया, सिर पर कांटों का ताज रखा, अपमानित किया और क्रूस पर कीलों से जड़कर मृत्युदंड दिया।
क्रूस पर दर्द अपमान उठाते हुए भी उन्होंने अपने कातिलों को क्षमा किया। उन्होंने दुआ करी हे पिता इन्हें क्षमा कर क्योंकि नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं।

आज सवाल है–

क्या ऐसा भी प्रेम है जो दुश्मन को माफ करे, और उसकी जान बचाने के लिए अपनी जान दे दे?
मृत्यु के बाद उन्हें एक कब्र में दफनाया गया, लेकिन तीसरे दिन सारी दुनिया के देखते वे कब्र से जीवित होकर बाहर निकले।
उनकी खाली कब्र, आज भी यरूशलेम में है।
जीवित होने के 40 दिन के बाद वे एक पहाड़ पर अपने चेलों ओर अनुयायियों की भीड़ लेकर गए। और उनकी आंखों के सामने उनका स्वर्गारोहण हुआ।
आज प्रभु यीशु जीवित हैं, आपकी प्रार्थना का जवाब दे सकते हैं।
और आपके पापों को क्षमा करके आपको मुक्तिदान देने के लिए तैयार हैं।
आपकी जाति, धर्म, भाषा कोई भी क्यों न हो। प्रभु यीशु आप से प्रेम करते हैं।
आपकी जिंदगी कितनी ही बर्बाद हुई हो, प्रभु यीशु आप को एक नई जिंदगी की शुरुआत देंगे और मुक्तिदान देंगे।
ये सच बात है कि प्रभु यीशु में प्रेम, न्याय, दंड, क्षमा और नए जीवन का मेल हो गया है। और मनुष्य के लिए मोक्ष प्राप्ति का उपाय निकल आया है।
आप की शांति के लिए पवित्र बाइबिल के कुछ जीवित और सत्य वचन यहां पर नीचे लिखे हैं
मत्ती 11:28 हे सब परिश्रम करने वालों और बोझ से दबे लोगों, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।

यूहन्ना 14:6 प्रभु यीशु ने कहा, मार्ग और सच्चाई और जीवन मैं ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई पिता परमेश्वर के पास नहीं पहुंच सकता।
यूहन्ना 14:27 मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं, जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।
यूहन्ना 16:33 मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले, संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बांधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।
लूका 19:10 क्योंकि मनुष्य का पुत्र (प्रभु यीशु) खोए हुओं को ढूंढ़ने और उन का उद्धार (मोक्ष) करने आया है।

IV.

संदेश सूची-सुसमाचार

संदेश के विषय-चारों सुसमाचार से	**पृष्ठ सं.**
मत्ती (27) - संदेश के विषय	335
मरकुस (9) - संदेश के विषय	337
लूका (62) - संदेश के विषय	337
यूहन्ना (66) - संदेश के विषय	340

संदेश के विषय - चारों सुसमाचार से

मत्ती (27), मरकुस (9), लूका (66), यूहन्ना (62)

मत्ती (27) - संदेश के विषय

मत्ती 3

01- यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का प्रचार

मत्ती 4

04- प्रभु यीशु की शैतान द्वारा परीक्षा

18- प्रभु यीशु के चेलों का बुलाया जाना

मत्ती 5

01- पहाड़ी उपदेश - धन्य हैं वे जो....

13- तुम पृथ्वी के नमक हो, और जगत की ज्योति हो

21- तुम सुन चुके हो पर मैं कहता हूं, पाप के बारे में परमेश्वर का नजरिया - हत्या, व्यभिचार, तलाक, शपथ, बदला, शत्रुओं से प्रेम।

मत्ती 6

05- प्रभु यीशु प्रार्थना सिखाते हैं।

मत्ती 11

20- अविश्वास - और परमेश्वर बालकों पर प्रगट करता है

28- बोझ से दबे हुए और परिश्रम करने वालो मेरे पास आओ और मुझ से सीखो

मत्ती 12

18- देखो मेरा सेवक जो न्याय का समाचार लाया है

मत्ती 13
44- स्वर्ग के राज्य की तुलना एक छिपे हुए खजाने, अनमोल मोती और बड़े जाल से दी गई है
मत्ती 14
22- प्रभु यीशु को पानी पर चलना, और पत्रस का अल्प विश्वास और डर
मत्ती 15
21- कनानी जाति की स्त्री का विश्वास
मत्ती 16
24- प्रभु यीशु के पीछे चलने का अर्थ
मत्ती 17
24- मंदिर का कर और मछली के मुंह में सिक्का
मत्ती 18
21- दो कर्जदार, और कितने बार क्षमा किया जाए का सवाल
मत्ती 19
01- तलाक और विवाह के विषय प्रभु यीशु की शिक्षा
16- धनवान का स्वर्ग के राज्य में प्रवेश
मत्ती 20
01- बारी के मजदूरों का बुलाया जाना और मजदूरी
मत्ती 21
18- अंजीर का पेड़ और विश्वास की शक्ति
33- दुष्ट किसान -निकम्मा ठहराया गया था, वहीं कोने का पत्थर बन गया
मत्ती 22
01- विवाह भोज का दृष्टांत
मत्ती 23
01- शास्त्री और फरीसीओं के जीवन के लक्षण
मत्ती 25
01- स्वर्गराज्य में दस कुंवारियों का दृष्टांत
35- मैं भूखा, प्यासा, परदेशी था, नंगा बीमार और बंदीगृह में था, तुम मेरे पास आए और
मत्ती 26
47- गतसमनी में लाठियां और तलवारें, जो तलवार उठाएगा वो तलवार से मारा जाएगा
मत्ती 28
16- प्रभु यीशु का महान आदेश, सब विश्वासियों के लिए

मरकुस (9) संदेश के विषय

मरकुस 1

01 यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का प्रचार

35 प्रभु यीशु का प्रार्थना जीवन और प्रचार

मरकुस 6

53 सब लोग प्रभु को छूना चाहते थे

मरकुस 7

01 रीति रिवाज मानना या परमेश्वर की आज्ञा मानना

31 एक बहिरे और गूंगे व्यक्ति की चंगाई

मरकुस 10

13 प्रभु यीशु बच्चों को आशीर्वाद देते हैं

29 सुसमाचार के लिए घर बार छोड़ना

मरकुस 14

03 जटामांसी का इत्र, या तीन सौ दीनार का नुकसान

मरकुस 16

19 प्रभु यीशु का स्वर्गारोहण और सिहांसन पर विराजमान होना।

लूका (62) - संदेश के विषय

लूका 4

01. प्रभु यीशु की परीक्षा व आत्मा की सामर्थ लौटना

40. उसने एक एक पर हाथ रखकर उन्हें चंगा किया

42. भीड़ का यीशु को ढूंढना या रोटी खोजना

लूका 5

01. झील व मछलियों को छोड़कर प्रभु के पीछे चलना

12. हाथ से छूकर कोड़ी को शुद्ध करना

18. झोले का मारा, यीशु ने कहा तेरे पाप क्षमा हुए

लूका 6

19. सब उसे क्यों छूना चाहते थे।

लूका 7

01. सूबेदार का दास। - बस वचन कह दे

11. नाईन की विधवा का पुत्र जीवित हुआ

36. पापिनी स्त्री एक फरीसी के घर में

लूका 8
05. बीज बोनेवाला
22. गिरासेनियों के देश में भूतग्रस्त
41. आराधनालय का सरदार याईर, मत डर विश्वास रख
लूका 9
01. बारह शिष्य भेजे गए
11. पांच रोटी और दो मछली
28. प्रभु यीशु का रूपांतर
38. चेले भूत नहीं निकाल सके
लूका 10
01. सत्तर प्रचार के लिए भेजे गए
25. अनंत जीवन पाने के लिए में क्या करूं
लूका 11
01. चेलों का प्रार्थना सीखना
31. रानी, सुलैमान, और योना से बड़ा यहां है
लूका 12
15. लोभ और संपत्ति की बहुतायत
16. धनवान की उपज, और उस पर भरोसा
49. पृथ्वी पर आग लगाने आया है
लूका 13
10. अठारह 18 वर्ष से दुर्बलता की आत्मा
34. यरूशलेम के लिये विलाप
लूका 14
11. कंगालों को नेवता दो
16. जेवनार का नेवता और बहाने परमेश्वर के राज्य में
25. क्रूस उठाए मेरे पीछे आए और अपना इन्कार करे
लूका 15
01. चुंगी लेनेवालों और पापियों के साथ संगति
04. सौ भेड़ें
08. दस सिक्के
11. उड़ाऊ पुत्र
लूका 16

13. परमेश्वर और धन - दो स्वामी हैं
20. लाजर कंगाल और नरक से सुसमाचार
लूका 17
10. हम निकम्मे दास हैं
11. दस कोढ़ी
20. परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच
लूका 18
09. मंदिर में फरीसी और चुंगी लेने वाला पापी
15. परमेश्वर का राज्य ऐसो ही का है - बालक
18. अनंत जीवन पाने के लिए कार्य
31. मृत्यु पश्चात् तीसरे दिन जी उठने की चर्चा
35. अंधे से सवाल - क्या चाहते हो?
लूका 19
01. जक्कई - खोए हुओं को ढूंढ ने आया हूं
12. मोहरों का हिसाब - और राज्य के विरोधियों का अंत
28. यीशु रोया - यरूशलेम में प्रवेश
45. मंदिर या डाकुओं की खोह
लूका 20
One message
01. A प्रभु यीशु का अधिकार- मंदिर सफाई व प्रचार
09. A दाख की बारी और किसान
17. A राजमिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था
लूका 21
01. कंगाल विधवा का दान
लूका 22
09. प्रभुभोज
24. हम में से बड़ा कौन है
31. शैतान मांगता है तुझे फटके- तेरा विश्वास न जाए
35. क्या तुम्हें किसी वस्तु की घटी हुई
36. तलवार गतसमनि में
39. घुटने टेक कर प्रार्थना करना
45. मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके

54. पतरास का इनकार।

लूका 23

32. दो डाकू, एक ने कहा, अपने राज्य में मेरी सुधि लेना

लूका 24

13. इम्माउस गांव की यात्रा

36. तुम्हें शांति मिले, वो उनके बीच आ खड़ा हुआ

यूहन्ना (66) - संदेश के विषय

यूहन्ना 1

01. वचन - प्रभु यीशु का ही नाम है

04. जीवन - क्या है, कौन है

11. प्रभु यीशु का तिरस्कार

14. देहधारी परमेश्वर का हमारे बीच डेरा

17, 45. व्यवस्था, अनुग्रह और सच्चाई

यूहन्ना 2

01. दाखरास घट गया

13. व्यापार का घर या मंदिर/ढा दो

यूहन्ना 3

01. नया जन्म

14. सांप को ऊंचे पर चढ़ाना

यूहन्ना 4

1. सामरी स्त्री

25. तुम से जो बोल रहा हूं, वहीं हूं

47. चलकर मेरे पुत्र को चंगा कर

यूहन्ना 5

01. अड़तीस वर्ष से बीमार

39. तुम पवित्र शास्त्र में अनंत जीवन ढूंढ़ते हो

यूहन्ना 6

05. पांच हजार को खिलाया जाना

17. झील में आंधी

51. जीवन की रोटी

53. मेरा मांस व मेरा लहू

60. क्या तुम भी जाना चाहते हो
यूहन्ना 7
01. पर्व के बीच प्रभु यीशु
22. सब्त के दिन भला करना
37. यदि कोई प्यासा हो/पवित्र आत्मा
यूहन्ना 8
02. व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री
12. जगत की ज्योति
36. इब्राहीम से पहले में हूं
यूहन्ना 9
01. जन्म का अंधा, किसने पाप किया
35. मैं जो तुझ से बात कर रहा हूं वहीं हूं
यूहन्ना 10
01. भेड़ों का द्वार/चोर व डाकू
11. अच्छा चरवाहा
यूहन्ना 11
01. लाजर की मृत्यु बैतानियाह में
यूहन्ना 12
01. मरियम और 300 दीनार का इत्र
10. प्रभु यीशु और लाजरस को मारने की योजना
26. यदि कोई मेरी सेवा करे
32. ऊंचे पर चढ़ाया जाऊं/मृत्यु और महिमा का योग
यूहन्ना 13
01. पिता ने सब कुछ मेरे हाथ में कर दिया है
05. चेलों के पांव धोए
34. नई आज्ञा कलीसिया में/प्रेम ऐसा जैसे मैंने किया
यूहन्ना 14
13. मेरे नाम से मांगो
20. हम तीनों एक हैं
30. मुझमें उसका कुछ भी नहीं
यूहन्ना 15
01. सच्ची दाखलता

07. मुझ में रहो और जो चाहो मांगो
09. जैसे पिता ने मुझसे प्रेम किया वैसे मैंने तुमसे किया
12. जैसा मैंने प्रेम किया वैसे ही एक दूसरे से प्रेम करो।
18. तुम संसार के नहीं हो
यूहन्ना 16
06. एक और सहायक भेजूंगा
33. मैंने संसार को जीत लिया है
यूहन्ना 17
01. प्रभु यीशु की प्रार्थना
17. वचन के द्वारा पवित्र कर
18. जैसा तूने मुझे भेजा है वैसा ही मैंने भी उन्हें भेजा है
21. पिता मुझ में, मैं तुम में, वे हम में
यूहन्ना 18
10. जो तलवार उठाएगा
15. पतरस ध्क्या तू भी इस मनुष्य के चेलों में से एक है
28. किले के भीतर नहीं गए अशुद्ध होने के डर से
33. क्या तू यहूदियों का राजा है
39. बरब्बा की मुक्ति
यूहन्ना 19
13. कैसर को छोड़ हमारा और कोई राजा नहीं
18. यीशु नासरी यहूदियों का राजा
33.लहू और पानी बह निकला - जीवन और आत्मा
यूहन्ना 20
17. अपने व तुम्हारे पिता, अपने व तुम्हारे परमेश्वर
21. जैसे पिता ने भेजा तुम्हें भेजता हूं
28. बिन देखे विश्वास
यूहन्ना 21
01. झील में लौटना/और 153 मछलियां
15. क्या तू मुझ से प्रेम करता है
18. किस मृत्यु से महिमा करेगा
19. मेरे पीछे हो ले

V.

क्रूस यात्री कविता संग्रह

(शिष्य थॉमसन)

क्रम	कविता	पृष्ठ नं.	क्रम	कविता	पृष्ठ नं.
1.	कहां है वो राजा	352	7.	मैं सेवक बन जाऊं...	343
2.	क्रूस हाँ क्रूस उठाओ	346	8.	मैं भी क्रूस उठाऊँ	347
3.	नज़र करो ज़ख्मों पर	345	9.	मुझे कुछ हो गया	351
4.	नहीं सोचा था फिर भी खामोश रहोगे	350	10.	वो घर छोड़ आया था	350
5.	पर मैं, पहचान ही न पाया पड़ोसी को	348	11.	सर्प?	350
6.	भूल न जाना	349			

क्रूस यात्री कविता संग्रह

शिष्य थॉमसन

1.

मैं सेवक बन जाऊं...

कमर बाँध, अंगोछा कस कर
जल ले बैठूं चरण कमल पर,
मुझको भी शक्ति दो प्रभुवर,
मैं सेवक बन जाऊं....(1)

तुमने ही तो सिखलाया था,
खुद करके भी दिखलाया था,
मुझको भी तुम शिष्य बना लो,
मैं सेवक बन जाऊं...(2)

सेवा मैं लेने नहीं आया,
सेवक बनकर हूँ मैं आया,
मुझको भी ये शक्ति दे दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(3)

सुबह शाम मैं दुआ करूंगा,
चरणों पर बैठा भी रहूँगा,
मुझको अपना दर्शन दे दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(4)

दुश्मन को दुश्मन ना कहूँगा,
मित्र सभी का सदा रहूँगा,
मुझको ऐसा मन तुम दे दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(5)

ले जाएँ बेगार में जब वे,
हो जाए जब पाँव थके ये,
मुझको चलने का बल तुम दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(6)

जब वे झूठी बात गढ़ें तब,
मिल जुलकर अपमान करें सब,
मुझको दो तुम क्षमा शक्ति तब,
मैं सेवक बन जाऊं...(7)

चाहे सताएं मुझको हरदम,
श्राप सुनाएं क्रोध न हो कम,
मुझको आशीर्वाद वचन दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(8)

जो है बड़ा वो बने ही छोटा,
जो हो प्रधान, गुलाम सभी का,
मुझको झुकने की महिमा दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(9)

मन को दीन करो मेरे तुम,
नम्र हृदय दो दान प्रभु तुम,
मुझको झुकने की गरिमा दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(10)

भूखों को तुम धन्य कहे हो,
प्यासों को जल तुम देते हो,
मुझको भी संतुष्ट बना दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(11)

दया दिखाएं दया वो पाएं,
कृपा करें जो, कृपा वो पाएं,
मुझको तुम अनुग्रह ऐसा दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(12)

मेल मिलाप का काम मुझे दो,
सबको प्रेम प्रचार करे जो,
मुझको ख्रिस्त स्वरूप बना दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(13)

दु:ख सहने के इस आनंद को,
दर्द उठाने के संयम को,
मुझको तुम सतगुण ये दे दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(14)

नमक कहा था तुमने हमको,
ज्योत, तमस को मिटाती है जो,
मुझको यह जीवन तुम दे दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(15)

इतना तुम मुझे ऊँचा कर दो,
वध-स्तम्भ पर मुझको जड़ दो,
मुझको अपनी महिमा दे दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(16)

क्रोध को मुझसे दूर करो तुम,
गर्व, घमंड को चूर करो तुम,
मुझको संत बना दो प्रभु तुम,
मैं सेवक बन जाऊं...(17)

आँख से आँख का बदला न लूं,
दाँत से दाँत को भी ना तोड़ूं,
मुझको बस वो जख्म दिखा दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(18)

दोष न मैं किसी पर भी लगाऊं,
मार्ग, सत्य, जीवन की दिखाऊँ,
मुझको मेरा कपट दिखा दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(19)

तुमने कहा, माँगो, ढूँढ़ो तुम,
पाओगे, खटखटाओ जब तुम,
मुझको तुम यह मन्त्र सिखा दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(20)

शक्ति प्रयोग मैं नहीं करूँगा,
चमत्कार से नहीं जिऊँगा,
मुझको अपनी आत्मा दे दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(21)

बंधुओं से मैं मिला करूँगा,
कंगालों की सुधि रखूँगा,
मुझको कुचले लोग दिखा दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(22)

बेघर को घर दे दूँ अपना,
नंगों को पहना दूँ कपड़ा,

मुझको दान का वर दो दाता
मैं सेवक बन जाऊं...(23)

सारे जगत में जाकर प्रभु मैं,
गली, गाँव, बस्ती, घर घर में,
मुझको, अपना वचन, प्रभु दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(24)

स्वर्ग छोड़कर ताज तजे तुम,
स्वर्ण सिंहासन से उतरे तुम,
मुझको भी सिखला दो प्रभु तुम,
मैं सेवक बन जाऊं...(25)

क्रूस उठाकर फिरा करूँगा,
कर इनकार मैं जिया करूँगा,
मुझको मरने का वर दे दो,
मैं सेवक बन जाऊं...(26)

♦♦♦♦

2.

नज़र करो ज़ख्मों पर

1. जब तुम दु:ख से, दबे हुए थे
जीवन से भी, निराश हुए थे
क्या मैं पास नहीं तब आया
नज़र करो ज़ख्मों पर

2. जब तुम गिरते, थे सड़कों पर
उठ सकते थे, न पैरों पर
क्या मैंने न हाथ बढ़ाया
नज़र करो ज़ख्मों पर

3. जब मैंने तुम्हें, टूटा देखा
दर्द तुम्हारे, दिल से देखा
क्या मैंने तुमसे मुंह मोड़ा
नज़र करो ज़ख्मों पर

4. जब तुम मुझको, न पहचाने
घर में अपने, जब मैं आया
क्या मैंने कुछ गिला किया तब
नज़र करो ज़ख्मों पर

5. जब मैंने खुद, प्यार किया था
पिता प्रेम, लेकर आया था
क्या मैंने कुछ तुम से चाहा
नज़र करो ज़ख्मों पर

6. जब मैंने तुम्हें, रोते देखा
असहाय अकेले, तन्हा देखा
क्या मैं भी न साथ ही रोया
नज़र करो ज़ख्मों पर

7. जब तुम व्याकुल, थे अपने में
निर्बल थे तन, मन और मन में
क्या मैं शांति ले न आया
नज़र करो ज़ख्मों पर

8. जब तुम पड़े, कराह रहे थे
ज़ख्म भरे, अधमुए पड़े थे
क्या न पास तुम्हारे आया
नज़र करो ज़ख्मों पर

9. जब तुम आये, मेरे पीछे
भूखे नंगे, कंगालों से
क्या मैंने नहीं गले लगाया
नज़र करो ज़ख्मों पर

10. जब तुम जीवन, हार चुके थे
सब कुछ अपना, त्याग चुके थे
क्या मैं जीवनदाता न था
नज़र करो ज़ख्मों पर

11. जब तुम मंजिल, भूल गए थे
राह भटक कर, रात गए थे
क्या मैंने नहीं घर पहुंचाया
नज़र करो ज़ख्मों पर

13. जब तुम बीच में, तूफान के थे
लहरों में आंधी, में उलझे
क्या मैं न तुम्हें पार ले आया
नज़र करो ज़ख्मों पर

14. जब लाचार, बीमार पड़े थे
सालों खाट, नहीं छोड़े थे
क्या मैंने न स्वस्थ बनाया
नज़र करो ज़ख्मों पर
15. जब तुमने, मुझको था पुकारा
मरण द्वार से, जब था बुलाया
क्या मैं जल्द नहीं तब आया
नज़र करो ज़ख्मों पर
16. जब सारा घर, खेत लुटा था
परिवारों ने, तुम्हें तजा था
क्या तुम्हें अपना नहीं माना
नज़र करो ज़ख्मों पर
17. कहते थे तुम, साथ रहोगे
मौत भी आये, तो न डरोगे
क्या ये शिकायत तुमसे की है
नज़र करो ज़ख्मों पर
18. मैंने खुद ही, कोड़े खाए
कांटे सिर पर, रक्त बहाए
क्या मैंने आंसू ही दिखाए
नज़र करो ज़ख्मों पर
19. जब उस रात को, भीड़ ने घेरा
लाठी तलवारों का हमला
क्या मैंने तुमको था रोका
नज़र करो ज़ख्मों पर
20. लेकर क्रूस मैं, इन कांधों पर
गिरता उठता था, सड़कों पर
क्या मैंने था बचना चाहा
नज़र करो ज़ख्मों पर
21. जब मैं राह पर, चल न सका था
भार काठ को सह न सका था
क्या मैंने तुमको ही बुलाया
नज़र करो ज़ख्मों पर
22. जब तुमको था, मरते देखा
अन्धकार में, गिरते देखा
क्या मैंने नहीं खून बहाया
नज़र करो ज़ख्मों पर
23. जब तुम ने भी, बगावत की थी
क्रूस दंड की, साजिश की थी
क्या न क्षमा ही, तुम्हें किया था
नज़र करो ज़ख्मों पर
24. जब विश्वास, तुम्हारा कम था
पुनरुत्थान का, ज्ञान नहीं था
क्या मैंने तुम को ठुकराया
नज़र करो ज़ख्मों पर
25. जब तुम बहुत, उदास हुए थे
दुनिया में फिर, लौट गए थे
क्या मैं तुमसे क्षुब्ध हुआ था
नज़र करो ज़ख्मों पर

◆◆◆◆

3.

क्रूस हाँ क्रूस उठाओ

1. यरूशलेम में भीड़ ये कैसी
सुबह सुबह बगावत जैसी
शोर यहाँ बस यह सुन पाया
क्रूस हाँ क्रूस चढ़ाओ
2. पुरुष स्त्री बच्चे बूढ़े सब
पैदल सेना घोड़े ये सब
क्या कोई दुश्मन है आया
क्रूस ये किसे चढ़ाओ
3. गत्समने के बाग में सारे
लाठी तलवारें ले आये
किस को कुछ भी सूझ न पड़ता
अंधियारा अंधियारा
4. हाँ ये तो है वही यहूदा
शिष्य प्रभु का जिसने बेचा

मित्र कहा फिर भी उसने क्यों
किसे शत्रु ठहराया
5. किसे ढूँढ़ते हो तुम लोगों
मुझको तो इन्हें जाने दो
नासरत का यीशु मैं हूँ
मैं हूँ हाँ मैं ही हूँ
6. न तलवार करे कभी रक्षा
जो ले हाथ वही है मरता
मैं आया हूँ प्राण गंवाने
मरके जीवन दान दिलाने
7. क्या तुम ही हो मसीह बता दो
चमत्कार भी कुछ दिखला दो
तब ही तुम्हें मसीह कहेंगे
क्रूस मरण से मुक्त करेंगे
8. पीलातुस ने सवाल किये जब
हेरोदेस अपमान किये तब
मुंह न खोला फिर भी प्रभु ने
आया वो था मुक्ति देने
9. कोड़े मारे मुंह पर थूके
कांटों का भी ताज पहनाये
कपड़े फाड़े थप्पड़ मारे
क्या ये हाल बनाए
10. बीच शहर में क्रूस उठाये
सब निंदा अपमान उठाये
गिरता था उठता था वह फिर
लहुलुहान वो चलता जाए
11. हाँ शिखर कलवरी चढ़ना होगा
वहाँ भी न उसे रुकना होगा,
और भी उठकर काठ पर चढ़कर
रक्त ध्वज फहराना होगा
12. कीलें हाथों और पैरों में
कांटे ताज रखे वह सर में
क्या श्रृंगार हुआ ये प्रभु का
मेरा न्याय हुआ था उसका
13. पिता क्षमा कर दो इन सब को
ये अनजान न जाने तुझको
बस इनकी तुम आँखें खोलो
स्वर्गराज्य में दाखिल कर लो
14. पत्थर क्यों ये लुढ़क गया है
कब्र का बंधन टूट गया है
पुनत्थान और जीवन मैं हूँ
कहकर यीशु जीत चुका है
15. जो मेरे ही पीछे आये
अपना क्रूस उठाकर लाये
कर इनकार चले हर दिन जो
साथ रहे मेरे युग युग वो
16. आसमान को देख रहे थे
आशीर्वाद में हाथ बढ़े थे
फिर आने का वादा करके
यीशु प्रभु जी स्वर्ग गये थे

◆◆◆◆

4.

मैं भी क्रूस उठाऊँ

1. निर्बल बन कर मैं जी पाऊँ
शक्तिहीन सा मैं बन जाऊँ
पीछे यीशु के चलने को
मैं भी क्रूस उठाऊँ
2. ये संसार के माया मोह हैं
जो लालच दें वे सब ओर हैं
मेरा तुम इन से मुँह मोड़ो
मैं भी क्रूस उठाऊँ
3. मैं अपने को मैं न समझूँ
हर जीवन को अपना मानूँ
यीशु ऐसा जीवन दे दो
मैं भी क्रूस उठाऊँ

4. जो मेरे ही पीछे आये
अपना क्रूस वो साथ में लाये
इस आज्ञा का पालन कर लूं
मैं भी क्रूस उठाऊँ
5. घर परिवार के प्रेम के बंधन
जो बांधे मेरा तन मन धन
तुझसे मैं बस अब जुड़ जाऊं
मैं भी क्रूस उठाऊँ
6. नाम मान सम्मान आभूषण
बन जाएँ गर मेरे दर्शन
चरण धूल को फिर मैं देखूं
मैं भी क्रूस उठाऊँ
7. महानगर की चकाचौंध या
धर्म राज का ही हो धोखा
मार्ग तुम्हीं ज्योतिर्मय करना
मैं भी क्रूस उठाऊँ
8. छल लेकर वे आगे आयें
मुंह के वार से मुझे गिराएं
गिर कर मैं फिर भी उठ जाऊं
मैं भी क्रूस उठाऊँ
9. स्वर्ग राज्य की खुशियों को मैं
बाँटू गाँव गाँव बस्ती में
खाली हाथ कहीं न जाऊं
मैं भी क्रूस उठाऊँ
10. भजन प्रभु के शब्द प्रभु के
गाते गाते भी न थकते
हर चौराहे पर जब आऊं
मैं भी क्रूस उठाऊँ
11. बीच बाजार से मैं जब गुजरूँ
भीड़ राह पर मैं जब देखूं
लज्जा से मैं घिर न जाऊं
मैं भी क्रूस उठाऊँ
12. क्रूस वहन कोड़े काँटों में
उलझा जब खुद को देखूं मैं
दृश्य देखकर डर न जाऊं
मैं भी क्रूस उठाऊँ

◆◆◆◆

5.

पर मैं, पहचान ही न पाया पड़ोसी को

मैं पहचान नहीं पाया अपने आप को
जान नहीं पाया हार को
स्वार्थ का, शरीर का बस एक कैदी था,
पर मैं, पहचान ही न पाया उस पड़ोसी को

सही हूँ, मैं साबित करूँ सबको
अन्याय सही, पर दिलासा देऊँ खुद को
हार अपनी ही लिखता रहा,
पर मैं, पहचान ही न पाया उस पड़ोसी को

दोष देता रहा, उन लोगों को
घरवालों, पड़ोसी और सरकार को
लकीरें हाथ की तो खींचता रहा,
पर मैं, पहचान ही न पाया उस पड़ोसी को

बस मुझे करना क्या है, बता दो
पहुंच जाऊंगा, पा लूंगा रास्ता वो
स्वर्ग राज्य का, कहते हैं जिसे वो,
पर मैं, पहचान ही न पाया उस पड़ोसी को

हृदय, मन या शक्ति हो
कर सकता हूँ प्रेम, परमेश्वर को
लेकिन यहां तो है वही तस्वीर उसकी,
पर मैं, पहचान ही न पाया उस पड़ोसी को

मारा कूटा, लुटा अधमुआ पड़ा जो
अनजान, दलित, अछूत ही था वो
कहीं वो ही तो न था, अभागा
पर मैं पहचान ही न पाया उस पड़ोसी को

करता होगा इंतज़ार मेरा, हाँ वहीं वो
दूर बढ़ गया हूँ तेज चलता था मैं तो
जाने किधर आ गया हूँ खो गया हूँ,
पर मैं, पहचान ही न पाया उस पड़ोसी को

पूछता तो फिर भी है, आज हम सब से वो
कौन है तुम्हारा पड़ोसी वो
क्या नही कंगाल, कुचला और लाचार,
पर मैं, पहचान ही न पाया उस पड़ोसी को

◆◆◆◆

6.

भूल न जाना

तुम पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ते हो,
फिर भी तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आना नहीं चाहते। यूहन्ना 5:39, 40

भूल न जाना जन्मोत्सव में,
फुलझड़ियों की चमक दमक में,
आये थे प्रभु यीशु जग में,
हम सबको नवजीवन देने

भूल न जाना जन्मोत्सव में,
सृष्टि ने कर्ता को नकारा,
अन्धकार ने न स्वीकारा,
तिरस्कार ही था बस घर में,

भूल न जाना जन्मोत्सव में,
धर्म, अधर्म के इन योगों में,
सर्व लोक के प्रभु महाराजा,
निर्बल बन आये इस जग में,

भूल न जाना जन्मोत्सव में,
भौतिकता की तड़क भड़क में,
नम्र दीन दयाल थे प्रभुवर,
जनम लिए आये चरनी में,

भूल न जाना जन्मोत्सव में,
बालक जिसने जन्म लिया था,
स्वर्ग पिता का नामकरण था,
यीशु पाप हरे जो जग में,

भूल न जाना जन्मोत्सव में,
अन्धकार की घमासान में,
हाहाकार मचा था जग में,
खून बहा घर घर गलियों में

भूल न जाना जन्मोत्सव में,
कंगालों की खुशखबरी को,
अंधे देखें, बंधुए मुक्त हैं,
कुचले अब उठ आये हैं

भूल न जाना जन्मोत्सव में,
मानव चोला पहन लिए जो,
राजाधिराज प्रभु ही हैं वो,
घर आये जो संग रहने को

भूल न जाना जन्मोत्सव में,
काँटों के राज्याभिषेक को,
कोड़े, मार जख्म और लहू को,
फेहराते उस रक्त ध्वज को

भूल न जाना जन्मोत्सव में,
हंसी रंग और नृत्य नाद में,
शीघ्र पधारें परम प्रभुजी
राज्य पराक्रम महिमा पाने

◆◆◆◆

7.
वो घर छोड़ आया था

कोई अंधा था, तो कोई भिखारी
कोई बंधुआ था, मजदूर या राही

लकवे का मारा था, या कोई बीमारी
भूतग्रसितों की भी, करी उसने रिहाई

बाहर धकेले गये, बस्ती के वो कोढ़ी
गले लगाता था, उन्हें भी वो ही

रोती थी पापिन, बोल न पाई थी
आंसुओं से ही उसने, क्षमा पाई थी

कहते हैं वो मदद करता था सबकी
कुचले, कंगाल, भूखे, बंधुओं नंगों की

सच है,
वो घर छोड़ आया था, हमसे मिलने
पर किया बे घर उसे, हम ही ने

वो आया था, दोस्तों के घर में
अपमानित, और जख्मी किया उसे सबने

शहर शहर, खदेड़ा उसको
जीने न दिया, क्रूस पर जड़ा उसको

वो मर गया था, हाथों हमारे
पर देखो, वह फिर लौट आया है।

कहता है
मैं मर गया था, अब जीवता हूँ
डरो मत, मैं तुम्हारे साथ हूँ

''उसने कंगालों को सुसमाचार सुनाने के लिए मेरा अभिषेक किया है, मुझे इसलिए भेजा है कि बंदियों को छुटकारे का, और अंधों को दृष्टि पाने का सुसमाचार प्रचार करूँ, और कुचले हुओं को छुड़ाऊं।'' लूका 4:18

◆◆◆◆

8.
सर्प?

पाप विष मिटाने वाले, मेरे यीशु राज
सर्प सर कुचलने वाले, मेरे बलिराज

दुष्ट शक्ति भागे यीशु के नाम से
नष्ट वो हो जाएं, यीशु के रक्त से

गढ़ सभी ढह जाएं, यीशु के नाम से
ऊंचे सुर से गाएं हम, गीत जीत के
(उस समय लिखा, जब मैं ऐसी जगह प्रार्थना के लिए गया, जहां भूत प्रेतों का आतंक था, शैतान का गढ़ था।)
''उसी ने हमें अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया'' कुलुस्सियों 1:13

◆◆◆◆

9.
नहीं सोचा था फिर भी खामोश रहोगे

टूट पड़े थे हम सब तुम पर
न आओ गलियों और घर पर
दर दर तुम्हें निकाला हमने
नहीं सोचा था फिर भी खामोश रहोगे

छीन लिया तुमसे सब हमने
अधिकारों का हनन था हमने
न्याय को छीना था जब मिलकर
नहीं सोचा था फिर भी खामोश रहोगे

छीने कपड़े थे फाड़े थे
लूट लिया तुमको जब हमने
बेच दिया जब कुछ सिक्कों में
नहीं सोचा था फिर भी खामोश रहोगे

झूठी दी थी गवाही हमने
निर्दोषी को पकड़ा हमने
धोखेबाज कहा जब तुमको
नहीं सोचा था फिर भी खामोश रहोगे

भाग रहे थे शिष्य तुम्हारे
दुश्मन जब आकर के घेरे
बंधक तुम को बना रहे जब
नहीं सोचा था फिर भी खामोश रहोगे

भीड़ ने जब कर दी थी बगावत
क्रूस चढ़ाने की थी बाबत
नारेबाजी हो हुल्लड़ में
नहीं सोचा था फिर भी खामोश रहोगे

थप्पड़ गाल पर मारा हमने
कांटे ताज जड़ा सर हमने
कोड़े गिन गिन मारे तुझको
नहीं सोचा था फिर भी खामोश रहोगे

अपमानित किया तुझको हमने
बैंजनी वस्त्र और थूक हमने
मारपीट अधमुआ किया जब
नहीं सोचा था फिर भी खामोश रहोगे

कहा था उतरो क्रूस से हमने
बचो बचाया सबको तुमने
कतरा कतरा लहू बहा जब
नहीं सोचा था फिर भी खामोश रहोगे

कदम कदम पे नकारा हमने
हर दिन तुझे सताया हमने
बुरा हर नाम दिया था तुझको
नहीं सोचा था फिर भी खामोश रहोगे

क्यों ये जुल्म सहा सब तुमने
कैसे प्रेम किया, क्यों तुमने
कीलें ठोकी थी जब हमने
नहीं सोचा था फिर भी खामोश रहोगे

रोता हूँ बिलखता हूँ मैं
जख्म देख जख्मी खुद हूँ मैं
मुझ कातिल को गले लगाकर
नहीं सोचा था फिर भी खामोश रहोगे
यशायाह 53:7

◆◆◆◆

10.
मुझे कुछ हो गया

दूर से देखा तो कुछ समझ नहीं आया
दौड़कर करीब जब आया
तो भीड़ के पीछे
एक क्रूस नजर आया

मरता था कोई उस पर
जिसे पहचान मैं न पाया
मरने के पहले ही, मरा सा उसे
कुटा पिटा लुटा लटका पाया
औरों को बचाया इसने
अब अपने को बचाये, कहा उन लोगों ने
और यदि है मसीह
तो शीघ्र नीचे उतर आये
ये फरेबी है झूठा है

तख्ती पर लिखा हुआ भी धोखा है,
कहा उन्होंने
गलत है ये सब बस कैसर ही
राजा महाराजा हमारा है

हां कुछ लोग रो रहे थे, दूर ही खड़े थे
डरे डरे से वे थे, और मातम कर रहे थे
कदम मेरे, लड़खड़ाते चले
उनसे मिलने को बहुत आतुर हुए

वे लोग कुछ अजीब थे,
दिखने में अजनबी थे
कंगाल, कुचले, बंधुए, गवाही दे रहे थे
समाज के त्रसित थे
शायद उनके ही ये मसीह थे

कौन था, न्याय था, अन्याय था, इसके पीछे
क्या रोमी, क्या यहूदी, या कोई और था
मेरी ही चीख ने टोका मुझको,
कहा वो तुम थे, वो तुम थे,
हां तुम ही तो थे

भागा तेजी से मैं, भीड़ को चीरकर
गिर पड़ा मुंह के बल,
उस क्रूस की जड़ पर
कुछ बूंदें मुझ पर गिरीं
और मुझे कुछ हो गया, हाँ कुछ हो गया

चिल्लाता हुआ शहर की ओर भागा मैं
और भागता ही जा रहा हूँ
लोग कहते हैं बावरा हूँ
यही कहता हूँ बस बच गया हूँ बच गया हूँ
बच गया हूँ

◆◆◆◆

11.
कहां है वो राजा
ढूंढता तो मैं भी था उसको
सब ढूंढते थे सदियों से ही जिसको
नबी भी दूर से देखते थे घुटने टेक
ज्योतिषी खोजने आए, यहूदियों के राजा को

न मिला महलों में, न किलों के ही अंदर वो
पहचान न आया, मंदिरों त्यौहारों में ही वो
कंगाल, बंधुओं, कुचलों के साथ फिरता था एक
क्यों आया था, कहां का कौन था वो

सब ढूंढते ही रहे उसको
स्वर्ग राज्य लाया, कहता था मन फिराने को
पत्थर लाठी आए लेकर तलवारें उसे देख
कोई धोखेबाज़ को ढूंढे, तो कोई मुक्तिदाता को

मिल ही गया एक दिन, आखिर वो सभी को
मार रहे थे जहां सलीब पर वे उसको
शहर के बाहर उस पटल पर था लेख
लिखा बस यही था–
यहूदियों का राजा, यही है वो।

◆◆◆◆